॥ विज्ञापनम् ॥



सकल समान धर्मी श्रावक महाशयो से विनय पूर्वक निवेदन करता हू कि दशविध दृष्टात दुर्लभ मनुष्य शरीर पाके ज्ञान वृद्धि के हेतु यत्न करना बहुत आवश्यक है, क्योंकि जिससे जुआरी मद्यप चोर और व्यभिचारी इत्यादि दुष्कीर्त्ति और परभव में अध पगु कुष्टी काक कृमि और कीट इत्यादि नरक पीडा देनेवाले अकर्तव्य कर्म, धर्मी दयालु दाता सत्यवक्ता सुशील और सज्जन इत्यादि सुकीर्ति और परभव मे धनसपत्ति सुख सुन्दर शरीरआरोग्य पुत्र कलत्र सुख इत्यादि स्वर्गसुख मोक्षसुख देने वाले कर्त्तव्य कर्म जाने जाते हैं।

ज्ञानी से ज्ञान मिलता है। यद्यपि ज्ञान और ज्ञानी दोनो अनादि अनत है तथापि एक पुरुष की अपेक्षा से

परम्पर कार्य कारण सम्बन्ध सिद्ध है। क्योंकि ज्ञान विना ज्ञानी और ज्ञानी विना ज्ञान होना असभव है। ज्ञान होनमें श्रुत व्याकरण काव्य कोश ज्योतिष न्याय और अन्य अन्य दर्शन इनका समूह अध्ययन अध्यापन श्रवण और मनन इत्यादि सामग्री अपेक्षित होती है। ऐसी आख्यायिका प्रसिद्ध है कि प्राचीन समय में मनुष्यों की धारणशक्ति ऐसी विलक्षण थी कि जिससे शृंखलाबद्ध अनेक ग्रंथ उनको कठाग्र रहते थे। अन्य मतमें उनके वंशीय लोग अब भी प्रसिद्ध हैं जैसे चौबे दुबे त्रिपाठी यजुर्वेदी सामवेदी और अपन मतमें पाठक वाचक, वाचनाचार्य वा उपाध्याय कहलाते हैं। प्रसिद्ध है कि उस समय अठारह प्रकार की लिपि प्रचलित थी परन्तु ग्रंथकठस्थ रहने के कारण पुस्तक लिखने का परिश्रम व्यर्थ समझते थे। और भी जो प्रथम गणधर श्री गौतम स्वामी तीर्थकर महाराज के मुख से (उप्पन्ने इवा विगमे इवा धुवे इवा) त्रिपदी सुन के १२ अंग की रचना कर देते थे और स्मरण रखते थे इसमें केवल श्रुतज्ञान बलके सिवाय और कोइ कारण नहीं समझा जासकता। अधुनातन मनुष्यों को जो अहर्निश अभ्यस्त भी ग्रंथ और उनका तात्पर्य नहीं याद रहता है ज्ञानावरणीय के सेवाय कौन कारण कहेंगे। ज्ञानावरणीयकर्म का उदय भी कुछ एकही समय नहीं हुवा किन्तु क्रमसे जो जो देश क्षेत्र काल और भाव विपरीत आते गये तो तो ज्ञानकी

भी न्यूनता होती चली, होते होते श्री भगवान महावीर स्वामी के निर्वाण से ९८० वर्ष (ईसवी सन् ४५४। विक्रम स ५१०) बीत जाने पर देवर्द्धि गणिक्षमाश्रमणने सोचा कि पुस्तक बिनलिखे यह स्मरणशक्ति जाती रहेगी इसलिये वल्लभी पुरमे साधु समुदायके कंठस्थ जो सूत्रादि ग्रन्थ थे पुस्तकों मे लिखे, परन्तु उस समय कागद और स्याही बनानेकी रीति न होने के कारण ताडपत्रके ऊपर लोह लेखनी से खुदवाके पुस्तकारूढ स्थापन किए, (यह बात कुछ मेरेही लिखने पर नही हर कोई स्वमती परमती जानते हैं और इतिहास प्रसिद्ध है, अबतक भी ताडपत्र के ऊपर लिखे ग्रन्थ देखने मे आते हैं) पीछे जब कागद स्याही बनानेकी कला प्रसिद्ध हुई तब ताडपत्र से कागद पर लिखाके पुस्तकालय किए ताडपत्र के ऊपर लिखने से कागद के ऊपर लिखने मे कम मेहनत है शीघ्रही लोगोने अंगीकार कर लिया, कागद पर लिखने मे एक ग्रंथ चिरकाल मे लिखके तयार होगा जब कि बहुत ग्रंथ लिखाना होय तो बहुत से लेखक चाहिये द्रव्य व्यय भी अधिक होगा तिसमें भी यदि कोई तरह का विघ्न आय पडे कार्य पूर्ण नहो, क्योंकि एकतो श्रेयांसि बहुविघ्नानि, दूसरे मनुष्यायु अल्प, जब तक कार्य समाप्त नहो चिंता लगी रहती है और पुण्योपार्जनभी तत्कर्म समाप्ति मे है, ग्रंथ संग्रह किये बिना अध्ययन अध्यापन श्रवण मननादि जिनसे ज्ञान वृद्धि होती है सर्वथा

नष्ट हो जायगे पहलेही द्वादश १२ वर्षके तीन दुर्भिक्ष होने से कितने ही ग्रंथ लुप्त होगये, और पीछे से मुसलमानोने नष्ट किये, जो बचे हैं लिखने लिखाने की अशक्तता से वर्त्तमान काल मे पैंतालीस आगम एक जगह नहीं मिलता है, और अभ्यास करना तो एक कहानी सा होगया (वाहरे काल महिमा) इस हेतु वर्त्तमान कालाश्रित जितने ज्ञान वृद्धि के उपाय हैं देखा तो सर्वोत्कृष्ट मुद्रायन्त्र है इस कला से मेरा मनोरथ (जो के ५०० ठिकाने ४५ आगमको भंडार करनेका इच्छा है) शीघ्रही सिद्ध होगा लिखने लिखाने के परिश्रम से बचेंगे प्राय लिखी पुस्तकों से छपी हुइ पुस्तके शुद्ध होगी यदि कोइ गुणी अधिकारी होगा तो, यह कला हमको कृतार्थ करने को ही प्रचलित हुइ है, कोई उपाय ज्ञानवृद्धि के लिए सहज और सुंदर पृथ्वीपर इसके सेवाय नही है ग्रंथ छपवाना सुरूकिया। यह कला युरूप देशीय अन्य धर्मियो से प्राप्त हुई है, अग्राह्य है, ग्रंथ छपवाने मे आशातना होती है, इत्यादि असूया करना अनुचित है, क्योंकि वस्तु का उत्पत्तिस्थान और उत्पादक चाहे कोई हो सर्वोपकारिता, अल्पकालक्षेप, ज्ञानवृद्धि, पुस्तक सुगमतादिक, महाकार्य के लिये अवश्य ग्रहण करनी चाहिये इस के ग्रहण करने मे तथा पुस्तक छपवाने मे बडा उपकार पुण्यबंधन है दोष कुछ भी नही है, पक्षपात छोड के ग्रहण करे। यदि वस्तुके उत्पत्तिस्थान की ओर देखियेगा जातक तथा पारसी जो यावनी विद्या है आप

क्यो पढते हैं? जो चीज उन लोगोंकी पैदा की है बहुतसी आपके परिभोग मे आती है, कस्तूरी गोलोचनादि कहा पैदा होता है और किस काममे आप खरच करते है? केवल वस्तु में जो गुण हैं ग्रहण करना और दोषकों छोडदेना उचित है। इसलिए पुस्तक सुलभता, ज्ञानवृद्धि की अति उत्कृष्ट अत्यत सहज सुगम रीति को अस्वीकार करके ज्ञानहानि नही करना चाहिये, और मध्यस्थ बुद्धिसे विचारिये तो पूर्वाचार्योंने बडे परिश्रम से परोपकारार्थ जो ग्रंथ बनाये हैं किसीके देखने में न आवें ऐसा गुप्त रखना कि कुछ दिन में कीडे खाजाय और ग्रंथ का नाममात्रही शेष रह जाय उनका परिश्रम व्यर्थ होजावे इसके सेवाय कोई अविनय और आशातना 'कर्मबंधका हेतु, नही है, यही ग्रंथ छपवाके प्रसिद्ध करना हरएक विद्वानोको देना तद्द्वारा बहु लोक ज्ञान पावे इससे अधिक कोई विनय और श्रेष्ठकार्य नही है, यही सर्व कारण सोच मैं इस शुभ कार्यमे प्रवृत्त हुआ हु आप लोगभी यथाशक्ति प्रवृत्त होय कि जिससे पुन जैनमत युवावस्था को प्राप्त होय इति शम्।

मकसूदाबाद
अजीमगज
द० राय धनपतसिंह बहादुर

भूमिका।

यह ठाणाग तीसरा अग परमकरुणावत श्रमण भगवत श्रीमहावीरस्वामीके उपदेशसे धर्मरत्नरक्षक भगवत गणधर श्रीगौतम स्वामी तथा श्री सुधर्मा स्वामीने चतुर्विध श्रमणसघ भट्टारक और उनकी सतति के परम उपका राथ सूत्ररूपसे सकलित किया, स्थान यह, नाम १ स्थापना २ द्रव्य ३ क्षेत्र ४ अद्धा ५ ऊर्द्धता ६ उपरति ७ वसति ८ सयम ९ प्रग्रह १० योध ११ अचलता १२ गणना १३ सधान १४ और भाव १५ भेदसे पन्द्रह प्रकारका होता है, स्थानाग इस पदका समुदायार्थ यह है कि यथावत् स्वरूप कथन करके स्थापित किये हैं एक दो तीन इत्यादि दश सख्या पर्यत विशेषित आत्मादि पदार्थ जिसमे अथवा स्थान शब्दसे एक दो इत्यादि सख्या का भेद इस ग्रथमे कहा जाता है, आत्मादि पदार्थोंको एकसे लेके दश तक सख्या और यथायोग्य स्थिति कहने से वसति और गणनास्थान का अधिकार है इससे स्थान ऐसा कहा, वही स्थान क्षायोपशमिक भावरूप मव घन पुरुषके अगकी तरह है इससे स्थानाग नाम हुआ, इसमें भाव स्थानका भी अधिकार है इस स्थानाग

के दस अध्ययन हैं, पहिले अध्ययनमे एक सख्या विशेपित पदार्थ कहे हैं, दूसरे में यही दो सख्या विशेपित इत्यादि दश अध्ययन हैं, इस स्थानागके पदार्थोका तात्पर्य शीघ्र ज्ञात होनेके लिये उपक्रम १ निक्षेप २ अनुगम ३ और नय ४ चार अनुयोग अर्थात् सूत्रका अर्थसे सबध, अथवा अनुकूल व्यापार अर्थात् सूत्रार्थ प्ररूपण रूप क्रिया विशेप, कहे हैं, यही चारों जैसे नगरमे सुखसे प्रवेश करनेमे चार द्वार होते हैं वैसे इस प्रवचनमें प्रवेश करने के यह चार अनुयोग रूप द्वार (प्रवेश मुख) हैं, इन अनुयोग द्वारों से जीवा जीवादि पदार्थ नियमित सख्या विशेपित ज्ञात होने से तत्वज्ञान रूप परम पुरुषार्थ सिद्ध होता है इसलिये इस के पढने पढाने में अवश्य यत्न करना चाहिये, परतु पढनेका अधिकारी वही है जो कि मोक्ष माग का अभिलाषी गुरूका आज्ञाकारी और दीक्षा लिये आठ वप जिस्को व्यतीत भया होय। स्थानाग सूत्र देनेका अवसर भी वही है इति शम् ॥

मकसूदाबाद

अजीमगज

द० राय धनपतसिंह बहादुर

नकल चिठी १

श्रीमज्जिनवरप्रसादलब्धसद्बुद्धिमज्जाग्रितपरमरत्नेषु श्री ५ रायधन पतिसिंहबहादुरेषु सविनयमावेदनम् ।

आगे मैंने तुमारे आप को ऐसी इच्छाहै कि पैंतालिसों जैनागम का पुस्तक मूल टीका और भाषाटीका सहित पांच२सौ कापी छपै और साधु श्रावकों के पठन पाठन के लिये पांचसौ स्थानमें पुस्तकालय स्थापित होंं सो यह अति आनन्दकी बातहै परन्तु जिन महाशयों को द्रव्य देकर पुस्तक लेने की इच्छा हो उन लोगों के निमित्त भी यदि आप की आज्ञा हो तो छपने के वास्ते पांचसौ कापी जैन शुभ सुसा इटी की ओर से भी छपवा ला जावें यह पुस्तकें में अजीमगञ्ज से प्र काश करुंगा। अग्र शुभम् ।

सम्वत् १९३२ मि० । बै० । सु० । ११

अजीमगञ्ज शहर मुरशीदाबाद

द० जैन शुभ सुसाइटी कार्यसम्पादक शुभहितैषक

नकल चिठी २

श्रीविविधविद्याविचारतत्परेषु जैन शुभ सुसाइटीकार्यसम्पादक महाशयेषु प्रतिनिवेदनम् ।

जो कि पत्र आपका द्रव्य देके खरीदनेवाले लोगों के लिये सुसाइटी की ओर से पैंतालिसों जैनागम की पांचसौ पुस्तकें छपवा लने की आज्ञा के विषय में आया सो मैं स्वीकार करता हूं कि आप जैन शुभ सुसाइटी की तरफ से आगम की प्रत्येक पांच २ सौ पुस्तकें छपने के वास्ते छपवा लवें परन्तु पांचसौ से अधिक छपनेकी आज्ञा मैं नहीं देता यदि और कोइ छपवाना चाहे तो उचित है कि पहले मुझ से आज्ञा लेलेवे क्यों कि इन ग्रन्थों पर रजस्टरी हुइहै अग्र शु भम् ।

सं० । १९३२ । मि० । बै० । सु । १२

अजीमगञ्ज शहर मुरशीदाबाद

द० रायधनपतिसिंह बहादुर

पत्र	पृष्ठ	ग्याना क	उद्देशक	ग्रन्थ सङ्ख्या	पत्र	पृष्ठ	ग्याना क	उद्देशक	ग्रन्थ सङ्ख्या
१३	१	१	०	११८०	३६४	२	५	१	
५६	२	०	१		३८०	२	५	२	
६३	२	-	०		४ ०	१	५	३	१६७५
७१	२	२	३		४३५	२	६	१	७५५
१०-	२	२	४	१६५१	४७४	०	७	१	८५०
१ ०	१	३	१		५ ६	२	८	१	३२०
१४०	१	३	२		५३५	२	८	१	५ ०
१३०	२	३	३		५८५	२	१०	१	१७१४
१४०	१	३	४	५५					
१२	२	४	१						
३०	०	४	२						
१	०	४	३						
१५२	२	४	४	२०२२					

ग्रन्थसङ्ख्या

मूल — मूल—३५५०

संस्कृत टीका—१४५५०

भाषा टीका—७ ०

समसङ्ख्या २६

यह पुस्तक जिसको मोल लेनी हो मकसूदाबाद अजीमगंज जैनबुक सुसाइटी कार्याध्यक्ष सुपुरिंटेंड को लिखने से मिलेगी ——

और राय धनपतिसिंह बहादुरकी तरफ से छपाए हुए पुस्तकोंको अगर कोई छप या खरीद करना श्रीपंचोंजी का और श्रीसंघका गुनहगार होगा सरकार से कानून मुताबिक सजा पावेगा।

ठिकाना राय धनपतसिंह बहादुर की कोठी।

फी पुस्तक दाम ३॥)

द० मु० सुपरिंटेंडेंट

॥ अथ टीकावार्त्तिकसयलित श्रीस्थानाख्य तृतीयाङ्ग प्रारभ्यते ॥

श्रीयुत रायधनपतिसिंह बहादुर की तरफसे छापागया

बनारस जैनप्रभाकर प्रेस

मानकचन्दजती

॥ श्रीजिनेन्द्राय नमः ॥ अर्हं ॥ श्रीवीरजिननाथं नत्वा स्वानानागत(?)पयपदानां प्रायोऽभ्यासाद्वद्ध(?) परीत्यर्थविवरणं किंचित् ॥ १ ॥ इह हि चरमभगवतः श्री महावीरवर्द्धमानस्वामिन इक्ष्वाकुकुलनन्दनस्य प्रथितसिद्धार्थराजसूनोः सिद्धार्थनन्दनेन परमगुणगणाराधनाक्रान्तविक्रान्तरामादिप्रभवोरामाकरपदपद्मसमापति मतसततसेवितपादपद्मस्य समस्तपदार्थसार्थसाक्षात्कारवद्देवज्ञानदर्शनस्वरूपप्रधानमविच्छिन्नगुणसर्वविषयग्रामसमावस्य सकलत्रिभुवनातिशायिपरमसा म्राज्यस्य निखिलनीतिमवन्तकस्य परमगम्भीरा मनार्घा सुपदेशा विपुलपुण्यादिगुणसमवायविस्तारोऽक्षयवरलोकस्येन भाण्डागारनिभेनैवगणधरेण पूर्वं काले चतुर्दशपूर्वसमस्तमहार्णवस्य तदन्तागमरूपी पद्माराय निरूपितस्य त्रिविधापरमसारस्य देवताधिष्ठितस्य विद्याक्रियावत्त्वतापि पूर्वपुरुषैः केनापि कृतापि कारणात् समुन्मुद्रितस्य तदेव चेयं विदग्धभीरूणां मनोरथगोचरातिक्रान्तस्य महाभिधानस्येव स्थानाङ्गस्य तथाविधविद्यादिसम्पत्त्यभावे ऽपि वेदनस्थापनप्रधाने स्वपरोपकारायाविनिवेशनाभिलाषिणि एतदेव वाचयितसंयोज्यते निपुणपूर्वपुरुषप्रयोगा दुपश्चितस्य किंचित् समस्तो ऽयं तथा विधवत्समासजना मापृच्छ्य तदुपायान् पूताद्दिशास्त्रसमोपेते दिशा स्वाभिसमुद्रणभिधा सुयोगः प्रारभ्यत इति भाष्यप्रस्तावना । तत्र चानुयोगस्य फला दिद्वारनिरूपणतः प्रवृत्ति यतउक्तं तत्प्रसङ्गोगमेगत समुदायस्यातत्वेषदाराद तत्रैवमिदं तिष्ठम पयोयनादेवचारादिति ॥ १ ॥ तत्र प्रेक्षावतां प्रवृत्तये फल सवरुत्र स्वाद्य अन्यथा हि निष्प्रयोजनत्वमस्य प्रसमाना योतारः कण्टकशाखामर्दनवत् नमयन्तैरमिति तथानन्तरपरम्परभेदात् द्विधा तत्रानन्तरं सर्वो यमम सत्पूर्वकानुष्ठानतया पदम्प्रमाणं यौधा परम्परप्रयोजनमिति । तथा योग सम्बन्ध उपायोपेयभावसम्बन्धो यदुतानुयोगरूपायो ऽर्थावगमादि चापेयमिति तथा समयोजनाभिधानादेवा भिहित एवावसरसम्बन्ध सम्बन्धो स्वार्थ चोक्तदादेवसम्बन्धो ऽवसर इतिभाव योग्यो वा द्वानेपक्षवादिति तत्र भव्यस्य मोक्षमार्गाभिलाषिणः सितगुरूपदेशस्य भाविनो यद्वर्षेमनापतमप्राप्तपर्यायस्येव सूत्रतोपि स्थानाङ्गं देयमिति यथमपसरोयोग्योपिवाच्यमेवेति स

॥ श्रीजिनेंद्राय नमः ॥ अथ ॥ श्रीवीरजिननाथं महायोगप्रतिपत्रपदानां प्राचीनप्राकृतं करोम्यर्थविवरणं किंचित् ॥ १ ॥ इह हि श्रमणभगवान् श्री
महावीरवर्धमानस्वामिन इक्ष्वाकुकुलनन्दनस्य प्रसिद्धसिद्धार्थराजसूनो मेरुधीरस्य परमपुरुषकारक्रान्तविक्रान्तरागादिगवैराकरस्य पञ्चसमापति
महस्तलमेचितपादपद्मस्य सकलपदार्थसार्थसाक्षात्कारस्वकेवलज्ञानकपप्रधानप्रविष्टवस्तुसर्वविषयग्रामप्रभावस्य सकलपिस्तुतनातिमायिपरमधा
माम्यस्य निश्चितनीतिमवर्गकस्य परमगम्भीरा महार्था सुपदेया विपुलबुद्ध्यादिगुणगणमाणिक्यरोहणगिरयोः कवीन्द्र भाण्डागारनियुक्तेनेवगणधरेण पूर्व
नामे चतुर्थपञ्चमनवसहभाण्डारकस्य तदन्तर्गतानामवती यत्नाराय निरूपितस्य निजिघार्थरत्नसारस्य देवताधिष्ठितस्य विद्यामित्रावलवतापि पूर्वपुरुषैव केनापि
कृतापि कारणा दनुमुद्रितस्य तद्वच येषा विदग्धगंभीरा मनोरमगोचरातिमानस्य महाभिधानस्येष स्थानगस्य तथाविधविद्यादिकस्यधिकेरपि
केशसम्बन्धपधाने सपरोपकारायावविभिबोधनाभिप्रायादिभि रेतस्य यावगणितसबोध्यते भिंपुरपूर्वपुरुषमबोगा सुपश्चिल्ल किंचित् समस्तो येन तथा
विधवत्तभागजना नायच्छव तदुपायान् पूतादिमहाम्यसमोपेते रिवा साभिरमुद्रुपमिवा सुयोग मारम्भत इतिमाषप्रस्तावना । तस्य चानुसोमस्य फला
दिवारनिरूपवत प्रभृति यतउक्त तस्यपञ्चमीमर्मगस्य समुदायस्यतदेवद्वारा तभेमनिवृत्तिकस्य पयोमचार्थवचनाहति ॥ १ ॥ तत्र प्रेक्षावतां मङ्गलार्थं चास
तस्य स्याच मन्यथा हि निष्प्रयोजनत्वमस्या यहमाना योतार बकुज्ञमाषामर्द्दनस्य ममवर्त्तेरमिति तत्रानन्तरपरम्परभेदात् द्विधा तत्रानन्तर मर्वां
वगम स्तत्पूर्वकानुष्ठानतथा पवर्गमाप्ति सोसा परम्परमयोजनमिति ॥ तथा योग सम्बन्ध सवमनुपायोपेयभावलक्षणो यदुतानुयोगउपायो ऽर्थावगमादि
चापेयमिति तथा सप्रयोजनाभिधानादेवा भिहित इत्यवसरतमय प्रमाणो मयाच कोसदानेसबन्धो ऽवसर इतिभाव योग्यो वा ज्ञानेभयवदति तत्र
मध्यस्य मोघमार्याभिवामिव जितगुरूपदेशस्य माविनो मरवर्णप्रमाणमप्रत्यापर्यायस्येव सूत्रतोपि स्यान्नाह्ये हेयमिति यमसवसरोयोप्योपिवायमेवेति च

योग तिवरिसपरियागस्स उ पवारपकप्पवाममस्सवर्थ चउवरिसस्सवसर्थ सूयगडंनामअंगंति ॥ १ ॥ दसकप्पववहारा संवच्छरपणगदिक्खियस्सेव ठाणं
समवायोवि य अंगेतेअट्ठवासपत्ति पन्नवासगे णा भामकारवी दोषा इति ॥ १ ॥ तथा श्रेयोभूततया प्रविघ्नसत्वे तदुपहतत्वतया' णिष्पा भेवा चमपत्तैरपि
वि पदुपममाय मङ्गलमुपदर्शनीयं तत्र च बहुविग्घाइंसेयाइं तेणकयमंगलोवयारेहिं घेतव्वोसोउमहा णिहिव्वजवामहाविव्वत्ति मङ्गलस्य शास्त्रस्यादिमध्या
वसानेषु ममेव मारम्भार्थस्या विघ्नेमपरिसमासवे तथैव शेषोव तथैवा ऽवप्रच्छेदाय भवतीति तदुक्तं तंमंगलमाईए मज्झेपज्जंतएयसत्थस्स पठमसत्थत्थावि
ग्घ पारगमणाय निद्दिट्ठं तस्सेववथिज्जत्थं मज्झिमयंमंतिमंपितस्सेव अव्वोच्छित्तिनिमित्तं सिस्सपसिस्साइवंसस्सत्ति तथादिमंगलं सुयंमेआउसंतेणं भगवयेत्या
दिसूत्रंमपवर्मूतत्वात्पुतमस्त्वभमयविद्‌मानयभेत्वादाथाद्युपतामयमतेमत्वमस्तोमगयविद्‌मानयोवमंम्यतेपविमम्यतेणोदितमभेनेतिमंमत्वार्थस्य सुज्जमाणस्या
दिति मध्यमङ्गलंपचमाऽध्ययनस्यादिसूत्रं पंचमहव्वएजुत्ताादि महाव्रतानांचायिकादिभावतया मङ्गलमा भवति हि चायिकादिको भावो मङ्गलं यतउक्तं
मोचायमथोमावो छविसुरोपायाचत्ति भवपचठाऽध्ययनादिसूत्रं अरिहावेहिं सम्मबे अणगारे परद्धगचपरिक्तएसाहि अणगारस्य परमेष्ठिपचकान्त
र्गतत्वेन मङ्गलात् सूत्राभिधेयानां वा अधयरगमानाम्ना चायोपशमिकादिभावरूपतया मङ्गलत्वादिति अन्तमङ्गलन्तु दशमाध्ययनस्यान्तसूत्रं सुसमुचय
स्तापोमवाचता पचत्ते तोचा अन्तमन्तरस्य इतिसम्पय मङ्गलत्वादिति सर्वमेवमारभ्यंमंगलं निर्जरार्थत्वात् तपोवत् मङ्गलभूतस्यापि शास्त्रस्य यो मङ्गलता
भुवाद' स शिष्यमतिमङ्गलपरिग्रहार्थ मेमचतयाहि परिगृहीतं मात्र मङ्गलं मा यथा साधु रिक्तधर्मश्रद्धेनेति इदम शास्त्रस्य मङ्गलादिनिरूपितम
पि तदनुयोगस्य इदम तयो यवंचि यमेदादिति यथेदानीं समुदायाचविवते तत्र सामान्यभिधेतत्मारभ्नमाम नामच ममावोदिभेदा त्रिविधं तद्यथा
यथार्थ मयमाव मयगूच्य तच ममाव म्पदीपादि पमयाव म्पलामादि यथेपूर्ब त्रियादि तत्र यथार्थं माम्नाभिधान शिवते तथैव ममयागार्थपरिच्छा

ते एतएव मत स्थापयिष्यते तत्र स्थानं नार्ह्यपिति पदत्रयं निक्षेपणीय मिति तत्र स्थानं नाम स्थापनादिभेदात् पंचदशधा यदाह णामंठवणादविए खेत्त
द्धाउड्ढउवरईवसही संजमपग्गहजोहे अयलगणणसंधणाभावेत्ति तत्र स्थानमिति नामैव नाम स्थानं यस्य वा सचेतनस्य चेतनस्य वा स्थानमिति नामक्रि
यते तदनुनाम्ना नामस्थानं स्थानमिष्यते तथा स्थाप्यत इति स्थापना इत्यादि स्थाप स्थानाभिप्रायेण स्थानमप्यभिधीयते तत स्थापनैव स्थानं तथा द्रव्यं
सचित्ताचित्तमिश्रभेदं स्थानं गुणपर्यायाश्रयत्वा तत कर्मधारयइति तथा क्षेत्रमाकाशं तच्च तत्स्थानं च द्रव्याणामाश्रयत्वात् क्षेत्रस्थानं तथा अद्धा काल
स च स्थानं यतो भवस्थिति कायस्थिति च भवकाल कायकाल चाभिधीयते स्थिति स्थानमेवेति ऊर्ध्वमिति ऊर्ध्वतया स्थानं ऊर्ध्वस्थानं पुरुषस्यो ईस्थानं कायो
त्सर्ग इति इह स्थानशब्द क्रियावचन एवं निषदनत्वग्वर्तनादिस्थान मपि द्रष्टव्य ऊर्ध्वग्रहणस्योपलक्षणत्वादिति तथा उपरतिर्विरति सैव स्थानं विविध
गुणानां आश्रयत्वात् विशेषार्थो चेह स्थानशब्द एवं विरते स्थानविशेषो विरतिस्थानं तच्च देशविरति सर्वविरतिश्चेति तथा वसति स्थानमुच्यते शेरते
तस्मिन्निति वसतिरिति तथा संयमस्य स्थानं संयमस्थान मिह स्थानशब्दो भेदार्थं संयमस्य सामायिकपर्यायकर्षकृतो विशेष संयमस्थानं तथा प्रगृह्यते उपादीयते
आदेयवचनतया य स प्रग्रहो नायकस्तस्य स्थानं स च लौकिको लोकोत्तरश्चेति तत्र लौकिको राजयुवराजमहत्तरामात्यकुमाररूपो लोकोत्तरस्त्वा
चार्योपाध्यायप्रवर्तकस्थविरगणावच्छेदकरूप इति तस्य स्थानं प्रग्रहस्थान मिति तथा योधानां स्थानं आलीढप्रत्यालीढवैशाखमण्डलसमपादरूपं प्र
तीत्यालीढविशेषात्मकं योधस्थानं तथा अचलति अचलतासम्बन्धात् सादिसपर्यवसितादिरूप स्थानं अचलतास्थानं तथा गणनाविषयं स्थानमेक
स्थादिशीर्षप्रहेलिकापर्यन्तं गणनास्थानं तथा सन्धानमनुभ्यत छिन्नस्य कंचुकादे रच्छिन्नस्य तु पट्टोत्पद्यमानस्यादे रिति भावस्तु च्छिन्नस्य प्रशस्ताप्रशस्तभाव
स पुन सन्धान मच्छिन्नस्य सपरापरोत्पद्यमानस्य प्रशस्तभावस्य सन्धान तदेव स्थान स्वगुण सहतत्वेनावस्थान सन्धानस्थान भावेति भावाना औदयिका

दीक्षां स्नान मवखिति रिति भावस्नान मिति एव मिह स्नानमध्ये श्लोकार्थ एवच पसतिस्नानेन मवगास्नानेन चाधिकार इति एवंविधविधि इदानी मष्ट
मिषेप उच्यते तच मावा मार्मगंठवच मे द्रव्य गवेवच्चोरमावर्ग एसोष्वतुर्मंगस्स मिक्षेवोवश्चिच्चोहोरंति ॥ १ ॥ तच नामस्थापने प्रसिद्धे द्रव्यांग पुनद्रव्यस्य
मयोपचारे एवं चारच मवयवो वेति द्रव्यांग भावस्य चायोपशमिकादे रेव मेवांग भावांग मिति एवच मावांगेना धिकार इत्यपि दर्शयिष्यते तच विष्टं
स्नासने वसन्ति यथा वदभिषेकतवे कस्तादिविशेषिता भावादय पदार्था सन्ति वा रस्नान मथवा स्नानमध्ये मेवादिच सच्चामेदो भिवोयसे तत चाम्ना
दिपदार्थगताना मेवादिपर्यातानां स्नानाना मभिधायकत्वेन स्नान माधाराभिधायकत्वा इत्यादवसिति स्नानच तत् प्रवचनपुरुषस्य चायोपशमिकमाव
रूपत्वा मभिवाङ्ग वेति स्नानाङ्गमिति समुदायार्थ तवच दशाध्ययनानि तेषु प्रथममध्ययनमेवादित्वा त्संख्या एकसंख्योपेतात्मादिपदार्थप्रतिपादकत्वा
देकस्नान मत्यच महापुरुषमिव चत्वारानुयोगद्वाराणि भवन्ति तद्यथो पक्रमो निक्षेपो नुगमो नयश्चेति तत्रानुयोजन मनुयोग सूत्रस्यार्थेन सह संबन्धनं च
यथा प्रचुरूपा अणुसो वा यो योगो व्यापार सूत्रस्यार्थप्रतिपादनरूप सोनुयोग इत्यत्र च पक्षाजोवचमनुयोगो ह्युपक्रमनियमएवजमभिधेयेव वावारोवा
जाणो जापयरूबोषपयुज्जतेवेति ॥ १ ॥ अथवा पर्यायेनपाय योर्थयो यथाम्नाततया वा गुयस्त्वाखस्य सूत्रस्य योभिधेयो योगो व्यापार स्तेन सम्बन्धो
वा सोपुयागा गुयामायेति भाष्य चथवाजमलषोयु मयच्चमावेर्विसुयमथंतस्स घभिधेयवावारो जोगोतेषयसंवधेत्ति ॥ १ ॥ तस्य द्वाराणीव द्वाराणि तत्
प्रवेशमुखानि एकस्नानमाध्ययनपुरस्य चाधिगमोपाया इत्यर्थ नगरदृष्टान्त श्चात्र यथाह्यकृतद्वार मनगर मनगर मेव भवति कृतैकद्वारमपि दुरधिगमं का
र्यातिपत्तयेच चतुर्मूलद्वारन्तु प्रविभागयुक्त सुखाधिगमं कार्यानधिपत्तेव एव मेकस्नानाख्ययनपुर मप्यर्थाधिगमोपायद्वारशून्यमशक्याधिगम भवति
एकद्वारानुगत मपि च दुरधिगमं सप्रभेदचतुर्द्वारानुगत न्तु सुखाधिगम मित्यत अचाम् द्वारोपन्यास इति । तानिच विविधविभेदानि क्रमेण मयन्ते

ति तद्देश निक्षिप्तं उपक्रमश्च सुपक्रम इति भावसाधन मारब्धं न्यासदेशसमीपीकरणसाधन उपक्रम्यते शास्त्रीयेनेन उपक्रम इति करणसाधना उप क्रम्यते क्षिप्यते वा शिष्यश्रवणभावे सतो तेनोपक्रम इत्यधिकरणसाधन उपक्रम्यते यस्मा द्विविधा विनेयविनया दित्युपक्रम इत्यपादानसाधन इतिएवं निक्षेपणं निक्षेप निक्षिप्यते वा नेनास्मि यस्मा दिति वा निक्षेपोन्यास मायमेति पर्याया एव मनुगमन मनुगम अनुगम्यत अनेनास्मि यस्मा दिति वा नुगम सूत्रस्यानुकूल परिच्छेद एवंनयनं नय नीयते वा अनेनास्मि यस्मादिति नय अनन्तधर्माध्यासितस्य वस्तुन एकांशपरिच्छेद इत्यर्थः अथैषां सुपक्रमादिद्वाराणां क्रमप्रयोजनं किं प्रयोजनं निक्षेपोपरे नासमुपक्रान्त सद्वसमीपीभूतं निक्षिप्यते नवा निक्षिप्तं नामादिभि रथेतो नुगम्यते नयावती नुगत नयैर्विचार्यते इत्ययमेव क्रम इति तत्र द्वारक्रमोयमेवतु निक्षिप्यरवेयमासमीयरूपं मनुगमयद्गावरुपं माहुसमानसमयविद्योप्ति । १ । तत्रैव स्तवादीन्यपाणि साम्प्रत मनयोगद्वारसदेशमयमपुरःसर निक्षेपप्रत्ययन मनुविशते तत्रोपक्रमो विविधो लौकिक शास्त्रीयश्च तत्र लौ किक षोढा नामस्थापनाद्रव्यक्षेत्रकालभावभेदात् तत्र नामस्थापने सुगमे द्रव्योपक्रमो देधा सचेतनाचेतनमिश्रद्रव्यवस्तुपरापक्रमस्य द्रव्यस्य परि कर्म विनाश यैति तत्र परिकर्म गुणान्तरोत्पादन विनाश प्रसिद्धएव एवं क्षेत्रस्य कालस्य भावस्य स्वपरिज्ञातस्वरूपस्य नाडिकादिभि परिज्ञान भावस्य च गुर्वादिचित्तव्यवस्था नयमतमेवितादिभि रुपगम इति । शास्त्रीयोपि षोढैव आनुपूर्वीनामप्रमाणवक्तव्यतार्थाधिकारसमवतार भेदात् तत्रानुपूर्व्यादिमया भयोक्ता तत्रोत्कीर्तनगणनानुपूर्व्यौ रिह समवतरति उत्कीर्तनमुत्कथनं निकाम निकामनिकाभिति गणनन्तु परिसंख्यानम् एकं द्वेत्रीणीत्यादि सा च गणनानुपूर्वी त्रिप्रकारा पूर्वानुपूर्वी पश्चानुपूर्वी अनानुपूर्वी चेति पूर्वानुपूर्व्यैव प्रथमं तत्राप्यास्यायते पश्चानुपूर्व्यां इत्यम अनानुपूर्व्यां स्वमियत मिति तथा नामदशधा एकादिनाम्नां तत्र षण्णाम्यवतार सामपि भावायणमिके भावे क्षायोपशमिकभावस्वरूपस्याध्ययनस्युतस्येति उक्त

च क्षिरगामिभावि पर्यायसमियसुवंसमोवरति अंसुवगायावरणं चयोपसमजंतयंसर्यति ॥ १ ॥ तथा प्रमाणं द्रव्यादिभिदा चतुर्विधं तत्र चायोप
मशिकभावरूपत्वा इस भावप्रमाणे षवतारो यवयाह । दृष्यादोचउमिय पमोयतेभिवतपमाणंति इवमञ्झवचभावो तिभावमायेसमोवरतितित्ति ॥ १ ॥
भावप्रमाणच गुणनयसंख्याभेदत त्रिधा तत्राय गुणप्रमाणसंख्याप्रमाणयो रेवावतारः नयप्रमाणे तु नसम्मति यदाह मूढनंदयसुवका विसुनयासमोयरं
तिदं चपुहत्तेसमोयारो नत्थिपुहत्तेसमोयारोत्ति ॥ १ ॥ गुणप्रमाणन्तु द्विधा जीवगुणप्रमाणमजीवगुणप्रमाणच तत्राय जीवोपयोगरूपत्वात् जीवगुणप्रमा
णे वतार एतस्मिन्नपि ज्ञानदर्शनचारित्रभेदा ज्ञानके यस्य ज्ञानरूपतया ज्ञानप्रमाणे तत्रापि प्रत्यक्षानुमानोपमानागमात्मके प्रकृताध्ययनस्या सोपदेशरूपत्वा
दागमप्रमाणे तत्रापि लौकिकलोकोत्तरभेदे परमगुरुप्रणीतत्वेन लोकोत्तरे सूत्रार्थोभयात्मनि तथाचाह ॥ जीवाणन्तत्थ जोमगुणे त्रेयभावयोगाचे सो
उत्तरसुत्तत्थो भयागमेतस्सभावाचो ॥ १ ॥ तथात्मागमानन्तरपरम्परागमभेदत स्त्रिविधे यंत गौतमरजयधरतदंतेवासिन सूत्त त्रा मयधरतच्छिष्यतत्प्रशि
प्यानुपेचयथाक्रम मात्मानन्तरपरम्परागमेष्व वतारः संख्याप्रमाणे सम्यक प्रपचित नतएवावधार्येव नव वास्य परिमाण संख्याया मवतार स्तत्रापि
कालिकश्रुतदृष्टिवादश्रुतपरिमाणभेदतो द्विभेदायां कालिकश्रुतपरिमाणसंख्यायां कालिकश्रुतत्वा दस्येति तत्रापि ग्रन्थापेक्षया संख्येयाक्षरपदाद्यात्म
कतया संख्यातपरिमाणात्मिकाया मर्थापेचयाक्षयपरिमाणात्मिकाया मपर्यायत्वा दागमस्य तथाचाह । पर्यंतागमा पर्यत्तापज्जवा इत्यादि ।
तथा वक्तव्यता स्वसमयेतरोभयवक्तव्यता भेदा त्रिधा तत्रेदं स्वसमयवक्तव्यतायां मेवावतरति सर्वाध्ययनानां तद्रूपत्वात् तदुक्तं परसमयोऽभयस्सा सम्म
दिट्ठिससमयोसेव तासव्वअज्झयणाइ ससमयवत्तव्वनिययाइ ति ॥ १ ॥ तथा अर्थाधिकारो वक्तव्यता विशेषएव सचैकत्वविशिष्टात्मादिपदार्थरूपएव सम्यक
इति तथा समवतारप्रतिद्वार मधिकृताध्ययनसमवतारवक्तव्य सर्वानुपूर्व्यादिषु लाघवार्थ मुक्तमेवेति मप्युन वच्यते तथाहि । अहवावसमोयारो जेय

समोयारिंयपईदारं एयाइमणुगमो सोत्ताववोवपुव्वओ । निषेपस्त्रिधा ओघनामसूत्तालापकनिष्पन्नभेदात् यादव मयइच्छेज्जइयहुवं निक्खेवपयाणुसा

रओसरवं ओहोनामंहुत्त निवेतव्वतओवद्धं ॥ १ ॥ तत्रौघ सामान्यमध्ययनादिनाम उक्तंच ओहोजंसामन्न सुयाभिहाणंचउव्विहंतंच अज्झयणंअज्झीणं

आउज्झवणायपत्तेयं । नामादिचउभेय वन्नेऊणंसुयाणुसारेणं एगहाणंचोज्ज वउहुविवमेवमावेसु ॥ २ ॥ तत्राध्यात्मं मन स्तचउमिष्यणइमनमर्यादामनो

भवति यस्मात् अध्यात्ममन्नयाघस्स वा मनस इमस्य आनयन मासमिव्यतो भवति बोधादीना चाधिक्य मयनं यतो भवति तदज्झयणंति माववयेक्षा भ

यतोति आहच जेणसुहप्पज्झयणं अज्झप्पाणयणमहियमयणंवा बोहस्ससंजमस्सवमोक्खस्सपतोतमज्झयणंति ॥ १ ॥ अधीयते वा पठते चाधिक्येनगयंते गम्य

ते वा तदित्यध्ययनमिति । तथा अक्षीयमाण च चीयतेऽस्य तदक्षीण यथा प्रागादीना मायहेतुत्वा दायं तथा पापानां कर्मणा अपचइतुत्वा रपचयेति

आहच अज्झीणंदिज्जंतं अव्वोच्छित्तिनयइअलोगुव्व आओनाणाईणंअवचओपावाणंति नामनिप्फन्ने निषेपे इत्येकस्मातकमितिनाम तत एकस्य

सामयत्वस्य निषेपो वाच्य स च एकस्य नामादि सप्तधा तदुक्तं नामं १ ठवणा २ दविए ३ माउयपय ४ संगहेक्कएचेव ५ ॥ पज्जव ६ भावेय ७ तहा स

त्तेतेएक्कगाहोंति ॥ १ ॥ तत्रनामैको यस्यैक इति नामस्थापनैक पुस्तकादिन्यस्तैकाक्ष द्रव्यैक सचित्तादि त्रिधा मातृकापदैक सुउप्पन्नेइवाविगमेइवाधुवे

इवत्ति एषां मातृकापदानामन्यतमं सूत्रं भवति तासां अन्यतर त्रिविधितं अकारादिवराभिधाया वा मातृकाया एकतरो अकारादि संग्रहैको येनै

केनापि अभिना बहुव संगृह्यते यथा जातिप्राधान्येन व्रीहिरिति पर्यायैक त्रिविकारादिरेक पर्यायो भावैक औदयिकादिभावाना मन्यतमो भाव इति

इह भावैकेनाधिकारो यतो भवनानामसमवचनानविषयो य मितो मयनाय संख्या संख्याच गुणो गुणच भाव इति स्थानकस्तु निषेपतत्र एव तत्र भव

मस्थाने भेदाधिकार स्तत एकस्मिन् स्थानं संख्याभेदः एकस्थान तद्विधिष्टजीवाद्यर्थप्रतिपादनपर मध्ययन मप्येकस्थान मिति । उक्तोओघनामनिष्पन्न

निचेपो मम्पतिसूचानापचनिप्पन्नमिचेप' प्रासावसर तत्स्वरूपवेदं सूचासामकानां सूचपदानां ज्ञत चो चाज्ञुम चित्वादीनां निचेपो नामादिन्यास' मथा समरणाभावि नाम्पनि मतिसूचे तस्य सञ्चवात् सूचच सूचानुगमे सपानुगमभेद एवेमनुगमपव तावदुपदर्श्यते विविधो नुगमो निर्युक्त्यनुगम सूचानुगमच तथाधा निचेपनियुक्त्युपोद्घातनियुक्तिसूचस्पर्शिकनिर्युक्त्यनुगमविधानत त्रिविध तत्र निचेपनियुक्त्यनुगम' सानाद्यानुयाचाध्ययनाधिकमन्दानां निचेपप्रतिपाद मा दनुगत एवेति उपोद्घातनियुक्त्यनुगमस्तु उद्देसेनिद्देसेसनिम्ममे इत्यादि गाथाद्वयादवसेय इति सूचस्पर्शिकनिर्युक्त्यनुगमस्तु संहितादो पद्विधे व्या पयामच पदावपदविपदच्छालनाप्रस्त्वप्रत्यानसुचचमास्वानभेदचतुष्टयस्वरूप' सच सूचानुगमे संहितापदव्यवस्थाख्यानभेदवयसमवे सति भवती स्वत सूचानुगम एवोच्यते तत्र चास्मपव्यमसराङ्गीदिमूचलमचोपितं स्खलितादिदोषवर्जितं सूत्र मुच्चारणीय तच्चेदं । सुयमेइत्यादि । पत्यव व्याख्या संहितादि क्रमेण स्या च भाषकार' सुत्त १ पर्वं २ पयत्थो ३ संभवतोविग्गहो ४ वियारोय ५(वाक्यनेत्यम) दूसियसिद्धो ६ नयमय विसेसओनेयमणुसुत्तं १ । तत्र सूत्रमिति मङ्गिता मानागमतेव सूचानुगमस्य तद्रूपता दिस्वाद्व शोदकवस्वादोत्तु मयनरमेसुयसयाणमणोत्ति सूचे चाचसलिताद्विगुणोपेतं उच्चारिते केचिदथा पवगता प्रायाना मवश्या चलिता १ व्याख्याभेदो भवति पनधिमताधिगमाय च पदादयो व्याख्याभेदा' प्रवर्तन्त इति तत्र पदानिद्वात

॥र्दृ॥ श्रीग्नहङ्गो नम ॥ सुयमेआउसतेण न्नगवयाएवमरकाय ॥

श्रीमरीरभिनंमता । श्रीमुर्सुमुद्रामदा स्वामीमामिधमूषय । टवार्थेशिम्यनेमया ॥ १ ॥ श्रीसुधर्मा स्वामी अमूस्वामीनिं कहेछे । के मे सामस्युं छे पापूणावत जबू । भगवत श्रीमहावीरें कह्यो एटावाम सूचनो मय तेकज हुमे सामलो । * * * * *

सूत्रालापकनिष्पन्ननिक्षेपावसर स्थाने यं व्यवस्था अत्यन्तं जायेत्था मित्येवं
मया श्रातुष्मन् तेन भगवता एवं माख्यात मिति एव मदेषु व्यवस्थापितेषु सूत्रालापकनिष्पन्ननिक्षेपावसर स्थाने यं व्यवस्था अत्यन्तं आवेद्या मित्येवं
निक्षिप्ते मितरथैव अत्ययिपत्तावेद्या पञ्चवर्ममिनिक्षिप्तेवमाप्ति ॥ १ ॥ तत्र नामस्मृतं स्थापनास्तुवत् प्रतीत द्रव्यस्तुत सचीतानस्य तुपयुक्तस्य पत्र
कपुस्तकन्यस्त स्या भावश्रुतम् तुतोपयुक्तस्येति द्रव्य भावस्तुतेन सोर्चेभ्रियोपयोगवद्वचेना धिकार' तथा श्रावसंति आयुर्जीवित मनामादिभेदतो दयथा
तयथा नामठवना २ दविए ३ पोहे ४ भव ५ तब्भवेव ६ भोगेय ७। संजमे ८ जस ९ कित्ती १ जीवियं पतंभवरदसणा ॥ १ ॥ तत्र नाम
स्थापनेषु से द्रविएत्ति द्रव्यमेव सचेतनादिभेद जीवितव्यहेतुत्वा ज्जीवित द्रव्यजीवितं पोघजीवित नारकादिविशेषविवक्षया द्रव्यमात्र सामान्यजीवित भवजीवि
नारकादिभवविशिष्ट जीवित भवजीवित नारकजीवित मित्यादि ॥ तब्भवेयत्ति तस्मैव पूर्वभवस्य समानजातीयतया सम्बन्धिजीवित गतभवजीवित यथा
मनुष्यस्य सतो मानुषत्वेनो त्पन्नस्येति भोगजीवित चक्रवर्त्यादीनां संयमजीवितं साधूनां यशोजीवितं कीर्तिजीवितच यथा महावीरस्येति जीवित माकु
रेवेति द्रव्य संयमायुषा यग' जीवांसुषा वाधिकार इति एवं नेमपदानां यथा यथव विनिपोवाच्य इति ॥ एव सूत्रालापकनिष्पन्ननिक्षेप' पदार्थ' पु
नरेवं द्रव्यित सधर्मस्वामी पंचमोगणधरदेवो जम्बूनामानं स्वशिष्य मतिपादयामास श्रुत माकर्णितं मे मया आयुसति आयु' जीवितं तस्सयमप्रधान
तया प्रशस्त ममृतस्या विद्यते यस्य सा वायुष्मां स्तस्यामंत्रणं हेआयुष्मन् शिष्य तेणंति य' सर्वनिहितव्यवहितसूक्ष्मवादरवाह्याभ्यन्तरसकलपदार्थ ज्ञाना
तया भगवत माख्यातं विद्यते यस्य सा वायुष्मां परिष्क
तयथनतयासत्वेन अमति प्रतीत यथवा पूर्वभवोपात्ततीर्थकरनामकर्मादिसद्भवपरमपुण्यप्रभावारोपितसीमागादिवाधाकोमसिप्यादर्शनादिवासन' परिष्क
तमहाराज्यो दिव्यायुपसर्गसंसर्गाविचलितयमध्यानमार्गीभास्करत्व घनघातिकर्मघनाघनपटलविघटनोल्लसितविमलकेवलभामुमाली विबुधपतिघट्प
दपठलसुष्टपदपद्मो मध्यमाभिधानपुरोपवनसमवसितमनजो जिनो महावीर स्तेन भगवता समस्तभातिवाचरूपसमपैश्वर्यादियुक्तेन एव मित्यमुना प्रकारमा

येने वज्राहिना मकारेवा स्यातमिति यामर्षाद्दया जीवाजीवस्वभावद्दोर्पतारूपतवा भिविधिना वा समस्तवस्तुविस्तारव्यापनस्वभावेन स्यात वर्बित मा
स्यात मामादिवस्तुजात मितिमम्यते यमच श्रुतमिथनेमा ययारचामियाषिना सम वमयारितमेवा ख्याव्धे प्रतिपादनोय मित्याद यव्वमा भिधामे मलु
तायायसम्यवात् उमव विरत्तोपायवरं समंपवर्विमयषमसम्भावो ययंदुर्देसपाए पञ्मरामंमिपाडेरत्ति ॥ १ ॥, मयेवमेमो पञ्चमदारारभिदितमायममाय
दारगतारमामस्तपरम्परभेदभिवाममो य म्यवमायो मूमो उर्वतो यमंतरामम सुमवस्मास्मामम इत्याद यायुम विस्वमेमतु वोमवयवोभि त्रिव
मम महादवता वार्वेषो पवेयो देव इत्याद उतव वयमदपरिमरसुं दुर्रविवारवगुवोपवोएर्वि पवदायंतोवमवं सीसवोपरमायरिमोत्ति ॥ १ ॥ यायुम
स्याभियायंया स्वेत मारवारव व्याविमा मायुयो व्रतमीडस्याप्यतडपते सम्येपावापियाडवापप्यिवयवा सुदासमायुस्वपवियूवा सम्येजोविडवामा सम्वे
सिवीवियंपिर्वति तथा तृषावापिमसम्भगते मुपदारार्षसम्पद जीवितार्थमरास्वेम तेयामायुर्यतिमिय मिति ॥ १ ॥ यथवा यायुयविस्वनेम मयवयारया
रिमुयवते मियाव यारयार्योदिव इति मापमार्य समवनुवाघारभूतस्मेना येयसुयोपवमयेन पिरायुर्ववयवेमयिप्यामंवयममारि मततवं मुडेपिदोवमेव
मवरवभूमीपस्वोदयवदयं मववयरववसमस्वोदम देवमच्चितवारिवि ॥ १ ॥ वियवयविद्ध दीपव इति याइव यायरियसुत्तमिव परियाभोसुत्तपत्वपसिमं
यो यमेसिपियवायो पुव्वाविमदुवदायंव्वति ॥ १ ॥ तेने ममेमतु यासत्वादिसुयमदिवताभियायवेम मस्रुताध्ययममाय माइ यमुगुंवापेयवाडयम
प्रामाववेति ममयतेवमेमतु मस्रुताध्ययमयो पादेयता माइ यतिमसयाम् विवो पादेव स्व इयमसपि तमेति यथया तेर्षति यमेमो पोडावमिर्गुत्वगत
मंत मिर्यमदार माइ वोदि मिव्वासतम यवतिमो दोपिमो मिर्गतस्वतो मिर्मतमिद मध्यवमं वेपतो भपापायो वावतो वेमायावपवेवादमा मूर्धोंड
भावे वायिवे वर्तमामा दिति पवेव सुवपवंवमवसव यमम्योप मदर्षितोमयति तथा तयाविवेममयता वपुतम्यवमयोवममेव भवतीति वामाम्ब

त समबोजनता वाक्यो मा मद्दि पदमार्थानुपयोनिभमनन्तो भायन्ते भगवत्तत्त्वाने भतएव वाक्यो पाभोपेयमासम्बध सम्मतोपि इंगित इवेति भय
वदाभ्यात पञ्चरूपाणय सुभाय पुरुषाभसूपेय इति भतएव धाम श्रोतार श्रवणे प्रवर्तिता इत सिद्धार्थसिद्धसम्बन्धं श्रोतुंश्रोतामवत्तते भास्मादोलेभय
तस्य सम्बन्ध भगमीभगवति ॥ १ ॥ एवमित्यनेनतु भगवदचता रामयचनस्य गुणौर्थता माव ततएव भवचनप्रमाभावं सर्वप्रवचनानुवादमावस्य द
वेति भथवा एव मित्येवकारादिमवारो मिवियतया निदिष्ट निरमिवमितामइया श्रोतृषो भावदमतपरिशायामिवा प्रवृत्ति एव मामूदिति भाख्यात मि
त्यनेनतु नायोवयिवचनरूप मिद् गतभा सम्यवादित्याव यतव्यं मैवववर्तमाव भपोवसेर्यनमिवियविव इदमवतमिदव मवचसमपोवसेयच ॥ १ ॥ प
पुरुषमितवचं पुरिसामानेऽसेवसेवति तातखेवामाओ निवमेवभपोवसेवत्ति इति ॥ १ ॥ भथवा भाख्यातभमनतेई न कुवारिति घतं यथा वयिसम्भुपग
म्यते तस्मिन्नागमसरपदे विगतारभवशक्तिते कि सरगितवचाकाभ कुमादिश्चोयिदेयता ॥ इत्यथा नेता नभुपममभाव ॥ मत कुमादिनि सतागान्
मवारदातापदिष्टता विश्वास यनतासुभा स्येनेश्रा श्रोसितारइति ॥ १ ॥ भमस्तपदसमुदायेन तास्मोवत्वपरिहारेष गुणगुणप्रभावनापरे रेव विनेयेभ्यो दि
यमाविधेये स्याव ॥ एवं हि तेषु भक्तिपरता भाव् स्वाय विषादे रपि सफलता स्या दिति भदुत भतोपविवयवं विवद्योपुण्यसंचिवाकथा भावरि
यनमोवारेच विश्वामंतावशिष्यतिनि ॥ १ ॥ ममस्कारद भक्ति रेवेति भथवा भावसंतेवति भगवद्विमेयवं भावुयता भगवता चिरजीविनेत्यय भनेन
भगवत्नमानगर्भेण मङ्गल पभिहितं भगवन्नमानस्य मङ्गलता इति पोतमेव यहा भायुवतेति परार्थभद्द्त्यादिना मयस्य भावु दीरयता नवमुनि
मवाव्यापि तोर्थंनिवारादिदर्शना स्युन रिवाकातेभा अभिमानादिभावतो श्रमयस्य वबोध्यते वेवित् भाविनोवष्येतोर्थस्य वसोर परमभ्यद्द गतागच्छति
मूर्तोपि भवतोर्थनिवारत ॥ १ ॥ एवं प्रमुदितरामादिदोषता तदवयो श्रभासामेव वा चि मिलोभूतनेदि रामादीनां कुत पुनरिहामभगसम्भव

इति भवता भावमता मायारवमयवता मतु सदा संमुखेन यथा करवलेना ध्यायतासभवा दिति यदिवा भावसतेयति मवेत्यस्य विशेषण मत मा
दिति गुरुरमितमर्यादया ममता भनेन ततता गुरुमर्यादार्वितस्वरूपत्वात् गुरुकुलवासस्य तदिधाम सर्वत उक्तं प्रागादिश्रेतुत्वा तस्य सत्त्व गायस्यशोद
भागो विरयरपोरंमयेवरित्तिव भमाभावकशाए गुरुकुलवासंमनुपंति । १ । मौयावासोरंइधके मवामयपयत्वाय निम्मयोमकसायार्थ एयवीरस्युसासर्व
ति ॥ १ ॥ पवमा पाठमतेयं भामृयता भगवत्पादारविन्द मलित करतसमुमतादिना सुमता मेने सदाह मधिगतसकलमासेयापि गुरुवियामयादि
शिमयक्रम्यं ममालन्य मुत्र हि यद्यापिमोसयंयमंसे पायाकृतमंतपयाशिसितं एवायरीवयवविहिएणा भयंतगायोवगभोविसंतोत्ति ॥ १ ॥ यथा ।
पाठमतेयति पातुपमावेन यथयविधिमर्यादया गुरूनासेयमानेन भनेना येतदाह विधिने वोधिवदेशसोन गुरुसकाशा छोतव्यं मतु यथाकर्थचित् भावव
नियाविकशापदिव स्मिपहिमुत्तेहियंजलिउडेहिं मतिवकुमायपुन्न उवउत्तेहिमपेयव्य मिन्चादि ॥ १ ॥ एव मुत्त पदार्थ पदविग्रहस्तु सामासिकपद
विषय मपायदात मित्यादिषु दर्शित इति । इदानीं चालनाप्रत्यवस्थाने तेप मन्दसो उर्यंत य तत्र मन्यत मनु मे इत्यस्य नम मधुंयेति व्याख्यान मुपितं
पाठोपनुर्भो देवे यदयता तथा स्यपदस्य मे इत्यादेया दिति पयोस्यते मे इत्यस्य स्मिमतिप्रतिरूपका व्ययमद्य स्तृतीयेकवचनातास्मच्छब्दार्थे वर्ततेइति
न दोषः पवतम् भावता ननु वशु निम्म म्वा वा दर्शित स्वा मित्यचे तर्हिमित्यथा मष्युपामतपवस्थिरेकसरूपत्वा यो भयवत सकाशे श्रोतृत्वभाव स
एव कथं शिष्योपदेशकत्वसंभाव इति किंच शिष्योपदेशकसंलक्ष पूर्वसमावध्यागेवासास्त्यागेवा यदिवाने तत एव स्मग्रुणो निमत्त पमुन समावाध्यति
रित्तेन तस्मयीतत्पत्ते दिति भपरित्याग इतिवे च विरुद्धो समावदो युगपदसम्भवा दिति भवता नित्यमितिपद स्यदपि न निरन्वयनाशेति भोतु च
वनवाम एव विमटत्वा तावमावसो ऽप्यपेयोत्ववत्वा दववमयसु पञ्चदशमुतस्य देवदत्तावयव दिति । पवसमाधि भेवमतेनेति ममधारमवत्पति

तत्र नैगमसंग्रहव्यवहारऋजुसूत्रशब्दसमभिरूढैवंभूतानया एवचाप्या रखयो द्रव्य मेवार्थी स्तौति चादित्वा द्रव्यार्थिको व्यतरन्ति इतरेतु पर्याय एवार्थी स्तो
ति वादितवा पर्यायार्थिकनये तदेव सुभमनतावयचे द्रव्यार्थिकयामित्यं वस्तु पर्यायार्थिकत्वमित्य मितिनित्यामित्य स्वस्थिति प्रत्येकपक्षोक्तदोषाभावो शुद्ध
मागरादिव दिति एव नैगम संग्रहव्यवहारप्रकृति रिति उभय सम्यग्विषयसमय सप्तभङ्गविभासएयनिर्णय एवंविधसुखदुःख बंधमोक्षादिसंभवोति ॥ १
उक्त सूत्रार्थिकनिर्युक्त्यनुगम एतदेव मधिकृतसूत्र माश्रित्य सूत्रानुगमसूत्रालापकनिक्षेपसूत्रस्पर्शिकनिर्युक्त्यनुगमतत्वोपदर्शिता भाराधितय सक्रम भा
षकारवचन गतयथा सूत्रंसूत्रानुगमो सूत्रालापकनिक्षेपो सूत्रस्पर्शिकनिर्युक्ति नयाश्चसमगंतुमर्वतिति ॥ १ ॥ एतेषा स्थाय स्विषय इत्तो भाष्य
कारेण शीरकल्पोपोक्तु सपथ्योर्वंसुर्यसुत्रानुगमो सूत्रालापकनासो नामाद्यासविनियोग ॥ सूत्रस्पर्शिकनिर्युक्ति नियोमोसेस्थोपयत्वाद पार्वसोपिवनि
गम नयाइमयमोमरोत्तोइति ॥ २ ॥ एव म्मतिपूर्व स्थय मनुसरणीयं भवन्तु सर्वेपार्श्व अपि स्थिविरैय भविष्याम इति व्याख्यात भगवता तत्सूत्रो प्यते
तत्र सकलपदार्थानां सम्यक्मिथ्याज्ञानचरणगुणात्मे विपर्ययवर्त्तेनो प्रयोगनयना स्यात्मन सर्वपदार्थप्राधान्य मत स्वविचारं तावत्रदायाय ॥ एगेआया
एको न वाचिरूप आत्मा जीव यद्यपि दितिमस्थते तत्र यतति सतत मवगच्छति यतसातत्यगमन इतिवचना सतधातो र्गत्यर्थत्वा इत्सर्वागोप्य आत्मा
र्थेत्वा इनवरत आततीति निपातना दात्मा जीव उपयोगलक्षणत्वा इस सिद्धसंसार्यवस्थायां प्युपयोगभावेन सतताववोधभावात् सतताववोधाभावे चा

॥ एगेआया ॥

जीव एकवैज्ञानदर्शन चारित्ररूप अथवा चेतनालक्षणजीव ॥ • । • । • । • ।

जीवस्प्रसङ्गात् धर्मोदयस्य पुनः जीवत्वाभावात् भावेषा आत्याद्योना अपि तथात्वप्रसंगात् एवंच जीवानामित्यात्मुपगमाभावप्रसङ्ग इति यद्वा यततित स
ततं गच्छति सर्वोयान् प्राणादिपर्यायान् निष्कात्मा नन्वेवमाकाशादीना मप्यात्मप्रव्यपदेशप्रसङ्ग स्तेषामपि स्वपर्यायेषु सततगमना इत्यत्रा यपरिणा
मिलेना बहुल प्रवृत्ता इति नैवं व्युत्पत्तिमात्रनिमित्तत्वा स्य उपयोगस्यै यत्र प्रवृत्तिनिमित्तत्वा त्योपयोगवत्यात्मा नाकाशादि रिति यद्वा संसारापेक्षया
नानागतिषु सततगमना मुक्तापेक्षया च मूततद्गतत्वा दात्मेति तत्र चेतनं कर्थंचिदेव तथाहि द्रव्यार्थितये कस्य मेकद्रव्यत्वा दात्मनः प्रदेशार्थतया त्वनेक
त्व मसंख्येयप्रदेशात्मकत्वा त्पर्येति तत्र द्रव्यंच वस्त्वंर्थेति द्रव्यार्थे स्तस्यभावो द्रव्यार्थता प्रदेशगुणपर्यायाधारता यवयविद्रव्यते तियावत् तथा प्रकृष्टो देश
प्रदेशो निरवयवोंऽश सवासावयवेति प्रदेशार्थ स्तस्य भावः प्रदेशार्थता गुणपर्यायाधारावयवसमवायावर्त्त तियावत् अन्वयमपिद्रव्य मेव नास्ति विकल्पद्वयेन
तस्या युज्यमानत्वात् परविकल्पेन यथा हि यवयविद्रव्य मवयवेभ्यो भिन्न मभिन्नं वा स्या च ताव दभिन्न मभेदेहि यवयविद्रव्यत्व दवयवाना मेकत्व स्या द
वयवा वा ऽवयविद्रव्यस्या प्यनेकत्वं स्या दन्यथा भेदएव स्या दिरुद्धधर्माध्यासस्य भेदनिबन्धनत्वादिति भिन्नंचे न्न तेभ्यः तदा किं मवयवि द्रव्यं प्रत्येक मव
यवेषु सर्वात्मना समवेति देशतो वेति यदि सर्वात्मना तदा यवयवसंख्य मवयविद्रव्यम् स्यात् यस्य मेकत्व त्वस्य यत्र देशे समवेति ततो ये देशे एकस्येषु तत्र
तते तेष्वपि देशेषु तस्यार्थ प्रवर्त्तते देशतः सर्वतोवा सर्वत चे त्तदेवदूषणं देशतये त्तेष्वपि देशेषु तत्र भिन्नादि रनवस्था स्या द्वितयो पते यदुक्त भिकल्पद्वयेन
तस्या युज्यमानत्वा दिति तदयुक्त मेकान्तेन भेदाभेदयो रनभ्युपगमात् यवयवा एवहि तथाविधैकपरिणामवत्वा यवयविद्रव्यतया व्यपदिश्यन्ते त एव च
तथाविधविविधपरिणामापेक्षया यवयवा इति यवयविद्रव्याभावेतु एते पटावयवा एतेच पठावयवा इत्येव मसङ्कीर्णावयवव्यवस्था न स्या त्तयाच प्रति
नियतकार्यार्थिना प्रतिनियतवस्तूपादानं नस्या त्तयाच सर्वं मसमञ्जस मापन्नोपघ्नेव स्वविवक्षाविशेषा पठाद्यवयवाना प्रतिनियतता भविष्यतीति चेन् च

त्वं कोशलं सदस सविवेकमविशेषो ऽवयविद्रव्य मिति यदोच्यते विरुद्धधर्माध्यासोभेदनिबन्धन मिति तदपि न युक्तं प्रत्यक्षसंवेदनस्य परमाण्वपेक्षया भ्रान्तत्वेन संशयकारापेक्षयाभ्रान्तत्वेना भ्युपगमादिति यदिनामस्थाणुत्वमभ्रान्तत्वं चास्य मित्येव मथापि यातु प्रत्यक्षता इति किंच विद्यते अवयविद्रव्य मव्यभिचा रितया तथैव प्रतिभासमानत्वा दवयववदीक्षत वा नचाय मसिद्धो हेतु स्तथा प्रतिभासस्यानुभूयमानत्वा न्नाप्यनैकान्तिकत्वविरुद्धे सर्वस्यापि वस्तुनः प्र तिभासाधीनत्वा द्वस्तु व्यवस्थानस्यापि यतो सिद्धे इति। अथ तु मामा अवयविद्रव्य केवल मात्मा न विद्यते तस्य प्रत्यक्षादिभि रनुपलभ्यमानत्वा दिति तथा हि न प्रत्यक्षग्राह्योसा वतीन्द्रियत्वात् नाप्यनुमानग्राह्यो ऽनुमानस्य लिङ्गलिङ्गिनो साध्या सम्बन्धदर्शनेन प्रवृत्ते रिति आगमगम्योपि नासा वागमाना म न्योन्यविसंवादा दित्युच्यते नैव मनुपलभ्यमानता विशेषपुरुषान्विता सकलपुरुषान्विताया यदि एकपुरुषान्विता न तया आत्माभाव सिध्यति सत्यपि वस्तुनि तस्या सम्भवात् नहि [illegible] पुरुषविशेषस्य घटाद्यर्थग्राहक प्रमाणं न प्रवृत्त मिति सर्वत्र सर्वदा तदभावो निश्चेतुं शक्य इति नहि प्रमाणनिवृत्तौ प्रमेयं विनिवर्तते प्रमेयकार्यत्वात् प्रमाणस्य नच कार्याभावे कारणाभावो दृष्ट इत्यनैकान्तिकतानुपलम्भहेतो सकलपुरुषान्वितानुपलम्भस्त्वसिद्ध इत्यसिद्धो हेतु नह्यसर्वज्ञेन सर्वे पुरुषा सर्वदा सर्वात्मना मपश्यन्तीति वस्तुमस्य मिति किंच विद्यते आत्मा प्रत्यक्षादिभिरुपलभ्यमानत्वात् घटव दिति नचाय मसिद्धो हेतु यतो ऽहमित्यादिप्रत्ययेनात्मा ग्राह्यत एव आत्मापि ज्ञानाद नन्य आत्मधर्मत्वात् ज्ञानस्य तस्य च स्वसंविदितरूपत्वात् स्वसंविदितत्व च ज्ञानस्य नोचेत् ज्ञान मुत्पन्न मासी दित्यादिस्मृतिरुपगमात् नह्य स्वसंविदिते ज्ञाने स्मृतिप्रभवो युज्यते प्रमाणान्तरज्ञानस्यापि स्मृतिगोचरत्वप्रसङ्गा दिति तथा देव [illegible] आत्मा गुणी प्रत्यक्ष एव रूपगुणप्रत्यक्षत्वे घटगुणिप्रत्यक्षवद् इति [illegible] गुणो विज्ञानमो [illegible] प्रत्यक्षो ऽस्मदादिप्रत्यक्षगुणो गुणभित्तमतत्त्वमोक्षमा ॥ १ ॥ तथा प्रमोक्ष्योऽमुषी शोध्यगुणैर्विमतुणामशोषमो प्राप्तगुणमैतमतो वेषयमोवोऽणुषोसत्त्व ॥ १ ॥

वरपवोतोपर्व गुपिवोमवाद्योविपवस्ता गुपमेतम्मइपाभोजोर्वमिकुतोविपारोर्यति ॥ २ ॥ येतुसव्वसपदार्थसार्वस्वरूपाविर्भावनसमर्थमागमत रतेर्मा
मशोरमनेव मस्व रति तथा ऽनुमानगम्यो प्यात्मा तथाहि विद्यमानकर्तृक मिदं शरीर भोग्यत्वा दोदनादिव व्योमकुसुम विपक्ष इव कर्ता जीव इति
मतोरनकनृभूत पात्मा सिद्धतीति साध्यविरुद्धोहेतु रिति नैवं संसारिणो मूर्त्तत्वेना प्यभ्युपगमा दाइच जोवत्तासोजीवे। सम्मविरुद्धोपितेमर्ददोप्पा
मोत्ताद्यनंगापो तत्तापमारिपोदोसोत्ति ॥ १ ॥ नचाय मेवात्मो मदुव सिंध्यविनाभूतलिङ्गोपलम्भमतिरेकेण गुमानस्ये वान्ततो ऽमवृत्ति रिति वसिता
दिनिद्रविमेयम गृहाण्यस्मिन्नविनाभावगृहणमन्तरेणापि गृहममवसस्यंमात् मच ऐवपव गृहो येनागवदेये दर्शनमविनाभावगृहणमियामवं भवतीति च
मच मोमेगंतोजमा णिगेहिमममपरिहपुमीवि गवलिंगहारिसवाभो मराप्पमेपोसरीरमिति ॥ १ ॥ चामसगम्यर्मसारस्मन एगेभावा पतपवषपमा च चा
प्यागमान्तरे विसंवाद सभावमीय मुनिपिताम प्रवीतत्वा ददेति वस्तुपसाम्यमव तत्तु ज्ञानान्तराव्यवसेयमिति किं वा त्मामावे चातिज्ञरपादय स्तथा
मेतोभूतपिवपितामवादिकृतानुमहो मया तो च न मातुरिति चाममगु ममदेयत्वमवस्ममभ्युपगन्तव्यं । निरवयपत्वे तु वस्त्रावपवानामेकत्व मसङ्ग
मत्ययपव सभावमुपलब्धिपपत्र चेति सप्रदेश आत्मा मत्ययम चैतन्यस्वपपतनुलोपलम्भात् मतिगृीवाव्यवपवमुपलभ्यमानरूपगुणघटपदिति स्थापित मेत
द्रव्यायपर्येण चात्मेति पपचा एवमात्मा कर्तृंचि दिति प्रतिपत्त मध्यम एपरापरमाष्ठकतकुमारतवयनरनारकत्वादिपर्यायै रुत्पादविनाशयोमेपि द्र
व्यातसेपत्ता इम यपविशि चायतनपयोये रुत्पपते मवति च यस्त तथापि स्वपरपर्यायरूपानन्तधर्मात्मकत्वा त्तस्य न सर्वथानायोग इति भावप
नहि कमशाविनाशोपप्रभावमितमात्मिनि सपरपत्रायार्थत वस्तुवोधरुपोतुत्तात्ति १ किंच प्रतिपत्त वनिषो भाषा एवैतरमा वचना प्रतिपाद्यस्य यत्
पचभंगविज्ञान मुपजायते तदसंख्यातसमयेरेव चाक्यार्थवचपरिणामा ज्जायते नतु प्रतिपत्तु प्रतिसमयं विनाशितानि यत एवेव मध्यमपर पदवाक्यं

ख्यातीतसमयसंभूत संख्यातानि चावदावि पदं संख्यातपदं च चाक्षं तदर्थंमध्यपरिणामा च सर्वं क्षणभंगुरमितिसंविज्ञानं मपि तथाउक्तं समयमष्टचेति
भावय कद्यास्य चविधं विचारंभरमेसुखापोपि तदसंखसमयसुतत्व मध्यपरिणामपोशुत्त ॥ १ ॥ नयपरसमयविचारे व्येविशेषसरपियपसस
संपात यसमारंभसपेस्यारंपर्यताद ॥ २ ॥ संक्षेप्यपर्यंतवं तदस्यमध्यपरिणामपोदोप्या समस्तपभंगप्या यंतदशुत्तसमयनहस्सति ॥ १ ॥ तथा सर्वेषां
च्चेदे उत्पादयो न घटते पूर्वसंस्कारागुहतावेव तेषां गुम्यमानस्या दावय तेत्तोसमोविनाशोसारिस्तविपक्षपययारीपि मस्मयपक्षाचमापया सम्यासय
गासंसयमासमिति १ ॥ तत्र दति प्रोपि समो ऽस्यादिपेद समो स्यागि धाहम्ब साधर्म्य विपक्षो वैधर्म्य मत्त्ययो ऽवबोध शेषपदानि मतीतानि इ
त्यादि बहुवक्तव्यं तत्तु सामान्यरावमेव मिथि तदेवं चात्मा स्थितिभवनभंगरूपापेक्षया नित्यो नित्यत्वावेत्तो भवनभंगरूपापेक्षया समित्यो ऽनित्यस्या वा
नेव इति भावय चमपेतपव्ययमर्यपरमभववविपित्तपरिणामे ठिदविभवभंगरूवं पियाविपारतोभिमवति ॥ १ ॥ एवंच सुखदुःखबंधमोक्षो उभयनयमया
ववतिवोशुत्ता एमयदपरिणाए समस्तवहारयोच्छित्तिरिति ॥ १ ॥ अथवा एवमात्मा कथंचिदेवेति मतो जैनानां नहि सर्वथा किंचिदस्तु एकमनेकं
चास्ति सामान्यविशेषरूपत्वाद्वस्तुन अथ यूयां विशेषरूप मेव वस्तु सामान्यविशेषेभ्यो भेदाभेदाभ्यां चिंत्यमानस्य योगा तथाहि सामान्य विशेषेभ्यो
भिन्न मभिन्नं वा यद्यभिन्न मुपलंभाभावात् यथा नुपलभ्यमानमपि सत्तया व्यवहर्तुं मत्वं खरविषाणस्यापि तथाप्रसंगात् अथाभिन्नमितिपक्ष स्तथाप
सामान्यमात्रं वा स्याद्विशेषमात्रं वेति नह्येकस्मिन् सामान्य मेकं विशेषा अनेकरूपा इत्यसत्योर्वा वस्तुव्यवस्था स्यादिति अत्रोच्यते नास्माभिः सामान्य
विशेषयो रेकान्तेन भेदो ऽभेदो वा भ्युपगम्यते अपितु विशेषा एव प्रधानीकृता तुच्छरूपा उपसर्जनीकृततुच्छरूपा विवक्षया प्रधानसाना विशेषा व्य
पदिश्यन्ते तएवच विशेषा उपसर्जनीकृता तुच्छरूपा प्रधानीकृततुच्छरूपा समतया प्रधानमाना सामान्य मिति व्यपदिश्यन्त इति भावय निर्विशेषं

पर्यायाव भेदा सामान्यमुच्यते तयोर्विशेषाद्यासामान्यं विशिष्टतंत्रमुच्यते ॥ १ ॥ वैषम्यसमभावेन भावमात्रात्मैकिका मकत्वयक्लिसामान्य विशेषस्थिति मात्मनोति ॥ २ ॥ तदेवं सामान्यरूपेणात्मा एको विशेषरूपेण त्वनेको नवात्मनात्युक्त रूपमास्ति एवात्मव्यतिरेकेण ज्ञेयात्मना मनात्मत्वमसगा रिति तत्पदत्व सुपयोग उपयोगलक्षणोऽजीवरतिपक्षा तदेव सुपयोगरूपेणसमपत्ता सर्वे एवात्मान एकरूपा एवच एकसमपत्ता देव मात्मेति ॥ यथा अथमरत्नमुचरुत्पादिसंवेदने प्रसंख्यायत्ता देव मात्मेति भावनीय मिति इह सर्वसूत्रेषु कथंचिद् अनुसरणीयं सर्वविवादस्या विरोधे सर्ववस्तु नयस्याभिप्रायताव् उक्तं च स्यादाशयनमस्तके पंडितासका किया लोकवितथमाविनो नैवसामत्समासते ॥ १ ॥ तथा नयास्तवस्यात्पदसत्त्वाति ता रसोपविद्धायसोदयात्व भवंत्यभिमितफलायतस्ततो भवस्मार्याः प्रणताहितभिव इति ॥ २ ॥ आत्मन एकत्व मुतत्वायतो भ्युपगच्छन्नि रपि केचि द्विकयत्ते तस्या भ्युपगत मतं व्यभिराकरणाय तत्र क्रियावत्व मभिधित्सु क्रियाया कारणभूत स्यैकस्वरूपं प्रथम ताव दभिधातुमाह एगेदंडे एको दि ण्डविनिर्मिस्तात् दंडयते श्रामार्वेयमोपकारतो ऽसारोक्रियते भात्मा मेनेति दंड सच द्रव्यतो भावतश्च द्रव्यतो यष्टि भावतो दुःप्रयुक्त मन मसति ॥ तेन वा रमा क्रियां करोतोति तामाह एगाकिरिया एका पविवक्षितविशेषतया करणमात्रविषयत्वात् परक्रिया कायिक्यादिकेति अथवा एगेदंडे एगा क्रियेति सूत्रयेना रमनो ऽक्रियत्वनिरासेन सक्रियत्व मात्र यतो एषक्रियासम्बाध्यो नयोरन्य क्रियासामान्यमि प्रतिपादितानि यथार्थस्त्वानवंडकक्रिया

॥ एगेदंडे एगाकिरिया ॥

माठें मने वचने कायायें दंडोये ते एकदंड १। एक क्रियाते कायर मणवचो पापकर्मे ते क्रिया १ ॥

दंडकसारंकडिविपर्यांतर्दंगुप पंचविधोदृष्ट परमाबापवरवसमयो दंडयन्देमयहीत साप चैवल जमसामान्यार हिति विवायपेनतु मृगामत्सया रुणाद्दानप्रमया पथारिमको मामप्रत्यया मिथ्दैयमसमया मायामलया लोमप्रत्यया ऐर्यापथिकोति पञ्चविधा क्रियोक्ता तदेवंलय चरणमाचसामाध्या दि ति दंडक्रियाचोय सद्रूपविशेष मुपरिष्टाद् वक्षामएव यशाम इति पक्रियावत्वनिरासयारमग एव यै किवा क्रियावत्व मभ्युपमत मात्मन एके भोक्तृत्व मभ्युगमत मतोमक्रियानिवर्त्तनसामर्थ्यसति भोक्तृत्व मपपद्यते तदेवं क्रियावत्वं नासेति मम प्रकृतिः करोति पुरुषस्तु भुंक्ते प्रतिबिम्बन्यायेनेति तदयुक्तम् मपचित्तनिवसमतरेष प्रकृत्यपधानयोगेपि प्रतिबिंबभावानुपपत्ते प्रतिबिम्बस्य रूपान्तरपरिणमनरूपत्वात् मम प्रकृतिविकाररूपाया बुद्धेरेव सुखाद्यप्रतिबिंबन मात्मन स्वरूपं नात्मनोम इति वस्तुता तस्येति मायापि बहुमतत्व मात्तु स्वागोतरादत्पर्वसमिति । उक्तरूपस्या रमन मा भारस्वरूपनिरूपणाय एगेलोयऽत्ति एको यचिपपितासंख्यप्रदेश मथस्तिर्यगादिदिग्भेदस्तया लोक्यते दृश्यते केवलालोकेनेति लोक धर्मास्तिकायादि द्रव्याधारभूत याकाशविशेष स्तदुक्तम् धर्मादीनां वृत्ति द्रव्याणां भवति यत्र तत् क्षेत्रं तै द्रैव्ये सह लोक स्तद्विपरीत मलोकाख्यमिति अथवा लोको मा मादि रटधा यापच नामंठवणादविए खेत्तेकालेभवेयभावेय पज्जवलोयएतहा पडविधो लोयनिक्खेवोत्ति । १ । नामस्थापने सुज्ञाते द्रव्यतो लोको जीवाजीवद्रव्यरूप स्तिवोलोक पयवामसाच मनंतमदेशात्मकम् वानलोक समयावलिकादि भवलोको नारकाघेव स्वभिम् २ मवीवर्त्तमानो यथाम

॥ एगेलोए ॥

१३ राजरूप एकलोक षट्द्रव्यक् वाचक १ ॥

गुणलोको द्रव्यलोकादिति भावलोक औदयिकादयो भावाः पर्यवलोकस्तु द्रव्यादीनां पर्यायमात्ररूप इति एतेनाधिकृत केवलज्ञानालोकनीयत्वसामान्यादिति लोकव्यवस्था प्रत्येके तद्विषय भूतैकत्ति भवतीति तमाह एगेऽलोए एको धर्मास्तिकायप्रदेशाव्यवच्छिन्नभेदत्वात् एकोऽलोकोऽनुदासा यत्र नालोकनी यतया केवलालोकेन तथाप्या लोकमानत्वादिति ननु लोकैकदेशत्व मन्यथा तदेतदर मपि बाधकप्रमाणाभावात् संभावयामो लोकं पुनरलोकोऽस्य दे शतोऽप्यनवस्थात् नव नसावस्थीत्वप्रसंगात् यश्चो वैनेकत्वेन प्ररूप्यतइति उच्यते नानुमानादिति तदेव विपमाणविपक्षो लोको व्युत्पत्तिम च्छुद्धपदाभि धेयत्वा दिह यद् व्युत्पत्तिमता शुद्धपदेना भिधीयते तस्य विपक्षोऽस्तीति दृष्टान्तं यथा घटस्या घटः व्युत्पत्तिमच्छुद्धपदवाच्य श्च लोक स्तस्मा दविपक्ष इति यश्च लोकस्य विपक्ष सोऽलोक स्तस्मा दस्त्य लोक इति यत्र नञोको ऽलोकादिति घटाद्येका मेवा न्यतमो भविष्यति विशिष्ट वस्त्वन्तरस्यासमवे ति नैव यतो निषेधस्यापा विधेयस्येषा गुरूपेण भवितव्यं निषेधश्च लोक स्याकाशमविशेषो भावादिद्रव्यभाजन मतः यस्य लोकेनाप्याकाशविशेषेणैव भवितव्य यदीह पंडितदत्युक्ते विशिष्टज्ञानविकल चेतन एव गम्यते न घटादि रचेतन स्तद्वदलोकेनापि लोकानुरूपेणैवेति भावः लोकश्चालिविकलो सुखत्वयो पपत्तेश्च पदार्थस्य 'प्रेरक' नयवादोपेयमतो "गुरु" गमिर्विशालोकस्तद्रूपोति ॥ १ ॥ लोकालोकयोश्च विभागकारणं धर्मास्तिकायोतस्तत्स्वरूपमाह एमेघम्मे एक प्रदेशायतया ऽसंख्यातप्रदेशात्मकत्वेपि द्रव्यार्थतया तस्यैकत्वात् जीवपुद्गलानां स्वाभाविके क्रियावत्वे सति परिणतानां तत्स्वभावधारणा

॥ एगेधम्मे ॥

एक अलोकादि अनन्तो केवलमां एकलो भावाय छे। धर्मास्तिकाय एकज अखण्ड स्वरूप छे।

र्मं यथा मत्स्यानां प्रदेशानां संघातात्मकत्वात् कायो क्रियावत्त्वि धर्मास्तिकायविषयस्वरूपमाह । [एगे धम्मे] एको द्रव्यतएव न धर्मोऽधर्मो धर्मा स्तिकाय इत्यत्र धर्मोऽपि जीवपुद्गलानां गत्युपष्टम्भकारी भवतु तद्विपरीतत्वात् स्थित्युपष्टम्भकारीति गत्युधर्मास्तिकायाधर्मास्तिकाययो कथमस्तित्वाव गम प्रमाणादिति ब्रूम स्वसंवेद्य इव मति' स्थितिश्च सकललोकप्रसिद्ध कार्यं कारणं परिणाम्यपेक्षाकारणायत्तात्मलाभत्वं यत्तंवि घटादिकार्येषु तथाहर्मना त्यायतः मृत्पिण्डभावेऽपि दिग्देशकालाकाशप्रकाशाद्यपेक्षाकारणमंतरेण न घटोभवति यदा सा स्थितिपिण्डमाषादेव स्यात् नपभवति मतिस्थितो यपि जी वपुद्गलास्वपरिणामिकारणभावेऽपि नापेक्षाकारणमन्तरेणभवितुमर्हतो इष्यतेच तद्भावो ऽत एतस्ता गम्यते यदपेक्षाकारणम् सधर्मो धर्मश्चेति भावार्थ गतिपरिणामपरिणतानां जीवपुद्गलानां गत्युपष्टम्भको धर्मास्तिकायो मत्स्यानामिव जलं तथा स्थितिपरिणामपरिणतानां स्थित्युपष्टम्भको ऽधर्मास्तिका यो मत्स्यादीनामिव मेदिनी विपक्षता अर्थावा प्रयोग च गतिस्थितौ अपेक्षाकारणवत्यौ कार्यत्वात् घटवत् विपक्ष लोकोस्य यपिर नभावोवेति किंच यदीका भ्युपगमे सति धर्माधर्माभ्यां लोकपरिणामकारिभ्या भवत्य भवितव्य मन्यथा कायसाम्ये सति लोकालोकाविति विशेषोनस्यात् तथाच विशिष्टपदार्थाभ्यां न तिमता मात्मनां पुद्गलानां च प्रतिघाताभावा दनवस्थान मत सम्बन्धाभावात् सुखदुःखबन्धादिसंव्यवहारो न स्यादिति यतश्च तत्राधस्था २ लोकपरिच्छे दकारिणोक्ता इत्यत्रासेवने लोकालोकोत्तिकाभेदौ ॥ १ ॥ लोकविभागाभावे पतिघाताभावपोषपत्यात्व संव्यवहाराभावो सर्वथाभावयोर्यौस्मत्ति

॥ एगे अधम्मे ॥

अधर्मास्तिकाय एक वे विरराखे ते ।

। २ । आत्मा च जीवपूर्ति ईर्यापथिकीक्रियायोग्यपुद्गलोपगृहीत सद्बन्ध सम्भिवय कर्मत्वावभात इति बन्धनिरूपणावाद [एगेबंधे] बन्धमबन्ध सकषायत्वात् जीव कर्मणो योग्यान् पुद्गलान् दत्ते यत् स बन्ध इतिभाव स च प्रकृतिस्थितिप्रदेशानुभावभेदात् चतुर्विधोऽपि बन्धसामान्या देक सुतवसत पुनर्बन्ध भावात एको बन्धर्वि अथवा द्रव्यतोऽन्यो निगडादिभि भावत कर्मणा तयोश्च बन्धनसामान्या देकोबन्ध इति ननु बन्धो जीवकर्मणो संयोगो ऽभि प्रेत सचत्वा दिमा नादिरथितोया सा दितिकमनादय तत्र यथा दिमानितिपत्र स्वस्ता कि मूर्वमात्मा पश्चात् कर्म पत्र पूर्व कस्य पश्चादात्मा उत यु गपत्तयारामानो सम्प्रसूतेतामिति पक्षोविकल्पा तत्र मताव त्पूर्वमात्मसमूति सभाव्यते निर्हेतुकत्वात् खरविषाणवत् अकारणप्रसूतस्य वा ऽकारणत एवो परम स्या दया नादिरथा क्षा तथाव्यकारणत्वा याच कर्मणो योग उपपद्यते नभोवत् अकारणेपि कर्मणो योग स्या तर्हि स मुक्तस्यापि स्यादिति यथा सा आत्मा नित्य मुक्तएव तर्हि कि मोक्षविभ्रासवा बन्धाभावेन मुक्तव्यपदेशाभाव एवा काशवदिति नापि कर्मण प्राक् प्रभूति रिति द्वितीयोवि कल्प संगच्छते कर्तुरभावात् न च क्रियमाणस्य कर्मव्यपदेशो भिमत अकारणप्रसूते वा कारणत एवोपरम स्यादिति युगपदुत्पत्तिलक्षणतृतीयपक्षोपि नयमो ऽकारणत्वादेव न च युगपदुत्पत्तौ सत्या मयं कर्ता कर्मेद मितिव्यपदेशो युक्तरूप सव्येतर गोविषाणवदिति अथा दिरचितो जीवकर्मसंयोग इति पत्र स्तत्रा नादित्वादेव नात्मकर्मवियोग स्या दात्माकाशसंयोगवदिति यदोच्यते चादिमत्संयोगपक्षदोषा अनभ्युपगमादेवनिरस्ता यथादिरचितजीव

॥ एगेबंधे ॥

एव एकत्वे समरूपसमाबन्धी संघाते ।

कर्मयोगो ऽभिधीयते अनादित्वात् चात्मकर्मवियोग इति तदयुक्तं अनादित्वेऽपि संयोगस्य वियोगोपलम्भे कांचनोपलयोरिवे ति यदाह "जह वेह कंचणोवलस
संजोगोऽणाइसंतइगओवि वोच्छिज्जइ सोवायं तह जोगो जीवकम्माणं ॥ १ ॥ तथा अनादेरपि सन्तानस्य विनाशो दृष्टो बीजाङ्कुरसन्तानवत् आह च "अ
ण्णयरमणिव्वत्तिय कज्जं बीयंकुराण जं विहियं तत्थ हओ संताणो कुक्कुडिअंडाइयाणं च" ॥ १ ॥ अनादित्वस्य सद्भावेऽपि भव्यात्मनां कस्यचित् मोक्षो भवतीति मो
क्षस्वरूपमाह । [एगेमोक्खे] मोचनं कर्मपाशवियोजनमात्मनो मोक्षः आह च "कृत्स्नकर्मक्षयान्मोक्षः" । स चैको ज्ञानावरणादिकर्मापेक्षया अष्टविधोऽपि मोक्ष
सामान्यात् मुक्तात्मा पुनर्मोक्षाभावात् ईषत्प्राग्भाराख्यक्षेत्रस्य चैकत्वात् अथवा द्रव्यतो मोक्षो निगडादितो भावतः कर्मतः क्षयोऽपि मोक्ष
सामान्यादेको मोक्ष इति अनपर्यवसानो जीवकर्मसंयोगो नादित्वात् जीवाकाशसंयोगवदिति चेत् न मोक्षस्य कर्मवियोगरूपता इष्टा यच्चोच्यते अनादि
त्वादित्यनैकान्तिको हेतुः धातुकाञ्चनसंयोगो अनादिः सन् सपर्यवसानो दृष्टः क्रियाविशेषादेवमयमपि जीवकर्मसंयोगः सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्रैः सपर्यवसा
नो भविष्यति जीवकर्मवियोगश्च मोक्ष उच्यत इति ननु नारकादिपर्यायसद्भावः संसारो नाम तेभ्यश्च नारकत्वादिपर्यायेभ्यो भिन्नो नाम नास्ति कश्चिज्जीवो
नारकादय एव पर्याया जीवाः तदनर्थान्तरत्वादिति संसाराभावे जीवाभाव एव नारकादिपर्यायसरूपवदित्यसत् पदार्थो मोक्ष इति आह च "संसारत्ता
दिभावो संसारोऽनारयमाइभिन्नोय को जीवोतमयंपि तयाभावे जीवनासोत्ति" ॥ १ ॥ अत्र प्रतिविधीयते अयुक्तं नारकादिपर्यायसंसाराभावे सर्वथा जीवा

॥ एगेमोक्खे ॥

एक मोक्षो सकल कर्मक्षयरूप ।

भावरूपा नर्वान्तरत्ना मारकादिपर्यायरूपम् दिति यम मनैकातिकोहेतु र्षेयो सुद्धियायावा नर्वान्तरत्वसिद्ध यथ सुद्धिव्याभारविनाये देमविनाय इति तद्भावकादिपर्यायमापन्नामि सर्वथा जीवभावो भविष्यतीति पावच भविनाशकादिपयायमेतनासंभिसम्भवानासो जीवद्रव्यमभयो सुद्धानामेव्यवेम यति ॥ १ ॥ यपिच बन्धकपोसंसारो वद्धासेतस्तुव्यपनासो जीवतमवाप्यक्य तमासेतस्यजोनासोत्ति ॥ १ ॥ मोघय पुण्यपापक्षया इयतोति पुण्यपापयो स्वरूपं याच्य मताविपि मोक्षस्य पुण्यस्य प्रभसरूपसावस्यात् पुण्यं तावदाच [एगेपुण्णे] पुण्यगुभे इतिवचनात् पुणतिशुभोकरोति पुनातिवा पवित्रो करो मात्मानमिति पुण्यं शुभकर्मपद्येत्यादिविपलानियबिधं यथोक्त सायं १ उचागोयं २ नरतिरिदेवाउ ५ नामपयाउ मणुयदुगं ७ देवदुगं ८ पंचिंदियजाइ १ वडपयणं ११ ॥ १ ॥ पंचोभंमतियंपिय १८ संघयणसंठाण पउमं १९ पउमंपियसंठाणं वन्नाइचउक्कसुपसत्यं २४ ॥ २ ॥ अगुरुलघु २५ परायायं २६ उस्सासं २७ आयवंच २८ उज्जोयं २९ सुपसत्थविहगइ १ तसाइदसगंच १ निमाणं ४१ ॥ ३ ॥ तित्थयरेणंसहिया पायासापुष्णपगईओत्ति ॥ ४ ॥ एवं द्विचत्वारिंशविधमपि भवया पुद्गलानुभावपापातुबन्धिभेदेन द्विविधमपि भवया मतिमान्द्यविविधमाना रूपमथभेदमपि पुण्यसामान्यादेकमिति यथ कर्मैव गपिद्यते प्र मायमोचराविवाक्त्वसात् अयविसारवद्विति ज्ञत पुण्यकर्मसत्तेति यसत्य मेत यतो गुमानसिद्धं कर्म तयाहि सुपदु खानुभूते हेतु रस्ति कायत्वा दंकुरस्येव बीजं यस्य हेतुस्तत्कर्म तथाहरिद्वर्यति पात्मनि सुपदु खानुभूते इष्टस्य हेतु रिष्टानिष्टविषयप्राप्तिमयो भविष्यति किंमिह कर्मपरिणामसा नहि

॥ एगेपुण्णे ॥

पुण्य एकके समकर्म ४२ प्रकृति रूप ।

इदं निमित्तमपास्य निमित्तान्तरान्वेषणं तु रूप मिति नैर्यथ्यभिचारात् इत चोक्ति यतो रिष्टयन्नादिविषयपुष्पसाधनसमीतयोरेकस्य तत्फलेविशेषो दु
खानुभूतिमयो यथा मिष्टसाधनसमीतयोरेकस्य तत्फलेविशेष सुखानुभूतिमयो नासौ हेतुमन्तरेण सम्भाव्यते यच तद्धेतुस्तथा सो तुल्य साधनानां विपर्य
सादिति पारिशेष्या विशिष्टहेतुमान् सो कार्यत्वा इटवत् यच समानसाधनसमीतयो स्तत्फलविशेषहेतुस्तत्कर्म तथा दर्शितकर्मेति भावः योगुपस्तपा
र्य पक्षेविशेषोनसोविचारेऽर्थ समस्तप्रयोगोपम प्रयोगहेतुमसेवस्यति ॥ १ ॥ किंच यत्पदेहपूर्वक मिदं बालशरीरं इन्द्रियादिमत्त्वात् यदि इन्द्रियादिम
तदन्यदेहपूर्वकं दृष्टं यथा बालदेहपूर्वकं युवशरीरमिन्द्रियादिमच्चेदं बालशरीरं तथादन्यशरीरपूर्वकं यच्छरीरपूर्वकं चेदं बालकशरीरं तत्कर्म तथा द
ति कर्मेति भावः बालशरीरदेहं तत्पूर्वदेहादन्यतापो प्रत्यावर्देहस्तु शुभदेहोपुण्यमिदकर्मेति ॥ १ ॥ नशुभकर्मसद्भावेपि पापमेवैकं विद्यते
पदार्थो अनुपलम्भमासित बहुपुष्पके सुखसुखते तत्पापः तेन तरतमयोगादपकृष्टस्य कर्मयत पापस्यपरमोत्कर्षे स्वतावमकत्तया तस्यैव तरतमयोगा पकर्षे
विषय मात्रापरिहारिकात्मा यावत् प्रकृष्टापकर्षे स्याद्या काचित् पापमात्रा प्रतिष्ठते तस्या प्रत्यंतसमप्रयत्ता मात्रापकर्षो तस्यैव पापस्य सर्वात्मना
यतो मोक्षः यथा अपथ्याहारसेवना स्मारोग्यं तस्यैवापथ्यस्य किंचित्किंचित्परिहारोपापम् सोकापथ्याहारस्य मारोग्यकर सर्वाहारपरित्यागाच प्राप्त
मोक्षति भावः पापुष्परिशेषभवा तरतमयोगादपकर्षपरिसंपोसुभवा तस्यैवस्यपरमोत्कर्षो प्रपत्लक्षतोपमरत्नापोति ॥ १ ॥ प्रयोच्यते यथुक्त मत्यंतापचितात्
पापात् सुखमकर्षं इति तदयुक्तं यतो येयं सुखमकर्षानुभूति सा स्वानुरूपकर्मप्रकर्षजनिता प्रकर्षानुभूतित्वात् दुःखमकर्षानुभूतिवत् यथाहि दुःखप्रकर्षा
नुभूतिः स्वानुरूपपापकर्मप्रकर्षजनिते तिवरा ग्रुपगम्यते तथेयमपि सुखमकर्षानुभूतिरिति स्वानुरूपपुण्यकर्मप्रकर्षजनिता भविष्यतीति प्रमाणफलमिति
पुण्यमतिपक्षभूतं पापमिति तत्स्वरूपमाह [पगीपाते] पापयतिगुण्डयन्त्यात्मानंपरतमपि बाध्यमानन्दरसमोपयति चपयतीति पापं तच मानावरणादित्य

योतिमेई बराह मार्वतरायसर्म १ दंसणच १८ मोहणीयवम्मीसं ४५ मक्खाय ४९ भिराउ ४० नीयागोएपमबमासा ५८ ॥ १ ॥ निरयदुगं २ तिरि यदुगं ४ आरपवबंध ८ पंचसंघयणा ११ संठाणाविमपंचग १५ ववाइयवमयसरवं १२ ॥ २ ॥ उवघाय २१ कुविहयगर २४ यावरदसगीयवौतिघोत्तोस १४ सम्मावोमिसियायो मासोर्पायपर्गरंपोन्र ॥ १ ॥ तदेव दयोतिभेदमपि पुण्यानुबन्धिमेदा द्विभेदमपिवा पमन्तसत्वाश्रितत्वादनन्तमपि वा ऽथमसामा न्यासेव मिति ननु पर्मसत्वेपि पुण्यमेवैक दर्पमतपविपपमूत स्याप दर्पादि उभायमपक्षाणां पुण्यादेव सिद्धे रिति तथाहि यत्परमप्रकृष्टं शुभफल मे तत्पुण्योत्कर्षस्य कार्यं यत्पुन स्तस्मादपकृष्ट मपकृष्टतर मपकृष्टतमंच तत्पुण्यस्यैव तरतमयोगापकर्षभिमस्य मावस्यरमपक्षपद्यामि परमप्रकर्षवीमस्य च पक्षस्य परमापकृष्टतमं शुभफलं वा काचित् शुभमावेऽप्यर्थ दुःखमप्रवयदति तास्पस तस्यैव परमापकृष्टपुण्यस्य सर्पोत्मना क्षये पुण्यात्मकपथ्यामावा यो भवति यथा स्वपथ्याहारसेवमात्पुंस परमारोग्यसुखं तदैव किंचित् २ पथ्याहारविवर्जना दपथ्याहारपरिपूर्ते रारोग्यसुखहानि सर्वथैवाहारपरिव र्जना मायमोच इति पथ्याहारोपमानमेव पुण्यमिति यदोच्यते येय दुःखप्रकर्षानुभूति सा स्वानुरूपकर्मप्रकर्षप्रभवा प्रकर्षानुभूतित्वा सौख्यप्रकर्षानुभूति वत् यथाहि सौख्यप्रकर्षानुभूति स्वानुरूपपुण्यकर्मप्रकर्षजनितेति सर्वा भ्युपगम्यते तथेयमपि दुःखप्रकर्षानुभूति स्वानुरूपपापकर्मप्रकर्षजनिता भविष्यतो ति प्रमाणफल मिति भावच कम्मपयपरिणामपिय तदयक्खपयपरिणायभूयपो सोक्खप्पगरिसमूर यहपुन्नपयरिसप्पमवत्ति ॥ १ ॥ तदिति दुःखमिति ॥ ५

॥ एगेपावे ॥

पाप ... प्रथम ... कर्म प्रकृति रूप ।

मार मुता सत सात्रविकारादेवा त पर मात्मभमात् एगाजीवाचमित्यादिना एगेचरित्ते इत्येतदन्तेन मन्येनाह । एगाजीवाचे मपरियाइत्ताविगुव्वणा । एमाजीवावति मतोत मपरियाइत्तत्तिं मपर्यादाय परित समन्ता इव्यहोला वैक्रियसमुद्घातेन बाह्यान् पुद्गलाम् या विकुर्वणा भवधारणीयवैक्रियशरीर रचनारूपणा म खिंस्वखिवरपतिमाने जीवे क्रियते सापर्केव प्रत्येक सेवला भवधारणीयस्मेति सवलवैक्रियशरीरापेक्षया भवधारणीयस्य कतमपत्यात् सर्वविदिति या पुन र्बाह्यपुद्गलपर्यादानपूर्विका सोत्तरवैक्रियरचनालक्षणा साच विना निमावपूर्वकत्वा देक्रियसध्विमत स्वाविगतिमता देवजीवस्य प्यनेकास्या दिति पर्यवसित मव बाह्यपुद्गलोपादानपयो त्तरवैक्रिय व्यपतीति कुतोऽवसीयते येनेद सूत्रे मपरियाइत्ता इत्यमेन तद्विकुर्वणा व्यवच्छिद्यते इतिचेदुच्यते भगवतीवचना तथाहि देवेणंभंतेमहड्ढिए जाव महाणुभागे वाहिरए पम्मले मपरियाइत्ता पभूएगवन्नंएगरूवं विउव्वित्तए गो गोयमाइेस मट्ठेदेवेणंभंते बाहिरए पोग्गले परियाइत्ता पभूइत्तापभूति इहविउत्तरवैक्रिय बाह्यपुद्गला दानाद्भवतीति विवक्षितमिति । एगेमणेत्ति । मननमन यो दारिकादिशरीरव्यापाराहृतमनोद्रव्यसमूहसाचिव्याज्जीवव्यापारो मनोयोग इतिभाव मन्यतेवा मनेनेति मनो मनोद्रव्यमात्र मेवेति तच्च सत्यादिभेदा द्नेकमपि संज्ञिना वा मसंख्यातभेद मप्येकमननलक्षणत्वेन सवमनसा मेकत्वादिति । एगावयीति । वचनम्वाक् औदारिकवैक्रियाहारकशरीरव्यापारा हृतवाग्द्रव्यसमूहसाचिव्याज्जीवव्यापारो वाग्योग इतिभाव इयच सत्यादिभेदादनेका प्येकैव सर्ववाचा वचनसामान्येन्तर्भावादिति । एगेकायवायामेति

॥ एगाजीवाण अपरियाइत्ताविगुव्वणा एगेमणे एगावयी एगेकायवायामे ॥

जीवने विकुर्वणा एकछे। देवता बाह्यो बाह्यपुद्गल गृह्या विना देवता भवधारणीय बांधे तिमस्येकेँ एकज बांधे पर्यागमो । ममरुपमोग एकछे । वचन यो

शिरोलोचादिका औपक्रमिकी लोचादिजनिते चैव द्विविधापि वेदना सामान्यादेकैवेति अनुभूतरसं कर्म प्रदेशेभ्यः परिशटतीति वेदनानन्तरं कर्मणः परिशटनरूपां निर्जरां निरूपयन्नाह [एगानिज्जरा] निर्जरणं निर्जरा विशरणं परिशटनमित्यर्थः सा चाष्टविधकर्मापेक्षया अष्टविधापि द्वादशविधतपोजनितत्वेन द्वादशविधापि अकामक्षुत्पिपासाशीतातपदंशमशकसहनब्रह्मचर्यधारणाद्यनेकविधकारणजनितत्वेनानेकविधापि द्रव्यतो वस्त्रादेः भावतः कर्मणामेवं द्विविधापि वा निर्जरा सामान्यादेकैवेति ननु निर्जरामोक्षयोः क्वः प्रतिविशेष उच्यते देशतः कर्मक्षयो निर्जरा सर्वतस्तु मोक्ष इति इयं च जीवो विशिष्टनिर्जराभाजनं प्रत्येकशरीरावस्थायामेव भवति नासाधारणशरीरावस्थायां अतः प्रत्येकशरीरावस्थस्य जीवस्य स्वरूपनिरूपणायाह [एगेजीवे इत्यादि] अथवा अनन्तरं सामान्येन प्रस्तुताध्ययनमुत्पादनीया जीवादयो नव पदार्थाः साम्प्रतं जीवपदार्थं विशेषेण प्ररूपयन्नाह। [एगेजीवेपाडिक्कएणंसरीरएणं] एक एव चैकः जीवितवान् जीवति जीविष्यति चेति जीवः प्राणधारणधर्मा सत्त्वः एक जीवः व्यतिगत स्वशरीर प्रत्येकशरीरनामकर्मोदयात् तत्र सैव प्रत्येकमेवं शीर्यमाणादिमात्रतया तेनप्रत्येककेन शीर्यत इति शरीरं देहः स्वदेवागुरुलघ्वितादिधर्मोपेत शरीरक तेन वर्तित तदाश्रित्य एको जीव इत्यर्थः अथवा एकारो वाक्यालङ्कारार्थो तव एको जीवः प्रत्येकके शरीरे वर्तत इतिवाक्यार्थः स्यादिति इह च पाडिक्कएणं ति क्वचित्पाठोऽस्यते स च गम्या ख्यातो ऽनयोश्चा दिशत वाचनाना मविवतत्वात् सर्वासां व्याख्यानुगमयिता जानिदेव वाचना व्याख्यास्याम इति इह चार्थोऽपाठव भाष्यधर्मा अन

॥ एगाणिज्जरा एगेजीवे पाडिक्कएणं सरीरएणं ॥

एक निर्जरा कर्मनो खोखविवो १२ भेदे तपें करीने । एक जीव प्रत्येकशरीरनो धरणहार । इहां साधारणशरीरी जीव न लेवो कर्म निर्जरा

मेवक्षोपायेनवा नानाक्षोपायेनवाव पूर्वपदिति । उववाएत्ति । उपपतनमुपपातो देवनारकाणां जन्म तच्चैक च्यवनवदिति । तक्कत्ति । तक्कणंतर्कोवि
मर्ग अपायात्पूर्व्वा ईहायाउत्तरा प्राय शिर कण्डूयनादय पुरुषधर्मा इहघटन्तहति अम्लययरूपा इत्येकास्तु प्राणिवेति । सन्नत्ति । संज्ञानंसंज्ञा व्यञ्जनाव
महोत्तरकालभवो मतिविशेष आकारमयाधुपाधिका वा स्पैतनासंज्ञा । अभिधान वा संज्ञेति । मनत्ति । माकुवला मननमतिं वर्थविषयपरिच्छित्तावपि
सूक्ष्मधर्माक्षोचनरूपा बुद्धिरितियावत् आलोचनमितिवेचित् अथवा मवामभियर्म अनुपममहत्वं सूत्रद्वयेपि सामाथत एकत्वमिति । एगाविनुत्ति ।
विद्वान् विज्ञोवा तत्त्वबोधसाद्वेवहति जोविसिंगत्वमातत्वात् उत्पाद उप्पावत् सुनभावप्रत्ययत्वाहा एकाविदत्ता विज्ञताचेत्यर्थं । वेयणत्ति ।
प्राणिनामासातास्यवर्मानुभवनमधोता इवतुपोकात्मव्येव सावसामान्यत एकवेति । अस्याएव कारणविशेषविकल्पनायाह । छेयणेति । छेदन शरी
रसाम्यस्यघातादिनेति । भेवणेति । भेदन कुन्तादिना अथवा छेदन कर्मण स्थितिघात भेदनंतु रसघात एकैकताव विशेषाविवक्षणादिति वेदनादि
भाव मरण मत स्ववियेवमाह । एगेमरणेत्यादि । मतिमरणं अंतिमव अंतिमं चरमं तच तच्छरीरंचे अंतिमशरीर तत्र भवाअंतिमशारीरिकौ उत्तरपद
वृद्धि सूत्रा तेषामस्तीति अंतिमशारीरिका दीर्घत्वंच प्राकृतत्वेना तेषां चरमदेहानां मरणैकताच सिद्धत्वे पुन मरणाभावादिति । अंतिमशरीरस्य

गामस्मा एगाविन्नू एगावेयणा एगेछेयणे एगेभेयणे एगेमरणे अंतिमसारीरियाण एगेसंसुद्धे अहाभूते पत्ते

डिवमांको मनुष्यमां भाविवी । एक च्यवनछे देवतानो मरण । एक उपपातछे देवता नारकीनो जन्म । एक वितर्कछे । एक संज्ञाछे । एक मति छे
सूक्ष्मपद विचारवानी बुद्धि । एक पंडित पणोछे । १ पीडा प्रमुख वेदनाछे । १ छेदनछे खड्गादिमे शरीरनो । १ भेदनछे भालादिमे करी । मरण एकछे

कायतदतिकय शरीर तस्य व्यायामो व्यापारः कायव्यायाम औदारिकादिशरीरयुक्तस्यात्मनो वीर्यपरिणतिविशेष इत्यर्थः स पुन रौदारिकादिभे देन सप्तप्रकारोपि योगानन्तत्वेनानन्तभेदोपि वा एकएव कायव्यायामसामान्यादिति सर्वे पञ्चेन्द्रिया मन अपि शीघ्रा मेव तन्त्वात् सूत्रमेव विशेषेण पठति एगेमणेइत्यादि । तादृमेति सामान्यायन मेवैकत्व व्याख्यात मिति । उप्पत्ति । मातस्याउत्पाद सर्वैकसमये एकपर्यायापेक्षया नहि तस्य युगपदुत्पा दद्वयादि रस्ति मनपेक्षिततद्विशेषपदार्थतया चैको सावितिः विगइत्ति । विगति विगत सापेक्षा उत्पादवदिति विकृति मिति रित्यादिव्याख्यात रमध्यवित भावोत्र मस्माभिस्तु स्पादयायुगुक्तोव्याख्यात मिति । वियवत्ति । विगते प्रागुत्पन्ना दिच्छविमतय वियन्मवतो जीवस्य मतमित्यर्थ यथा शरीर विगतार्थो मानुषत्वादिति विगतार्था विशिष्टोपपत्ति पवति विशिष्टभूयावा सापेक्षा सामान्यादिति । मरसि । मरणानंतर मनुष्यत्वादे सकाशा नारकत्वादीजीवस्य गमन इति सापेक्षसैकापेक्षैव मन्यादिषा मरणमन्यादिषा वा पृथक्त्वा स्थितिवेक्षसमानतया चैकतयेकस्वरूपा समनजीवपुरस्ताना मिति । भामइत्ति । पापमनमागति नौरसत्वादेरेव प्रतिनिवृत्ति तदेकत्व मतेरिविति । चयणेत्ति । च्युतिश्यवन वैमानिकज्योतिष्काणा मरण मतसेक

एगाउप्पा एगाविगती एगाविगच्चा एगागती एगाआगती एगेचयणे एगेउववाए एगातक्का एगासन्ना ए

ग एकछे । कायतणो व्यापार एकछे यद्यपि औदारिकादि ७ भेदे पनि सर्वते काया मन्दमा भाम्या । उपजवो एकछे एक समये एकज । विगति ते वि नाश एकछे । जीवनो शरीर एकछे मर भवे उपजता वेक्रिय तथा औदारिक । मतो एकछे मनुष्यमाथी नरकादिक जायतो । एक आगतिके नरका

मेकत्वोपपेक्षया नानात्वोपपेक्षयाच पूर्ववदिति । उववाएत्ति । उपपतनमुपपातो देवनारकाणां जन्म तच्चैकं [illegible] । तक्कत्ति । तर्कणं तर्कोवि
मर्शः अपायात्पूर्वा ईहायाउत्तरा प्रायः शिरःकण्डूयनादयः पुरुषधर्मा इहघटन्तइति सम्प्रत्ययरूपा स चैकत्वमनुप्रागिवेति । सन्नत्ति । संज्ञानंसंज्ञा व्यञ्जनाव
ग्रहोत्तरकालभवो मतिविशेषः आहारभयाद्युपाधिका वा चेतनासंज्ञा । अभिधानं वा संज्ञेति । मन्नत्ति । मननमनमन्यति सर्वविषयपरिच्छित्तावपि
सूक्ष्मधर्मालोचनरूपा बुद्धिरितियावत् आलोचनमितिकेचित् अथवा मतामसिमर्थं अभ्युपगमस्तथैवं सूत्रत्वेऽपि सामान्यत एकत्वमिति । एगाविन्नुत्ति ।
विद्वान् विज्ञाता तत्त्वबोधस्यैकत्वादेकइति स्त्रीलिङ्गत्वमप्राकृतत्वात् अथवा एगाविन्नू पुनर्भावेऽप्ययस्त्वाका एगाविन्ना विद्वत्तापेक्षया । वेयणत्ति ।
वेदना अयमात्मसर्मानुभवलक्षणोक्ता एकतुपोक्तासमयेन सामान्यतएकैवेति । अस्याएव कारणविशेषनिरूपणायाह । छेयणेत्ति । छेदनं शरी
रस्यासिभाषादिनेति । भेयणेत्ति । भेदनं कुन्तादिना अथवा छेदनं कर्मणः स्थितिघातः भेदनंतु रसघातः प्रत्येकताच विशेषाविवक्षणादिति वेदनादि
मय मरण मत स्वाविशेषमाह । एगेमरणेत्यादि । अतिमरणं अनेभवं अंतिमं चरमं तच्च तत्शरीरं चे अंतिमशरीरं तत् भवान्तिमशारीरिको उत्तरपद
वृद्धि एषां तेषामस्तीति अंतिमशारीरिका दीर्घत्वंच प्राकृतमेषां तेषां चरमदेहानां मरणेकताच सिद्धत्वे पुनः मरणाभावादिति । अंतिमशरीरस्य

गामक्वा एगायिस्कू एगावेयणा एगेछेयणे एगेभेयणे एगेमरणे अंतिमसारीरियाण एगेसंशुद्धे अहाभूते पत्ते

दिव्यमांथो मनुष्यमां आविवो । एक च्यवनछे देवतानो मरण । एक उपपातछे देवता नारकीनो जन्म । एक वितर्कछे । एक समाछे । एक मति छे
सूक्ष्मधर्मे विचारणानी बुद्धि । एक पंडित अथोछे । १ पीडा मनुष्य वेदनाछे । १ छेदनछे खड्गादिके शरीरनो । १ भेदनछे भालादिके करी । मरण एकछे

घातकोमूला खिवते मत समाय । एगेसुवेत्यादि । एग'संबधो घमयमपरयो भयपायत्वात् यवामूत स्वालिक' पावमिवपाव मविममवत् भागा दिगुवरवानांयासो वा ग्रयमवमिमितिमम्यते । एगेदुक्खे । एग मेवातिमवयरचसमवंदु'ख मयस एगदु'ख एगेयक्खेति पाठांतरे लेवाचेया पया संयुवा दि संपरेयो मया मवसंबव संबवासंबवस्वादियोपि मपदेयांतरनिमित्तय कपायादे रभावादिवि संभवत्वेकयास्य एकथा मघोवा जीवो मवस तपीति जीवानां मावित्रा मेवमूत एकदवामोपम दवर्वं एकांतशितवसिवा देवत्वं वास वहनामपि समवभावत्वा दिति मयवा । मत्तेत्यादिसूवान्तर। उत्कपसमवादयेयोसयपप्रतिपादनापरं तव मावृतलात् मवेव मेवं दु'ख मवेवेवदु'ख जीवानां सवृतकर्मफल भोगित्वात् किंमूतं तदित्याह ए कभूत मनन्यतमाव्यवसितं माविपु मवोवानामिव वाम मिति । दु'खंपुन रथमोंमिमिमिया दिति तत्सरूपमाह । एगाभवमीत्यादि । वारवति दुम तो मपतता जीवाम् धारयतिसुगतो वा तान्स्यापवतीति धर्म उक्तंच दुर्गतिमसृतान्जन्तून् यस्माद्धारयतेवत' वत्तेचैतान् शुभेस्याने तस्माद्धर्मइतिस्मृ त ॥ १ ॥ सपद्मतचारित्रबपच स्वमतिपच स्वयचस्तविमया प्रतिमा प्रतिमा मचमप्रधानमरोरया मचममतिमा सापेचासर्वमा' परिक्लेयकारयत येवरूपका दतपवाद । जंसेत्यादि । यत् यस्मात् से तया' सामाजा जीवो मयवा सेति सो ब्धमंप्रतिमावाका आ परिक्लिश्यते रोगादिभि बाध्यते

एगेदुक्खेजीवाण एगेजूते एगाअहम्मपडिमा जसेच्छायापारिकिलेसति एगाधम्मपडिमा जसेच्छायापज्जवज्जाए

वेदना मरोरनो भुंजवो तेभवेचमोच । १ एक चारित्रिमो वरनो नाम वेवलो तीर्थंकर । तेहीज उत्तम पात्र । एक दु'खने वेदना शरोरी जोवने तेवो भवे मोच जाय तेमाटे । सर्वजीवनो भावरूपसमान १ छे । पापरूप अधर्मनो करयहार शरोर १ छे । जे अधर्मथी आत्मा क्लेश पामे दु'ख भोगे ।

संक्षिप्यत इत्यथ वंसोदिपाठान्तरम्वा ततच प्राकृतत्वेन भिन्नमत्ववात् यथा मधर्ममतिमायां सत्यात्मा परिक्षिप्यते सा पर्वेवेति एतद्विपर्ययमाव एमाधर्मेत्यादि । प्राम नगर स्पर्यंना प्रामादिविशेषा जाता वचस पर्यवजातो भवतीतिशेष पिण्डवाचोत्पर्व पाचितान्नादित्वाच जातशब्दस्योत्तरपद समिति पथवा पययात् पदवेषु वा यात प्राप्त पर्यवजातो ऽथवा पयव परिरचा परिभ्राम स्वा शीयत्तवेवेति धर्माधर्ममतिमेव योगत्रयाश्रयत इति त स्वरूपमात्र । एगेमचेत्यादिद्धयवं । तच मनइति मनोयोग तथ यस्मिन्यस्मिन्समये विचार्यते तस्मिन् २ समये कालविशेषे एकमेव योपात्निर्देशेन स एकमापिसमये तद्व्यादिसंबंधमवतीत्याच एकत्वच तस्य चोपयोगत्वात् योगानां स्यादेतत् नैकोपयोगी योगानां युगपच्छ्रोत्रोपयोगविषयसंवेदनमद र्यना तथाविधभिन्नविषयोपयोगयुगपदसमयत् यथोच्यते यदिदं श्रोतोपयोगमयं तत्स्वरूपेण भिन्नकालमपि समयमनसो इतिसूक्ष्मतया युगपदिव मतो यते मपुन स्वयुगपदेवेति भावच समयातिसूक्ष्मताभो मनश्चिन्तुमवपभिन्नकालेऽपि उत्पलदलशतवेध भवदयतामसाद्युपलब्धमिति ॥ १ ॥ यदिपुन रेवत्तो पयुत मनो ऽर्थान्तरमपि संवेदयति तदा कि मन्यत गतचेता पुरोवस्थितं हस्तिनमपि नविपयीकरोतीति भावच यदनुभि(त्रि)उत्तमत्वं विविधोगसमूह इमयोतेषं इत्यविधिविपुरषो विमर्शयितोगवत्वोर ॥ १ ॥ इव मनुष्याणमपि तनुस्थानान्तरादनसेवमिति पथवा सत्यासत्योभयसभामानुभयरूपा

एगेसणे देवासुरमणुस्साण तंसितंसिसमयंसि एगावयी देवासुरमणुस्साण तंसितंसिसमयंसि एगेकायवायामे

जल्यो शरीर १ जे जेवे शरीरे धम करिये ते। जेवे धर्मे भाम्मा मामादिगुण पायें सुखी थाय। १ मनमी योगवे शुभ तथा अशुभ। देवता विमानवा से दहर नवनरवो नगर ने मनुष्यने होय। तेवी तेवी समवे। १ वचनयोग देवता असुर मनुष्यने। १ समये मे भाषाने बोसावे १ भाषा बोसावे। तेमे

चा मनुष्या मनोयोगाना मन्यतरएव मन सैवदा हाद्दीनां विरोधेनासमया विति केवाभिखाय । देवासुरमणुयायपति । तत्र योष्मतीति देवा नैमा
निकव्यातिष्का योच न नरापमुरा भरनपतिर्यतरा स्रोच मनोजाता मनुजा मनुष्या स्रोच देवासुरमनुजा स्रोमी तया । यागिति । वाम्योग सर्वेषा मिक
वा एवएव मनाविधमनायोगपूर्वकाया मनाविधवाम्योमस्य मत्यादोमा मन्यतरभावा दा वक्तव्य वर्णिठापीहिचम्मि चौवाच इन्द्रियावायमपरिखमिदवा
न चोर्वसापम्रोचं वरपयार पम्रोवंसाम्रोवंवरपयाए एग समएणं दोभासाओ भासत्तिएत्ति तथा कायव्यायाम काययोग सर्वेषा मेवादा एकएव स
मरना कायमामामावेकदा एकतरस्यैव भावात् ननु यदाहारकप्रयोगा भवति तदौ दारिकस्या वस्थितस्य गूयमानत्वात् कय मेकदा न काययोगइय मि
म्यवायते मता चोदारिकस्य व्यायामाभावा दाहारकस्यैव च तत्र व्याप्रियमाणत्वा दप्योदारिक मपिग्याप्रियते तर्हि मिश्रयोगता भविष्यति केवलि
समुद्घाते मममसम्दृ्ऽस्तोपममये चौदारिकमिश्र तथा चाहारकप्रयोगा नसम्येतैवच समविधकाययोगप्रतिपादन मनयच एवा दिस्येकएव कायव्या
याम इत्येवं मतरे क्रियशरीरस्य चनशयारे रप्योदारिके निर्व्यापरमेव व्यापारवत्वाखे दुभयस्य व्यापारवत्त्वे केवलिसमुद्घातव मिश्रयोगते त्येव मप्येवयो
गस्य मय्यावत मेवेति मयाकायवौमन्ना चौदारिकतया वैक्रियतयाच क्रमेन व्याप्रियमाणत्वे पारछखितया मनोयोगच यदियोमपरमार्ति मातसाषो
देव इति एवच काययागेवस्त्ते मत्योदारिकादिकाययोगाहतमनोद्रव्यवाग्द्रव्यसापिव्यघातजीवव्यापाररूपसा मनोयोग वाग्योगयो रेककाययोगपूर्वकत
याचि मागममेकव मयसेयमिति यथपिदमेव वचनमायममाय मामागृहसादस यत भाषागपभोपस्रो भाषाएचेवस्रोवचियमो दिंडुताविहुतिय च
एकविहिविराहणारयति । १ । इष्टांत दार्ष्टांतिकोऽमात्मक मनुषामाग्मायुयेवमे मैव सूचगमर्थ मभिधयीति विमनेन विशेषम्बाख्यानेनेति च
तेचं समये कायानो व्यापार । वे देवता पसुर मनुष्यने । तेचे तेचे समये देवता पसुरमनुष्यने स्मान चेहा विविध काम कमकादि क्रिया मन शरीर का

प्रशंसार्थेति एवं देवादिगुणर्थं विशिष्टे
पते मेवं सामान्येनाले ऽस्य पूर्वसूत्रेणा भिहितत्वा च्च पुनरनालमयसमा देवादिगुणत्व समसगुण ... ... प्रतिपत्तिनिरासार्थं सत् तिव्यारकाणा मवच्छेदार्थं
विवक्षिसंपन्नतमेमा मनेकशरीरत्वने सुमेषाय मनोयोगादीना मनेकत्वं शरीरत्वमित्यतोति प्रतिपत्ति संभाव्यत एवेति तत्रूपमपि स्याम
ननु तिव्यारकाणमपि वैक्रियत्वमिसंत योगमपि विक्रियाया शरीरानेकत्वेन मन प्रभृतीना मनेकत्वप्रतिपत्ति संभाव्यत एवेति तद्रूपमपि स्यात
मिति सत्यं किंतु देवादीना विशिष्टतरत्वमितया शरीराणा मनन्तानेकतेति तद्रूपं तथा प्रधानगुणत्वे स्तरगुणत्व भवतीति व्याख्यादोप मारकादिभ्य
देवादीना प्रधानस्य प्रतीत मेवेति एतेषां च मन प्रभृतीना मनाभावाभ्यवत मन प्रधानत्वेन अवस्थानतरत्वावृत्योपशमसमभयलाभभूत मिति । कायस्था
मामक्षेन भेदाना मेकतामाह । एगेउट्ठाणेत्यादि । उत्थानं चेष्टाविशेष कर्मैव भ्रमणादि क्रिया बलं च शरीरसामर्थ्य वीर्यं जीवप्रभवं पुरुषकारश्च
भिमानविशेष पराक्रम पुरुषकारएव निष्पादितस्वविषयरितिवृत्त एकैकत्वम् एतेषु वीर्यान्तरायक्षयक्षयोपशमसमुत्थजीवपरिणामविशेषा एतेषु मध्ये
कश्चिदो योजनीयो वीर्यान्तरायक्षयक्षयोपशमसमवैचित्र्यात प्रतिक्षणमन्यादिभेदे एकैकस्मिन् समये भिन्नाभिन्नचेष्टा क्षयक्षयोपशमभावाया एवंविधस्या चेष
एव भवत्यादि देवादिभेदो भवति कारणभावाभावेनत्वा व्यायमायाया इति सूत्रभावार्थ गमकाभ्यधिति । पराक्रमान्तेय प्राणातिपातादिमार्गो स्यामते यत
पाठ पर्यन्तवैविध्य पराक्रमेणापृथक्त्वमपय समयसम्भवेनाभो विस्वाभिर्दोषविरर्हषति ॥ १ ॥ अतो प्राणादीना निरूपणार्थं माह । एगेनाणेत्यादि । म

देवासुरमणुयाण तंसि तंसिसमयंसि एगेउट्ठाणकम्मबल वीरियपुरिसक्कारपरक्कमे देवासुरमणुयाण तंसितंसि

म च वीर्यं जीवप्रभव पुरुषाकार मनं भार विशेष पराक्रम पर्यन्तकारणो उपनो समिमय एतथा १ के एवं समये माय । १ प्राणके केवल प्राणायरणा

यथा धर्मप्रतिमाप्रागुदिता तथ ज्ञानादिस्वभावेति ज्ञानादीनि रूपयन्नाह । एगेनाणेत्यादि । सूत्रत्रय ज्ञायन्ते परिच्छिद्यन्ते अर्था अनेनास्मिन्नस्माद्वेति ज्ञानं ज्ञानदर्शनावरण यो' ऽयं क्षयोपशमो वा जाति वा ज्ञानं आवरणद्वयक्षयाद्याविर्भूत आत्मपर्यायविशेषः सामान्यविशेषात्मके वस्तुनि विशेषांशग्रहणात्मक सा मान्यांशग्रहणात्मक ज्ञानपक्षाज्ज्ञानवद्दर्शनचतुष्टयरूप क्षयोपशमप्यवबोधसामान्यादेक मुपयोगापेक्षया वा तथाहि लब्धितो युगपद् अवबोधविशेषाणामेकदास म्भवेऽप्युपयोगत एकएव सम्भव क्षयोपशमस्यात् उपयोगानामिति ननु दर्शनस्य ज्ञानव्यपदेशमसमयुक्त विषयभेदात् उक्तञ्च जं सामन्नग्गहणं दंसणमेयं विसेसियं ना णंति यथोक्त दर्शनस्य दर्शनं सामान्यग्राहकत्वात् सप्रावधारणेन ज्ञानं विशेषग्राहकत्वात् उभयोरप्यभिन्नपि ज्ञानग्रहणेन गृहीत मागमे चाभिधियो क्रियमाणे पद्मवोमदर्शनविषयदोषाति यथा तथा एकबोधसामान्यात् दर्शनस्यापि ज्ञानव्यपदेशस्य मविरुद्ध मिति ननु दर्शनमध्यमेवोपात्तमुत्तरसूत्रे तत्कि मिह ज्ञानग्रहणेन दर्शनमपि व्यपदिष्ट मित्युच्यते तथाहि दर्शन श्रद्धानं विवक्षित ज्ञानादिविषयस्य सम्यग्प्रमाणसाक्षित्वे सति मोक्षमार्गत्वेन विवक्षित स्यात् मोक्षमार्गभूतं चैतच्च श्रद्धानपर्यायेणैव दर्शनेनमसञ्चेति । दंसणेत्ति । दृश्यन्ते श्रद्धीयन्ते पदार्था अनेनास्मादस्मिन्नितिदर्शनं दर्शनमोहनीयस्य क्षय' क्षयो पशमो वा दृष्टिर्वा दर्शन दर्शनमोहनीयक्षयाद्याविर्भूत तत्त्वश्रद्धानरूप आत्मपरिणाम क्षयोपाधिभेदा दनेकविधमपि श्रद्धानसाम्यादेकं एकजीवस्य चै कदा एकमेव भावादिति मध्यबोधसामान्यात् ज्ञानसम्यक्त्वयो' स्व' प्रतिविशेष उच्यते रुचि सम्यक्त्व यथाकारणमस्तु ज्ञानं यथोक्तं नाणमवायधिइओ दं

॥ समयंसि एगेनाणे एगेदसणे ॥

पयवो ।सामान्य जानि ते दयन १ के बोधक दर्शनावरणनाशकवो ।

सर्वभिंइअ होम्मइ हाभो तत्तत्तर्ईसर्व रोतिभ्भरचेपर्त्तनार्थ ॥ १ ॥ चरित्तेत्ति ॥ चर्यंतेमुमुक्षुभि रासेव्यते तदिति चर्यंतेवा गम्यते चनेन निर्वाणमिति चारित्र
मथवा चयस्य कर्मणां रित्तीकरणा चरित्रं निरुक्तन्यायात् इति चारित्रमोहनीयक्षयाद्याविर्भूत आत्मनो विरतिरूप परिणाम इति तच्चैकं यथाख्याता
सामायिकादिविशेषाणां विरतिसामान्यान्तर्भावात् देशस्य चैकदा भावाच्चेति एतेषाञ्च प्रामादीनां सममेवकमो यतो नाभार्त व्यवोचते नाम्यचिते सम्यग्रसो
यत इति प्राणादीनिमुत्पत्तिविगतिस्थितिमति स्थितिश्च समवादिक्वेति समवर्तमरूपस्वाच । एगेसमये । समय परमनिरुद्धकाल उत्पलपत्रशतव्यतिभेद
दान्ताज्जरत्पटशाटिकापाटनदृष्टान्ताद्वा समयप्रसिद्धा एवं चोक्तं सचैकएव वर्त्तमानस्वरूपो तीतानागतयो र्विनष्टानुत्पन्नत्वेना भावात् अथवा सावेक
स्वरूपेण निरंशत्वात् इति निरंशत्वस्य विचारात् ऐक्यं सूत्रसमास । एगेपएसे । एगेपरमाणू । प्रकृष्टो निरंशो धर्माधर्माकाशजीवानां देशो प्रदेशविवि
च प्रदेश सचैक स्वरूपत सविशेषत्वाद्दो देशव्यपदेशत्वेन प्रदेशत्वाभावप्रसङ्गादिति । परमाणुत्ति । परमश्चासा वाणुश्चेति अथ सूक्ष्म परमाणु
द्रव्यकादिस्कन्धानां कारणभूत चोक्तं कारणमेवतदंत्यं सूक्ष्मोनित्यश्चभवति परमाणु एकरसवर्णगन्धो द्विस्पर्श कार्यलिङ्गश्चेति ॥ १ ॥ स च स्वरूपत
एकएवा ऽन्यथा परमाणुत्वासौ नस्यादिति अथवा समवादीनामनेकानन्तानामपि तुल्यरूपापेक्षयैकत्वमिति । यथा परमाणो स्वभाविभेदत्वपरिणा

॥ एगेचरित्ते एगेसमए एगेपएसे एगेपरमाणु ॥

सामान्यपणे १ चारित्रछे सर्वविरति देशविरति रूप । समय कालविशेष एक एकमो पोतोमीइनवो समयनो सूक्ष्म कालमान नथी । धर्मास्तिकायादि
कनो भवचनो प्रदेश एकछे तेनो बीजोभाग नथाय । १ परमाणु पुद्गल १ नो बे भाग न थाय ॥ ० । ० । ०

मथिमेवा देवस्व भवति ततएव भनन्ताद्यमवस्थस्यापि या दिविसर्गेवन् सकलसवादरत्नन्यमधानभूत सौधर्माभारामिधानपर्मीस्थेयं मरूपयवाच । एगासिद्वी । सिध्यन्ति क्षतार्था भवन्ति यस्यांसा सिद्धिस्थाच यद्यपि सोकार्थ मतधाव इच्छुदीचरत्तार्य ततमतूयसिध्यन्ति तथापि तत् मत्यासवोपत् प्राग्भाराषि तथागपरिमते धावव धारसहितीयचेति सिद्धोसल्सिरधोत्ति यदिवा सोकायमेव सिद्धि या यद्रा भवमेतदनन्तरमुक्त निष्ठकरग रयवधा तुषारमोक्षौरहारसरिवमे स्थादि तत्सरूपवर्णनं घटते सोकाग्रस्था मूर्तत्वादिति तथा दीपप्राग्भारासिद्धि रिहोच्यते सापेक्षा प्रभ्यार्थतया पच पत्नारिंश योजनशतसहस्रमानपरिमाणस्था स्वर्थीयार्थतयासनन्ता भथवा सततत्वस्य सोकाग्रमभिमारिव्याथा सिद्धिरेकत्वस्य सामान्यत इति । सिद्धे रनंतरं सिद्धिमंतमाच । एगेसिद्धे । सिद्धतिस्म कृतकृत्योभवेत् सेधतिया याऽमत्व दपुनरावृत्त्या सोकाग्र मितिसिद्ध सित या यद्वर्ध्व भात दग्ध य स्म स गिरक्षाक्षित कर्मप्रपंचनिमुक्त सपेक्षो द्रव्यार्थतया पर्यायार्थत स्वनंतपर्याय इति भथवा सिद्धाना मनंतत्वेपि तत्रात्म्या देकत्वं भथवा कर्मक्षिण्य विपामनयोगात्समार्थमायातुदितय कलमवभेदेना नेकत्वे प्येवत्व सिद्धशब्दाभिधेयत्वसाम्यादिति । कर्मक्षयसिद्धस्य परिनिर्वाणंयम्भौसवतीति तदाच । एगेपरिनिव्वाणे । परिसमंता निर्वातीपि निर्वाणं सकलकर्मकृतविकारविरावरचत सकलमवर्म परिनिर्वाणं तदेकमेकदा तस्य संभवे पुनरभावा दि ति । परिनिर्वाणमयोगात् सएवकर्मयसिद्ध परिनिर्वृत उच्यते इति तदेकतायाच । एगेपरिनिव्वुए । परिनिवृत समंत शारीरमानसास्वास्थ्यविरहित

॥ एगासिद्धी एगेसिद्धे एगेपरिनिव्वाणे एगेपरिनिव्वुए ॥

१ सिद्धिसिथा ४५ लाख योजन प्रमाणे छे । एक सिद्ध ते सर्वसरीका माटे । सकल दुःखनाश सो सुखनो लाभो यसो दुःख न भावे तेमाटे १ छे ॥

इतिभाव तदेवत्व शिवमेव भावमौममिति । तदेतावता गृहेनैते प्राबो जीवधर्माएवतमानिरूपिता इदानीं जीवोपगृहणत्वात् पुद्गलानां तद्धर्मा जीवधर्मा । एगेसद्देत्यादिना आव सुत्ते इसोतदंतेन मुख्येनैकत्वेव दर्शिते । पुद्गलानांतु सत्ता केषांचिदनुमानतो ऽवसीयते घटादिकार्योपलब्धे केषांचि सांव्यवहारिकप्रत्यक्षत इति तत्र शब्दादिसूत्राणि सुगमानि नवरं शब्द्यते अभिधीयतेऽनेनेति शब्दो ध्वनि श्रोत्रेंद्रिय विषय । रूप्यते अवलोक्यते इति रूप माकार चक्षुर्विषय । घ्रायते सिंघ्यते इति गंधो घ्राण विषय । रस्यते आस्वाद्यत इति रस रसनेंद्रियविषय स्पृश्यते स्पृश्यत इति स्पर्श स्पर्शनेंद्रियविषय । शब्दादीनां चैकत्वं सामान्यत सजातीयविजातीयव्यावृत्तरूपापेक्षया भावनीयं शब्दभेदानाह सुभिसद्देति । शुभशब्दो मनोज्ञस्वर । दुभि त्ति । अशुभ मनोज्ञो वा न भवतीति एवं शब्दान्तर समानभूत मवसेय मेव रूपव्याख्यानेपि सुरूपादयश्चतुर्थेन शुभान्ता रूपभेदा स्थाप सुरूप मनोज्ञरूप मितर दूरूपमिति दीर्घमायतं ह्रस्वमितर इत्यादय पदसंस्थानभेदा स्थाप वृत्तसंस्थानमीदृक्षणं तच्चघनप्रतरभेदाद्विधा पुन प्रत्येकं समविषमप्रदेशावगाढ मितिचतुर्धा एवमेषामपि । तंसेत्ति । तिस्रो त्र्यस्र कोटयो यस्मिं स्तत् त्र्यस्रं त्रिकोणं । चउरंसेत्ति । चतस्रो अस्रो यस्य तत्तथा चतुष्कोण मित्यर्थ । तथा

एगेसद्दे एगेरूवे एगेगंधे एगेरसे एगेफासे एगेसुब्भिसद्दे एगेदुब्भिसद्दे एगेसुरूवे एगेदुरूवे एगेदीहे एगेरहस्से

सव प्रकारे शरीर मानसीदुःखनो रहित थयु ते मोक्षएकछे । शब्द कानमो विषयते एकछे । नेत्रनो विषयरूप शरीरनो आकार तेएकछे । नासिकानो विषय गन्ध तेएकछे । जीभनो विषय रसते एकछे । स्पर्श एकछे आठ भेदो त्वचानो विषय । एक भलो शब्द । एक खोटो कठिनशब्द । एक भलोरूप । एक खोटोरूप । एक दीर्घ संस्थान । एक लघु संस्थान । एक वृत संस्थान लाडुवा जेहवो । एक त्रिखूणियो सिंघाडाने आकारें । एक चोखूणियो

पिहुलेति। पृथुलविस्तीर्ण सम्म पुन रिवसाने आयत सभिधीयते तदेवचेवरीर्घस्यपृथुमल्दे विंमल्तीतमायतपर्यंला देर्भा तथायत प्रतरघनश्रेणिमेद सिवा पुन रेवैव समवियममप्रेय सिति मोजा यथा मतमैस्यो रपि क्रसदीर्धयो रादा वभिधानं तदूत्तादिषु संस्थानेष्वायतसप्रायो हतिस्यमर्याद तथापि दीर्घायत स्तंभो वृत्त व्यास चतुरस्र येत्वादिभावनीयं विचिवला वा सूक्ष्मतेरेवसुपन्यास इति ।परिमंडलेत्ति। परिमंडलसंस्थानं वलयाकारं प्रतरघना दा द्विविध मिति रूपभेदो वच सपलवादि पंचधा प्रतीयएव नवर हारिद्र पीत वपिमास्वस सससमंता इति मतेवासुपन्यास । गंधोद्वेधा सुरभिर दुरभिव वच सौसुबककरसुरभि मेसुवकदुरभि साधारवपरिवामो ह्यषेतो दुर्मवहति ससमंजलारेवनोक्त रस पचधा वच ज्ञेयनामकृतिक १ । येमर व्योरगकृत्कटुक २ । यमरपित्तयनक कषाय ३ । पाश्ववलेदनक दक्ष ४ । ह्लादनर्वधक मधुर ५ । संसर्गजो सववदति गोज इति सर्गो हविव स्तव कवाय कठिनो घनमनतमव ।१। मापल्वरवात् मृदवादय; यत्र तम मृदु भवतिसव ।२। गुरु रघोगमनहेतु ।३। सघु प्रायस्थि वमूर्ध्वममनहेतु ।४। मीतो वैशदकृत् स्तम्मनस्वभाव ।५। उष्णो मार्दवपाककृत् ।६। स्निग्ध संयोगेसति सयोगिनां वन्धकारणं ।७। रूक्ष स्तयैवावन्ध

एगेवट्टे एगेतसे एगेचउरसे एगेपिहुले एगेपरिमंडले एगेकिराहे एगेनीले एगेलोहिए एगेहालिद्दे एगेसुक्कि ले एगेसुब्भिगंधे एगेदुब्भिगंधे एगेतित्ते एगेकडुए एगेकसाए एगेअंबिले एगेमहुरे एगेकक्खडे जावलुक्खे

एक प्रथुल संस्थान विस्तारवंत। एक परिमंडल संस्थान वलयाकारे डायनो पूडोसरीको। एक कालोवर्ण। एक नीलोवर्ण। एक रातोवर्ण। एक पी लोवर्ण। एक सपेदवर्ण। भव्य जेवर्णांतरके तेससर्वजाहे। एक सुगन्धछे। एक दुर्गन्धछे। १ तीखो रसछे। १ कडुक रसछे। १ कसाय रस छे। १ खाटो

कारण मिति।८। उक्ता पुद्गलधर्मोया भेवते दानींपुद्गलाविकृतजीवामधस्तधर्मोया महादयामा व्यापस्यामवाभिधानामो ॥ एगेपाणाइवाएइत्यादिना पत्येन इंसममते इमीतदतेन तामेवाह ॥ तत्र माणा उच्छासादय तेषां अतिपातन माणवतासह वियोजनं माणातिपातो हिंसेत्यर्थः उक्तंच पंचेन्द्रियाणि त्रिविधंबलंच । उच्छासनिश्वासमथान्यदायु ॥ माणादशैतेभगवद्भिरुक्ता । स्तेषांवियोजीकरणंतुहिंसेति ॥ १ ॥ सच प्राणातिपातो द्रव्यभावभेदा द्विविधो विनाशपरितापसंक्लेशभेदात् त्रिविधोवा भावत तथ्यआत्मविनाशो दुष्टप्रयोगसंक्लिष्टोस एसवशोजीवभविभो वक्तव्योपयतेर्वति ॥ १ ॥ तथामृषा मिथ्या वदनं वादो मृषावाद सच द्रव्यभावभेदा मनोवाक्कायैः करणकारणानुमतिभेदा नवधा पुनः क्रोधादिभेदात् पञ्चविंशतिविधोवेति । १ । तथा अदत्तादानमस्ति क्रियत् मोक्षमासादिभि वक्तव्यो वा तथादि अमूतोद्भावन यथा सर्वगत आत्मा । भूतनिह्नवो यथा नास्त्यात्मा । वस्त्वन्तरन्यासो यथा गौरपिसत्वमाषेति । निन्दाच यथा कुष्ठोलमसीति । २ । तथा अदत्तस्य स्वामिजीवतीर्थकरगुरुभि रवितीर्णस्य नरातस्य सचित्ताचित्तमिश्रभेदस्य वस्तुनः आदा नं ग्रहण मदत्तादानं चौर्यमित्यर्थः तच विविधोपाधिवशा दनेकविध मिति । ३ । तथा मिथुनस्य स्त्रीपुंसलक्षणस्य कर्म मैथुनं अब्रह्म तच्चमनोवाक्कायानां कृतकारितानुमतिभि रौदारिकवैक्रियशरीरविषयाभि रष्टादशधा विविधोपाधितो बहुविधतरंचेति । ४ । तथा परिगृह्यते स्वीक्रियते इतिपरिग्रह वा ह्याभ्यन्तरभेदा द्विधा तत्र बाह्यो धनसाधनव्यतिरेकेण धनधान्यादि रनेकधा आभ्यन्तरस्तु मिथ्यात्वाविरतिकषायप्रमादादि रनेकधा परिग्रहश्च वा

॥ एगेपाणातिवाए जावएगेपरिग्गहे ॥

रसछे । १ मीठो रसछे । १ कठिन फरसछे । यावत् १ लूखो फरसछे । १ माणातिपात हिंसाछे । यावत् १ परिग्रहछे । १ क्रोध १ मान १ मायाकपट

परिग्रहो मूर्च्छार्थं । ९ । तथा क्रोधमानमायालोभा कषाया मोहनीयकर्मपुद्गलोदयसम्पाद्यजीवपरिणामा इति एतेषामतानुबन्ध्यादिभेदतो ऽसंख्याता ध्यवसायस्थानभेदतो वा बहुविधा । ८ । तथा । पेज्जत्ति । भिसम भावः कामता प्रेम तथानभिव्यक्तमायालोभलक्षणभेदस्वभाव मभिष्वङ्गमात्रमिति । १ । तथा । दोसोत्ति । देषर्षणं दूषणं वा दोष सचानभिव्यक्तक्रोधमानलक्षणभेदस्वभावो ऽप्रीतिमात्रमिति । ११ । आवत्ति । कलहेभव स्तावे पेसुने इत्यत तत्र कलहो राटी । १२ । अभ्याख्यानं प्रकट मसद्दोषारोपणं । १३ । पैशुन्य म्पिशुनकर्म प्रच्छन्नसद्दोषाविर्भावनं । १४ । परेषां परिवादः पर परिवादो विकत्थन मित्यर्थः । १५ । अरतिश्च तन्मोहनीयोदयज चित्तविकार उद्वेगलक्षणो रतिश्च तथाविधानन्दरूपा अरतिरतिस्ते्वकमेव विवक्षितं यतः क्वचनविषये या रति स्तामेव विषयान्तरापेक्षया अरति व्यपदिशन्त्येव अरतिमेव रतिमित्यौपचारिक मेकत्व मनयो रस्तीति । १६ । तथामायामोसत्ति । मायाच निकृति मृषाच मिथ्यावादो मायया वा सह मृषा मायामृषा प्राकृतत्वा न्मायामोसं दोषद्वययोग इदच मानमृषादिसंयोगदोषोपलक्षणं वेषान्त रकरणेन लोकप्रतारणमित्यन्ये प्रेमादीनिच बहुविधानि विषयभेदेना ध्यवसायस्थानभेदतो वा । १७ । मिथ्यादर्शनं विपर्यस्ता दृष्टि स्तदेवतोमरादिप्रत्य मिव सर्वं दुःखहेतुत्वात् मिथ्यादर्शनशल्यमिति मिथ्यादर्शनञ्च पञ्चधा आभिग्रहिकानाभिग्राहिकाभिनिवेशिकानाभोगिकसांशयिकभेदा दुपाधिभेदतो

एगेकोहे जावलोज्ने एगेपेज्जे एगेदोसे जावएगेपरपरिवाए एगाश्चरतिरति एगेमायामोसे एगेमिच्छादंसण

जावत् १ लोभछे । १ रागछे प्रेम । १ दोषछे द्वेष । जावत् अन्दे कलह अभ्याख्यान खोटो आल पैशुन्य चाडी परपरिवाद निंदाछे । १ अरति ते उद्वेग १ १ रति ते आनन्द हर्षछे । १ मायामृषा ते कपट खोटो बोलवो । १ मिथ्यात्व दर्शन शल्यनो परें दुखदायी मिथ्यात्वछे ते १८ पापस्थानक । १ जीव

मधुतरमेवेति । १८ । एतेनाच प्राणातिपातादीना सुत्रमेषा नेकविधत्वेपि सत्वादिसाम्या देवस्य सवमत्वम् मिति उक्ता न्यमाद्य पापस्थानानो वा
भी तदिपक्षाणा मेव । एगेपाणाइवायवेरमणेत्यादिभि । रष्टादयभि सूत्रे रेकत्वमात्र सुगमानिचैतानि नवर विरमणं विरति स्त्वा विवेकत्याग
इति उक्तं सपुत्रत्वोत्सृष्टमधर्मोंचा मेवस्व मिदानीं कालस्य स्थितिरूपत्वेन तद्धर्मत्वात्तद्विशेषाणा । एगाओसप्पिणीत्यादिना सुसमसुसमेत्येतदन्तेन तथैवा
ह । यत्र कालएव वाय मवसोपत इतिवे दुच्यते मधुसम्मयमायोकादिपुष्पगन्धादिनियमेन हयनात् जियामवाय कालइति तत्र । ओसप्पिणीति । मवस
र्पति ओयमानारकतया मवसप्पयतिवा आयुष्कशरीरादिभावान् हापयतो त्यवसप्पिणी सागरोपमकोटाकोटी दशकप्रमाण कालविशेष सुट्ठसमा सुसमा
मम्मलं सुसमा सुसमसुसमा पत्यन्तसुषमरूपा मध्याएव प्रथमारकइति एकत्वमवसर्पिण्या सर्वेवे वस्ता देव सर्वत्र मावदिति सोभीपसर्गनावस्स
तप सुसमसुसमेत्यादिसूत्रं अागान्तरमसिद्धं तावद्भवेद मिद । जावदूसमदूसमेत्ति । यदभिव्यतिदेशो न्यत्र सूत्रवाधवार्थ मित्येवं सर्वत्र यावदितिव्याख्येय

सव्वे एगेपाणाइवायवेरमणे जावपरिग्गहवेरमणे एगेकोहवियेगे जाव मि
च्छादसणसल्लविवेगे एगाउसप्पिणी एगासुसमसुसमा जावएगादुसमदुसमा

हिंसाथी विरमवो हिंसानो छांडिवो । यावत् मृषावाद अदत्तादान मैथुन परिग्रहनो छांडिवो। १ क्रोधनो त्याग मावत्पापस्थ १८ बोल सीमा । मिथ्यात्व
स्याग ते सम्यक्त । १ उत्सर्पिणी काल जिहां भाउखा प्रमुखभाव वधता होय । वली जिहां होन भाव होय ते भवसर्पिणी काल । एकेकमाने २ सुखमसु
समाकाल पहिलो भारो । १ दुसमदुसमाकाल छट्ठो भारो । १ भारकोनो यमना । ७ नरकगत जीवने नारकी कहिये एतले नारकीनो समुदाय । एम १

मतिदेशमसमानि च पदान्यैवमन्योपपदान्येतानि। एगासुसमा एगासुसमदुसमा एगादुसमसुसमा एगादुसमा एगादुसमदुसमेति ॥ भावो स्वरूपं यन्दा नुसारतो ज्ञेय यमार्थ पुन रायाना तिसणो समानां क्रमेण सागरोपमकोटीकोव्य चतु स्त्रि द्वि संख्या चतुर्थ्यास्तेषा द्विचत्वारिंशद्वर्षसहस्रोना पंचम्योश्च क्रमेण एकविंशतिवर्षसहस्रालेबविंशतिरिति तथावसर्पति वर्धते परकापेक्षया उत्सर्पति या मावाना शुभादीनवर्धयतीति उत्सर्पिणी अवसर्पिणीप्रमाणा सुष्टुसमा सुसमा दुःसमा दुःषमसुषमातुःसमादुसमदुसमायावमारका देगादुसमा एगादुसमसुसमा एगासुसमदुसमा एगासुसमसुसमेतिक्रमेण एतत्प्रमाणंच पूर्वोक्रमेण नवर विपर्यासादिति आतोजीवपुद्गलानामसमवत्प्रव्यविविधवर्यविशेषाणा मेकत्वप्ररूपणा अधुना संसारिसुमनजीवपुद्गलद्रव्यविशेषाणां नारकपरमाणादीना समुदायकमवधर्मेण ॥ एगानेरइयाचंममचेवाहिणा एगाभवस्सुकोसगुणसव्वार्थ पोमलाणं वगदे ॥ सेतदतेन पथेन तासेवाह । तत्र नेरइया पंति निर्गत मविद्यमान मय मिष्टफलं कर्म वेम से निरया स्तेषु भवा नैरयिका क्लिष्टसत्वविशेषा स्तेच प्रभोपलक्षितरत्नावासक्षितिमध्यलाद्धिभेदा दनेकविधा अपि सर्वेषां नमका वर्म' समुदाय स्वभावेकत्वं सवेव नारकत्वादि पर्यायसाम्यादिति तथा असुराय ते नवयौवनतया कुमारा वेत्यसुरकुमारा स्तेषा मेकावगयेति ॥ चउवीसदंडवत्ति ॥ चतुर्विंशतिपदमतिवद्धो दंडको वाक्यपद्धति चतुर्विंशतिदंडकस्य सम्बन्ध सामान्यतिशेष' सवाव ॥ नेरइया १ असुराई १ पुढवाई १ वेइन्द्रियाइयोचेव ४ नर १ वंतर १ जोतिसिया १ वेमाणिय १ दंडगोएवं ॥ १ ॥ असुरभवनपतयो दशधा असुरानागसुवन्ना विज्जूअग्गीय

एगाणेरइयाणवग्गणा एगाअसुरकुमाराणवग्गणा चउवीसदंडकट्ठ

असुरकुमार भवनपती १ नो वगणा। एम दशविधो पाचो ५ वेइन्द्रियादि ३ तिर्यंच मनुष्य व्यंतर ज्योतिषी वेमानिक एम २४ दंडकनी वर्गणा।

रोवउद्दोव दिसिपयचवियनामा दसवाएएमवचवासित्ति ॥ १ ॥ एतएमसारेव सूचावि वास्वामि यावयतर्विंयतितम ॥ एगावेमाणियाणवग्गणत्ति एव मामाम्वदण्डक नगु नारकसत्वेवपुवयपादा वास्ता तद्वमभूताया वगयाया एकत्व मनेकत्वं येति तथाहि नसन्ति नारका साधकप्रमाणाभावा त् व्योमकुसुमवत् यथोच्यते प्रमाणाभावादित्यसिद्धमेतु साधकानुमानसद्भावा तथाहि विद्यमानभोक्तृक प्रकृष्टपापकर्मफलं कर्मफलत्वात् पुण्यकर्म फलवत् नच तिर्यग्नराएव प्रकृष्टपापफलभुज आपोदाधिकपरोरवता वेदयितु नसमर्था विशिष्टसुरजन्मनिवन्धनमहापुण्यफलवत् आहच पावफलस्स पगिट्ठ स्सभोइयाकम्मयोपसेसम्बं सतिध्रुवतेभिमया नेरइयाचपमइशोभा ॥ १ ॥ सघत्वदुक्खियाजे तिरियनरानारयत्तितेभिमया तंनयघोसुरसोक्ख प गरिससरिसंनतदुक्ख त्ति ॥ २ ॥ चोयसेसम्बंति ॥ यथा नारकेभ्यो ऽन्ये तिर्यग्नरा इत्यतः एव सुराणामपि विवादास्पदोभूतत्वा विशिष्टसुरजन्मनिवन्ध नमजूर व्यपदेश दिव्यसिद्धोपलब्ध यथोच्यते देवइति सार्थकमिदं व्युत्पत्तिम च्छुघपदत्वात् घटाभिधानवत् दितिं तत सन्ति देवा इतिप्रत्येतव्य मथ मनु ष्य एव गुणर्द्धि सम्पन्नो देवशब्दवाच्य इति देवपदमिति न विवक्षितदेवसिद्धि रिति यथोच्यते यदिदं नरविशेषे देवत्व तदौपचारिक मुपचारश्च तथ्यसिद्धौ सत्या भवति यथा सिंहवत्तित्तसिंहसद्भावे माणवके सिंहोपचार इति आहच देवित्तिसत्यमामदं सुद्धत्तणओघडाभिहाणंव अहवमईमणुओच्चिय देवोगुणरि द्धिसंपन्ना ॥ १ ॥ तमजओतच्चे सिद्धेवयारओमयासिद्धो तच्चमत्योवसिद्धे माणवसोहोवयारोन्नत्ति ॥ २ ॥ चपिच देवेसुनरसंदेहो सुत्तोर्थओदसाय

जावएगावेमाणियाणवग्गणा एगाभवसिद्धियाणवग्गणा एगाअभवसिद्धियाणवग्गणा एगाभवसिद्धियाणणे

वैमानिक देवतासगे नामथी एकेक वोसजाणियो । एकमार्गे चलानो समुदाय ते वर्गणा । एक भव्यजोयनी वर्गणाछे । जे अनंतभवे पछिमोक्षजास्ये

पचस्स दोसंतितबयाषिव छवयावाङमयोवगपो । १ । भावयमेतंपमटं पुरचतम्मासिबोतबविसिद्धा छेतेदेवत्तिमया नयमिवयानियपडिसुत्रा ।२।
कोजावरवविमेवं तिबोमनिर्जववाविमावाद रसयमयगमोगमवा दिवचवमिव्याबरारेव । १ । तेया मसुरादिविशेष पुन रासवपना दवसेयदति
पचरविमसेयोवायुवनलतिवाविवा' ववमिवयोवसेव प्रतिपत्तम्मा उच्छासादिभाविवमोपो तेष्मतोयमानसा दिसवोवते घासवचनादनुमानतव
ववासवचन मिदमेवा नुमानलिदं वचष्मतवो विद्युमववोपत्तादवव रन्ध्र आश्रवे मतमामा' सामवा' समानजातोयांकुरसद्भावादयोविमाराकुरवत्
भावय मंसंकुरममसमाव वारदूवंकुरोवसमाभो तवमवविद्रुमसववो ववाद्यमोसावसवावरयुत्ति। १ । एव समानजातियद्वव शुष्काकुरमयवच्छेदार्वं सचिम
समानजातोयोभवतोति । तवा सामञ मभो भोमं भूमिवजने स्वाभाविकसंभवा दसुरवत् भवया सामव मंतरोयोदव समावतो व्योमसंभूतसपातात्
मत्स्यवत् भावय मूमिवमवाभाविव संभवपोदवरोम्यवसमुत्त [सामवलेमेति] भवयामस्वोम्यसवा पयोमसंमूयपावाभोत्ति । १ । तवा सामको
वायु रपरप्रेरित तिर्यमनियमितदिग्गतित्वा द्गोवत् । इत्यवा परप्रेरित मूवयेन सेद्धासिना व्यमिचार परिहृत' एवं तियम्गृवयेनो र्वगतिना धूमेन व्यमि
वमितगृहयेमय निवतमतिना परमाणुनेति तवा तेव आत्मव माहारोपादाना त्तद्विविमेमोपलब्धे तदिकारदयनाच पुरुषव दावव भयस्येरिय
तिरिया मिवमियदिम्ममवयोमिवोगोम्म पनवोमाहारायो विविविगारोवसंमावोत्ति । १ । अयवा पविव्यसेकोवायवो वोमयरोराणि पयाविकार
वचित मूत जातोयत्वात् गवादि शरीर वदिति भस्मादिविकारोपि मूर्त्तजातोयत्वे सत्यपि न कोयतनव स्रोग तत्परिहारो दवविसेषवमाह तयवोप
भादविना रमुदभावदतविततार [मूतामीतिमसम] सत्वासत्वपयाउविव कोयसपोवत्वावीत्ति । १ । पचमवीमा विसेपेव सवेतनत्वं भाष्यमाकामि
रभिधीयते वमकराजीववमरव रोवभावारदोहसामववो रोगतिमिरवादिव मोरिमसवेववातरवो । १ । विकस्परोदयादिवा मेतसंकोचमोकुलिमिम

पामयर्सचाराभा वियत्तवो ववाणाऱ २ ॥ विवसति। गवभरामंवय मिथि सम्यादवोवसम्या मवोवसंवायपादियोभिमया वचसादयोयसहा रविसयवा नावमंमावाति ॥ मध्यादवाति मम्यादय विसयकासावंभायोत्ति विषयाना मोतसुरामंपूयवामिनोवरपताऽनादीनां वाक्षोवर्सतादिरिति ॥ एगामव विद्विद्यादि ॥ मविष्पतीति भवा भावना सा सिद्धिर्निवृत्ति वेषांतेभवसिद्धिका भव्यास्तद्विपरीतास्त्वभवसिद्धिका ममव्या इत्यर्थ मनुबोवसे समामिउति वो भव्याभव्यको विगीन उच्यते स्वभावऽतो दृष्टलेन समानयो जीवनभसा रिवाश्व इस्यादसितुले जीवणभावसभावको भेमो जीवाजीवाद्समोजश्व श्वमभेयरविभेमाति ॥ १ ॥ पाम्बाविभिविता म्यो दंडक २ ॥ एगासम्मदिट्ठियाणमित्यादि ॥ सम्यगविपरीताद्दृष्टि दर्शनरुचि सत्त्वानिमति येषांते सम्यग्द

रइयाणवग्गणा एगाअभवसिद्धियाण णेरइआणवग्गणा एवंजाव एगाभवसिद्धियाण वेमाणियाण वग्गणा एगाअभवसिद्धियाण वेमाणियाण वग्गणा एगासम्मदिठियाण वग्गणा एगामिच्छदिठियाण वग्गणा एगा

ते भव सिद्धिया जीवनो समुदाय एक कहिये। एक अभव सिद्धिया जीवनी वर्गणा छे। जे अनंत भवे मोक्ष नही जास्ये ते अभवसिद्धिया कहिये। एक भवसिद्धिया नारकीनी वर्गणा छे। नेमरकमां भव्यजीवछे तेहनो समुदाय। एक अभव्यनारकीनी वर्गणाछे एम जावचौवीस दंडक कहिया। एक भवसिद्धिया वैमानिक देवतानी वर्गणाछे। एक अभव्य वैमानिक देवतानी वर्गणाछे। जे मोक्ष नथी पामे तेहने अभव्य कहिये। एक सम्यग् दृष्टी जीवनी वर्गणाछे जे मिथ्यात्वमोहनी कर्मना क्षयोपशमथी भगवानना वचन साचाकरी जाणे छे ते सम्यग् दृष्टी कहिया। एक मिथ्यादृष्टी जीवनी वर्गणाछे जे भगवतना वचनथी विपरीत करणीना करनार। एक सम्यग्दृष्टी जीवनी वर्गणा जेहने भगवतना वचन ऊपरि रागपणि नथी द्वेषपणि न

ाटिका येन मिथ्यात्व मोहनीयक्षयोपशमेभ्यो भवति तथा मिथ्याविपर्यासवती जिनाभिहितार्थसार्थश्रद्धानवती दृष्टि र्दर्शनं श्रद्धानं येषांते मिथ्याद
ष्टिका मिथ्यात्वमोहनीयकर्मोदया दवचितजिनवचना इतिभाव उक्तंच सूत्रोक्तमेकमप्यरोचयन्नक्षरमभवतिनर मिथ्यादृष्टि सूत्रं हि नः प्रमाण
जिनाभिहितमिति ॥१॥ तथा सम्यग्मिथ्यादृष्टि येषांते सम्यग्मिथ्यादृष्टिका जिनोक्तभावान् प्रत्युदासीना इत्यर्थ गंभीरभवोदधिमध्यविपरिवर्त्ती जंतु
रनाभोगनिवर्त्तितेन गिरिसरिदुपलघोलनकल्पेन यथा प्रवृत्ति करणेन संपादितां सागरोपम कोटाकोटीस्थितिकस्य मिथ्यात्ववेदनीयस्य कर्मण स्थिते
रंतर्मुहूर्त्तमुदयप्राप्तमुपरितनं चा पूर्वकरणानिवृत्तिकरणमभिधानाभ्यां विशुद्धिविशेषाभ्यां मन्तर्मुहूर्त्तकालसमानं मन्तरकरणं करोति तस्मिन् कृते तस्य
कर्मण स्थितिद्वयं भवति पंतरकरणा दधस्तनी प्रथमस्थिति रंतर्मुहूर्त्तमात्रा तस्मादेवोपरितनी शेषा तत्र प्रथमस्थितौ मिथ्यात्वदलिकवेदना दसौमिथ्या
दृष्टि रंतर्मुहूर्त्तेन तस्यां मपगतायामन्तरकरणप्रथमसमय एवौपशमिकसम्यक्त्व माप्नोति मिथ्यात्वदलिकवेदनाभावा यथाहि दवानल पूर्वदग्धेंधनमूष
रं वा देशमवाप्य विध्यायति तथा मिथ्यात्ववेदनाग्नि रंतरकरण मवाप्य विध्यायतीति तदेवंसम्यक्त्व मौपशमिकमासाद्य मदनकोद्रवस्थानीयं दर्शन
मोहनीय मशुद्ध सम्यक्त्वाभवति मध्यम मर्द्धविशुद्ध विशुद्ध चेति ३ त्रयाणांतेषां पुंजानांमध्ये यदार्द्ध विशुद्ध पुंजउदेति तदा तदुदयवशा दर्द्ध विशुद्ध
मर्हदुक्ततत्त्वश्रद्धानं भवति जीवस्य तेन तदा सौ सम्यग्मिथ्यादृष्टि र्भवति मन्तर्मुहूर्त्तं यावत् ततऊर्द्ध सम्यक्त्वपुंज मिथ्यात्वपुंजम्वा गच्छतीति सम्यग्मि

सम्मामिच्छदिठियाणवग्गणा एगासम्मदिठियाण णेरइयाण वग्गणा एगामिच्छदिठियाण णेरइयाण वग्ग

थ्यो। एक सम्यग् दृष्टी नारकीनी वर्गणा केतला एक नारकीने पण रूपरि श्रद्धावे। एक मिथ्याती नारकी नी वर्गणा छे। एक सम्यग् मिथ्याती

प्यादि मिश्रविर्येविती श्रोत्पत्रक स्तत्र मारकादिमेशारमसु परेषु दयमनय मस्ति यतउस मेवं । आयवथिएमादि । पविम्यादीनां मिथ्याल मेवा त मेवां तेनैव व्यपदेश उक्तव । चोरसतससेसयामिच्छत्ति । चतुर्वयगुणस्थानमस्त स्वसा स्थावरासु मिथ्याद्दष्टय एवेमव बेइन्द्रियादीनां मिथ्यपा स्ति सम्रिमामेश तत्राभात् तत मेषु सम्यग्द्दष्टिमिथ्याद्दष्टितयैव व्यपदेश एवं । तेइंदियाचविचउरिंदियाणविति । बेन्द्रियव व्यपदेशयवेन वर्गचेवलं मार्च पचेंद्रियतिवगादीनां वर्गनय मम्मस्ति तव रियथापि तव्यपदेशो न पवीत । सेसाजहानेरइयत्ति । तयावाच्या इतियेष दण्डकपर्यन्तसूत्र पुनरिदं ।

णा एगासम्मामिच्छदिठियाण णेरइयाण वग्गणा एवजावथणियकुमाराणय एगामिच्छदिठियाण पुढविका इयाण वग्गणा एवजाववणस्सइकाइयाण एगासम्मदिठियाण बेइंदियाण वग्गणा एगामिच्छदिठियाण बेइंदियाण वग्गणा एवतेइंदियाणवि चउरिंदियाणवि सेसा जहानेरइया जाव एगासम्मामिच्छदिठियाण

नारकीनो वर्गबोलें । एह त्रिण भेद नारकीनां बे । एम जाव स्तनितकुमार लगे दश भवनपती ना एकेक वर्गवा कहियी। एक मिथ्यादृष्टी पृथि वी कायना जीवनो वर्गबोले । इम अप तेऊ वायु वनसपती नी एकेक वर्गणा एपाच थावरमां एक मिथ्यातबे । एक सम्यगदृष्टी बेइंद्रीनी वर्गणा समकित पमतो बेइंद्रीमा भावे । तिवारे उपसती वेला सास्वादन गुणठाणो छ आवली प्रमाणे होय तेसम्यक्तकहिये । एक मिथ्या दृष्टी बेइंद्रीनी वर्गणा बेइंद्री मां मिश्रपणो न होय समकित वमीने मिथ्याती थायछे । एम तेइंद्री नी वर्गणा समकितीनो मिथ्यात्वीनी एम चौरिंद्रीनी एक व र्गणा । बीजा जिम नारकी कहिभाख्या तिम जाणवा । समकित मिथ्यात्व मिश्र ए तीन भेदनी एकेकी वर्गणा जाणवी । गर्भज तिर्यच मनुष्य व्यं

एगासम्मदिट्ठियाणंवेमाणियाणंवग्गणा एवमिच्छदिट्ठियाणं एवं सम्मामिच्छदिट्ठियाणं एतत्पर्यन्तमाह आवएमासम्मामिच्छेत्यादि । एगाकिण्हपक्खियाण इत्यादि । कृष्णपाक्षिकेतरयो लक्षणं । जेसिमवड्ढोपोग्गल परियट्टोसेसओयसंसारो । तसुक्कपक्खियाखलु अहिएपुणकिण्हपक्खियोत्ति ॥ १ ॥ एतच्चिमे पितो इत्यो एगाक ॥ । एगाकिण्हलेसाणमित्यादि । लिम्पते प्राणी कर्मणा यया सा लेश्या यदाह श्लेषइववर्णबन्धस्य कर्मबन्धस्थितिविधात्र्य तथा कृष्णा दिद्रव्यसाचिव्यात् परिणामोऽयमात्मन ॥ स्फटिकस्येवतत्रायं लेश्याशब्द प्रयुज्यतेइति ॥ १ ॥ इयञ्च शरीरनामकर्मपरिणतिरूपा योगपरिणतिरूपत्वात् योगस्य च शरीरनामकर्मपरिणतिविशेषत्वात् यतउक्तं । प्रज्ञापनावृत्तिकृता । योगपरिणामो लेश्या कथपुनर्योगपरिणामो लेश्या यस्मात् सयोगिकेवली

वेमाणियाण वग्गणा एगाकण्हपक्खियाण वग्गणा एगासुक्कपक्खियाण वग्गणा एगाकण्हपक्खियाण णेरइयाण वग्गणा एगासुक्कपक्खियाण णेरइयाण वग्गणा एवंचउवीसदंडओ भाणियव्वो एगाकण्हलेस्साण व

तर जोतिषी जाव वैमानिक देवता सर्वे ए सर्वमा दर्शनना तीन भेद छे । सम्यक् मिथ्या मिश्र एक कृष्ण पक्षिया जीवनी वर्गणा । जेहने अर्ध पुद गल परावर्त्त थी अधिको ससार होय ते कृष्णपाक्षिया । एक शुक्ल पाक्षिया जीवनी वर्गणा छे । जेहने अर्ध पुद्गल ससार बाकी छे । ते जीव शु क्लपाक्षिया । अनंता उत्सर्पिणी अवसर्पिणी काल जाय तिवारे एक पुद्गल परावर्त होय तेहनो अर्ध । एक कृष्ण पाक्षिया नारकीनी वर्गणा । नारकीने घणो संसार करवोछे । एक शुक्लपाक्षिया नारकीनी वर्गणा । जेहने अर्ध पुद्गल ससार छे । एम चौवीसे दंडके आखिया । नारकी अ सुरकुमार दश दंडक पृथिवी प्रमुख बेइंद्री प्रमुख तिर्यंच मनुष्य व्यंतर जोतिषी वैमानिक एवं चौवीस । एक कृष्णलेश्या नी वर्गणा । भगवंत प्रमुख

यत्कर्मेन्द्रियपरिणामेन विशिष्टा गमनुरक्तं ग्रीवे वीर्यविशेष इत्येति ततो मयोगिस्य मनोमस्य च प्राप्नोत्यतो ऽवगम्यते योगपरिणामो लेश्येति स पुन योग' य
रोरनामकर्मपरिणतिविशेष अस्माकुर्त । कन्धं कार्मणेन कारण सम्बेर्या च शरीराणामिति तथाऔदारिकादिशरीरयुक्तस्य रमनो वीर्यपरिणति
विशेष काययोग ।१। तथौदारिकवैक्रियाहारकशरीरव्यापाराहृतवाक्द्रव्यसमूहसाचिव्या ज्जीवव्यापारोव' स वाग्योग ।२। तथौदारिकादि
शरीरव्यापाराहृतमनोद्रव्यसमूहसाचिव्याज्जीवव्यापारो य' स मनोयोग इति ।३। ततो यथैव कायादिकरणयुक्तस्यात्मनो वीर्यपरिणति र्योगउच्यते
तथैव लेश्यापोति । अन्येतु व्याचक्षते कर्मनिष्यन्दो लेश्येति । साच द्रव्यभावभेदा द्विधा तत्र द्रव्यतोलेश्या कृष्णादिद्रव्याण्येव भावलेश्या तज्जन्योजीवप
रिणामइति इयञ्च षट्प्रकारा जम्बूफलखादकपथपटकदृष्टान्ताया भागममसिद्धा इयलेश्येति तत्कृष्णादिसुगमामि
न वर कृष्णद्रव्यसाचिव्यात् जाता ऽशुभपरिणामरूपा कृष्णा सालेश्या येषांते तथा एवं शेषाखपि पदानि नवरं नीलाशोकसुन्दररूपा एवमित्यने
नैव क्रमेण याव त्करणात् । एमाकापोयलेसाणमित्यादिसूत्रपर्यंदश तत्र कपोतस्य पक्षिविशेषस्य वर्णेन तुल्यानि यानि द्रव्याणि धूम्रालोहितं तत्साचिव्या
ज्जाता कापोतलेश्या समाक समतरा सा लेश्या येषांते तथा तेजो वह्निज्वाला तद्वर्णानि यानि द्रव्याणि लोहितानीत्यर्थ' । तत्साचिव्याज्जाता तेजोलेश्या

ग्गणा एगाणीललेस्साण वग्गणा एवजावसुक्कलेस्साण वग्गणा एगाकण्हलेस्साण नेरइयाण वग्गणा जाव

परिणाम विशेष । एक नीललेश्या नी वर्गणा कहिक कृष्णथी मलेरी जंबूवृक्षने दृष्टांते छ लेश्या । इम कापोतलेश्या नी वर्गणा एक । एक तेजोले
श्या नी वर्गणा । एक पद्म लेश्या नी वर्गणा । एम एक शुक्ल लेश्यानी वर्गणा । एम प्रत्येकें पुद्गल आश्री छ लेश्या कही । हिवे जीव आश्री

स्त्रा गुभप्पमाया पद्मपभवर्णानिभानि द्रव्याणि पीतानीत्यर्थः वश्चाधिम्याख्याया पद्मलेश्या मृभतरा शुक्लवर्णद्रव्यजनिता शुक्ला मत्यतशुभेति एतासांचविशेष
त' स्वरूपंमेत्राधमना दृश्यमेयमिति । एवं लक्षणदति । नारकाणामिव यथा सुरादे र्यो यावत्यो लेश्या स्तदुद्देशेनतद्वर्गणेयत्वं वाच्य । भवथेत्यादिमा तद्वे
द्यापरिमाणमाह पच संयत्यो काउनीलाबिवया लेश्यामीतिविभौतिमरएसु तद्याएकाउनीला [प्रविभ्यामित्यर्थः] नीलाविपत्रायरिद्धाए । १ । [पश्च
म्यामित्यर्थ] किण्हानीलावाऊ तेउलेसाभवनवणंतरिया जोइससोहम्मीसा चेतेउलेसामुणेयव्या । २ । कप्पेसणंकुमारे माहिंदेचेवबंभलोएय एएसुपम्ह

काउलेस्साण नेरइयाण वग्गणा एवंजस्सजातिलेस्साउ भवणवइवाण मतर पुढवि आउ वणस्सइकाइयाण
चत्तारिलेस्साउ तेऊ वाउबेंदिय तेइंदिय चउरिंदियाण तिन्निलेस्साउ पंचिंदियतिरिक्खजोणियाण मणु
स्साण छलेस्साउ जोइसियाण एगातेउलेस्सा वेमाणियाण तिन्निउवरिमलेस्साउ एगाकण्हलेस्साण भवसि

करेछे । एम कृष्णलेश्या ना नारकोनी वर्गणा एम जाव कापोतलेश्या ना नारकी वर्गणा । नारकी ना तीन पहिली लेश्याछे । एम चोइ दंडकमा
हि जेतली लेश्या होय तेतली एकेक नामे वर्गणा जाणवी । भवनपति व्यंतर पृथिवी पाणी वनस्पती कायमा ए ठेकाणे चारलेश्या होय । तेउकाय
वायुकाय बेइंद्री तेइंद्री चौरिंद्री एतला मांहें त्रिण लेश्या छे । पचेंद्री तिर्यचनें मनुष्यने छ लेश्या छे । जोतिषी चंद्र सूर्य ग्रह नक्षत्र तारा एहनेएक
तेजोलेश्या । वैमानिक मां ऊपरली त्रिण लेश्या होय । सौधर्म ईशान देवलोके एक तेजोलेश्या । त्रीजे चौथे पांचमें देवलोके एक पद्मलेश्या ।
छठा देवलोकथी अनुत्तरविमान लगें शुक्ललेश्या होय । एक कृष्णलेश्या नां भव्यजीव नी वर्गणा । एक कृष्णलेश्या नां अभव्य जीवनी वर्गणा चो

ता तेवपरसुदलेभाभा ॥ २ ॥ पुठवीभाउवणस्सइ वायरपत्तेयलेसचत्तारि गभितितिरियनरेसु छलेसातिन्निसेसाणं ॥ ४ ॥ घयं सामान्यो लेश्यादरडकस्य समसेश्मव्याभव्यविशेषारय ॥ एगाकरहलेसाणंभवसिद्धियाणंवग्गणेत्यादि ॥ एवमिति कृष्णलेश्यावा मिव ॥ जसुविति ॥ कृष्णयासह परस्तु भव्यसा ध मा पञेवा तिदेश्वा भवन्तीति देदे पदे प्रतिवेश्यं भव्या ऽभव्यलक्षणे वाच्ये यथा ॥ एगाणीललेसाणंभवसिद्धियाणंवग्गणेत्यादि ॥ ६ ॥ लेश्यादण्डकएवस म्यक्त्वविशेषितोऽन्य ॥ एगाकरहलेसाणंसम्मदिट्ठियाणमित्यादि वेसिजसदिट्ठियोत्ति ॥ वेयां नारकादीनां या यावत्यो लेश्याः सम्यक्ताया सीयां ता वाच्या इति तथ एकेन्द्रियाणां मिथ्यात्वमेव विकलेन्द्रियाणां सम्यक्त्वमिथ्यात्वे शेषाणांतित्रोपि हश्य इति ॥ ७ ॥ लेश्यादरडकएव कृष्णशुक्लपक्षविशिष्टो भ्य' एगाक्

ठियाण वग्गणा एगाकरहलेस्साण अभवसिद्धियाण वग्गणा एयछसुवि लेस्सासुदोदोपयाणिभाणियव्वाणि एगाकरहलेस्साण भवसिद्धियाण नेरइयाण वग्गणा एगाकरहलेस्साण अभवसिद्धियाण नेरइयाण वग्गणा एयजस्सजतिलेस्साओ तस्सतत्तियाभाणियव्वाओ जाववेमाणियाणं एगाकरहलेस्साणं सम्मदिठियाण वग्गणा

देवलोक प्रमाण संसारमां छे। एम छ लेश्यानें विषे बेबे पद भव्य अभव्य ना भाखिवा। एकेकी वर्गणा कहिवी। हिवे चोवीस दण्डकें लेश्या कहेछे ॥ एक कृष्णलेश्या नो भवसिद्धिया नारकी नी वर्गणा। एक कृष्णलेश्या नो अभवसिद्धिया नारकी नी वर्गणा। एतले अभव्य नारकी। एम जे दंडक मां जेतली लेश्या होय तेतली वर्गणा कहवी। एक भव्यनी एक अभव्यनी। एम जाव वैमानिक देवताना दंडकलगे वर्गणाछे। एक कृष्ण लेश्याना सम्यग् दृष्टी नी वर्गणा संसारमें जेतलाईक भव्य जीवछे। एक कृष्ण लेश्याना मिथ्यात्वी नी वर्गणा संसार मां जेतलाईक अभव्य जीवछे

चरमेमार्थ विषयपत्रियाभमित्यादि । ८ । एते पडूचउवीसदण्डयत्ति ।प तेषेवं १ । मच्याइर्हिविसेसिंपो ।२। ईसणेहिं। ३ । पक्खेहिं । ४। सेसा हिं ।५। भव ।६। दंसने ।७। पक्खीहिं ।८। विसिइठेसाहिंति। एव सिद्धयमवा पभिधीयते तच सिद्धा द्विधा पनन्तरसिद्धपरम्परसिद्धभेदात् तत्रानंतरसिद्धा पच दर्शयित तदगवेत्रस माह । एगातित्थेत्यादिना। तत्र तीयते ऽनेनेति तीर्थं मृत्यतो नद्यादीनां समो नपायश्च भूभागो भीतादिभवयन स्या तच द्रव्यतो पंतालम्बाप्रधानत्वाद प्रधानत्वच भावत सारणीयस्य संसारसागरस्य तेन ततु ममकत्वा व्यावयत्वा इत्येति भावतीर्थन्तु सहो यतो मामादिभावेन गादि

एगारुण्हलेस्साण मिच्छादिठियाण यग्गणा एगाकएहलेस्साणसम्मामिच्छादिठियाण वग्गणा एसुयवयिलेसासु जायवेमाणियाण जेसिजा हिदिठीद एगाकएहलेसाण कएहपक्कियाण यग्गणा एगाकएहलेसाण सुक्कपक्कियाण यग्गणा जायवेमाणियाण जस्सजातिलेसाद एएस्थठचउयीसदकया एगातित्थसिद्धाण यग्गणा एवजा

एज रूपा लेश्याना सम्यग् मिथ्यादृष्टी नी वर्गणा छे । एम नील कापोत तेज पदम सुक्ल लेश्याने विषे चोवीस दण्डक वैमानिक सर्गें दर्शन तीन नी वगवा कहवी जेहने जेतली दृष्टी होय तेहने तेतली वगवा एकेंद्री पांचमे मिथ्या दृष्टी । बेइंद्री तेइंद्री चोरिंद्रीने वे दृष्टी मिथ्या दृष्टि घर्में सम्यग् दृष्टी योभ्रा मयजीवने मिश्र दृष्टी । रूष्ण लेश्याना कृष्णपाखिया जीव ते बहुल संसारी जीव तेहनी वर्गणा छे । सर्व ए जाति जीवनो स मुदाय कहेछे । एम समुदाय मसार मा वली रूष्ण लेश्यामा सुक्लपाखिया जीवनो छे एवर्गणा एम जाय वैमानिक नां दंडकसर्गें जाणवु । जेह हने जेतली लेश्या होय तेतली एकेकी वर्गणा ए आठवोल चोवीस दण्डके जाणवा । एम तीर्थ सिद्धनी वगवा सच थापना कीधापछे मुक्ति गया

पश्चाद्ग्रामादिवो भवाय भावभूतात् तारयतीत्वाहच । अनाघदंसघपरित भावपोतव्यिवस्थभावामो भवभावपोयतारेर्द तेषष्ठभायामोतिस्यंति ॥ १ ॥ वि
पुवा प्रोधामिदाशोपयमक्षोभव्यामिरासक्षेमक्षापनयनमसमपेषु मानादिवमवेपुवा पर्येषु तिष्ठतोति विमं प्राकतलासित्यं चाहच दाशीवसमाद्दि
मुवा अंतिमुवियमव्यदमचारंसु तोतिरवसंचोषिय छभयंवविसेसववविसेसंति ॥ १ ॥ विशीयवविशेषमिति तोर्थं सद्दति सश्रोचातोयमिति चयोवा प्राधा
निदाशोपममादयो र्वा यसाभि यस्य तस्यव तित्वमित पूर्ववत् चाहच चोदम्मिदाश्वसमया स्पोमतेषेवतिमिजस्सत्या ॥ बोरतियरस्यतित्यं तमत्यसप्रोप
मत्यार्थ ॥ १ ॥ चथवा चयो ग्रामादयो र्वा वमूनि यस्य तस्यव चाहच चत्तवासम्बदसपनाचपरित्ताश्तिमिजसत्या तंतित्यंपुव्योदियमिवमलोयरघुप
व्यापारि ॥ १ ॥ तवतोर्थं सति सिवा निहत्ता स्तोर्थसिवा चमभसेणमचधरादिवत् तेषां वर्गंवेति । १ । तवा चतोर्थंतोर्थान्तरे साधुव्यवच्छेदे जातिस्मर
चादिना मामापवगमार्थ मरुदेवीवत् सिवा चतोर्थसिवा स्तेषां ॥ २ ॥ एवंचरयात् एगातित्थगरसिद्धाचं चम्मचेत्यादि द्रष्टं । तोर्थमुत्तसघर्षं तव् कुर्वन्त्या
गुमाग्रेण येतुसेन तच्चोमतयाचेति तोषवरा चाहच चवत्तोमवेछतश्रो सयासवेभावतिस्मेयंव ॥ कुर्व्वंतिपगासंति तेभोतित्थगराहियतवरसि ॥ १ ॥
तोयवरा संतो ये सिवा स्ते तोर्थवरसिवा चषभादिवत् तेषां।३। चतोर्थवरसिवा सामान्यकेवलिम संतो ये सिवा गौतमादिव तेषां । ४ । तवा स्वय
मात्मवुवा तत्वमातवंत स्वयंवुवा स्ते संतो ये सिवा स्तेषां तेषां ।५। तवा प्रतोत्येवं किंचित् वृषभादिकं चमित्यतादि भावनाकारणं वसु वुवा वुवन्त
परमार्थमिति प्रत्येकवुवा स्तेसन्तो ये सिवा स्ते तथा तेषां।६। प्रत्येकवुवप्रत्येकवुवानांच बोध्युपधिशुतसिङ्गकृतोविशेष तथाचि स्वयंवुवानां बाह्यनिमित्तमन्त
ते पुंडरीकादि गणधर । एम चतोर्थं सिद्धनो वर्णवा तीर्थं पाम्यां विना जाति स्मरणादिक ग्यान पामी मोक्ष गया मरुदेवी चाविक । एम तीर्थं
कर भगवत सिद्धनो एक वर्णवा । चतोर्थंकर सामान्य केवली सिद्धनो गौतमादिक नो वर्णवा । स्वयंवुद्ध पोतानी मेसे तत्वग्यान पाम्यां । प्रत्येक

रयव सावि' प्रत्येकबुद्धानान्तु तदपेक्षया बाह्यवृषभादीना मिवेति उपधि' सर्वबुद्धाना म्यात्रादिद्वादशविध' तद्यथा पत्तं । १ । पत्ताबधो । २ । पायद्ववर्ण १ । पायकेसरिया । ४ । पडलाइ । ५ । पत्ताणं । ६ । मोलघो । ७ पायनिज्जोमो । १ । तिन्नेवयपच्छागा रयहरणं । ११ । चेवहोतिमुहपोत्तित्ति १२ । २ । प्र त्येकबुद्धानान्तु नवविध' प्रावरणवर्जं इति सर्वबुद्धानां पूर्वाधीते श्रुतेऽनियम प्रत्येकबुद्धानान्तु नियमतो भवत्येव लिङ्गप्रतिपत्ति' स्वयंबुद्धानामाचार्यसन्निधाव पि भवति प्रत्येकबुद्धानांतु देवतामयच्छतीति बुद्धबोधिता आचार्यादिबोधिता' संतोमे सिद्धा स्वेबुद्धबोधितसिद्धा स्तेषां ७ एतेषामेव स्त्रीलिंग सिद्धानां ८ पुल्लिं गसिद्धानां ८ नपुंसकलिंगसिद्धानां १ स्वलिंगसिद्धानां रजोहरणाद्यपेक्षया ११ अन्यलिंगसिद्धानां परिव्राजकादिलिंगसिद्धानां १२ गृहिलिंगसिद्धानां मरुदेवीप्रभृतीनां १३ एकसिद्धानामेकस्मिन् समये एकैकसिद्धानां १४ अनेकसिद्धानामेकसमये द्व्यादीनां अष्टशतान्तानां सिद्धानामित्यापर्यवसितेति १५ त थानेकसमयसिद्धानां प्ररूपणा गाथा बत्तीसाअडयाला सट्ठीबावत्तरीयबोधव्या चुलसीईछन्नउई दुरहियमट्ठोत्तरसयंच एतद्विवरणं यदा एक समयेन ए

य एगाएक्कासिद्धाण वग्गणा एगाम्रणेक्कासिद्धाण वग्गणा एगापढमसमयासिद्धाण वग्गणा एवजाव झणत

बुद्ध वस्तु वृषभादिक देखी तत्व ग्यान पाम्यां । गुरुनां प्रतिबोधथी ग्यानपाम्या ते बुद्धबोधितसिद्ध । स्त्रीलिंग सिद्ध । नपुंसकलिंग सिद्ध । पुरुष लिंग सिद्ध । स्वलिंग सिद्ध । भोघा मुंहपती सहित सीधाते । अन्यलिंग तापस वेषें वलकलचीरी नें परें सीधा । गृहिलिंगसिद्ध मरुदेवी नी परें । एकसमयें एकज सीधा ते एकसिद्ध । एक समयें एकसोआठ सीधा ते अनेकसिद्ध । तेहनी एक वर्गणा । इम सब ठिकाणें जाणिवी । एक प्रथम समयें सीधा तेहनी वर्गणा जावबीजें समये त्रीजें समयें चौथें समयें जाव संख्याते समयें असंख्याते समयें अनंते समयें सीधा ते । सब ठिकाणें ए

कादयतकार्येव द्वाभिंयमिवदाति वदा द्वितीयेपि समये द्वाभिंशदेवमेरंतर्येण पष्टो समयाम्याव द्वाभिंशच्छिवंदति ततद्वेमयअमेवांतर भवतीति यदा पुन
रनयरिनमादारम्य पष्टचत्वारिंयशंता पत्रससमयेनसिद्धति तदानिरंतरं समससमया स्यावत् सिद्धन्ति ततो ऽवश्यमेवांतरभवतीति एवं यदा एकोनपं
चागतमादिकृत्वा यावत् षष्टिरेकससमयेन सिध्यति तदा निरंतरंमष्टसमयान् सिद्धेति तदुपरिनियतंसमयादिभंवति एवमन्यत्रापि बोध्यं यावत् षष्ठ
यतमिकससमयेन यदा सिद्धन्ति तदावश्यमेवसमयान्तर भवतीति । यमोतु यावच्छतं षष्टो समयान् यदा नैरंतर्येण सिध्द्यन्ते तदावश्यमसमये अपान्तेनैक
सिद्धस्तु यृष्टतो द्वाभिंशदिति । द्वितीयसमयेऽजघन्येनैव । उत्कृष्टतो ऽष्टचत्वारिंशत्तदेव सर्वत्र जघन्येनैक समय उत्कृष्टतो गाथार्थोयं भावनीय यतीर्थे
त्यादि एत्र अनंतर सिद्धानां तीर्थाविनाभूतभावेन प्रत्यासत्तिव्यपदेशत्वेन पंचदशविधाना यद्येवंतत्र सुत्र मिदानीं परंपरसिद्धानामुच्यते तत्र अपडमसम
यसिद्धापमित्यादि नयोदयधृणो नप्रथमसमय सिद्धा सिद्धत्वद्वितीयसमयवर्तिन तेषामेवंत्रापत्तिकरणात् ॥ दुसमयसिद्धापति ॥ यडपंचदसराई
यदुपर्यसंख्यसमयसिद्धापमितिहर्षं तत्र सिद्धत्व ततोयादिषु समयेषु द्विसमयसिद्धादय मोयन्ते यत्र सामान्येना प्रथमसमयाभिधान विशेषतो द्वि
समयाभिधानमिति मत सेपा यथया कथित् ॥ पढमसमयसिद्धाचति पाठ ॥ तत्रप्रयमतरपरंपरसमयसिद्धत्वपसिद्धमसत्वा प्रथमसमय
रसिद्धाएयमातव्या इत्यादिसमयसिद्धा सु यथा सूता एवेति । इतो द्रव्यमेषजातसमायानां स्थित पुद्गलस्पर्शनत्व पित्वते । एगापरमेत्यादि । पूरएग

समयसिद्धाण वग्गणा एगापरमाणुपोग्गलाण वग्गणा एवजावएगाणुणतपएसियाणखंधाण वग्गणा एगो

केकी वर्गणा जाणवी । एक पुदगल परमाणु जे परम सूक्ष्म देखिये तेहनी वर्गणा । इम बे परमाणु ना खपनी वर्गणा । जे परमाणु मलियो
थी खंध कहियापदे । इम तीन परमाणु चार परमाणु पांच परमाणु छ परमाणु सात परमाणु आठ परमाणु नव परमाणु दस परमाणु याव सं

वनधर्मोच पुद्गला द्वे च स्कधा भवि षु रिति विशेषमति परमाणवो नि प्रदेशा स्ते च ते पुद्गला चेति विग्रह_क्षेत्रं एवं करणात् ॥ दुपएसियाणं खं धाणंति पउपंचसतइमवदसखेज्जपएसियाणंअसंखेज्जपएसियाणमिति द्रष्टव्यमिति ॥ तता द्रव्यत पुद्गलचिंता मत चेत्र विंयते ॥ एगपएगपएसेत्रा दि ॥ एकस्मिन्प्रदेशेचेत्रमाकाशवसितं एकप्रदेशावगाढास्ते च परमाण्वादयो मतप्रदेशिकस्कंधान्ता स्तु रविंसत्वात् द्रव्यपरिणामस्य यथा पारदस्ये चेनकर्मेण चारिता सुवर्णस ते सता ध्येकोमर्यति पुनरोमिता प्रयोगत समेव तद्गति ॥ जावएगपसखेज्जपएसोगाढाणंति ॥ अनंतप्रदेशावगाहित्वं तु ना स्ति पुद्गलानांलोकस्यासंख्यातप्रदेशत्वादिति भावितपाव ॥ एगएगसमएत्रादि ॥ एक समयं यावत्स्थिति परमाणु स्कंधा एक प्रदेशावगाढादित्वेन एकगुणकालादित्वेन वर्त्तमानं येषांति एकसमयस्थितिकास्तेषामिति एवं अनंतसमयस्थिते पुद्गलानां अभावा दसंखेज्जसमयठितिया

एगपएसोगाढाण पोग्गलाण वग्गणा जाव एगासंखेज्जपएसोगाढाण पोग्गलाण वग्गणा एगाएगसमय
ठितियाण पोग्गलाण वग्गणा जाव असंखेज्जसमयठितिआणपोग्गलाणवग्गणा एगा एगगुणकालयाणपो

ख्याता असंख्याता प्रदेशना धणनी एक वर्गणा । एम अनंता प्रदेशना खंधनी वर्गणा जाणवी । हिवे क्षेत्रथी कहे छे । क्षेत्रनां एक प्रदेश अवगा होने रहिया एहवा पुद्गल तेहनी वर्गणा । इम बे क्षेत्रना प्रदेशावगाढ तीन क्षेत्रना प्रदेशावगाढ यावत् असंख्यात प्रदेश क्षेत्रने व्यापी रहिया तेहनी एकेको वर्गणा कहिवी । पणि अनंत प्रदेशावगाढ नथी । जेमाटे चौदे राजलोक प्रमाण क्षेत्रना असंख्यात प्रदेश छे । अनंत प्रदेश नथी । हिवे कालथी कहे छे । परमाणु पर्म तथा एक क्षेत्र प्रदेशाश्रितपणे एक समयनी स्थिति छे जेहनी तेहनी एक वर्गणा इम यावत् असंख्यात स

च मित्यश मिति ॥ भावत पुद्गलानाह । एगाएगगुणेत्यादि ॥ एकेन गुणने गुणन याऽनं मसस एकगुण कालो पर्यो येषां ते एकगुणकालस्कारत स्मेनकृष्णतरकृष्णतमादीनां येभ्य पारभ्य प्रथममुत्पद्यति भवतीति भाव स्तेषामेवं सर्वोसपि भावसूत्राणि मध्याधिकाद्ययतममापाणि याप्यानि २१ त्रिंश ते कृष्णादि भावानां ययोदयभिर्गुणमादिति । सांमतमंम्यंतरेच प्रण्यादिविशेषितानां जघन्यादिभिदभिघागांवर्गणेकतमाह ॥ एगाजहन्नपएसिया पमि त्यादि ॥ जयन्या सर्वाल्पा प्रदेशा परमाणवस्तेसंति येषांते जघन्यप्रदेशिका द्व्यणुकाएय इत्यव स्कंधा अणुसमुदया स्तेषां उत्कर्षेणोत्कृष्टतया उत्कर्ष त उत्कृष्टसंख्या परमानंता प्रदेशा यत्र स्तेसति येषांते उत्कर्षप्रदेशिका स्तेषां जघन्याच उत्कर्षायचघन्योत्कर्षा मतया येते अजघन्योत्कर्षा मध्यमा इ त्यथ ते प्रदेशा संति येषांते अजघन्योत्कर्षप्रदेशिका स्तेषा मेतेषांचानंतवर्गणस्तो ह्यजघन्योत्कर्षमध्यप्रदेशस्यादेकवर्गणैषस्व मिति । जघन्योत्कर्षगाथं

ग्गलाणवग्गणा जाय एगा असंखेज्ज एगाअणंतगुणकालयाणपोग्गलाणवग्गणा एव वण्णगंधरसफासाजाणिय व्वा जायएगाअणंतगुणलुक्खाणपोग्गलाणवग्गणा एगाजहन्नपएसियाणखंधाणवग्गणा एगाउक्कोसपएसिया

मयनी स्थितिना । अनंत समय स्थिति नो अलाव छे । एक गुण काला पुदगलनी वर्गणा । इम यावत् असंख्यातगुण काला पुदगलनी एक वर्गणा इम अनंतगुण काला पुदगल नी एक वर्गणा । एम पांचे वर्णनी वर्गणा कहिवी । एहज रीते पांच वर्ण दोय गंध छ रस आठ फरस नी एकेक वर्गणा कहिवी । जिहांलगे अनंत गुण लूखा पुदगलनी एक वर्गणा छे । जघन्य प्रदेशनी एक वर्गणा । जेहमां परमाणुआ थोड़ा छे । ते दो परमाणु आदिकना खंध जाणिवा । एक उत्कृष्ट प्रदेशना खंधनी वर्गणा । जेहमा अनंता परमाणु प्रदेश छे उत्कृष्ट प्रदेशनो खंध कहिये । एक म

ति॰ पवगाहंते पाचते पभ्रांसा पगाहना पेषप्रदेशरूपा साचषग्वायेयोति सार्थिकमत्समाप्मषम्यावमाहमवास्तेषा मेवमदेशावगाढानामित्यथ उत्कर्षी पगाहनकाना मसंख्यातप्रदेशावगाढाना मित्यर्थ भजघन्योत्कृष्टावगाहनकानां संख्येयासंख्येयप्रदेशावगाढाना मित्यथ जघन्याजघन्यसंख्या समयापेक्ष या स्थितियेषांते जघन्यस्थितिका एकसमयस्थितिका इत्यर्थ तेषांच उत्कर्षी उत्कर्षवर्त्तसंख्यासमयापेक्षया स्थिति येषांते तथा तेषा मसंख्यातसमयस्थि तिकाना मित्यथ इतोयं बंधं जघन्येन जघन्यसख्याविशेषेणैकेने त्यर्थ गुणोगुणनंताक्ष यस्य तथाविध कालो वर्णो येषांते जघन्यगुणकालका एते षा मेव मुत्कृष्टगुणकाना मनंतगुणकालकाना मित्यर्थः इतोय वाक्ये एवं भाव सुत्रापि सर्वोसमपिय इति भौवनागौवि सामान्यस्कंधधर्मापेक्षसाधिकारा

णखधाण वग्गणा एगास्त्रजहन्नुक्कोसपएसियाणखधाण वग्गणा एव जहन्नोगाहणगाण उक्कोसोगाहणगाण
अजहन्नुक्कोसोगाहणगाण जहन्नठितियाण उक्कोसठितियाण अजहन्नुक्कोसठितियाण जहन्नगुणकालगाण
उक्कोसगुणकालगाण अजहन्नुक्कोसगुणकालगाण एव वण्णगधरसफासाणवग्गणाजाणियव्वा जावएगास्त्रज

पो जघन्य नथी उत्कृष्ट एहवा प्रदेशना खंधनी वर्गणा ते मध्यमप्रदेश खंधनी वर्गणा कहिये। एम जघन्य अवगाहना ना खंधनी उत्कृष्ट अवगाहना ना खंधनी वर्गणा। एक नथी जघन्य नथी उत्कृष्ट एहवी अवगाहना ना खंधनी वर्गणा। ते मध्यम प्रदेशावगाढ खंधनी वर्गणा कहिये। कालथी जघन्य एक समय स्थितिना खंधनी एक वर्गणा। उत्कृष्टी असंख्यात समय स्थितिना खंधनी वर्गणा। एक मध्यस्थितिना खंधनी वर्गणा। एम जघन्य एकगुणकाला प्रदेश परमाणु नी वर्गणा। एक उत्कृष्ट अनंतगुण काला पुद्गल नी वर्गणा। एक मध्यमगुण काला प्रदेश नी वर्गणा। एम

वा जघन्योत्कृष्ट मदेशकत्वा ज्जघन्योत्कर्षमदेशावगाहस्य स्पर्शविशेषस्पैकस्य भाव ॥ एगेजंबूदीवेत्यादि ॥ जम्बा ख्यविशेषेणो पलक्षितो द्वीप' जंबूद्वीप इ ति नाम दोपइति सामान्यं यावत्गृहणा देवसूत्र द्रष्टव्यं सव्वद्दीवसमुद्दाणंसव्वभंतराए सव्वखुड्डाएवट्टे तेल्लापूयसंठाणसंठिए एगंजोयणसयसहस्सं आयामविक्खंभेणं तिण्णिजो यणसयसहस्साइं सोलसहस्साइं दोण्णिसयाइं सत्तावीसाइं तिण्णिकोसा अट्ठावीसंधणुसयं तेरसंगुलाइं अद्धंगुलं च किंचिविसेसाहिया ए परिक्खेवेणंन्ति सु गममेवत् उक्तविशेषणश्च जंबूद्वीप एकएव नत्वन्यथा भणितोपितेषु संतीति। अनंतरं जम्बूद्वीप उक्त इति तत्प्ररूपकस्य भगवतो महावीरस्यैकता माह ॥ एगे समणेत्यादि ॥ एगोभगवओ महावीरोसमणे इत्यस्य शाम्यति तपस्यतीति श्रमण भज्यत इतिभग समग्रैश्वर्यादिलक्षणं तदस्यास्तीति भगवान् सकलसमग्र रूपमनयस्य विव धर्मसार्वभौमस्य पश्चिममतीर्थकरेति ॥ १ ॥ स विशेषेण ईरयति कर्माणि गमयति याति वा शिवमिति महावीरः इति गच्छति गमयतिवा प्राप्नोति

हस्मुक्कोसगुण लुक्खाण पोग्गलाण वग्गणा एगेजंबूद्दीवेसव्वदीवसमुद्दाण जावच्छद्धगुलगच किंचिविसेसेहिं प रिक्खेवेण एगेसमणेभगवमहावीरे इमीसेउसप्पिणीए चउवीसाएतित्थगराण चरिमतित्थयरेसिद्धे बुद्धे मुत्ते

वर्ण गंध रस फरस एहवी एकेक वर्गणा जाणवी । तिहांलगे मध्यम सूक्ष्म पुद्गलनी एक वर्गणा होय । एक जम्बूद्वीप नामा द्वीप सर्वद्वीप समुद्र ना मध्यभागे छे । जंबू शाश्वतो वृक्ष तेणेसहित सर्वद्वीपथी मांहीं थाटलो कोम्मेरी परिधीये एहवो जम्बूद्वीप एकज छे । बीजा जंबूद्वीप घणा छे पिण एहमाने नथी । तेलमा पूआने आकारे एकलाख योजन लांबो पहोलो त्रिण लाख सोले हजार बिसे सत्तावीस योजन त्रिण गाऊ एकसोअठावीस धनुष तेरे अंगुल ऊपर आधी अंगुल । एक श्रमण भगवंत श्रीमहावीर एणी अव सर्पिणी काले आदि नाथादिक चौवीस तीर्थंकर मांहि छेहला

मेरयतिवाकर्माणि निराकरोतीति वीरयतिवा रागादिशत्रून्प्रति पराक्रमयतीति वीरः मिरुक्तितोवा वीरो यदाह विदारयतियत्कर्म तपसाचविराजते तपोवीर्येणयुक्तश्च तस्माद्वीरइतिस्मृतः ॥१॥ इतरवीरापेक्षया महांश्चासौ वीरश्चेति महावीरः भाष्योक्तं तिहुयणविक्खायजसो महाजसोनामयोमहावीरो विक्रतोपक्कमायार सत्तुसेन्नपराजयघो ॥१॥ ईरेरविसेसेण खिवइकम्माइगमयइसिवंवा गच्छइसतेणवीरो समहवीरोमहावीरोत्ति । २ । भव्या मवस्य विन्दो वर्तुर्विंशते तीर्थकराणामध्ये चरमतीर्थकरः सिद्धः कृतार्थोजातः बुद्धः केवलज्ञानेन बुद्धवान् बोध्यं तत्त्व यथेभि बोधत्करणात् यतकर्मे यतो भवस्य ज्ञातो येन मोक्षतत्त्वं परिनिर्मुक्तो परिनिर्वृतः कर्मकृतविकारविरहात् शीतीभूतः किमुक्तंभवति । सर्वदुःखप्रक्षीणे । सर्वाणि शारीराणि दुःखानि प्रक्षीणानिमोक्षगानिवा यस्य सर्वदुःखप्रक्षीणोवा सर्वमप्रक्षीणो क्तांतस्य च परनिपात स्याहिताग्न्यादिदर्शनात् इति इदंच तीर्थकरस्यैतस्यैव कर्तं नोपगमने मतु समभाद्धोगी समवसरणादिपरिक्षतस्येन तेषांसिद्धत्वा दुःखात् एमोभगवंवीरो तत्तोसाएसकर्मिमुमोवासो । सत्तोसएक्किपंचवि सएक्किमेमोक्ख सिद्धिगयो इत्यादि । १ । एकाको धीरो निहत इत्युक्त विक्रतिचेनासयानि चानुत्तरविमानानीति तद्विवासिदेवदेवमागमाह । अनुत्तरेत्वादि । अनुत्तरास्ता अनुत्तराणि विजयादिविमानानि तेषु च उपपातो जन्म सविद्यते येषान्ते अनुत्तरोपपातिका ते नत्ताराः वाक्यालंकारे देवाः सुराः । एमाख्यविति । वर्षपातात् कोशं कोटिन्येन नरोविवदिदविनोवा । अनुज्वरणेति । बहूनो अनेकयोबल मूर्तस्थितस्येव मपर त्तिर्यकस्थितस्या उच्यत् गुणोवतिर्त्वं तयेत

जायसन्नदुरुकप्पहीणे झणुत्तरोववाइयाण देवाणएगारयणी उड्ढ उच्चत्तेण पन्नत्ता । ग्रहानरकसे एगतारे

तोर्थंकर सिद्ध यथा कृतार्थे यथा केवलयो ससारला जाय पदार्थ ज्ञायया कर्मयी रहित यथा यावत् सर्वदुःखथी प्रक्षीण यथा एक लाधीज भोक्ष गया । अनुत्तर विमान विजय । वैजयंत । जयंत । अपराजित । सर्वार्थसिद्ध । एह पांच अनुत्तर विमान ना देवतानी कायानो उंचपणो एकहाथ

रापोईनो ईप्सितस्य यदुपलं तदूर्ध्वत्व मिश्रागमे रूढ मिति तेनो र्ध्वलेना शुभार प्राकृतत्वात् मप्रसा प्ररूपिता सर्वविद्भि रिति अथवा अनुत्तरोप पातिकानां देवाना मूर्ध्वत्वेन प्रमाण मितिमीय एकारश्च प्रश्नेति व्याख्येय मिति ॥ देवाधिकारादेव अयमदेवानां ॥ महानक्षत्रेत्यादि ॥ कण्ठ्येन सूत्रयेण तारैकलमुक्तं ताराश्च ज्योतिर्विमानरूपेति वृत्तिकादिषु नचत्रेष्विद नाराप्रमाणं च ६ । पंच । ५ । तिनि । ३ । एगं । १ । चउ । ४ तिग । ३ । एग । ६ । पंच । ५ । सुसस । २ । सुसर्वेव । २ । दुविय । ५ । एगं । १ । एगं विसय । २ । मिउसमुद्द । ४ । बारसगं । १२ ॥ १ ॥ चउरो । ४ । तिय ३ । तिय । ३ । पंच । ५ । सत्त । ७ । दो । २ । भणीनिमातिथि । १ । २ ॥ रिक्खेतारपमाण भावतिहिंसतमेव वक्कति ॥ १ ॥ इह येषस्थानस्यानुरोधा षष्ठ नक्षयस्य ताराप्रमाण सूत्रं येषगवाचात्तु मावो ऽपितनाथवनेषु तदयति यस्तु कविविसम्वाद स्ताराप्रमाणस्य तथाविधमसोऽनेषु तिथिविशेषस्य नयप विशेषयुक्तस्या शुभत्वसूचकार्थतेनो श्लगायसो मतान्तरमूलत्वा सवाधस इति ॥ तारापुद्गलरूपेति पुद्गलरूप मभिधातु माह ॥ एगपएसोगाढेत्यादि ॥ सुगम नवरं मेकत्र प्रदेशे येवस्यागविशेषे अवगाढा आश्रिता एकप्रदेशावगाढा तेच परमाणुरूपा स्कन्धरूपा चेति एवं वर्ण ५ । गन्ध २ । रस ५ । स्प र्श ८ । भेदविमिशा पुद्गला भाव्या अतएवोक्तं ॥ जावएगगुणलुक्खेत्यादि ॥ तदेव मनुगमोभिहितो ऽधुना अवधि प्रत्ययत्वावसरे भणितमपि नयद्वार

पन्नत्ते चित्तानक्खत्ते एगतारे पन्नत्ते सातिणक्खत्ते एगतारे पन्नत्ते एगपएसोगाढा पोग्गला अणंता पन्नत्ता एयमेगसमयठितिया एगगुणकालगा पोग्गला अणंता पन्नत्ता जावएगगुणलुक्खापुग्गला अणंता पन्नत्ता ।

णीं छे । आर्द्रा नक्षत्रनो एकतारो छे । चित्रा नक्षत्रनो एक तारो छे । स्वाति नक्षत्रनो एकतारो छे । एक क्षेत्र प्रदेशने आश्री रहिया एहवा परमा णु रूप खंधरूप पुदगल अनंता छे । इम एक स्थितिना पुदगल । एक गुण काल पुदगल अनंता भगवंते कह्या छे । जाव एक गुण लूखा पुदगल

मनुयोगद्वारक्रमायातं मिति पुन र्विशेषेणोच्यते तत्र नैगमादय' एव नया स्वेच ज्ञाननये क्रियानये चान्त र्भवन्तीति ताभ्या मध्ययन मिदं विचार्यते तत्र ज्ञानावरणा मते खिमध्ययने ज्ञाननयो ज्ञानमेव प्रधान मिच्छति ज्ञानाधीनत्वा सकलपुरुषार्थसिद्धे र्यत' । विज्ञप्ति'फलदापुंसां नक्रियाफलदामता । मिथ्याज्ञानात्प्रवृत्तस्य फलसंवादादर्शनात् । इत्यत' ऐहिकामुष्मिकफलार्थिना ज्ञानएव यत्नो विधेय इति क्रियानयस्तु क्रियामेवेच्छति तस्याएव पुरुषार्थसिद्धा वुपपुष्पमानत्वात् १ यथाचोक्तं । क्रियैवफलदापुंसां नज्ञानमफलंमतं । यतस्त्रीभक्ष्यभोगज्ञो नज्ञानात्सुखितो भवे दित्यत' ऐहिकामुष्मिकफलार्थिना क्रियैव कार्येति विनमतेतु नामवो' प्रत्येक मपुरुषार्थसाधनता यतउक्तं । हयंनाणंकियाहीणं हयाअन्नाणिओकिया । पासंतोपंगुलोदड्ढो धावमाणोयअंधओत्ति ॥ १ ॥ संयोगएव चानयो' फलसाधकत्वं मतउक्तं । संजोगसिद्धीयफलंवयंति नहुएगचक्केणरहोपयाइ । अंधोयपंगूयवणेसमिच्चा तेसंपउत्तानगरंपविट्ठत्ति ॥ १ ॥ भावकृताप्युक्तं । नाणाहीणंसव्वं नाणेणयनीसयतिकिंचिकिरियाए किरियाएकरणतयो तदुभयगहणंसमत्तंति । १ । अथवा समायिकमेवाद्य सामान्यनये विशेषनये चान्तर्भवन्ति तत्र सामान्यनय' प्राग्व्याख्यानोक्त नामाभ्यादिपदार्थानां मेकत्वमेवा भिमन्यते सामान्यवादित्वा तस्य सहि भूते एकविधं निरवयव मिच्छन् सर्वमेव सामान्यमेवास्ति नविशेषो नि'सामान्यत्वात् इह यत्रि'सामान्यं तन्नास्ति यथाखरविषाण यथास्ति न तनि'सामान्यं यथाघटादि तथा सामान्यादन्ये नन्येवा विशेषा' प्रतिपत्तेरन् यद्यन्ये तदुक्तसमत्व मो नि'सामान्यत्वात् खपुष्पवत् यद्यनन्ये न तदा सामान्यमात्रमेव तत वा विशेषोपचार' नवोपचारत्वार्थतत्त्व विमृतत इति भावव एकंनिच्चंनिरवयव मक्किरियंसव्वगयंचसामन्नं । निस्सामन्नत्ताओ नत्थिविसेसोखपुप्फंच । २ । तथा सामन्नाओविसेसो अन्नोणन्नोव्वहोज्जजइअन्नो । सोनत्थिखपुप्फंपिव अन्नोसामन्नमेवत्तयंति । १ । तदेवं सामान्यनयाभिप्रायेणा त्मादीना मेकत्वमेव विशेषनयमतेनतु तेषा मनेकत्वमेव सदिष्टते विशेषेभ्य सामान्य मिवमभिन्नंवा स्यात् नभिन्न मभ्यन्तानुपलम्भात् खपुष्पवत् तथा न सामान्यविशेषेभ्यो

भिन्नमपि शाकपाकखानपानागमनावस्थानादिसर्वसंव्यवहाराभावात् खरविषाणवत् यथा भिन्नस्तदा विशेषमात्रवस्तु नमाम सामान्यमस्ति तेषु मात्रा माग्यमायोपचार इति नयोपचारेणार्वतस्य विम्नत्र मात्रत्व नविशेसर्वतएभ् समभिसामवसारमवहारे । उपचभन्वहारा भावायोत्तरविसानुत्पत्ति १ । तदेवमाभासोना मनेकस्य मेवेति नतु पचवयेपि मुक्तिसंभवात् विरतत्वमतिपत्तव मिति उच्यते तत् प्रादेकत्वं प्रादनेकत्व मिति । तथाहि । समविषमरूपता वस्तुन' समरूपापेक्षया एकत्वं विषमरूपापेक्षया त्वनेकत्व मिति तथ्य । वस्तुनएवसमान' परिणामोय सएवसामान्य । विपरीतास्तु विशेषा वस्तेवमनेकरूपन्तदिति । १ । इति श्रीमदभयदेवसूरिविरचिते स्थानाङ्गवृत्तौस्थानविवरणे प्रथमसध्ययन मेकस्थानकाभिधानं समाप्त मिति ।

। प्रथम मध्ययनं समाप्तम् । ग्रन्थसंख्या ११८० ।

व्याख्यात मेकस्थानकाख्यं प्रथमसध्ययन मत' सख्याक्रमसम्बद्ध मेव द्विस्थानकाख्यंद्वितीयमध्ययन मारभ्यते । सम्बन्धविशेषस्त्वयं एव केवलानां सामान्य धर्मेभ्यावर्ग वस्तु तत्र सामान्यमाश्रित्य प्रथमाध्ययने चात्मादिपदार्थेकत्वेन प्ररूपित मिदन्तु विशेषाश्रयणा तदेव विविधत्वेन प्ररूप्यत इत्यनेन संबन्धेना यात तथा चाध्ययनस्य चत्वार्यनुयोगद्वाराण्युपक्रमादीनि भवंति तानिच प्रथमाध्ययनवत् द्रष्टव्यानि यत्र विशेष स चायं उपक्रमान्तर्गतोय कोयमर्थ चतुरर्थे प्रथमाध्ययनस्य एवानुगमे प्रथमोद्देशकादिसूत्र मिदमुच्चारणीयं । यदत्थिचमित्यादि । यस्य च पूर्वसूत्रेण सहायं सम्बन्ध पूर्वं सूत्रमेकसंख्यया पु

॥ इतिश्री प्रथम ठाण सम्मत्त ॥ प्रथम अज्झयण ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

पणता कहिया छे । इतिश्री टबार्थ ठाणांग सूत्रनो प्रथम अध्ययनरूप एक ठाणो पूरोथयो ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

इता पनन्ता स्तम विमनेवमुपरूपा' पपि पुद्गलामवति येन ते एकगुणकृष्णतया विशिष्यत इति उच्यते भवन्येव यतो यदत्थीत्यादिपरम्परसूत्रं सम्बधस्तु
नुत मवा पुमता भमवतैव माख्यात मेवमामेत्यादि तवेद मपरमाख्यात । अदत्थोत्यादि । संहितादि पूर्ववत् यज्जीवादिवस्तु पस्ति विद्यते पस्मिन्स
मंसारे कचित्पाठो अदृशिंचर्पति तथानुसारमामभिक यपष्ट' पुनरव एवपास्य मयोग' पप्पामादिवस्तु पूर्वाध्ययनप्ररूपितत्वा यथास्ति लोके पयास्ति
पायामजे लोमते प्रमोयते इति लोक इतिव्युत्पत्त्या लोकालोकरूपेवा वस्तुं निरवशेषं दयो' पदयो स्यामयो पचमो विवक्षितवस्तु तद्विपर्ययसमथयो र
पतारो यत्तत् द्विपदावतार मिति । दुपडोवारति । कचित्पाठस्तत्र दयो' प्रव्यवतारोयस्य तत् द्विपदप्रत्यवतार मिति स्वरूपवत् प्रतिपक्षव चेत्यथ' तयथे
स्यद्वारयोपन्यासे । जीवचेव पजीवचेवति । जीवाश्चैव अजीवाश्चैव माकृतत्वात् संयुतपरत्वेनक्षस्य पकारोसमुच्चयार्थी एवकारोवधारणे तेनच राश्यन्त
रापोहमाह । नोजीवाप्रसंराश्यन्तरमस्तीति चेयेत सर्वनिषेधकत्वे नोशब्दस्य नोजीवप्रयन्देना जीवएव मतोयते देशनिषेधकत्वे तु जीवदेश एव प्रतीयते सच
देशो दृमिनो स्वतव्यतिरिक्त इति जीवएवासा विति चेयद्वतिवा एवकाराव' विशेषयएवाय इतिवचनात् ततश जीवा एवेति विवक्षितवस्तु जीवा एवे
ति तत्प्रतिपक्ष इति एवं सयत पपवा यद् स्तोति यत् सम्बायं यदित्वतः तत् द्विपदावतार द्विविधं जीवाजीवमेदा द्विति ज्ञेयं तथैवच पय पसेत्यादि

जदत्थि णंलोगे तं० सव्वं दुपडोआरं तं० जीवच्चेव अजीवच्चेव तसच्चेव थावरच्चेव सजोणियच्चेव अजोणि

श्रीसुधर्मास्वमी जंबू स्वामीनें कहे छे जे यासोकने विषे । जीवादि पदार्थ छे तेसर्व बेप्रकारे छे । ते कहे छे । एक चेतना लक्षण जीवछे । बीजो
प्रजीव चेतना-रहित छे । जीवना बेभेद त्रस ते बेइन्द्रियादिक । थावर पांच एकेंद्री पृथिवी आदिक । एक योनिसहित जीव संसारी चौरासी लाख

नवमूष्मा जीवतत्वमेव भेदान् समतिपश्चा गुपदर्शयति तत्र चसनामकर्मोदयत सपंतीति चसा दीद्रियादय स्थावरनामकर्मोदया तिष्ठंतो त्येव गोत्रा स्थावरा पृथिव्यादय सह योग्यात्पत्तिस्थानेन सयोनिका संसारिण स्तद्विपर्यासभूता अयोनिका सिद्धा सहायुषा वर्तंत इति सायुष स्तद्व्ये मायुषा सिद्धा एवमेंद्रिया संसारिण अनिन्द्रिया सिद्धादय सवेदका स्त्रीवेदाद्युदयवंत अवेदका सिद्धादय सहरूपेण मूर्त्ता वर्तंत इति समासांते रूपमत्यये सति सरूपिण संस्थानवर्णादिमंत सशरीराद्त्वव न रूपिणो अरूपिणो मुक्ता सपुद्गला कर्मादिपुद्गलवंतो जीवा अपुद्गलास्सिद्धा संसारसमापन्नका भाविता संसारसमापन्नका संसारिण स्तदितरे सिद्धा शाश्वता सिद्धा जन्ममरणादिरहितत्वा दशाश्वता संसारिण स्तत्पुनस्त्वादिति । एवं जीवतत्वस्य विपर्यासतारविरूप्या जीवतत्वस्य तन्निरूपणमाह । आगासेत्यादि । आकाश व्योम जीवाकाशं तदन्य धर्मास्तिकायादि धर्मो धर्मास्तिकायो गत्युपष्टंभ

जीवचेव साउयचेव अणाउयचेव सइंदियचेव अणिंदियचेव सवेयगचेव अवेयगचेव सरूविचेव अरूविचेव सप्पोग्गलचेव अपोग्गलचेव ससारसमावन्नगचेव असंसारसमावन्नगचेव सासयचेव असासयचेव आ

जीवा योनिना । अयोनि योनिरहित जीव सिद्ध । आउखा सहित जीव संसारी । आयु रहित सिद्ध । इन्द्रीसहित संसारी जीव । इन्द्रिय रहित असंसारी जीव । वेदसहित संसारी जीव । वेद रहित असंसारी जीव । शरीर सहित संसारी जीव । शरीर रहित असंसारी जीव । कर्म पुदगल सहित संसारी जीव । कर्म पुदगल रहित असंसारी जीव संसारमें भमें ते संसारी जीव । संसार रहित मोक्ष गया ते जीव । एक शासता जीव जनम मरण रहित ते असंसारी जीव एक अशास्वता संसारी जीव जनम मरण करवापी । एहजीव बे प्रकारें देखाया । हिवे अजीवना बेभेद देखाडे

गुण सदस्यो धर्मोधर्मास्तिकाय' किमुपदर्शकं' सविषयवचनादितत्सूत्राणि चत्वारिमाम्बरिति यथाश्रय क्रियामोसत्वामामणो भवतोति क्रियानि रूपणायाह । दोकिरियेत्यादि । सूत्राणि चठणिमत् करणंक्रिया क्रियत इतिवा क्रियेति तेच द्वे प्रज्ञप्ते प्ररूपिते जिनै रथ जोवस्य क्रिया व्यापारो जीव क्रिया तथा जोवस्य पुद्गलसमुदायस्य यत्कर्मेण्यापत्व तथापरिणमनं सा अजीवक्रियेति इयचेयशब्दस्य चेवशब्दस्य पाठांतरे प्राकृतत्वा द्विभाव इतिचेवेत्यस्य समुच्चयमात्रमतोवते अपिचेत्यादिवदिति । जीवकिरियेत्यादि । सम्यक् तत्वश्रद्धानं तदेवजीवव्यापारत्वात्क्रिया सम्यक्त्वक्रिया एवं मिथ्यात्वक्रियापि न वरं मिथ्यात्वमतत्वश्रद्धानं तदपि जीवव्यापारएवेति अथवा सम्यग्दर्शनमिथ्यात्वयोःसतो र्भवत तेसम्यक्त्वमिथ्यात्वक्रिये इति । अजीवकिरि येत्यादि । तत्र

गासेचेव नोआगासेचेव धम्मेचेव अधम्मेचेव बंधेचेव मोक्खेचेव पुन्नेचेव पावेचेव आसवेचेव संवरेचेव वेयणाचेव णिज्जराचेव दोकिरियाउ पन्नत्ता तंजहा जीवकिरियाचेव अजीवकिरियाचेव जीवकिरिया

छे । आकाश ते व्योम । नथी आकाश ते धर्मास्तिकाय प्रमुख पांच । धर्मास्तिकाय चालता जीवने आधार आपें । अथवा विरति रूप धर्म । अधर्मास्तिकाय जे थिरराखे । अथवा पाप ते अधर्म । कर्मनो आश्रव द्वारे करी सबंध ते बंध । मोक्ष ते सकल कर्मथी छूटवु । पुन्यते शतादि करवु पापतेजी वहिंसा । कर्म आविवानो मार्ग ते आश्रव । कर्म आविवाना मार्ग ने रोकवो ते संवर । वेदना ते दुखादि के करी पीडा । कर्मनो शोषवु तेनिर्जरा करिये तेक्रिया कहिये तेहने भगवते बेप्रकारनी कहीछे । तेकहेछे जिहा जीवनो व्यापारछे तेजीव क्रियाकहिये । अजीव तेपुद्गल तेनो कर्म पणे परिणमवो ते अजीवक्रिया जीवनी क्रिया बे प्रकारें कही भगवंते तेकहे छे । एक सम्यक्त क्रिया साचातत्वनें सरदहनरूप व्यापार विशेष । एक

ईरियावहियत्ति ईरणमिर्या गमनं तद्विशिष्टः पंथा ईर्यापथ स्तत्र भवा ऐर्यापथिकी व्युत्पत्तिमात्र मिदं प्रवृत्तिनिमित्तंतु सत्त्वैवयोगप्रत्यय मुपयात मोहादिक्षयस्य सातवेदनीयकर्मतया भजीवस्य पुद्गलराशे भवत सा ऐर्यापथिको क्रिया इह जीवव्यापारे प्यजीवप्रधानत्वविवक्षया जीवक्रियेय मुक्ता च र्यविशेषो यैर्यापथिकोक्रियोच्यते यतोभिहितं ईरियावहियाकिरियादुविहा बज्झमाणावेदिज्जमाणाय जापढमसमयेवक्षा वीयसमये वेइया सावद्या पुट्ठ वेदयाविज्जिता सेयकालेयकम्मयावतीति वचासम्पराया य ‥‥भासेसु भवा साम्परायिकी साप्रजोवस्य पुद्गलरामे कर्मतापरिणतिरूपा जीवव्यापार स्या विवक्षया इत्येवक्रियेति साय सूक्ष्मसम्परायान्तानां गुणस्थानकवतां भवतीति । ३ । पुनरन्यथा वे दोकिरियेत्यादि । काइयाचेवत्ति । कायेन निवृत्ता कायिको कायव्यापार स्तथा । पाहिगरणियाचेवत्ति । अधिक्रियते आत्मा नरकादिषु येन तदधिकरणं अनुष्ठानं वाह्यं वा वस्तु इत्यत्र वाह्यं विवक्षितं च

दुविहा पन्नत्ता तजहा सम्मत्तकिरिआचेव मिच्छत्तकिरियाचेव अजीवकिरियादुविहा पन्नत्ता तजहा इरिआवहिआचेव संपराइयाचेव दोकिरियाओ पन्नत्ता तजहा काइयाचेव आहिगरणियाचेव काइया

मिथ्यात्वक्रिया खोटा तत्वनें सरदहवु जीवनो व्यापार । अजीव क्रिया बे प्रकारेंकही भगवंते तेकहे छे । मार्गे चालवा नी क्रिया ते ईर्यापथिकी क्रिया चालता कर्म बधायें ते कर्म अजीव छे । जोकेतु जीवनो व्यापारछे तो पणि अजीवनुं प्रधान पणुं इहां कहियो । तेमाटे ए अजीव क्रिया इम सघ ठेकाणें जाणवुं । संपरायन कषाय थी उपजी क्रिया अजीव कर्म पुद्गलनी राशि ते दशमा दशमा गुणस्थानें होय । वली बे क्रियाछे तेकहेछे । कायाना व्यापारथी लागे ते कायिकी क्रिया । हल कुहल छकगादिके करी लागे ते अधिकरणिकी क्रिया । कायिकी बेप्रकारे छे तेकहेछे । पापथी

शादि तत्र मताधिकरणिकीति । ४ । कायिकीद्विधा । अनुपरतकायक्रियाचेवत्ति । अनुपरतस्या विरतस्य सावद्यात् मिथ्यादृष्टे सम्यग्दृष्टे र्वा कायक्रि योत्क्षेपादिलक्षणा कर्मबन्धनिबन्धन मनुपरतकायक्रिया तथा । दुष्पउत्तकायक्रियाचेवत्ति । दुःप्रयुक्तस्य दुष्टमयोगवतो दुःप्रणिहितस्यें क्रियाकान्वि स्वे इष्टानिष्टविषयप्राप्तौ मनाग् संवेगनिर्वेदगमनेन तथा निःश्रेयसमार्गस्था ऽशुभमनःसंकल्पद्वारेणा पवर्गमार्गं प्रति दुर्व्यवसितस्य प्रमत्तसंयतस्य सर्व कायक्रिया दुःप्रयुक्तकायक्रियेति । ५ । आधिकरणिकीद्विधा तत्र । संजोयणाहिगरणियाचेवत्ति । यत्पूर्वनिर्वर्तितयो र्यातत्पुम्बाविकयो रयो संयोजनं क्रियते सा संयोजनाधिकरणिकी । तथा । णिव्वत्तणाहिगरणियाचेवत्ति । यथादिव स्तयो निर्वर्तनं सा निर्वर्तनाधिकरणिकीति । ६ । पुन र यथा है । पाउसियाचेवत्ति । प्रद्वेषोमत्सर स्तेन निर्वृत्ता प्राद्वेषिकी तथा । पारितावणियाचेवत्ति । परितापनं ताडनादिदुःखविशेषलक्षणं तेन

किरिया दुविहा पन्नत्ता तंजहा अणुवरयकायकिरियाचेव दुपउत्तकायकिरियाचेव आहिगरणिया कि रिया दुविहा पन्नत्ता तंजहा संजोयणाहिगरणियाचेव णिव्वत्तणाहिगरणियाचेव दोकिरियाउ पन्नत्ता

नियमें नथी अविरती मिथ्यात्वी अथवा सम्यग् दृष्टीनें काया हलावते चलावते पापलागे ते अनुपरतकायिकी क्रिया । पाचूं इंद्री आश्रीनें इष्ट अनिष्ट वस्तुथी सुख दुःख उपजे ते अथवा मांठे मनना संकल्पें करे ते प्रमत्त साधुनें दुःप्रयुक्त कायिकी क्रिया । अधिकरणकी क्रिया । कायानी क्रिया ते बेप्र कारें कही भगवंते ते कहे छे । एक संयोजनाधिकरणिकी ते खड्गने मुठिने जोडवी पालीमे हाथानो संयोग करवो इत्यादिक । बीजी निवर्तनाधि करणिकी ते खड्गादि अधिकरणनुंरायो रावया परदी मूसल हलादिक सजकरी राखे । अथी बे क्रिया कही भगवंते अजीवपुद्गलनी ते कहे छे ।

कर्मबन्धनं सा जीवारंभिकी तथा ॥ अजीवारंभियावेअति ॥ यथाजीवान् जीव कलेवराणि पिष्टादिमयजीवाकृतीन् वस्त्रादीन्वारभमाणस्य सा अजी वारंभिकीति । १४ । एवंपरिग्गहियावेअति ॥ पारिग्रहिकीअपि द्विधा जीवाजीव परिग्रहप्रभवत्वा तस्या इतिभाव । १५ । पुनरन्यथाहे ॥ माया वत्तियावेअति ॥ माया शाठ्यं प्रत्ययो निमित्तंयस्या कर्मबंधक्रियाया व्यापारस्य सा तथा ॥ मिच्छादंसणवत्तियावेअति ॥ मिथ्यादर्शनं मिथ्यात्वं प्रत्ययो यस्या सा तथेति । १६ । मायाद्वेधा ॥ आयभाववंकणयावेअति ॥ आत्मभावस्य प्रशस्तस्य वंकनता वक्रीकरणं प्रशस्ततलोपदर्शनतात्मभाववंकनता वंकनायाश्च बहुलविषयत्वा आत्मप्रत्ययो नविवक्ष साच क्रिया व्यापारत्वात् तथा परभाववंकणयावेअति ॥ परभावस्य वंचनता वक्रनता यात्कूटलेखन

रंभियाचेव अजीवआरंभियाचेव एवपारिग्गहियावि दोकिरियाउ पन्नत्ता तंजहा मायावत्तिआचेव मिच्छा दसणवत्तिआचेव मायावत्तिआकिरिआ दुविहा पन्नत्ता तंजहा आयभाववंकणयाचेव परभाववंकणयाचेव

कर्म बंधायें ते जीव आरंभिकी क्रिया । जीव रहित कलेवरमें अग्नि संस्कार तथा वस्त्रादि वणवानो आरंभ तेथी कर्म बंधायें ते अजीवआरंभिकी किरिया । एम परिगृहिकीनां वे भेद जीव परिगृहिकी मनुष्यादिकनी अजीव परिग्गहिया सुवर्ण गहणादिकनी । वली किरिया बेप्रकारें कही भग वंतें ते कहे छे । मायाप्रत्ययिकी जे कपट करिवायोलागे । मिथ्यात्वदर्शनकी मिथ्याकरणीकरें तेथीकर्म बंधायें अदेवादिकें देवादि बुद्धिनी धारवो ते मिथ्यात । माया प्रत्ययिकी ना वे भेदछे ते कहेछे । आत्मपरिणाम अभ्यंतर वांका बाहिर रूडाकरी देखाडे ते आत्मभाव वंकनता । कूटलेखादि कें करी परनें वंचीये ते परभाववंकनता । मिथ्यादर्शन क्रिया बेप्रकारेछे ते कहेछे । पोतानां शरीर प्रमाणथी जीवनें वोछो अथवा अधिकोकरी

रणोति ॥ १० ॥ पाणाति ॥ सहत्थपाणाइवायकिरियाचेवति ॥ स्वहस्तेन स्वयमा विवेन्द्रियादिना परमात्मा वा क्रोधादिना तिपातयत' स्वहस्तमा
तिपातक्रिया तथा ॥ परहत्थपाणाइवायकिरियाचेवति ॥ परहस्तेन तथैव परहस्तप्राणातिपातक्रियेति । ११ । द्वितीयापि द्विधा ॥ जीवपच्च
णकिरियाचेवति ॥ जीवविषये प्रत्याख्यानाभावेन यो बन्धादि व्यापार सा जीवाप्रत्याख्यान क्रिया तथा ॥ अजीवापच्चक्खाणकिरियाचेवति ॥ मद्
ोदेषु मद्यादिषु प्रत्याख्यानात् कर्मबन्धनं सा अजीवाप्रत्याख्यानक्रियेति । १२ । पुन रन्यथा द्वे ॥ आरंभियाचेवत्ति ॥ आरम्भणमारम्भ स्तत्प्रभवा आर
भिकी तथा ॥ पारिग्गहियाचेवति ॥ परिग्रहे भवा पारिग्रहिकोति । १३ । आद्या द्वेधा ॥ जीवआरंभियाचेवति ॥ यज्जीवाना रम्भमाणस्यो पमर्दत

णाइवायकिरिया दुविहा पन्नत्ता तंजहा सहत्थपाणाइवायकिरियाचेव परहत्थपाणाइवायकिरियाचेव अ
पच्चक्खाणकिरिया दुविहा पन्नत्ता तंजहा जीवपच्चक्खाणकिरियाचेव अजीवपच्चक्खाणकिरियाचेव दोकि
रियाओ पन्नत्ता तंजहा आरंभियाचेव पारिग्गहियाचेव आरंभियाकिरिया दुविहा पन्नत्ता तंजहा जीवआ

ही ते कहे छे। पोतानें हाथें पोतानों मारवें अथवा क्रोधथी पर मारवें एमें ते स्वहस्तप्राणातिपातकी क्रिया। एमज परहाथें पोताना प्राण
ॅं ते परहस्तप्राणातिपातकी क्रिया। अप्रत्याख्यानकी क्रिया बे प्रकारें छे ते कहे छे। जे वनस्पति सचित्त जीव सहितनें विषें पच्चखाणविना
ॅ थाय ते अपच्चखाणकी क्रिया। मदिरादि अजीवने विषें पच्चखाण नही ते अविरति थी कर्मबंध ते अजीव अपच्चखाणकी क्रिया। वली बे क्रिया
री भगवंते ते कहे छे। एक आरंभिकी। बीजी परिग्रहिकी आरंभिकी बे प्रकारें कही भगवंते ते कहेंछे। जे सचित्त माटी प्रमुखनो आरंभथी

यत्रेनमनं सा श्रोपारधिकी तथा ॥ यत्रोपारिगियावेशति ॥ यथाजीवान् जीव कलेवराणि पिष्टादिमयजीवाकृतीन् यत्राराम्भारम्भमाणस्य सा यत्रो वारम्भिकीति । १४ । पर्यनरिम्भ्रिवाचेशति ॥ पारम्भिकीर्यहिग्निधि स्वय जीवाजीव परिग्रहप्रमत्ता तस्या इतिभाव । १५ । पुनरन्यथाचे ॥ माया यतिमावेशति ॥ माया माळ्य प्रत्यया निमित्तंयस्या यथार्थधश्निया व्यापारस्य सा तथा ॥ मिथ्यादर्शनप्रत्ययिकेवति ॥ मिथ्यादर्शनं मिथ्यात्वं प्रत्ययो यस्या सा तथेति । १६ । माया वेथा ॥ पामभावधंचनवाचेशवि ॥ भामभावस्था प्रयस्तम वचनता यथोक्तर्दं प्रयस्ततलोपदर्शनताभाववंचनता यंत्रमामाय शुद्धविषमाया भावमतयो नरिवय श्राप क्रिया मायारस्मात् तथा परभावपचनवाचेशति ॥ परभावस्य वहमता वचनता याकूटलेखन

रंनिश्राचेव श्रजीवश्रारंनियाचेव एवपारिग्गहियायि दोकिरियाउ पन्नत्ता तजहा मायावत्तिश्राचेव मिच्छा दंसणवत्तिश्राचेव मायावत्तिश्राकिरिश्रा दुविहा पन्नत्ता तजहा श्रायन्नावचकणयाचेव परन्नायवकणयाचेव

कर्म बंधायें ते जीव श्रारंभिकी क्रिया । जीव रहित कलेवरमें श्रग्नि संस्कार तथा वस्त्रादि वस्त्वानो श्रारंभ तेथी कर्म बंधायें ते श्रजीवश्रारंभिकी क्रिया । एम परिग्रहिकीना बे भेद जीव परिग्रहिकी मनुष्यादिकनी श्रजीव परिग्रहिया सुवर्ण गहणादिकनी । वली क्रिया बेप्रकारें कही भग वतें ते कहे छे । मायाप्रत्ययिकी जे कपट करिवायोलागे । मिथ्यात्वदर्शनकी मिथ्याकरणीकर्रे तेथीकर्म बंधायें श्रदेयादिकें देवादि बुद्धिनो धारवो ते मिथ्यात । माया प्रत्ययिकी ना बे भेदछे ते कहेछे । श्रात्मपरिणाम श्रन्यथा र थाका बाहिर रूडाकरी देखाडे ते श्रात्मभाव वक्रता । कूटलेखादि कें करी परनें वंचीये ते परभाववंचनता । मिथ्यादर्शन क्रिया बेप्रकारेंछे ते कहेंछे । पोतानां शरीर प्रमाणथी जीवनें थोडो श्रथवा श्रधिकोकरी

रचादिभि सा परभावर्वचनतेति मवीहव्याचयेव । तंतंभावमाचरद जेचपरोवंचिव्यहमुक्तेवचरचारिति । १७ । वितीयापिदेषा । ऊनातिरित्त मिच्छादंसणवत्तियाचेवत्ति । तत्र प्रमाणाधीन मतिरिक्त ततोधिक मात्मादिवस्तु तद्विषयं मिथ्यादर्शनं तदेवप्रत्ययो यस्या सा ऊनातिरिक्तमिथ्यादर्शन प्रत्ययेति । तथाहि । कोपिमिथ्यादृष्टि रात्मानं शरीर व्यापकमपि । अङ्गुष्टपर्वमात्र यवमात्र श्यामाकतंदुलमात्र चेति होनतया चेति । तथान्य पंचश गु प्रतिक सर्वव्यापकं चेत्यभिधत्तया भिमन्यते । तथा तम्माहरित्तमिच्छादंसणवत्तियाचेवत्ति । तव्यादूनातिरिक्तमिथ्यादर्शना व्यतिरिक्तं मिथ्यादर्शनं नास्त्येवा मे स्यादिमवपूर्व प्रत्ययो यस्या सा तथेति । १८ । पुन रन्यथा वे दिट्ठियाचेवत्ति । दृष्टे र्जाता दृष्टिजा अथवा दृष्ट दर्शनंवस्तुवानिमित्ततयास

मिच्छादसणवत्तिआकिरिआ दुविहा पन्नत्ता तजहा ऊणाइरित्तमिच्छादसणवत्तियाचेय तव्वइरित्तमिच्छा दसणवत्तियाचेव दोकिरियाचेय पन्नत्ता त० दिट्ठियाचेव पुट्ठिआचेव दिट्ठियाकिरिया दुविहा प० त०

मानें ते ऊनातिरिक्त मिथ्यादर्शन क्रिया अभिकोईक मिथ्याती शरीर प्रमाण आत्माने कहे जे अंगूठाना पर्वमात्र यव जेवडो सांजलिये धान्यकण जेवडो आत्मा छे । कोईकहे पांचसे धनुषथी पणि जीव तेहथी मोटो छे एह मिथ्यात्व वचन जगतने जेहनूं जेवडो शरीर तेहनें तेवडो जीव मान करियो हाथीनें हाथीना शरीर प्रमाणें घणें कुंथुआने कुंथुआना शरीरप्रमाणे जीवछे । एसी केतलाई मिथ्याती कहेछे ए हीणो तथा अधिको आत्मा अथवा जीव होवनथी पचभूत चोर जीव मिथ्याछे ते तव्यतिरिक्त मिथ्यादर्शन क्रिया । वली बे क्रिया ते कहे छे । दृष्टि जोवाथी कर्म बंधायें घवाई प्रमुख जोता ते दृष्टिकी । पापनूं मरम पूछिवाथी तथा अरसनूं तेहथी । दृष्टीनी क्रिया बेप्रकारेकही ते कहे छे । जीव देखवाथी

स्पामस्तिमाद्धठिका दृग्मनार्थं या गतिक्रिया दृग्मना वा यत्कर्मेति सा हष्टिका दृष्टिका वा। तथा पुट्ठियाचेवत्ति। पृष्टिं प्रच्छा ततो जाता पृष्टिजामश्च जनितो व्यापार। अथवा पृष्टं प्रश्नः वस्तु वा तदस्तिकारणत्वेन यस्यां सा पृष्टिकेति। अथवा स्पृष्टिमर्पणं ततोजातास्पृष्टिजावदेवस्पृष्टिकापीति। १८। मायाहेश। जीवदिट्ठियाचेवत्ति। या अश्वादिदृग्मार्थंगच्छत। तथा अजीवदिट्ठियाचेवत्ति। अजीवानां चित्रकर्मादीनां दर्शनाय गच्छतो सा सा अजी वदृष्टिकेति २। एवंपुट्ठियाचेवत्ति। एवमितिजीवाजीवभेदेनद्विधेत्र। तथाहि। जीवमजीवं वा रागद्वेषाभ्यां पृच्छतः स्पृशतो वा या सा जीवपृष्टिका जीव स्पृष्टिका वा अजीवपृष्टिका अजीवस्पृष्टिकावेति। २१। पुन रन्यथाद्वे पाडुच्चियाचेवत्ति। बाह्यवस्तु प्रतीत्याश्रित्य भवा सा प्रातीतिका तथा सामंतोवणि वाइयाचेवत्ति समंतात्सर्वतः उपनिपातो जनमीलक स्तस्मिन् भवा सामंतोपनिपातिकीति। २२। प्राथा द्वेधा जीवपाडुच्चियाचेवत्ति। जीवं प्रतीत्य यः क र्मबंधः सा तथा। तथा अजीवपाडुच्चियाचेवत्ति। अजीवंप्रतीत्य योरागद्वेषोद्भव स्तज्जो बोधः सा अजीवप्रातीतिकीति। २१। द्वितीयापिद्विधेत्यतिदिश याह

जीवदिट्ठियाचेव अजीवदिट्ठियाचेव एवपुट्ठियाअि दोकिरियाओ प० त० पाडुच्चियाचेव सामंतोवणिवाइया चेव पाडुच्चियाकिरिआदुविहा प० त० जीवपाडुच्चिआचेव अजीवपाडुच्चिआचेव एव सामंतोवणियाइया

क्रिया ते हाथी घोडा जोवा जातां कर्म लागे। चित्रामण प्रमुख जोवा जातां पापबंधे ते अजीव दृष्टिका। इमज जीव आश्री स्पर्शकीक्रिया रागद्वेषें जीव अजीवनो प्रश्नपूछे तथा फरसते। वली ए क्रिया छे ते कहे छे वाहिरनी वस्तु आश्रीनें होय ते प्रातीतिकी। सर्व प्रकारे जनना मेलावायी ऊपनी ते सामंतोपनिपातिकी। प्रातीतिकी ये प्रकारें छे ते कहे छे। जीव आश्री कर्म बंधे ते जीव प्रातीतिकी अजीव आश्री राग

एवं सामन्तोवणिवाइवत्ति । तथाहि यथापि कंसो रूपवानस्ति तं च जनो यथा यथा प्रलोकयति प्रशंसयति च तथा तथा तस्यामोदयतोपि जीवसामंतो प निपातिको तथा रथादी तथैवाप्यत । भजीवसामंतोपनिपातिकोति । २४ । भथवा दे साहत्थियावेयति । साहत्थेणनिवृत्तासाहत्थिको । यथा नेसत्थि यावेयति । निसज्जनं निसर्ष्ट दीपनमित्यर्थं । तद्भवा नेसत्थिको निसृजतो य कमकन्यकार्थं निसर्गएवचेति । २५ । तथा यादेया । जीवसाहत्थिया चेयति । यस्तु हस्तगृहीतेन जीवं मारयति सा जीवसाहत्थिको । तथा भजीवसाहत्थियावेयति । यत्तु हस्तगृहीतेनैवा जीवेन यष्ट्यादिना जीवं मारयति सा भजीवसाहत्थिकीति । भथवा साहत्थेन जीवं ताडयत एवा । भजीवं ताडयतान्येति । २६ । द्वितीयापि जीवाजीवभेदेवेत्यतिदिश्य याह । एवं नेसत्थियावेयति । तथाहि । राजादिसमादेशाद्यथाउदकस्य यन्त्रादिभिः निसजन साजीवनेसृष्टिकीति । यथुकाण्डादीनांधनुरादिभिः सा भजीवनेसृष्टिकी

यि दोकिरियाउ पन्नत्ता तंजहा साहत्थियाचेव णेसत्थियाचेव साहत्थियाकिरिया दुविहा पन्नत्ता तंजहा जीवसाहत्थियाचेव अजीवसाहत्थियाचेव एवंणेसत्थियावि दोकिरियाउ पन्नत्ता तंजहा आणवणियाचेव

हेपणी ऊपनी ते भजीव सामंतोपनिपातिकी । सामंतोपनिपातिकी बे प्रकारें । कोई एक घलड़ रूपवत देखी लोक वखाणे तेहनी शोभा वधंये तिमतिम ते वैसतो धणी सुख पामे ते जीव सामंतोपनिपातिकी । इमज भजीव सामंतोपनिपातिकी कहिवी । बे क्रिया कही प्रगवते ते कहेछे । पोतानें हाथथी ऊपनी ते स्वहस्तिकी । पाखाणादिक नांखवाथी ऊपनी ते नैसत्थिकी । स्वहस्तिकी क्रिया बे प्रकारें कही ते कहें छे । पोतानां हाथें खासी जीवें करी जीवनें हणे ते जीव स्वहस्तिकी पोतानां हाथें भजीव खड्गादिकें भजीवनें हणे ते भजीव स्वहस्तिकी । इम राजादिकनी भाग्यायें यन्त्रने

ति । अथवागुर्वादो जीवं शिष्यपुत्रं वा निसृजती ददत एवा अजीवं पुन रेयपोम अन्नपानादिवं निसृजती ददतोम्वेति । २७ । पुनरस्यभावे भाववषिया
वेशति । भाज्ञापनस्या देमनवेय माज्ञापन मैवेवाज्ञापनी सेवाज्ञापनिका तत्थ वमवन्स भावियममेवमेवि । भानायर्नवा भानायनी । तवावेयारवि
यावेशति । विदारणविचारणवितारणं वा साविषमस्वबोपादाना देदारणोवादिनाचमिति । २८ । एतेचवेमविदेवाजीवाजोषभेदादिवि । तथाहि ।
जीवमाज्ञापयतमनायतावा परेणजीवाज्ञापनी जीवानायनीवा एवमेवाजीवविषया अजीवाज्ञापनी अजीवानायनी वेति । २९ । तवावेयारविमति ।
जीवमजीवंवाविदारयतिस्फोटयतीति अथवा । जोवमजीवंवा असमानभागेषु यो विक्रीणाति देभाषिकोविचारयति । परियच्याबेदत्तिभवितबोति । अथवा
जोवपवर्यवितारवतिमतारयति मस्ययतीत्वर्थोऽसमुवेरेताहयत्थाहयत्वमिति पुरुषादिवितारणमुवेनवा जीवमचलेतादृमेतदिति यथा । जोवमवेयारविया
मजीववेयारविमावति । एतत्सर्वमतिदेशेनाह । अवेयवेसत्वियमसि । २ । अथवा वेमणाभोगवत्तियाचेवत्ति अनाभोगोज्ञानादि अज्ञानं प्रत्ययो निमित्त य

वेयारणियाचेव जहेव णेसत्थिया दोकिरियाओ पन्नत्ता तंजहा अणाभोगवत्तियाचेव अणवकंखवत्तियाचेव
अणाभोगवत्तिया किरिया दुविहा पन्नत्ता तंजहा अणाउत्तआयणयाचेव अणाउत्तपमज्जणयाचेव अण

पियें पार्श्वे मारवुं । ये क्रिया कही भगवंते ते कहे छे । स्वामीनी आग्याथी कर्म बंधाये ते आज्ञापनी । विदारवुं वेदवु तेहथी कर्म बंधे ते वि
दारिकी । नैसत्थिकीमी परें ये प्रकारें कही । वली ये प्रकारें क्रिया कही ते कहे छे । उपयोगविना कर्म बंधे ते अनाभोगवत्तिया । पोतानां धारी
रनी अपेक्षा विना क्रिया लागे ते अनवकांक्षा । अनाभोगवत्तिया ये प्रकारें ते कहे छे । उपयोग विना वस्त्रादिकनुं लेवु । उपयोग विना पुंजवुं

स्सा तथामथवकंपत्तियाचेवत्ति। मनाकांचाश्मशरीरायमपेक्षत्वं सेव प्रत्ययो मस्सा सा मवकांचाप्रत्ययेति । ११ । मायाक्रिया । मवाउत्तमाद्य मायेत्ति । ममाउत्तममामोसवानगुपयुक्तस्य तसारागता यथादिविषये मत्वता मनाउत्तारागता । तयापवाउत्तपमअपमायेवत्ति ममाउत्तस्येव पामादिभिनवाप्रमार्जनता ममाउत्तममार्जनता इत्यवताप्रत्यय स्वार्थिक माक्ततलेमपादागारोमां भावविषमयावेति । १२ । द्वितीयापिद्विधायसरीरे स्यादि तथामशरीरा मवकांचाप्रत्यया सा स्वशरीरयतिकारिकर्माविमुवत: तथापरशरीरयतिकराचितउवतोद्वितीयेति । १३ । रोषिकिरियेत्यादिनोपि सुगा विकंचानि मवर्द मेमरागोमायाबोमवमय देम क्रोधमानवमयदति । १४ । सदनमस्याख्याततस्सुगमत्वादिति एतायक्रिया मायोमदंबोमाइति गर्हा

यक्रस्ववत्तिया किरिया दुविहा पन्नत्ता श्रायसरीरश्रणवकखवत्तियाचेव परसरीरश्रणवकखवत्तियाचेव दो किरियाउ पन्नत्ता तजहा पेज्जवत्तिश्राचेव दोसवत्तिश्राचेव पेज्जवत्तियाकिरिया दुविहा पन्नत्ता तजहा मायावत्तियाचेव लोभवत्तियाचेव दोसवत्तियाकिरिया दुविहा पन्नत्ता तजहा कोहेचेव माणेचेव दुविहा

ममार्जवुं तेथी कर्म वध । अणवकांचा क्रिया वे प्रकारें ते कहे छे । पोतामा शरीरथी पापसामे तेहथा कर्म करेते । परना शरीरथी पापकरतां किरिया सामे ते परशरीर अणवकखवत्तिया । वली वे क्रिया कही ते कहे छे । प्रेम स्नेहनी क्रिया द्वेप कोपनी क्रिया । प्रेमनी क्रिया वे प्रकारें कही ते कहे छे । लोभयको करवो ते लोभनी राग क्रिया लोमथी रागपर्ने । द्वेपनी किरिया वे प्रकारेंछे ते कहे छे । क्रोधथी कर्म वधायें मानथी कर्म वधायें जेम कोणिक राजायें विशाला नगरी भांगी । एसवे क्रिया गर्हयोग वे एहथी तेगर्हवा ते कहे छे । पापनी निंदा तेगर्हवा । एकमर्म

मार ॥ दुविहागरिहेत्यादि ॥ द्विधागर्हा द्विविधैवैषा साद्विविधामर्हेगर्हा कुत्सितं प्रतिकुत्सा साप्स्वपरविषयत्वेन द्विविधा सापि मिथ्यादुष्टेरुपयुक्त
सम्यग्दृष्टेय प्रगर्हा प्रधानमवेत्सव प्रथममध्यमप्रधानावलाकुर्वन् यथा इवैभिरचकल्पदिष्ठोद्युक्तसदोषि अंगारमर्दकोपवत्स्माचरिमोसयाभव्योति
१ ॥ सम्यग्दृष्टेस्तूपयुक्तस्वभावमवेतिवत्तर्गर्हमोयमिदावप्रकारामासापेक्षकरवापि यथा द्विविधोक्ता तथाचाह ॥ मणसावेगेगरिहइति ॥ मनसाचेतसा वा
यस्तोविवस्याद्वौद्वावारणार्थोवा ततोमनसैकयापेक्षया कायोत्सर्गेतुर्मुहुसुसुभाभिधानपुरुषवर्निर्दिष्टा भिष्टतस्यपर्णोपसर्गसामंतपरिभूतस्यतम
यराजपातीमनसाश्रमारक्षपुत्रपरिभवकारिसामंतसंग्रामो वैकल्पिकप्रहरवयवे कृतीयकपरयापव्यापारितकस्यसवरकुठितमस्तक ध्यात समुपजातपया
तापागमस्वात्मावसायस्वमनसायवधरयवैमयोरात्मविप्रसवयम्भवयक कोपिसाद्यादिमचिंतेवगुर्विगतेगर्हमितिमस्मात तथा वयसावा वाचा यथवा
ययमेवमनसामावतो दुश्चरितादिरनस्याम्मरुपनार्थकर्तोपहताकारमहकादिभावसामुपत् एकोमोगच्छतेइति यथवा ॥ मनसावेमति ॥ इहमपियसभा
यनेनेमप्राप्यते यवमवीतपिसमवेकोगच्छतेम्बोचयीति यथवामनसापिनचिंतयवयसापकोगच्छते तथावयसापिनवेववदमनसाएवाइति । सएवगर्हतेऽमस यान्ये
मएवमत्ततइतिभाव यव्यवागर्हावैविध्यमाव ॥ यववेत्यादि ॥ यवर्वेति पूर्वोक्तवैविध्यप्रकारापेक्षया द्विविधागर्हा मप्रसेति प्रागिव यपि सभावनेतेन यपि

गरिहा पन्नत्ता तजहा मणसायेगेगरिहइ वयसावेगेगरिहइ अहवागरिहा दुविहा पन्नत्ता तजहा दीहएगे

गर्हे जिम सुसुरा दुसुरना वचनथी पापकरी निंदवो प्रसनचन्द्रनी परें । एक लोक में रौंकविधाने अर्थे वचनें गर्हे पणि मनथी नथी अंगार मर्दे
कआचार्य नी परें । वली गर्हणा बे प्रकारें छे ते कहे छे । एक दीर्घ कालनी गर्हणा जन्म पर्यंत ना पाप एक एक निंदवो । एक मायी थोडा

दीर्घां तहतीं यद्वा कालं यावदेव कोपि गच्छते मरणांतेन यावत्तापी सर्वों स्वया वा दीर्घत्वं विषयया भावनीय मापेक्षितत्वात् दीर्घंकालो रिति एवम पि कालमत्या यावदेकोप्य इति भवता दीर्घामेव कालं कालमेव यावदिति व्याख्येय मयेरवधारणावत्सा दिति एकएव वा दिवा कालभेदेन गच्छते भावभेदा दिति भवता दीर्घं काल म्या यावमेव गच्छत इति प्रतीते गर्भे वर्षोधि गर्भोभवति भविष्यतितु प्रत्याख्यानं उत्तच पाववंर्मिदामि पशुपचसंवरेमि यथामर्व पचक्कामीति प्रत्याख्यानमाह । दुविहेपचक्खाणेत्यादि । प्रमादप्रातिकूल्येन मर्यादया ख्यानं कथनं प्रत्याख्यानं निवृत्तिविषया प्रतिज्ञेत्यर्थः पच द्रव्यतो मिथ्यादृष्टेः सम्यग्दृष्टेर्वा सुपसुतस्य व्रतचतुर्मासप्रत्याख्यानाया पारसवदिनमासदानमहत्ताया राजदुहितु रेवेति । भावप्रत्याख्यानं सुपसुतसम्यग्दृष्टे रिति तच देशसर्वमूलगुणोत्तरगुणभेदा दनेकविधमपि करणभेदा द्विविध माह च मनसावेव प्रत्याख्याति वचसादिनां निवृत्तिविपर्ययोवरीति ग्रेयं मार्गितेति प्रत्या ख्यानं तचापि तदाह । पचवेत्यादि । सुगमं प्रागपूर्ववं प्रत्याख्यानादिमोचयस मतमाह । दोहिंठाणेहिंत्यादि । दाभ्यां स्थानाभ्यां गुणाभ्यां संपन्नो युक्तो

ख्रदू रहस्सएगेस्सरु दुविहे पच्चक्खाणे पन्नत्ते तजहा मणसावेगे पच्चक्खाति वयसावेगेपच्चक्खाति श्रहवा पच्चक्खाणे दुविहे पन्नत्ते तजहा दीहएगेश्रद्धपच्चक्खाति रहस्सएगेश्रद्धपच्चक्खाति दोहिंठाणेहिं श्रणपरे

कालमा जीवा पापनी गर्हाकरें दश वर्ष मा पनरह वर्षना जीवा पापनी निंदाकरें । धतकालनी निंदा । पचखाणनां बे प्रकार छे ते कहीं छे एक मननी भाव शुद्धें पचखाणकरे ते समकित दृष्टी जीव । एक वचनें पचखाणकरे मन विना ते मिथ्यात्व । अथवा पचखाण बे प्रकारेंछे ते कहें छे । एक प्राणी दीर्घ अद्धाकाल नो पचखाणकरे । एक थोडा कालनों पचखाणकरें दशवर्षनो पनरह वर्षनो पचखाण करे । बे प्रकारें गुणसहित जे

।व्यामारहेव मक्तो अनगार साधु मोक्षादिरथे अनासिक तत् ममदए पर्यंन्त स्वास्ति यस्य सामान्यजीवापेक्षया तदभवस्थे तत् दीर्घा यस्ता
।मी यस्य तदीर्घाव नात् मचारपागमिकी दीर्घीवाम्या भार्गो यस्मिन् स्वदीर्घाम तचतुरन्त यतुर्विभाग नरकादिगतिविभागेन दीर्घत्व माश्रतत्वा द्विति
मारकान्तार धमारस्य व्यतिव्रजे इतिक्रमे सवथा विषयाचेव ग्रानेनचेव परचेनचेव चारित्रेणचेवेति । एवम संसारकान्तारमतिव्रजन मतिविशापरत्व
मो मोक्षपथेनेव कारनस्य मवनलाभ मेकेकमो पिचाक्रियको रेविकार्थ पव्यकारकत्वात् गन्धमर्थो कारकतया मतिपेपामिधानेपि मधान ज्ञानमेव म च
एवं पथपर ज्ञान मेवेक कारण यतु क्रिया यतो ज्ञानफलमेवासो किच यथा क्रिया ज्ञानस्य वस त्वथा ग्रीपमपि मदुक्रियानन्तर मपाम्यते बोधकार्येपि य
यदेयपरिच्छेदारभवं यच रागादिविनिमपवमव सेपा मपिसेवेव ध्यानं कारणं यथा मृत्तिका घटस्य कारणं भवतीति तदन्तरालवर्त्तिनो पिण्डपादयस्ता
मकोयकृपुनादीनां मपि कारणता मापद्यते तवेच ज्ञानमपि भावाभावस्य तदन्तरालवर्त्तिना च तत्परिवेस्यमाधामादीनां कारणमिति यथा तुम्बर
समापर्यबपूतविपमसममोगममारिय मनेकविषयास सुपलभ्यते सात्मा तदपि क्रियायुक्तस्य ज्ञानस्य यथापेतत् दृष्टान्तं तथा महत मम्यगुमीक्षत इति
भावय भावयतायनाय मवरिसंसारमेवमासुत कारकमित्तमतक्रियया साधितमाचष्टमर्थकता ॥ १ ॥ अवसानान्तरमधर्म तत्रदेशेसंपितत्वोपन्यासेति

सपन्ने श्रणगारे श्रणाईय श्रणयदग्ग दीहमद्ध चाउरतससारकतार विइयएज्जा तजहा थिज्ञाएचेव चर

अणगार साधु तेहनी आदिनथी नदीर्घ मोटोकाल। जेहनों अंत छेहडो तथा मार्गने जेहनों च्यार गति नरक देव मनुष्य तिर्यंच एण्यारें करी
दीर्घ मोटी संसार रूप अटवी उत्तरें अतिक्रमें साधु ते थे जुव मेदम ते कहीं छे। ग्यानेकरी में भवनें तरे। ग्यान क्रियाथी मोक्ष तथा चारित्र एकी

दोघा हवतीं भवो वासे मावदेव बोमि मवंते गवंचोव मावभापी त्वबौं न्यवा वा दोर्वत विषमवा भावमीव मायेमितत्वात् दोवंडसयो रिति एवम पि क्रमामन्या यावदेकोग्य इति भववा दोर्घामेव यावत् क्रमामेव यावदिति स्याखेव मपेरमधारत्वात्मा दिति एवएव वा विवा काखभेदेन गवंते मावभेदा दिति भववा दोर्घं क्रस स्या कालमेव गवंत इति भतोते गर्हे कर्मधि गर्हाभवति मविव्वतितु प्रत्वाख्यामं उत्तव भवर्वमिंदामि पवुप्पवसंवरेमि भवागवं पवक्वामोति प्रत्वाख्यानमाह ।दुविहेपवक्वाबेरत्वादि। प्रमादमातिकूखेन मर्यादवा ययाम कवन प्रत्वाख्यान म्भिविभिवेधविषया प्रतिज्ञेत्वर्षं तव द्रव्यतो मिथ्यादृष्टे सम्यग्दृष्टेर्वा शुपवुत्तस्व व्रतचतुर्मासमत्वाख्यानाया पारचवाद्दिनमासमानमवतावा राजदुहितु रेवेति।भावमत्वाख्यान सुपवुत्तसम्यग्दृष्टे रिति तव देमसमूलगुणोत्तरगुणभेदा दनेकविधमपि करणभेदा द्दिविध माहच मनसावेव प्रत्वाख्याति यथादिर्म निवृत्तिविषयोकरोति मैवं प्रागिवेति प्रत्वा ख्यानरेपापि तदाह ।मणसेत्यादि। सुगम प्रागुक्तं प्रत्वाख्यानादिमोघफल मतभाह ।दोहिठाणेहिरत्वादि। वाभ्यां स्थानाभ्यां गुणाभ्यां संपन्नो युक्तो

अण रहस्सएगेअण दुविहे पच्चक्काणे पन्नत्ते तजहा मणसावेगे पच्चक्काति वयसावेगेपच्चक्काति अहवा पच्चक्काणे दुविहे पन्नत्ते तजहा दीहएगेअणपच्चक्काति रहस्सएगेअणपच्चक्काति दोहिठाणेहि अणपरे

कासना कीधा पापनी गर्हणाकरें दस वर्षे मा पनरह वर्षमां कीधा पापनी निंदाकरें। अतकासनी निंदा। पचखाणनां बे प्रकार छे ते कहै छे एक मनथी भाव सुधें पचखाणकरे ते समकित दृष्टी जीव। एक वचनें पचखाणकरे मन विना ते मिथ्यात्व। अथवा पचखाण बे प्रकारेंछे ते कहै छे। एक भावी दीर्घ मघुखाल नो पचखाणकरे। एक थोडा काळनो पचखाणकरें दशवर्षनो पनरह वर्षनो पचखाण करे। बे प्रकारें गुणकहित छे

तग्ममयनिबद्धदेवभावहियं क्रियाफलविमलधा ममतत्वाबोधभोगछत्ति ॥ १ ॥ ननु सम्यग्दर्शन ज्ञानचारित्राणि मोक्षमार्गं इति श्रूयते इह तु ज्ञानक्रियाभ्यां मता मुक्त इति कथं नविरोध अत्रादिस्थानकानुरोधा देवं निरूपितेपि न विरोधो नैव मवधारणमर्थेत्वा विर्देशस्य प्रतोच्यते विद्या गृहीत स्थान मध्यविरतं दृष्टव्यं ज्ञानभिरुत्वात् सम्यग्दर्शनस्य यथा प्रवबोधात्मकत्वेसति मतेरनाकारत्वा दवगृहेदर्शनं साकारत्वा चापायधारणे ज्ञा न मुक्त मत अध्यवसायात्मकत्वे सत्य वायस्य दविकल्पोर्घ सम्यग्दर्शन मतगमफर्यायो स्वाय एवेति न विरोधो अवधारण तु ज्ञानादिव्यतिरेकेण नान्यत पायो भवयवद्देश्येति दगमावमिति विद्यावरणेव कथ मात्मन समतत्वाइ ॥ दोठाणाइत्यादि ॥ सूत्राणीबास्य वेसाने देवसुत्तो ॥ अपरियाणित्ति ॥ अपरिज्ञाय प्रपरिज्ञया यथैता यारम्भपरिग्रहा वनर्थाय तथा अर्थं समास्या मिति परिहाराभिमुख्यद्वारेण प्रत्याख्यानपरिज्ञया अप्रत्याख्याय प्रत्यत्यन पत्तयो रनिमित्त इत्यथ ॥ अपरियाइत्ताति ॥ क्वचित्पाठ स्तत्र स्वरूपत स्तावदपर्यादाया अगृहीत्वेत्यर्थ आत्मानीनेव वेवलिमज्ञप्त जिनोक्त धर्म लभेत यवष तया श्रवणभावेन योगुमिल्यक्ष तयथा भारभा नवादिवारेण पृथिव्याद्युपमर्द्दलक्षणपरिग्रहा धर्मसाधनव्यतिरेकेण धनधान्यादय स्तानिव चैव वचनप्रवृत्तेपि व्यासपेक्षइत्यत्न मवधारणसमुच्चयो लभ्धा श्रेयाविति केवलां शुद्धां बोधिं दर्शनं सम्यक्त्व मित्यर्थो बुद्धेरता अनुभवेत् अथवा केवलया वो

णेणचेय दोठाणाई अपरियाणित्ता आयाणोकेवली पन्नत्तधम्म लभेज्ज सवणयाए तजहा आरम्भेचेव परि

ग्गहेचेय दोठाणाइअपरियाइत्ता आयाणोकेवल बोधिबुज्झिज्जा तजहा आरम्भेचेव परि ग्गहेचेव दोठा

ग्यान चारित्र मोक्ष । ये यानक ग्यान बुद्धियें जाण्यां विना ये अनर्थनां हेतु परिहरेवा छांडवा एम जाण्याविना आत्मा जीव केवलीनो भाख्यो

धेति विमलिपरिणामात् बोध्यं बोधादीतिगम्यते कुर्येत यद्वीतेति सुखो दुःखत मिरोसोकम भावत आयासापनयनेन मूला संयम अगाराधिकादि धर्म्मेतिगम्यते केवला मिथ्यात्व समस्ता मोक्षसाम्यपरिपूर्णा स्विधरा वा अनगारितां प्रव्रज्यां प्रव्रजेत् यायादिति ॥ एवमिति ॥ यथा प्राक् तत्रोत्तर वा क्षेत्रपि ॥ दोठाणाइत्यादि ॥ वाक्यं पठनीयमितर्क ॥ ब्रह्मचर्यं वा ब्रह्मविरमणेन वासो रात्रौ स्वाप तत्रैव वा वासो निवासो ब्रह्मचर्यवास तमावसे त्पर्याहिति सयमेन पृथिव्यादिरक्षणलक्षणेन संयमे दामान मिति संवरेणाश्रवनिरोधलक्षणेन संवरेणा हाश्रवाराधीतिगम्यते केवल परिपूर्ण म स्वविषयमावबं ॥ याभिनिबोधिकयावत् ॥ अर्थाभिमुखो विपर्ययरूपत्वाभियतो ऽसंयमप्रमादवशा बोधोवेदन माभिनिबोध स एवा भिनिबोधिकं तयतत्प्रमाण चेत्याभिनिबोधिकज्ञान मिन्द्रियानिन्द्रियनिमित्त बोधत सर्वद्रव्यसमपर्यायविषयं ॥ उप्पाडेज्जाति ॥ उत्पादयेदिति तथा एवमित्यनेनोत्तरप

पाइ ऋ्मोकेवलमुत्तेज्जविज्जा ऋागाराउऋणगारियपव्वेज्जा तंजहा ऋारम्भेचेवपरिग्गहेचेव एवणोकेवल व ज्जचेरवासि समावसेज्जा णोकेवलेण संजमेणसंजमेज्जा नोकेवलेणसंवरेण संवरेज्जा नोकेवलमाभिणियोहि

धर्म न पावे । ते कही छे । आरम्भ अनर्थ आदी छांडे परिग्रह अनर्थ आदी छांडे । एम बे थानक जाण्या विना मुंड लोचकरावी द्रव्यथी भावथी कषाय मुंड । केवल शुद्ध गृहस्थपणो मूकी अणगारपणो पाली नसके तेकहे छे । आरंभ न छांडे । परिग्रह न मूंके । तेमाटो एम एह बे थानक विना जाण्या शुद्धशील पाली न सके सेवी न सके । एम शुद्ध संयम अपार्मे छकायरक्षा रूप संयम आरम्भ परिग्रह मूक्यां विना । एम शुद्ध संयम नपामे । एम आरंभ परिग्रह मूक्या विना शुद्ध सर्ववस्तुग्राहक मतिज्ञान पणि पामे नही । एम इग्यारह पद जाणिवा । श्रुतज्ञान सिद्धांतनुं भी

देपु मों केवल उप्पाडेज्जति इदम् । सुयणाणंति । श्रूयते तदिति श्रुतं म स्एव सच भावश्रुतकारणत्वाज् ज्ञानश्रुतज्ञानं श्रुतग्रन्थानुसारि बोधस्त दावृत्य श्रवणावरणविषय मवगृह्यतादिभेद मिति । तथा ओहिणाणत्ति । अवधीयते अनेनास्मादस्मिन्वे त्यवधि अवधीयत इत्यधोऽधोविस्तृतं परिच्छिद्यते मर्यादया वेति अवधिज्ञानावरणक्षयोपशम एव तदुपयोगमेतुत्वा दिति अवधानस्वा ऽवधि र्विषयपरिच्छेदनमिति अवधिश्चासौ ज्ञानञ्चेत्यवधिज्ञानं इन्द्रियमनोनिरपेक्ष मात्मनो रूपिद्रव्यसाक्षात्कारणमिति । तथा मणपज्जवणाणंति । मनसि मनसोवा पर्यवः परिच्छेदः सएव ज्ञान मथवा मनसः पर्यवाः पर्यायाः विशेषावस्था मनःपर्यवास्तेषां तेषु वा ज्ञानं मनःपर्यवज्ञानमेवमितरथापि समयक्षेत्रगतसंज्ञिमन्यमानमनोद्रव्यसाक्षात्कारीति । केवलनाणंति । केवल मसहायं मत्यादिनिरपेक्षत्वात् इकत्वं वा तदावरणाभावात् सकलवा तत्प्रथमतयैवा शेषतदावरणाभावतः सम्पूर्णोत्पत्तेः रसाधारणंवा अन्यस गतया दनन्तंवा ज्ञेयानन्तत्वात् यथावत्ज्ञानञ्च केवलज्ञानमिति । कथं पुन रमारोहि विद्याधरणश्रमणपारि प्राप्तोत्थात् दोहाणाइभित्याहकारणद्वये

यणाणउप्पाडेज्जा ११ पद सुअणाण उहिनाण मणपज्जवनाण केवलनाण दोठाणाइपरियाइत्ता आयाकेवली पन्नत्तधम्मलब्भेज्जा सवणयाए तंजहा आरंभेचेव परिग्गहेचेव एवंजावकेवलनाणमुप्पाडेज्जा दोहिठाणेहिं

दश पूवनो । अवधिज्ञान मर्यादाये देखवो । मनज्ञानज्ञाये ते मनः पर्यव । इम केवलग्यान इग्यारह बोल म पामें आरंभ परिग्रह मूक्यां विना इमज ते जानस जणयना कारण वोली कोहे बुद्धिमेंकरी ते जाणी इहवो होय ते केवली भाषित धर्म पावे । ते कहे छे । आरंभ परिग्रह एहवे जानस इम यावत् केवल पावे एम इग्यारह पद पावे । धली ये जानक मा जीव केवली भाखित धर्म पावे सांजलवायो पावे । ते कहे छे । स्त्रिा

सुगमा । धर्माधिकाभएव पुण्यकारधान्वरक्ष माह । दोहिभिस्वोदिसुगमं केवल श्रवकतया यथवभावेन । सोवमेवंषि । प्रवलादिमायतलादेव श्रुत्वा भावयं तथैवो पादेयता मितिमस्वते धर्मिममेत्य समधिगम्य तामेपायुपेत्ययं । उक्तंच सवर्मसवषादेव मरोमिगत किंचिय प्राततलोमवा सत्व परसंवेगमागत ॥ १ ॥ धर्मोपादेयतांयात्वा सञ्जातेच्छोयभावत इदंअयमिमाथोव यवधेसमवततयति ॥ २ ॥ एवं बोहिवुञ्मेत्यादि । याक्खेव समाथउप्पाविज्जति । केवलप्राम धावविषये मवतीतिसमाह १ दोउमावदत्यादि । समा कालविशेष शेषं सुगम केवलप्राम थोरनोमोमात्दमवएव मवस्मत सामान्येनोप्याव निरूपयनाह । दुविहेउम्माएइत्यादि । उम्मादोयवी बुद्धिविभ्रम इत्यर्थं यवावेशोदेवाधिष्टितत्वं ततो य स यथावेश एवेत्येको

घायाकेयलिपन्नत्तधम्मलभेजा सवणयाए तजहा सोञ्चाचेव अन्निसमञ्चेव जायकेयलनाण उप्पाडेजा दोसमाठ पन्नत्ताठ तजहा उसप्पिणिसमाचेय अउसप्पिणिसमाचेय दुविहे उम्माए पन्नत्ते तजहा जक्खावेसेचेय मोहणिज्जस्सचेयकम्मस्सउदएणं तत्यणं जेसेजक्खावेसेणं सुहवेयतराएचेय सुहविमोयतराएचेय तत्यणं जेसे

त सामलयायी से जाव सरवश्यायी धारयायी यावत् केवल ग्यान पर्यंत दृग्यारे योल पाछला सर्व पामे । बे थानक ना जाव पयायी बे प्रकारें काल कहियो ते कहेंछे । एक उत्सर्पिणी काल । बीजो उतरतो काल ते अवसर्पिणी । बेप्रकारें उन्माद उन्मत पणो होय ते कहेंछे । देवाधिष्ठित उन्माद । बीजो मोहनीय कर्मना उदयथी चित्तनो भ्रम पुत्रने पुत्रीकार्य तथा धन कुटुंबनो मूर्छा । तिहां जे यक्षावेशथी चित्तनो उनमाद ते सुखे वेदिये मोहनीयो थोडोकाल अने सुखे मुंकाइये मनेकरी यावादि लागी होय ते । तिहां जे मोहनीय कर्मनां उदयथी चित्तनो उनमाद ते अभ्यन्तर

मोहनीयस्य दर्शनमोहनीयादेः कथम् उदयेन य' मोक्ष इति गर्वेति तयो मध्ये योसौ यथावेगेन भवति स सुखवेद्यतरक एव मोहजनितप्रज्ञापेक्षया
चक्रप्रानुभवनीयतरएवा नैकान्तिकात्यन्तिकमसरूपत्वात्स्येति अतिशयेन सुख विमोच्यते त्यज्यते य' स सुखविमोचतरक येव मन्त्रमूलादिभावसा
ध्यत्वा दम्भेति यथवा यत्यन्तं सुखापेय' सुखापनेय' सुखापेयतर' यथा यत्यतसुखेनैव विमुचति यो देहिनं स सुखविमोचतरक इति मोहस्य तद्विपरी
त' एकान्तिकात्यन्तिकमसस्वभावतया स्वतानुचितमहतिहेतुत्वेना ननभवकारणत्वात् तथांतरवारकजनितत्वेन मन्त्राद्यसाध्यत्वात् कर्मक्षयोपशमादिनैव
साध्यत्वा दित्यत एवोर्ना । दुहवेयतराएचेवदुहविमोयतराएचवत्ति । अतिशयेन दुःखवेद्यएव दुःखविमोच्यएव चासाविति । एभासा प्राणो प्राणातिपा
तादिरूपे दण्डे प्रवर्तते दण्डभाजनंवा भवतीति दण्डं निरूपयन्नाह । दोदण्डेत्यादि । दण्ड प्राणातिपातादि अर्थार्थमिन्द्रियादिप्रयोजनाय य' सोर्थद
ण्ड' निष्प्रयोजनस्तु नर्थदण्डइति एतद्रूपमेव दण्ड सर्वजीवेषु चतुर्विंशतिदण्डकेन निरूपयन्नाह । नेरइयाणमित्यादि । एवमिति नारकपदवदक्कामर्थद

मोहणिज्जस्सकम्मस्सउदएण सेण दुहवेयतराएचेव दुहविमोयतराएचेव दोदण्डा पन्नत्ता तंजहा अट्ठादण्डेचेव
अणट्ठादण्डेचेव नेरइयाणदोदण्डा पन्नत्ता तंजहा अट्ठादण्डेचेव अणट्ठादण्डेचेव एवचउवीसदण्डउ जाववेमाणि

दुःख भोगवीये अनंतानुबंधीया आदि अने अप्रत्याख्यानादिके नथूटे कर्मना क्षयोपशमथी छूटे तेमाटे यथायेअनो मोहनी ना उदयादथी दुःखको विपाक ने एक
मोहनी कर्मनोजोग सत्तर कोटाकोटि सागरोपम प्रमाणे छे। बे दंड कहिया ते कहेछे। पांच इंद्रीने अर्थे पाप करवूं ते अर्थे दंड। स्वार्थ विना नि
ष्फल पाप करवूं ते अनर्थ दंड। सातनारकीने विषे बे दंड कहिया ते कहे छे। अर्थ दंड जे पोताना शरीर राखवाने अर्थे परने हणे । द्वेषमा

त्वाभिलापेन चतुर्विंशतिदण्डको नेयो नवरं नारकस्य सशरीरस्याऽर्थे भारखोपशमन मर्थंदस्य प्रदेयमानादनवदंड पृथिव्यादीना मनाभोगेना प्याहा रगृहणे जीववधमात्रा दर्शदण्डो ऽथवा अनर्थदण्डो ऽप्योमवमपि भवान्तरामदण्डादिपरिणतेरिति सम्यग्दर्शनादिभव्यता मेव लक्षणो नास्तीति त्रितय निरूपणेच्च दर्शनं सामान्येन तावन्निरूपयति । तदद्विविधेदंसणेत्यादि । समसूत्रादि भ्रममाम्येव नवर दृष्टिदर्शनं तत्त्वेषु रुचि स्तत्र सम्यगविपरीत जिनो तानुसारि तथा मिथ्या विपरीतमिति । सम्यग्दसणेत्यादि । निसर्ग स्वभावो अनुपदेश इत्यनर्थान्तर अधिगमो गुरूपदेशादि रिति ताभ्यां यत्तथा क्रमेण मरुदेवीभरतवदिति । निसग्गेत्यादि । प्रतिपतनशील प्रतिपाति सम्यग्दर्शनं औपशमिकं क्षायोपशमिकं वा अप्रतिपाति क्षायिकं अनयो क्रमेण लक्षण दृष्टोपशमिकौ श्रेणि मनुप्रविष्टस्य अनन्तानुबन्धिनां दर्शनमोहनीयत्रयस्य चोपशमा दौपशमिकं भवति ओघा ऽनादिमिथ्यादृष्टि एकतसम्यक्त्वमिथ्यात्वमि

याण दुविहे दंसणे पन्नत्ते तंजहा सम्मदंसणेचेव मिच्छादंसणेचेव सम्मदंसणे दुविहे पन्नत्ते तंजहा णिसग्ग सम्मदंसणेचेव अभिगमसम्मदंसणेचेव णिसग्गसम्मदंसणे दुविहे पन्नत्ते तंजहा पडिवाइचेव अपडिवाइचेव

अर्थे उपजे ते अनर्थ दंड । एम पृथिवी प्रमुखने अनाभोगपणे आहारसे जीव संघार थे ते अर्थ दंड । बीजो अनर्थ दंड । एम चोवीस दंडके कहिवो यावत् वैमानिक देवतासगे । हिवे दर्शन कहे छै ते बे प्रकारेंछै । समकित दर्शन ते जिनवचनानुसारी तत्वनो जाणिवो । बीजो मिथ्या दर्शन ते जिन वचनथी विपरीत जाणिवो । समकित दर्शन बे प्रकारें कह्यो भगवंत ते कहै छै । स्वभावें जिनोक्त तत्वने विषे रुचि आवे ते नि सर्ग समकित दर्शनी मरुदेवीनी परें । गुरूपदेशथी तत्वनी रुचिभावे ते अभिगमसमकितदर्शनी भरतादिकनी परें । निसर्ग समकितदर्शन बे प्रकारें

ञाभिधानमशवाग्रोभयरूपमिथ्यात्वपुञ्जमविपुञ्जीत एवा चोवसिथ्यादर्शनो चयत इत्यव सम्यक् प्रतिपद्यते सश्लोपशमिक भवतीति मायनिव यदस्य मिथ्यात्वममसोश्मीय मुदीय मादनुभवेमैवोपक्षोण मन्मव मस्दपरिणामतवा मोदित मत क्षर्दतमुद्भतमान सुपयोत मास्ते विष्टंभितोदय मिथ्यवे सा यंत नाम मम्योपशमिकमम्यक्तनाम इति चाहच उवसामगमेडिगवछ पोतिउनमामियंतुसम्मत्त चोवामममवतिपुंजे अणवियमिच्छोसवस्सम्मं ॥ १ ॥ चोनभिउवियमि मणुविभ्वंतेससेसमिच्छत्ते पतोमुपुत्तकार्दं उवसममयंसवरुमोयोमि ॥ २ ॥ एतसुसर्संमावमकासमा देवाश्च प्रतिपातिस्य यथा ममानुबंधुदये मीपयमिकसम्यक्त्वाप्रतिपतत छाम्वादम मुश्यते तद्योपगमिकमेव तदपिचमतिपास्येव भयन्यत समयमावसा दुक्कृष्टतस्तु षडावलिका मानसा इश्वेति तवा इव यदस्य मिथ्यादर्शनदलिक मुदीर्णं तदुपयोगबपानुदीर्ण तदुपयांत मुपशान्तंनाम विष्टंभितोदय मुपनीतमिथ्याभाव च तदि द चयापशमनभाव ममुभूयमानं चायोपशमिक मित्युच्यते अन्योपशमिकेपि चय योपशमय तदेवापीति को भवो विशेष उच्यते अयमेवहि विशे षा यदिह वेदयते दनिक मताम इहहि मायोपशमिके पूर्वमित ममुभमय मुदेति वेदयते चौमतेच औपशमिके तूदयविष्टंभमात्रमेव याहच मिच्छत्तं जमदिव सचोनवणुदियंवयसंतं मोसोभावपरिणयं वेश्वंतमओवसमसि ॥ १ ॥ एतदपिजघन्यतो मानुहूतस्थितिकत्वा दुत्कृष्टत षट्षष्टिसागरोपम

अभिगमसम्मदसणे दुविहे पन्नत्ते तजहा पडिवाइचेव अपडिवाइचेव मिच्छादसणे दुविहे पन्नत्ते तजहा

ते कहेबे । एक प्रतिपाती आवी जाय उपशम समकित आव्यो अन्तर्मूहूर्त रहे क्षायोपशमिक छासठ सागरोपम उत्कृष्टोरहे तेमाटे प्रतिपाती थोभो अप्रतिपाती न जाय ते क्षायिकभावे रहे क्षायिकसमकित मोक्ष पहुंचे तिहां लगे रहे तेमाटे अप्रतिपाती । अभिगम समकित बे प्रकारे ते

स्थितिकत्वाय प्रतिपातोति यदपिच अपकम्य सम्यग्दर्शनदसिकचरमपुद्गलानुभवनरूपं वेदक मित्युच्यते तदपि चायोपशमिकभेदत्वात् प्रतिपात्येवेति तथा मिथ्यात्वसम्यग्मिथ्यात्व सम्यक्त्वमोहनीयक्षयात् चायिक मित्याहच पीवेदंमवमोहे तिविहम्मिविमवनियाचमूयम्मि निव्यवखाचमतुलं सम्मत्तखाइयं चादेत्ति ॥ १ ॥ इदम चायिकचादिनाप्रतिपाति चतएव सिन्ध्येष्वनुवर्तते ॥ मिच्छादंसणेत्यादि ॥ चभिगृष कुमतपरिगृह स यवास्ति तदाभिगृहिकं तद्विपरीतमनाभिगृहिकमिति ॥ चभिग्गहिएत्यादि ॥ चाभिगृहिकमिथ्यादर्शनं सपयवसितं सपर्यवसान सम्यक्त्वमासौ चपर्यवसित मभव्यस्य सम्यक्त्वाप्राप्तेः तथ मिथ्यात्वमान मपतीतकालतया मुक्त्वा ऽभिगृहिक मिति व्यपदिश्यते ॥ ६ ॥ चनाभिगृहिकं भव्यस्य सपर्यवसित मितरस्या पयवसित मिति ॥ चपएवाप ॥ एवमणाभोत्यादि ॥ ७ ॥ दयम मभिहित मय ज्ञानमभिधीयते तच्च ॥ दुविहेत्यादि ॥ इत्यादीनि चाचमागमद्रपिते दुविहे इत्यादि सूत्राण्यागामि चयाविंशतिसूत्राणि सुगमानि नवर चाम चियेपायबोध चयाति गृह्ने चयते वाच्याप्रोति प्रामेणावा नित्यच चाभासप्रतिबध्यते इन्द्रियमनो निरपेचलेनतव्ययच मन्यवहितत्वेनार्थसाचात्करणादच मिति ॥ चाज्य ॥ चक्खोजोवोचत्य व्याख्यमीयचगुण्यमिपीत्रेच तचद्रव्यदपार्थ चपचमसंतमिह

अभिग्गहियमिच्छादसणेचेय अणभिग्गहियमिच्छादसणेचेय अभिग्गहियमिच्छादसणे दुविहे प० तजहा सपज्जवसिएचेय अपज्जवसिएचेय एवमणभिग्गहियमिच्छादसणेवि दुविहेनाणे पन्नत्ते तजहा पच्चक्खेचेव

कहेछे । प्रतिपाती चायो जाय उपशमभाव । अप्रतिपाती चायो न जाय समकित चायकभाव । मिथ्या दर्शन बे प्रकारें ते कहेछे । कुमति न मूके ते अभिग्रहिक मिथ्यात हठ विना कुमतिनो परिग्रह ते अनभिग्रहिक । अभिग्रहिक मिथ्या दर्शन बे प्रकारें ते कहेछे । जेहनो अंतछे तेसपयवसित

तिविहन्ति । १ । परेभ्या मचापेमवा पुद्गलमयत्नेन द्रव्येन्द्रिय मनोभ्यो ऽघस्य जीवस्य यतत्परोक्ष चिवक्षितमया दितावन पवसमपोमसखया अंदमिं दियमणापरातेन तेहिंतोवंणाणं परोक्षमिहतमणुमाणंवत्ति । यथवा परेरवं संबमनं अग्यअमकभावबमथ मस्येति परोक्षं इन्द्रियमनोभ्यवधाने गा यनावम्त्ययक्रमसाचात्कारोस्य । पचक्खेत्यादि । जेवस मेक ज्ञान केवलज्ञानतदन्य मोकेवलज्ञान मवधिमन पर्यायलचण मिति । केवलेत्यादि । भवत्स केवमपाचेवत्ति । भवस्थस्य केवलज्ञानं सततथा एव मितरदपि । भवत्येत्यादि । सहयागे कायव्यापारादिभि र्यं स संयोगी इम्समासोतस्या थवा मो भवस्थय तस्य केवलज्ञान मितिवि गश नसन्ति यागा यस्य स योगीतिवा योसा ययोगो मैलेशीकरणावस्थायाम शैलेशीमेव । सयोगीत्यादि । प्रय

परोक्केचेव पच्चक्खनाणे दुविहे पन्नत्ते तजहा केवलनाणेचेव णोकेवलनाणेचेव केवलनाणे दुविहे पन्नत्ते तजहा भवत्थकेवलनाणेचेव सिद्धकेवलनाणेचेव भवत्थकेवलनाणे दुविहे पन्नत्ते तजहा सजोगिभवत्थकेवलणाणेचेव अजोगिभवत्थकेवलनाणेचेव सजोगिभवत्थकेवलणाणे दुविहे पन्नत्ते तजहा पढमसमयसजो

नेहनो भतनयो ते अपर्यवसित अभव्य जीवने होय ते अपर्यवसित । एम अभिगृहिक सपर्यवसित अपर्यवसित कहिये । नाणना बे भेद छे ते कहे छ । प्रत्यक्ष ते पांच इंद्रीना सहाय रहित आत्माने उपने । अने परोक्ष ते इन्द्री मनना सहायथी उपजे । प्रत्यक्षना बे प्रकार ते कहे छे । केवलनाण चौदह राजलोक देखे जाणे ते जीव प्रत्यक्ष । एक नोकेवलनाण प्रत्यक्ष अवधि मन पर्यवनाण रूप । केवलनाण बे प्रकारे ते कहे छे । ससार मांहिरहिया जीवनो एक । बीजो मोक्षना जीवनो । ससारमांहि रहिया जीवनो केवल नाण बे प्रकारे ते कहे छे । सयोगी मन वचन कायाना योग सहित

ममम॰ मयोगिनो प्रथम तथा प्रथमसमयो यान्नि समयो यस्य तया शैलेशयेव ॥ पथचेत्यादि ॥ चरमौत्यसमयो यस्य योग्यवस्थाया सतया गयायेश्व एवमिति मयोगिमूत्रवत् प्रथमाप्रथमचरमाचरमविशेषणयुग्म मयोगिसूत्रमपिवाच्यमिति ॥ सिद्देत्यादि ॥ अनन्तरसिद्धो य समयतिसम ये सिद्ध अपेक्षा ऽनन्तरा तथा परम्परसिद्धो यस्य द्वादय समया सिद्धस्य सोप्येकत्वानेकोवेति तेषां यत्केवलज्ञान तत्तथाव्यपदिश्यत इति ॥ योदितामे

गिभवत्थकेवलणाणेचेव अपढमसमयसजोगिभवत्थकेवलणाणेचेव अहवाचरिमसमयसजोगिभवत्थकेवलना णेचेव अचरिमसमयसजोगिभवत्थकेवलणाणेचेव एवअजोगिभवत्थकेवलणाणेवि सिद्धकेवलनाणे दुविहे प० त० अणंतरसिद्धकेवलनाणेचेव परंपरसिद्धकेवलणाणेचेव अणंतरसिद्धकेवलणाणे दुविहे पन्नत्ते तंजहा एक्का

तेरमा गुणठाणा मा जीवने । अयोगी चौदमा गुणठाणा मा जीवने पाच लघु अक्षर भणिये एतली वेला तिहां जीव रहे । सयोगी नो केवल नाण ब प्रकारें ते कहे छे । प्रथम समयनो उपनो मनाथों तेरमा गुणठाणामा भवस्थ जीवनो एकम बीजा समयनी अपेक्षा सयोगीनो । अथ वा देवना समयमा चौदमे गुणठाणे जाताना सयोगी भवस्थ जीवनो एतले तेरमा गुणठाणामा छेहना समयनो । छेहलो समय नहीं एतले पहिलो समय ते अचरिम समय सयोगि भवस्थनो । एम अयोगी भवस्थ केवल नाण मां बे भेद जाणिवा । सिद्धनो केवल नाण बे प्रकारें ते कहे छे अप्रतिसमये सिद्धथयो ते अनंतरसिद्ध तेहनो । जेहने दो त्रिण चार समय सिद्ध थया ते परंपरसिद्ध तेहनो केवल नाण । अनंतर सिद्धनो केवल नाण बे प्रकारें ते कहे छे । एके समये एकज सीधो ते अनंतर सिद्ध तेहनो केवल नाण । एके समये अनेक सीधा ते अनेक अनंतर सिद्ध

त्यादि । भवपच्चइएत्ति । क्षयोपशमनिमित्तत्वे प्यस्य क्षयोपशमस्यापि भवप्रत्ययत्वेन तथाधाम्येन भवएव प्रत्ययो यस्य तद्भवप्रत्ययमिति व्यपदिश्यतइति यदमेव भाष्यकारेण सावेयपरिहारमुक्तं तथाचेय ओहीखओवसमिए भावेभणिओभवोतओदइए ताकिहभवपच्चइओ ओहीजुत्तोवओतोयचवति । १ । [हेमगारक्या भवपरिहारः] सोविहुखओवसमओकिंतुसएवउखओवसमलाभो तमिसइसीवसओ भवइभवपच्चओतोसो । २ । यत । उदयक्खओवसमोव समाजन्म यमुवाभणितो एमवैतंकायेभयंत भावंवसम्पवत्ति । १ । तथा वदायरचस्य क्षयोपशमे भवं क्षायोपशमिकमिति । मणपज्जवेत्यादि स्फुटोसा

णंतरसिद्धकेवलणाणेचेव अणेक्काणंतरसिद्धकेवलनाणेचेव परंपरसिद्धकेवलनाणे दुविहे पन्नत्ते तंजहा एक्क परंपरसिद्धकेवलणाणेचेव अणेक्कपरंपरसिद्धकेवलणाणेचेव णोकेवलणाणे दुविहे पन्नत्ते तंजहा ओहिनाणे चेव मणपज्जवणाणेचेव ओहिनाणे दुविहे पन्नत्ते तंजहा भवपच्चइएचेव खओवसमिएचेव दोण्हंभवप च्चइए पन्नत्ते तंजहा देवाणचेव नारइयाणचेव दोण्हंखओवसमिए पन्नत्ते तंजहा मणुस्साणचेव पंचिंदिय

सेहनो केवल नाण । परंपरसमयसिद्ध जेहमें मोक्ष गयां दो तीन चार समय थया होय ते परंपरसिद्धनो केवल नाण बे प्रकारे ते कहे छे । एक एक परंपर सिद्ध नो केवल नाण । बीजो अनेक परंपर सिद्ध नो केवल नाण । नो केवल नाण ना बे प्रकार ते कहे छे । अवधि नाण । बीजो मनपर्यव नाण । एह बे नोकेवल ग्यान छे । अवधि ग्यानना बे भेद ते कहे छे । एक भवप्रत्ययी देवता नारकीनें सर्वेहोय ते बीजो माठा वरखो कर्मना क्षयोपशमथी उपजे ते भवप्रत्ययी देवताने होय । तथा नारकीने होय । क्षयोपशमथीयेनें होय ते कहे छे । मनुष्यने तथा पंचेंद्रिय तिर्यंच नें

मान्यमाहियो मति' पत्रमति' घटोमैनचिन्तित इत्यध्यवसायनिबन्धनं मनोद्रव्यपरिच्छित्तिरित्यर्थः विपुला विशेषग्राहिणी मति विंपुलमति घैटोनेन चिन्तित मद सौवर्ण पाटलिपुत्रको ऽद्यतनोमहानित्याद्यध्यवसायहेतुभूता मनोद्रव्यविज्ञप्ति रिति । भाव्य मरुसामर्थतथ तगादिशोपशम मिशाषार्न पावविमेमविमुत्तं पत्तसेतर्विंतियं सुपर ॥ १ ॥ विउलमलविसेसण मार्चतम्यादिशोमईविउला चितियमणुसरहवं पसगभोपव्ययसएहिं ति । पाभिनिशोबिदस्यादि । सुतं कमलापर्वनिश्रित माश्रित मनेनेति सुतगिश्रितं यत् पूर्वमेव शुतसतोपकारस्ये सांप्रतम् स्तदनुपेय मेवागुभव ते तदवग्रहादिमयत्तं सुतनिश्रित मिति यत्पुन पूर्वतदपरिकर्मितमते सायोपशमपटोयस्या शैत्पत्तिक्यादिलक्षण सुपजायते पन्यया श्रोपा दिभवं तदमुतनिश्रित मिति भाव्य पुव्वंसयपरिकम्मिअ मइस्सजनंपयंसयातोय तनिस्सियमियरपुण पणिस्सियंमइचउक्कं ॥ १ ॥ सुयेत्यादि । प

तिरिक्खजोणियाणचेव मणपज्जवणाणे दुविहे पन्नत्ते तजहा उज्जुमईचेव विउलमईचेव परोक्खणाणे दुविहे पन्नत्ते तजहा आभिणिबोहियणाणेचेव सुयनाणेचेव आभिणिबोहियणाणे दुविहे पन्नत्ते तजहा सुयनि

होय । मनपर्यव ग्यान बे प्रकारें ते कहे छे । एक रिजुमती ते मननोजाय जाणें । बीजो विपुलमती बुद्धि विशेषथी जाणें एटलें मन मां घडो चितव्यो छे एम जाणें ते रिजुमती । वलें तेहीज विशेषथी जाणें जे सोनानो घडो छे मोटो अथवा नाहनो पाटलो पुरनो आजनो कीधो अथवा कालनो अथवा घणा कालनो चितव्यो छे एम विशेष तथा जाणें ते विपुलमती । परोक्ष ग्यान बे प्रकार ते कहे छे । मतिनाण । बीजो सुतनाण मतीना बे भेद ते कहे छे । एक सुतनिश्रित । बीजो असुत निश्रित । सुतनिश्रितना बे भेद ते कहे छे । प्रथम जे वस्तुनो सामान्य तथा अर्थनो ते

त्वोम्यहेति । मध्यतेधिमामते पर्यते वा थिपत इयवं तस्य सामान्यरूपस्या भीपनिरपेक्षानिर्देशमरूपादे रसगृहर्थ मयमपरिच्छेदन मर्थावगृह इति निश्चिकल्पकं ज्ञानं दमननिति पगुष्यते इत्यय स गेवयिको य स सामयिको यस्तु व्यावहारिक मन्तेय मि याधुवेष्वपाम् स भोतर्मोंवर्तित इति मयनेन्द्रियमन मम्भवात् पोठा इति तथा मम्पते ऽनेनाम प्रदीपेनेव घट इति व्यञ्जनं तथोपकरणेन्द्रियं शब्दादिरवपरिणतद्रव्यसंघातो पा तस्य च व्यञ्जने ना पकरणेन्द्रियेन शब्दादिपरिणतद्रव्याणां व्यञ्जनाना मवगृहो व्यञ्जनावगृह इति पथवा व्यञ्जनमिन्द्रियशब्दादिद्रव्यसम्बन्ध भावय पंभिव्यज्यते मनो वहोप्यदोषेणर्वजयतोत वधपरविदि यसहा इपरिच्छयसम्यसंबंधोत्ति ॥ १ ॥ मर्यंच मनोनयनवर्येन्द्रियाणाभपतोति परापो नयनमनसोरप्राप्यकारित्वा रिहेदयलात् इसर्वेषाम्पुन इत्यवेति मनु व्यञ्जनावगृहो ज्ञानमेव नभवति इन्द्रियशब्दादिद्रव्यसम्बन्धकाले तदनुभवाभावात् वधिरादीना मिवेति नेवंव्यव मायगृहान्ते तदनुगृहमाहेयो पतदभिसद्भावात् इह यस्य ज्ञेयवस्तुगृहणमान्ते ततएव ज्ञेयवस्तूपादानात् उपलब्धि भंवति तत्ज्ञानं दृष्ट यथार्थावगृहपर्यन्ते तत एया याग्गृह गृाधनस्तुगृहणा होदासद्भावादर्थावगृहज्ञान मिति पाइच मयार्थसोपविरा इयंपतमान्ममप्युपसंमाधो [पापाय] मतदंसितपोषिय उपसंभावीतयमावति ॥ १ ॥ किंच व्यञ्जनावग्रहकालेपि ज्ञानमस्त्येव सूक्ष्माव्यक्तत्वात्तुनोपलभ्यते सुप्ताद्यवविज्ञानवदिति इत्यादयोपि श्रुतनिश्रिताएव न

स्सिएचेव असुयनिस्सिएचेव सुयनिस्सिए दुविहे पन्नत्ते तजहा अत्थोग्गहेचेव वंजणोग्गहेचेव असुयनिस्सि

मर्थावगृह । दूरथी वस्तु देखी कहे जे कोईक वस्तुछे ते अर्थावगृह । पछे बोलसे जे एह पुरुषछे अथवा स्त्रीछे ते व्यञ्जनावगृह । इंद्रीनें मनें शब्दादि द्रव्यने संबंध ते व्यञ्जना वगृह । एम श्रुतनिश्रितना बे भेद जाणिवा । श्रुतभावना बे भेदछे ते कहीयेछे । इग्यारह अंग आचारांगादिक सम्पनेया

गृता हिम्यानकानुरोधादिति । प्रसुयनिश्चिरविषयमेप्रति । भर्वावप्रश्यश्रमावगृहमेदेगाश्रुतनिश्रितमपि हिमेवेति इदश श्रोत्रादिप्रभवमेव यत्तु श्रोत्र तिसाधश्रुतनिश्रितत्वावग्रह सम्भवति यदाह विश्वपक्रियकरीयो शुष्कोविवेषउम्मवीरेश किंसुसिरिइमवाभो इप्यवसंकतविमत्ति । १ । न नुयस्थमावगृह सुसमग्रियाश्रितत्वात् पुबीर्यातु मानसत्वा ततो वुद्धिमी मत्र श्रुतमावगृहो भन्तम इति । सुयनावेमादि । मवचनपुरुषकाङ्गगोवाहर नि तेपु प्रविष्टं तदभ्यतरं तत्स्वरूप मित्यर्थं तदगपवरलतम् । उप्पवेवेत्यादि । माउकापदत्रयप्रभववा भुवस्तवा भाचारादि मत्पुन स्थविरकृतमाव श्यकत्वयव्यतिरिक्त मावश्यनिवद्धमुवं श्रुतचौतराध्ययनादि तदङ्गबाह्यमिति भाष्य गणहर १ थेरावय २ भाएसा १ सुक्कवागरणीवा २ भुवं १ पत्तमिसेसभावो २ मंगाबंगेसुनाणत्ति । १ । भंगबाहेत्यादि । भवर्सनस्य मावश्यकं सामाथिकादिषड्विधं भाष्य समवेषसावएवश्य भवस्सकाय मधंयमज्जमा मंतोपहोनिसिस्सय तम्हावस्सयंनामति । १ । मावश्यका व्यतिरिक्तं ततो यदभ्यदिति । भावश्यमवइरित्तेत्यादि । यदिह दिवसनिशा प्रथमपश्चिमपोरुषीद्वयेएव पठ्यते तत्कालेननिर्वृत्तं कालिक मुत्तराध्ययनादि यत्पुन कालवेलावर्ज पठ्यते तत्पूर्वकालिकादिप्रमाणिकं दशवैकालिकादीनि

एयिएयमेव सुयनाणे दुविहे पन्नत्ते तजहा अगपविठेचेव अगयाहिरेचेव अगयाहिरे दुविहे पन्नत्ते तजहा आवस्सएचेव आवस्सयवइरित्तेचेव आवस्सयवइरित्ते दुविहे पन्नत्ते तजहा कालिएचेव उक्कालिएचेव दुविहे

एह त्रिपदी पामी गणधर रचे ते इग्यारह अग अगप्रविष्ट । उत्तराध्ययनादि अगबाहिर। अगबाहिरना बे प्रकारछे ते कहें छे । आवश्यक छप्रकारे सामायिक। चोवीसत्थो। वंदना । प्रतिक्रमण । काउसग्ग । पञ्चखाण ॥ बीजो आवश्यक व्यतिरिक्त जे एथी जुदो सिद्धांत। आवश्यक व्यतिरिक्तना

। २२ । अथांप्रान चारित्रंप्रस्तावयति । दुविहेत्यादि । दुर्गतौ प्रपततो जीवान् सुगतौ चताभ्धारयतीति धर्म श्रुत द्वादशांगंतदेव धर्मः श्रुतधर्मं चर्यते चा
सेव्यते तत्तेनवाचयान गम्यते मोक्ष इति चारित्रमूलोत्तरगुणकलाप स्तदेवधर्मश्चारित्रधर्म इति । सुयधम्मेत्यादि । सूच्यंते सूच्यतेवा चर्मोधर्मेनेति सूत्रंसु
भ्रितत्तेनश्चापितेनच सुहृत्त्वाता सूत्रं सुसमिनया सुसमभ्यासानेना प्रसुहावसत्वादिति भाष्यवचनत्वेव सिचरकररजमत्व तत्त्वासुत्तनिबत्तविविचाचा सू
एतमयमम्मा सिम्नरसरएणत्तोभत्यं । १ । भविधरियंसुत्तपिवसुहिमधाविसतत्सुवृत्तति । २ । चर्यंतेधिगम्यते भर्यंतेवायाचते सुद्धस्तुभि रित्यर्थो व्याख्या
नमिति चाहच जोमुत्ताभिप्पाभो सोभत्थोभज्जएयअमहति । चरित्तेत्यादि । अगारप्रत तद्योगा दागारा प्रहित्व क्षेपा च चरित्रधर्मं सम्यक्त्वमूलाणुव्र

धम्मे पन्नत्ते तजहा सुयधम्मेचेव चरित्तधम्मेचेव सुयधम्मे दुविहे पन्नत्ते तजहा सुत्तसुयधम्मेचेव अत्थ
सुयधम्मेचेव चरित्तधम्मे दुविहे पन्नत्ते तजहा आगारचरित्तधम्मेचेव अणगारचरित्तधम्मेचेव अणगार
चरित्तधम्मे दुविहे प० त० सरागसजमेचेव वीयरागसजमेचेव सरागसजमे दुविहे प० त० सुहुमसपरा

ये भेद ते कहे छे। एक कालिक कालवेलायें प्रथम छेल्ली पोरसी पेंज भणाइयें उत्तराध्ययनादि । बीजो उत्कालिक काल वेलारहित भणायें ते
दशवैकालिकादि । ये प्रकारें धर्मते दुर्गतिमा पडता जीवनेराखे तेधम ते कहे छे । द्वादसांगी रूप सिद्धांत तेहीज धर्म ते श्रुतधर्म । बीजो चारित्र
धर्म पच महाव्रतरूप धर्म । श्रुतधर्म ये प्रकारें छे ते कहे छे । जेहमा गणधरें अर्थ गूंथ्याछे ते सूत्र श्रुतधर्म कहिये । जे भगवंतें अर्थ प्ररूपणा कियो ते
अर्थ श्रुतधर्म । चारित्रधर्म ये प्रकारें ते कहे छे । गृहस्थ नों सम्यक्त्व मूल बारेव्रतरूप धर्म देशविरति चारित्रधर्म । जेहनें घर नथी ते अणगार

तारिमावनरूप सतवा एवमितरोमि मवर समारगाद्दि वेमाति मगारा सावव दति चारित्रधर्मसंयमो ऽतद्भमेवाह । दुविहेत्यादि । सह रागेषम

भिचमेवमासादिकल्पैषय स सराम सवासौसंयमच सरागसवा संयम इतिवाक्यं वीतो विगतो रागो यस्मात् सवासौ संयमच्चवीतरागसवा संयम इति

वाक्य । सरामेत्यादि । सूक्ष्मो ऽसंख्यातविशिकावेद्गत सम्पराय कषाय सम्परैति संसरति ससार येन एनेनेति व्युत्पादना दाष्व श्रोणारसंपरायो सेव

कषोसंपरौसंसारस्य लोभकषायरूप चौपममिकच चपकसवा यस्य स सूक्ष्मसम्पराय साधु एतस्य सरागसंयमविशेषसमासोवा भवतीत्यति वादरा

सूक्ष्मा सम्परायाः कषाया यस्य साधोर्यंभिन्वा संयमे स तथा सूक्ष्मसंपरायप्रायोमगुणस्थानकेषु मैयंमाय्वदिति । सुहुमेत्यादि । सूक्ष्मे प्रथमसमयादि

यसरागसजमेचेव बादरसपरायसरागसजमेचेव सुहुमसपरायसरागसजमे दुविहे प० त० पढमसमयसु

हुमसपरायसरागसजमेचेव अपढमसमयसुहुमसपरायसरागसजमेचेव अहवा चरमसमयसुहुमसपरायसरा

साधु तेहनो धर्म प्रथमद्दावृतरूप । अनगारधर्म बे प्रकारें ते कहै छे । मायानो सगळे जिहां तेसरागसयम । माया कपट रहित चारित्र ते वीत

रागसंयम । सातमा गुणठाणा उपरांत होय । सरागसंयम बे प्रकारें ते कहै छे । जेहे लोभरूप कषायमोटो कुंथुआ रूपकीधो ते उपशम श्रेणिनो

तथा खपक श्रेणीनो साधु दसमे गुणठाणे एह सुहुमसपरायसरागसयम थाय । मोटा स्थूल कषायछे जिहां से बादरसपरायसरागसयम ब

हिये । सुहुमसंपरायसरागसयम बे प्रकारें ते कहै छे । प्रथम समयनो सुहुमसपरायसरागसंजम जिम पहिले केवल नाणना बे भेद कहिया तिम जा

णिवा । हो तीन समयनो सुहुमसंपरायसरागसयम । अथवा चरम छेहला समयनो जे पछे वीतरागसंयमभावे ते चरमसमयसुहुमसपरायसरागसयं

विभाग' चेत्यप्रानवदिति ॥ भइबेत्यादि ॥ संक्लिश्यमानक' सयम' उपशमश्रेण्या' प्रतिपततो विशुध्यमान श्चोपशमश्रेणीं क्षपकश्रेणीं वा समारोहत इति ॥ बादरेत्यादिसूत्रद्वयं॥ बादरसंपरायसरागसंयमस्य प्रथमाप्रथमसमयता संयमप्रतिपत्तिकालापेक्षया चरमाचरमसमयताद् यदनन्तरं सूक्ष्मसम्पराय ता भवयतन्त्रा भविष्यति तदपेक्षयेति ॥ भइवेत्यादि ॥ प्रतिपाती उपशमकस्या अथवा अप्रतिपाती क्षपकस्येति सरागसंयमउक्तो यतोवीतरागसंयमाह

गसजमे अचरमसमयसुहुमसपरायसरागसजमे अहवा सुहुमसपरायसरागसजमेदुविहे प० त० संकिलेस माणएचेव विसुज्झमाणएचेव बादरसपरायसरागसजमे दुविहे प० त० पढमसमयबादरसपरायसरासजमे अपढमसमयबादरसपरायसरागसजमे अहवा चरमसमयबादरसपरायसरागसजमे अचरमसमयबादरसप रायसरागसजमे अहवा बायरसपरायसरागसजमे दुविहे प० त० पडिवातिएचेव अपडिवातिएचेव वीय

म । छेहलाथी पहिला समयनो ते अचरिमसमयसुहुमसपरायसरागसजम । अथवा वली सुहुमसपराय सरागसजम बे प्रकारें कह्यो ते कहे छे । उपशम श्रेणीथी पडतानो सुहुमसपरायसरागसयम ते संक्लेसमान । अथवा उपशम श्रेणी क्षपक श्रेणी चढतानो सुहुमसपरायसरागसयम ते वि शुध्यमान कहिये । बादरसपरायसरागसजम बे प्रकारें ते कहे छे । प्रथम समयनो बादरसपरायसरागसंजम । बीजो त्रीजा प्रमुख समयनो । वली छेहला समयनो बादरसपरायसरागसजम जे पछे सुहुमसपरायसरागसंजम आवे । अथवा असजम आवे । एम छेहलाथी पहिला समयनो सय म । अथवा वली बादरसंपरायसरागसंयमना बे भेद ते कहे छे । एक उपशम श्रेणीथी पडतानो संयम ते प्रतिपाती एकक्षपक श्रेणीनो ते अप्रति

वीतरायेत्यादि । उपशान्ता अद्यतीयमानाः कषाया यस्य स्पृष्टमूला मतया साधुः संयमोवेति एकादशगुणस्थानवर्तीति क्षीणकषायो द्वादशगु णस्थानवर्तीति । उवसमेत्यादिसूत्रद्वयं मागिव । गोयेत्यादि । छद्मस्थाश्रमरूपं यत्तच्छद्म ज्ञानावरणादिघातिकर्म तत्रतिष्ठतीति छद्मस्थो केव ली ज्ञेयतत्र केवलमूलरूपं ज्ञानं दर्शनं चाप्नोतीति केवलीति । छउमत्थेत्यादि । सयमुक्तादिस्वरूपं मायिवेति । सयंबुद्धेत्यादि । समधूगापि सता

रागसयमे दुविहे प० त० उवसंतकसायवीयरागसंजमेचेव खीणकसायवीयरायसंजमेचेव उवसंतकसायवी यरायसंजमे दुविहे प० तंजहा पढमसमयउवसंतकसायवीयरायसंजमेचेव अपढमसमयउवसंतकसायवीय रायसंजमेचेव अहवा चरमसमयउवसंतकसायवीयरायसंजमे अचरमसमयउवसंतकसायवीयरायसंजमे खी णकसायवीयरायसंजमे दुविहे प० त० छउमत्थखीणकसायवीयरायसंजमेचेव केवलिखीणकसायवीयराय

पामी । वीतरागसंजमना बे भेद ते कहे छे । मूलथी उपशमाव्याछे कषाय जेणे ते उपशांतकषायवीतरागसंयम अग्यारमागुणठाणानां साधुने थाय । खपाव्याछे कषाय जेणना ते खीणकषायवीतरागसंयम बारमा गुणठाणाना साधुने थाय । उपशांतकषायवीतरागसंयम बे प्रकारें ते कहे छे । पहिला समयनो उपशांतकषायवीतरागसंयम । बीजो अप्रथम समयनो उपशांतकषायवीतरागसंयम । अथवा चरम समयना अचरिम समयना ए भेद जाणिवा । क्षीणकषायवीतरागसंयम बे प्रकारें ते कहे छे । छद्मस्थ जे ज्ञानावरणीयादि च्यार घाती कर्म सहितछे तेहनोसंयमते छउमत्थखीणकषायवीतरागसंयम । केवल ज्ञान सहित केवली तेहनों संयम तेकेवलीखीणकषायवीतरागसंयम । छउमत्थखीणकसायवीतरागसंयम

सजमेघेय छउमत्यखीणकसायवीयरायसजमे दुविहे प० त० सयबुद्धछउमत्यखीणकसायवीयरायसजमे बुद्ध योहियछउमत्यखीणकसायवीयरायसजमे सयबुद्धछउमत्यखीणकसायवीयरायसजमे दुविहे प० त० पढम समयसयबुद्धछउमत्यखीणकसायवीयरायसजमे अपढमसमयसयबुद्धछउमत्यखीणकसायवीयरायसजमेचेव अहवा चरमसमयसयबुद्धछउमत्यखीणकसायवीयरागसजमे अचरमसमयसयबुद्धछउमत्यखीणकसायवीयरागसजमे । बुद्धयोहियछउमत्यखीणकसायवीयरायसजमे दुविहे पन्नत्ते तजहा पढमसमयबुद्धवोहियछउमत्यखीणकसायवीयरायसजमे अपढमसमयबुद्धवोहियछउमत्यखीणकसायवीयरायसजमे अहवा चरमसमयबुद्धवोहियछउमत्यखीणकसायवीयरायसजमे अचरमसमयबुद्धवोहियछउमत्यखीणकसायवीयरायसजमे

ये प्रकारें तेकहेछे । सयबुद्ध पोतानें मेलें प्रतिबोध पामें तेसयबुद्धछउमस्थक्षीणकषायवीतरागसंजम । आचार्यनां प्रतिबोधथी प्रतिबोध पामें तेबुद्ध बोधितछउमस्थक्षीणकषायवीतरागसंजम । सयबुद्धछउमस्थक्षीणकषायवीतरागसंजम बेप्रकारें तेकहेछे । प्रथमसमयनो बीजो अप्रथमसमयनो अथ वा चरमसमयनो सयबुद्धछउमस्थक्षीणकषायवीतरागसंजम । अथवा अचरमसमयनो सयबुद्धछउमस्थक्षीणकषायवीतरागसंजम । बुद्धबोधितछउमस्थ क्षीणकषायवीतरागसंयम बेप्रकारें तेकहेछे । प्रथमसमयनो बुद्धबोधितछउमस्थक्षीणकषायवीतरागसंयम । अप्रथमसमयनो बुद्धबोधितछउमस्थक्षीण कषायवीतरागसंयम । अथवा चरमसमयनो अचरमसमयनो । केवलीक्षीणकषायवीतरागसंयम बेप्रकारें तेकहेछे । सयोगी तेरमां गुणठाणांना केव

याम्येवेति उक्तं संयमं सत्र जीवाजीवविषयत्वात् पृथिव्यादिजीवस्वरूपमाह । दुविहापुढवीत्यादि । बहार्थिमति सूत्राणि तत्र पृथिव्येवकायो येषान्ते

केवलिखीणकसायवीयरायसजमे दुविहे पन्नत्ते तजहा सजोगिकेवलिखीणकसायवीयरायसजमे अयोगिकेवलिखीणकसायवीयरायसजमे सजोगिकेवलिखीणकसायवीयरागसजमे दुविहे प० त० पढमसमयसयोगिकेवलिखीणकसायवीयरायसजमे अपढमसमयसयोगिकेवलिखीणकसायवीयरायसजमे अहवा चरमसमयसयोगिकेवलिखीणकसायवीयरायसजमे अचरमसमयसयोगिकेवलिखीणकसायवीयरायसजमे अजोगिकेवलिखीणकसायवीयरायसजमे दुविहे प० त० पढमसमयअयोगिकेवलिखीणकसायवीयरायसजमे अपढमसमयअयोगिकेवलिखीणकसायवीयरायसजमे अहवा चरमसमयअयोगिकेवलिखीणकसायवीयरायसजमे अचरमसमयअयोगिकेवलिखीणकसायवीयरायसजमे दुविहापुढविकाइया पन्नत्ता तजहा सुहु

लीनों क्षीणकषायवीतरागसंयम । अयोगी चौदमा गुणठाणानां केवलीनों क्षीणकषायवीतरागसंयम । वीतराग सयोगिकेवलीक्षीणकषायसंयम बेप्रकारें तेकहेछे । प्रथमसमयनों वीतरागसयोगिकेवलीक्षीणकषायसंजम । अप्रथमसमय वीतरागसयोगिकेवलीक्षीणकषायसंजम । अथवा चरमसमयनों अचरमसमयनों । अयोगिकेवलीक्षीणकषायसंजम बे प्रकारें से कहे छे । प्रथमसमयनों अप्रथमसमयनों । अथवा चरमसमयनों अचरमसमयनों ॥ बे प्रकारें पृथिवी कायना जीव कहिया । ते कहेछे ॥ एक सर्वव्यापी पृथिवी कायना जीव बीजा बादर पृथ्वीकायना जीव पर्वतादिक । एमज पाणी

पृथ्वीकायिक समासान्तविधे मतएव सार्विकवमत्वयात् पृथ्वीकायिका पृथिव्येवका काय शरीरं सोस्ति येषान्ते पृथ्वीकायिका ते सूक्ष्मनामकर्मोद
याद् सूक्ष्मा येन ये सकलोकापका बादरनामकर्मोदयवर्त्तिनो बादरा ये पृथ्वीमगादिषुवेति तेषां मापेक्षिकं सूक्ष्मबादरत्वमिति एवमिति पृथ्वीसूक्ष्मवद
सेआपाप्नापूनाधि षाष्माणि ज्ञायतृयमनतिघूय मतएवाह । आवेत्यादि १ दुविहेत्यादि । पज्जत्तो तत्र पर्याप्तनामकर्मोदयवर्त्तिन पर्याप्ता येषि च
तत्र पर्याप्ती पूरयन्तीति अपर्याप्तनामकर्मोदयादपर्याप्तका ते अपर्याप्तीनपूरयन्तीति तत्र पर्याप्तिर्नाम शक्ति सामर्थ्यविशेषइतियावत् सा च पुद्गल
द्रव्योपचया दुत्पद्यते यद्भेदाचेयं तद्यथा आहाररसयोरिंद्रिय पज्जत्तोआणपाणु ४ भास ५ मणे ६ चत्तारिपंचछप्पिय एगिंदियविगलसन्नीणं । १ । तत्र
एकेन्द्रियाणा तत्सो विकलेन्द्रियाणामथ संज्ञिनांषट् तत्र आहारपर्याप्तिर्नाम खलरसपरिणमनशक्ति शरीरइन्द्रियपर्याप्ति सप्तधातुतया रसपरिण

माचेव बायराचेव एय जाय दुविहावणस्सइकाइया पन्नत्ता त० सुहुमाचेव बायराचेव दुविहापुढविका
इया प० त० पज्जत्तगाचेव अपज्जत्तगाचेव एय जाय वणस्सइकाइया दुविहा पुढविकाइया प० त०

कायनां तेउ वायु यावत् वनस्पति कायना ये भेद भाखिया । ते कहेछे । सर्वलोकमां काजलनी कूंपलीनीं परें भराणाछे । बादर जे दृष्टियें दीसे भाव
येसो मनुष्य । ये प्रकारें पृथिवीकायिया कह्यिया ते कहेछे । एक पर्याप्ता जे छ पर्याय पूरीकरी मरे । बीजा अपर्याप्ता आहार शरीर इंद्री श्वासो
श्वाससमावामन एह अपर्याप्तिमा एकेंद्रीने च्यार बेंद्री तेंद्री चोरेंद्री ने पांच सन्नीनें छ असन्नीने पांच तेहमां आहारपर्याप्ति एक समयमा नीपजे
बीजी पांच असंख्यात समयमां नीपजे सवे अंतमुहूर्त्तमांनीपजे । अपर्याप्ति ते श्वासोश्वासलोवा पिनाक पहिली तीन पूरीकरी पर भवनो आयु

मनयति इन्द्रियपर्याप्ति पचानामिन्द्रियाणां योग्यान्पुद्गलान्गृहीत्वा अनाभोगनिवर्त्तितेन वीर्येण तद्भावनयति ३ प्राणप्राणपर्याप्ति उच्छ्वासनिःश्वास योग्यान्पुद्गलान्गृहीत्वा तद्रूपपरिणमय्या तत्तया निसर्जनयति ॥ ४ ॥ भाषापर्याप्ति वांचायोग्यान्पुद्गलान्गृहीत्वा भाषात्वेनपरिणमय्य वाग्योगतयानि सर्जनयति ॥ ५ ॥ मन पर्याप्ति मनोयोग्यान्पुद्गलान्गृहीत्वा मनस्त्वयापरिणमय्य मनोयोगतया निसर्जनयतीतिरिति ॥ ६ ॥ एता पर्याप्तनामकर्मोदयेन निर्वर्त्यन्ते यथेषामस्ति ते पर्याप्तका अपर्याप्तनामकर्मोदयेनानिर्वर्त्तिता येषां येता सन्ति ते पर्याप्त्याकारति एताश्च युगपदारभ्यन्ते अन्तमुहूर्तेनच निर्व र्त्यन्ते तत्र आहारपर्याप्ते निर्वृत्तिकाल समयएव कथमुच्यते अथाभ्रापनासत्कं आहारपदस्तोए अपज्जत्तए भंते जीवे किं आहारए अणाहारए गोयमा आहारए अणाहारएत्ति तत्र विभंगे आहारपर्याप्ता अपर्याप्तको लभ्यते सर्वमु पपातदेशमाप्तोप्याहारपर्याप्ता अपर्याप्तको भवेत् तदेवं व्या करणमवेत् गोयमा सियआहारए सियअणाहारएत्ति तथा शरीरादिपर्याप्तिषु सियआहारए सियअणाहारएत्ति शेषा पुनरसंख्यातसमया अन्तमुहूर्तेन निर्वर्त्यन्तइति अपर्याप्तकाश्च उच्छ्वासपर्याप्त्या अपर्याप्ताएव म्रियन्ते नतु शरीरेन्द्रियपर्याप्तिभ्यां यस्मादागामिभवायुर्बद्ध्वा म्रियन्ते तच्च शरीरेन्द्रिया दिपर्याप्तापर्याप्तेरेव बध्यतइति एवमिति पूर्ववदेवेति ॥ १ ॥ दुविहापुद्गलेत्यादि ॥ यद्भूतो परिणता स्वकायपरकायशस्त्रादिना परिणामांतरमापा दिता अचित्तीभूताइत्यर्थः तत्र पृथ्वत चैवादिना मिश्रेव पृथ्वीव बादर योग्यादिना कालेन भावतो वर्णगन्धरसस्पर्शान्यथात्वेन परिणता इत्यतत्

परिणयाचेव अपरिणयाचेव जाव वणस्सइकाइया दुविहादव्वा प० तजहा परिणयाचेव अपरिणयाचेव

र्याप्तीमरे ते अपर्याप्ता । एम यावत् वनस्पति लगे पांच थावर जाणिवा । वली पृथिवीकायना बे भेद ते कहे छे । एक परिणत जेहनादि

योयनमयतुगता वाकारिवतुभंडसमंतो यामागविपूमेयव विवरवंकोदमोवार्ई ॥ १ ॥ हरियासमपोसिस विण्यविपखूरमुद्दियाभमया भारवमभाहया तेविकुएमेवमायजा ॥ २ ॥ भारवबेमोवरमे विसियवमाभारवयगाववा भूमाजारच्छेदे उवश्मेवेवपरियामो ॥ ३ ॥ भवाजारेयति ॥ भाडेयवाहा राभावेपेति भवसंवतिति ॥ भाजमाकाममाणतरसंकाच्चा खर्जूरादमोमाचारिता ममवायस्तु भाचारितारति परियामांतरेपि पुवीकायिकाएव तेवेयस राभावेपेति मपेतना इति वाममध्यया मपेतनपृथ्वीकायविण्डप्रयोजनाभिधानमिदं स्यात् यथा महवकगवगसेयोभारपउमवंवहुवति ॥ एवमित्यादि ॥ मासिव तदेवम्म वेतानिसूत्राणि द्रवगितगच्छमित विविधपर्यायानिति प्रत्यासि ओवपुग्गलरूपाणि तानिच विवचितपरिणामत्यागेन परिणामांतरापन्नानिपरिणतानि वि वचितपरिणामवंतेषा परिणतानीति प्रश्नसूत्रं यद ॥ १५ ॥ पुविवेत्यादि ॥ पठसूत्रो गतिगमनं तांसमापचा प्राप्ता स्तहतो गतिसमापचा येहि पृथ्वीका वियावामुखोदया त्पृथिवीकायिकादिम्यपदेशवन्तो विग्रहगत्या उत्पत्तिस्थानं मजन्ति मगतिसमापदास्तु क्षितिमन्तो प्रश्नसूत्रे गतिगमन मात्रमेव गेमन्तवे

दुविहापुढविकाइया प० त० गइसमावन्नगाचेव अगइसमावन्नगाचेव एवं जाव वणस्सइकाइया दुविहा

केंकरी परिणत अचित थया । बीजा अपरिणत ते जीव सहित सचित । ये प्रकारें जीव और पुदगल रूपद्रव्यछे । पर्यायांतरपामे तेद्रव्य तेपरें छे । परिणाम पर्याय येहना फिरया ते परिणत । नथी फिरया ते अपरिणत । वली पृथिवी कायना ये भेद ते कहेछे । विग्रह गतिमें करी उप जवाने थानकें गमनकरे तेगति समापन्न । जे थानके रहियाछे ते अगति समापन्न । एमज यावत् अप् तेज वायु वनस्पतिलगे येवे भेद आखिया । वली द्रव्यना ये भेद तेकहेछे । गमनकरे ते गतिसमापन्न । ठेकाणेज रहे ते अगति समापन्न । वली पृथिवी कायना ये भेद ते कहेछे ।

चेति ॥ २२ ॥ दुविहापुढवीत्यादि ॥ षटसूत्री अनन्तरं संप्रत्येकसमये तविदाकाशप्रदेश अवगाढा आश्रिता स्तएवानन्तरावगाढका येपान्तु व्यादय समया अवगा
ढामतिपरंपरावगाढका अथवा विवचित येषं द्रव्यस्या पेक्ष अनंतर मव्यवधानेनावगाढा अनंतरावगाढा इतरेतु परम्परावगाढा ॥ २८ ॥ अनंतरं द्रव्यसरूप
मुक्त मधुना द्रव्याधिकारादेव द्रव्यविशेषयो कालाकाशयोर्विसूत्रायरूपनामाह ॥ दुविहेत्यादित्यादि ॥ तत्र कल्पते संख्यायते सावनेमयात्मसर्न या यसा
समूहावेति काम वत्तनापरत्वापरत्वादिलक्षण सचा वसर्पिण्युत्सर्पिणीरूपतया द्विविधो विस्तारस्त्वनुरोधा दुक्ती अथवा ग्रवस्थितस्वभावो महाविदेहभो
गभूमिसम्भवोवर्तीयोप्यस्तीति ॥ आगासेत्ति ॥ मवद्रव्यसमावामाकाशमत्वादौपयति तेषां समावसाभे अवकाशत्वादित्याकाशमाकाशत्वात्मीयादिविधिविवा
यो तत्र मर्यादया आकाशे भवंतीपिभावा स्वात्म्येषा सतेनाकाशमतो श्रासीत्येवं तेपामात्मसाद्भावत्वादमिविधीतु सर्वभावव्यापकत्वादाकाशमिति तत्र

दहा प० त० गइसमावन्नगाचेव अगइसमावन्नगाचेव दुविहा पुढविकाइया प० तजहा अणतरोगाढगा
चेव परपरोगाढगाचेव जावदहा दुविहेकाले प० तजहा उसप्पिणीकालेचेव अवसप्पिणीकालेचेव दुविहे

जेहमगाज समयें कोइक आकाश प्रदेशे आवीरहियो ते अनंतरोवगाढ । जेहमें आकाश प्रदेशे रहियाने बे प्रमुख समय थयाछे ते परंपरोवगाढ ।
हिव कालमोस्वरूप कहेछे । बे भेदे काल ते कहेछे । एक उत्सर्पिणीकाल चढतो आरो । बीजो अवसर्पिणीकाल उतरतो आरो । पहिलो आरो
सुषमसुषमा । बीजो सुसमा त्रीजो सुसमदुसमा चौथो दुसमसुसमा पांचमो दुसमा छठो दुसमदुसमा । अवसर्पिणीयें एहमी फेरवी कहिये
ते उत्सर्पिणीकाल बे प्रकारें । आकाश जीवने द्रव्यने अवकाश आपें ते आकाश । जेहमां ब्रव्य धर्मास्तिकाय अधर्मास्तिकाय आकाशास्तिकाय

जीवोयभाकाशदेशेधर्मास्तिकायादि द्रव्याणांवर्तिरस्ति सएवाकाशंलोकाकाशमिति विपरीतमलोकाकाशमिति अनंतरं लोकालोकभेदेनाकाशद्वैविध्यमुक्तं लोकश्चशरीरिशरीराणांसवतभाश्रयस्तपदति नारकादिशरीरस्यकेनशरीरमरूपणामाह ॥ नेरइयाणमित्यादि ॥ प्रायःसंख्य मवरं योर्यतोऽशुभम यथाप यथाभ्यांविनश्यतीतिशरीर तरेमघटमादिधर्मतया शुकम्पितत्वात् शरीरस्य श्तेच दे प्रप्रसे जिनै' अभ्यन्तर्यभेवमाभ्यंतरं भाभ्यन्तरत्वच तस्य जीवप्रदेशै मह्योरमोरन्यायेन लोलीभवनात् भवान्तरमतावपिच जीवस्याशुमतिप्रधानत्वादपवरकाभ्यन्त प्रविष्टपुरुषपद्गतिगविना मसत्वमस्यावेति तथा वचिर्भव भावं बाह्यतायाम जीवप्रदेशै' कथापि केपुचि एतयपैभ्याप्तेभवान्तरानगुयायित्वा विरतिमबिनामपि प्राय प्रत्ययत्वावेति तथाभ्यन्तर ॥ कम्मएत्ति ॥ कार्मणशरीरनामकर्मोदयनिर्वत्त मयेपकर्मणा शरीरभूमिराधारभूत शतवा संसारीमगाढ्लन्तरसद्दभवे साधकतमत्वान्मपवर्गस्वरूपं कर्मैव कर्मकमिति कर्मकमपचेव तैजसमपिगृहीतद्रष्टव्यंतयोरव्यभिचारित्वे नैकत्वस्यविवक्षितत्वादिति एवं ॥ देवाणमाणियव्वंति ॥ पयमर्थ' यथानेरयिकाणां

आगासे प० त० लोगागासेचेव अलोगागासेचेय णेरइयाणंदोसरीरगा प० त० अब्भतरगेचेय याहिर
गेचेय अब्भतरएकम्मए याहिरएवेउव्विए एवदेयाणंभाणियव्व पुढविकाइयाणंदोसरीरगा प० त० अब्भतर

पुद्गलास्तिकाय काल जीव एह छे ते लोकाकाश । एकलोकाकाश चौदे राजप्रमाण ऊर्ध्वो सातमेरुकथी सिद्धलगे । अलोक जेहमां एकलो आका शछे । नारकीने ये शरीर होयछे ते कहे छे । अभ्यंतर जे जीवना प्रदेशथी मलो रहियोछे खीर नीरनी परें बीजो प्रदेशथी अलगुं कांइक अस्पृ साथे भमाय । अभ्यतर ते कार्मण तैजस । याहिर ते वैक्रियशरीर । एम देवतामें पणि कहिवूं । पृथिवी कायना ये शरीर ते कहेछे । एम अभ्यं

शरीरस्य भवितमेवं देयनामसुरादीनां स्वेमानिमानगतानां भवितव्यं बाम्यवैक्रियमोरेव तेषां भावावतुर्विंशतिदण्डकस्य विवक्षितत्वादिति ॥ पुढ वीत्यादि ॥ पृथिव्यादीनामनुवाद मौदारिकशरीरनामकर्मोदया दुदार पुद्गलनिर्वृत्त मौदारिकं केवलमेकेन्द्रियाणां मत्स्यादिविरचितं वायूनां वैक्रियं सत्त दिवचितं प्रायिकत्वात्तस्येति । बेइंदियाणमित्यादि ॥ अस्थिमांसशोणितं बर्द्ध यत्तत्था द्वीन्द्रियादीनां मौदारिकत्वेपि शरीरस्यायविशेष ॥ पंचेंदियस्था दि ॥ पंचेन्द्रियतिर्यग्मनुष्याणां पुनरयं विशेषो यदस्थिमांसशोणितस्नायुशिराबद्धमिति मत्स्यादयस्तुमतीता इति प्रकारान्तरेण चतुर्विंशतिदण्डकेन शरीरप्र रूपणा मेवाह ॥ विग्गहेत्यादि ॥ विग्रहगति भवगति यदा विश्रेणिव्यवस्थितमुत्पत्तिस्थानं गन्तव्यं भवति तदा या स्या तां समापन्ना विग्रहगतिसमाप

गेचेव बाहिरगेचेव अब्भंतरएकम्मए बाहिरगेउरालिए जाव वणस्सइकाइयाणं बेइंदियाण दोसरीरगा प० त० अब्भंतरएचेव बाहिरएचेव अब्भंतरएकम्मए अट्ठिमंससोणितबद्धे बाहिरएउरालिए जावचउरिंदियाणं पचिंदियतिरिक्खजोणियाणंदोसरीरगा प० त० अब्भंतरगेचेव बाहिरगेचेव अब्भंतरगेकम्मए अट्ठिमंससो

नर । बीजो बाहिरलो । अभ्यंतर तेकार्मण तैजस । बाहिरलो ते औदारिक हाडमांसरहित । एम यावत् वनस्पतिकाय लगें बेबे शरीर जाणि वा । बेइंद्री गरसमुमणमां जीवनें बे शरीर होय तेकहेछे । एक मांहिलो एक बाहिरलो । मांहि ते कार्मणतैजस । बाहिरलो ते हाडमांससोहीयें बांध्यो औदारिकशरीर । जाव तेइंद्री चौइंद्री लगें जाणिवो । पचेंद्रिय तिर्यचनें बेशरीर होय । तेकहेछे । एक मांहिलो एक बाहिरलो । मां हिलो ते कार्मणतैजस । बाहिरलो ते हाडमांससोहीनाडीशिरायें बांध्यो औदारिक । बीजीद्रीलगें नाडीशिरा नहोय । मनुष्यनें पिण बेशरीर

मा मेषां द्वे शरीरे स्ततैअसकार्म्मयणो भैस्नेनविवक्षेति एवंदण्डकशरीराधिकारा च्छरीरोत्पत्तिदण्डकेन निरूपयन्नाह । नेरइयाणमित्यादि । कण्ठ्यं किन्तु रागद्वेषजनितकर्मणा शरीरोत्पत्ति रागद्वेषाभ्यामेवेति व्यपदिश्यते कार्य्येकारणोपचारादिति । जावयेमाणियाणंति । दण्डक सूचित म रीराधिकाराच्छरीरनिर्वर्तनसूत्रं तस्येयं नवरं मुत्पत्तिरारम्भमात्र निर्वर्तनातु निष्ठानयनमिति शरीराधिकारा च्छरीरवतां राशिद्वयेन प्ररूपणा माह रोचायेत्यादि । त्रसनामकर्मोदया त्रसंतीति त्रसा स्तेषां कायो राशि त्रसकाय स्थावरनामकर्म्मोदयात् तिष्ठन्तीत्येवंशीला स्थावरा तेषां काय स्थाव

णियएहारुच्छिरायस्ठे याहिरए उरालिए मणुस्साणयिएवचेव विग्गहगतिसमावन्नगाण नेरइयाण दोसरी रगा प० त० तेइएचेव कम्मएचेव निरतर जाव वेमाणियाण नेरइयाण दोहिठाणेहि सरीरुप्पत्तीसिया त० रागेणचेव दोसेणचेव जायवेमाणियाण नेरइयाण दुठाणनिव्वत्तिए सरीरगे प० त० रागनिव्वत्तिएचेव दोसनिव्वत्तिएचेव जाव वेमाणियाण दोकाया प० त० तसकाएचेव थावरकाएचेव तसकाएदुविहे पन्नत्ते

आणिवा । वांकीगति करतां नारकीमें येशरीर होय उपजिवाने पामके थाकी वाली पायते। एक तैजस बीजो कार्मण । एम जाव चातरारस्ति चोयीसेदण्डके वैमानिकलगें कहियो । नारकीमें येषामकेंकरी शरीरनी उत्पत्तिछे शरीर नघायछे ते कहेछे रागेंकरी । द्वेषेंकरी । एम जाव वैमानि कलगें जांणिवो । नारकीमें येषानयेकरी शरीरनी निर्वर्तना छे । उत्पत्तिते प्रथम प्रारम्भमात्र निर्वर्तनाते शरीरनां अवयवनों पूरो नीपजियो ते कहेछे । एक रागथी निर्वर्तना । बीजो द्वेषथी निर्वर्तना । राग द्वेषथी शरीर उपजै ते निर्वर्तना होय । एम जाव वैमानिकलगें । येकाय ते राशि

रवाह इति त्रसस्थावरकाययो रेवदेविध्यप्ररूपणार्थंमस्यासेत्यादिसूत्रद्वयंसुगमचेति पूर्वसूत्रे मध्या'मरीरिव पत्ता उत्त स्वविनेयानामिव मयमाक्ततुमुचितं तनया दिग्मागवानुपातेनाह । दोदिसाओइत्यादि । वेदिग्रोकाढे चमियप्रामोकल्प तदभिमुखीभूमेत्सव' कल्पते युज्यते निर्मंता प्रव्राजनादे रिति निर्ग्र न्या' मावव योवा निषण्य' साध्व मासां प्रव्राजयितुरजोहरणादिदानेन प्राचीनं प्राचीं पूर्वामित्यर्थं' उदीचीम मुदीचीं मुत्तरामित्यर्थ' उत्तव पुन्ना मुत्तोउत्तर मुदीचदेवाश्रयापदिश्येत्या आएविवासद्योवा इयेत्यभिचचेदयाहवत्ति ॥ १ ॥ एवमिति यथाप्रव्राजनसूत्रं दिग्दयाभिसापेन मधीत मेवं मुण्डनादिसूत्राण्यपि योव्यान्येतस्यामीति तत्र मुण्डयितुं थिरोलुञ्चनेन १ शिक्षयितुं ग्रहणशिक्षापेक्षया सूत्रार्थौ पाठयितु मासेवनाशिक्षापेक्षयातु प्रत्यु पेक्षणादिशिक्षयितु मिति २ उत्थापयितुं महाव्रतेषु व्यवस्थापयितु ३ संभोजयितुं भोजनमण्डल्यां निवेशयितुं ४ संवासयितुं संस्तारकमण्डल्यां निवेशयि

तजहा नयसिद्धिएचेव अभवसिद्धिएचेव एवं थावरकाएवि दोदिसाओ अभिगिज्झकप्पइ निग्गथाणवा णिग्गथीणवा पव्वायित्तए पाईणचेव उदीणचेव एवं मुण्डायित्तए सिक्खायित्तए २ उवट्ठावित्तए ३ संभु

समूह तेकहेवे । त्रसकाय त्रसजीवनों समूह जे त्रास पामें तेत्रस । थावरकाय थावरजीवसमूह । त्रसकाय वेप्रकारें तेकहेवे । एक भवसिद्धिया जेमी क्षजास्ये । एक अभयसिद्धिया जे कदापि मोक्ष न जास्ये । एम थावरकाय पिण भव्य अभव्य जाणिवा । जे तडकाथी चाली छायायें आवे तेत्रस । जे थिररहे तेथावर । वेदिशिने साहमारहीने कल्प सूझे साधुने तथा साध्वीने दीक्षादेवी चोथोमलुंठ वेसआपवो । पूर्वदिशि उत्तरदिशि साहमां रही दीक्षा दवी । एम वे दिशीयें लोचकरवो । सूत्रार्थ शीखवी । चोढामलकरवो । पाचमहाव्रत आपवा जीमवो मांडलीये एठील बेसिवा साह

तुं ४ गुरु भामर्याद्या अवीयत इति साध्वायो श्रादिश्यमुपदेष्टं योगविधिक्रमेण सम्यग्योगेनाधीष्वेदमित्येवमुपदेष्टुमिति ६ समुद्देष्टुं योगसमाचारीमवस्थि रपरिचितं कुर्विदमिति वक्तुमिति ७ प्रमुप्रातं तथेव सम्यगेतद्धारया अन्येषां च प्रवेदयेस्येव मभिधातुमिति ८ चालोचयितुं गुरवे अपराधान् निवेदयितु मिति ८ प्रतिक्रमितुं प्रतिक्रमणं कर्तुमिति १ निन्दितुं मतिचारान् खसमक्षं जुगुप्सितुं ११ चाइच सचरित्तपच्चयावो । निन्दतिगर्हितगुरुसमक्षं ताने वजुगुप्सितुं १२ चाइच अचरित्तपच्चयावो निंदति गर्हितं गुरुसमक्षं तानेव जुगुप्सितुं १२ चाइच गरहावितहायातोस मेवगवर । परप्पवासपयसि । विउट्टितएति । व्यतिवर्त्तयितुं विभोटयितुं विकुट्टयितं वा मतिचारानुबंधि विच्छेदयितु मित्यर्थः १३ विशोधयितु मतिचारपङ्कापेक्षया आत्मविमलीक तु मिति १४ अकरणतया पुन न करिष्यामीत्येव मभ्युत्थातु मभ्युपगतु मिति १५ यथार्ह मतिचाराद्यपेक्षया यथोचितं पापच्छेदकत्वात् प्राय चित्तवि शोधकत्वा वा प्रायश्चित्तं तपः पापविशुद्धयमा पावच्छित्ततुममएदेव पाएच्छाविचित्तं विसोहएतेव पच्छिहतति । १ । तप कर्म निर्विकृतिकादिकं

जित्तए ४ सयावित्तए ५ सज्झायउद्दिसित्तए ६ सज्झायसमुद्दिसित्तए सज्झायमणुजाणित्तए आलोइत्तए ९ पडिक्कमित्तए १० निंदित्तए ११ गरहित्तए १२ विउट्टित्तए १३ विसोहित्तए १४ अकरणयाए १५ अहा

योग्यतायोगने । सिद्धान्त तथा योग क्रियानो कहिवो एहीज विधियें । योगनी समाचारी थिरकरवी परिचित करवी । तिमज योगक्रिया धारवी बीजाने कहिवी । आलोचवूं गुरुनें आगलि अपराधनो कहिवुं । पडिकमणुं करवूं पापथी ऊसरवूं । आत्मानें साखे पापनिंदवूं । गुरुनी साखें पापनी गर्हणाकरवी । पापपकनो छेदवूं । अतीचारनां मलथी आत्मानें शुद्ध करिवूं । वली पाप नकरवूं तेहमें अर्थे यतन करिवूं । उजमालथावूं । यथायोग्य

प्रतिपत्तुमभ्युपगन्तु मिति १६ सप्तदशं सूत्रं साक्षादेवाह । दोदिसेत्यादि । पश्चिमैवा मङ्गलपरिहारार्थं मपश्चिमा आत्मासो मरणमेवमोन्त स्तत्मयामा रणान्तिको सात्मासौसंलिख्यतेनयाशरीरकषायादीति संलेखनातपोविशेष साचेति मपश्चिम मारणान्तिकसंलेखना तथा । भूसणत्ति । जोषणा सेवा तया तद्युक्तयोरेत्यर्थं । भूसियाणत्ति । सेवितानां वधुक्तानामित्यर्थं तथा वा भूषितानां चपितानां चपितदेहानामित्यर्थं तथा भक्तपाने प्रत्याख्याते येस्ते तथा तेषां पादपम दुपमतानां मचेष्टतया स्थितानामनशन विशेषं प्रतिपन्नानामित्यर्थं कालं मरणकाल मनवकांक्षतां तथानुत्सुकानां विहर्तुं स्था तुमिति १० एवमेताभिरष्टसूत्राद्या द्वितीऽष्टादश सम्बंध यथक्यास्यातं वस्तुमनल्पात् इतिद्विस्थानकस्य प्रथमोद्देशो विवरणत समाप्त ॥ १ ॥

ठित्तए अपच्छिममारणंतियसंलेहणा झूसणाझूसियाणं भत्तपाणपडियाइक्खित्ताणं पाओवगयाणं काल ... पच्छिममारणंतिय संलेहणा झूसणाझूसियाणं भत्तपाणपडियाइक्खित्ताण पाओवगयाणं काल अणवकंखमाणाणं विहरित्तए तंजहा पाईणंचेव उदीणंचेव ॥ बीयठाणस्सपढमोउद्देसहसम्मत्तो १ ॥

अतीचारने अनुसारें प्रायश्चित पाप छेदवा ठासवाने अर्थे तथा तपकर्म पडवजवाने अर्थे एटला बोल पूर्वदिशि उत्तरादिशि सन्मुख रही आदरवा । वली ये दिशोने सनमुखे रही नें कल्पें साधुने तथा साध्वीने छेहली मारणांतिक मंगलीक पका माटे अपश्चिम कही सलेखनानी सेवा ते प्रति सेवतां तेणे सहित देह मूंकतां । भात पाणीनो आवजीव पचखाण करता । वृक्षनी कापीडाळनी परें थिर रहिवो । मरणने अणवांछवो एह रीते अनशन करवो ते बेदिशि सनमुखरही करवो ते कहेछे । पूर्व दिशिने तथा उत्तर दिशिने ॥ इति बीजा ठाणानो पहिलो उदेशो संपूर्ण थयो ॥ १ ॥

द्वानन्तरोद्देशकेऽभ्यधायीव धर्मास्तिकायादिप्रदेशा स्थितोद्देशकेतु स्थितिविशिष्टाएव जीवाश्चौ च्यन्त इत्येवं सम्बन्धेनायातस्योदेशकस्येदमादिसूत्रं ॥ जेदेवेत्यादि ॥ अथवानन्तरसूत्रेण सहाय मभिसम्बन्ध प्रथमोद्देशकान्त्यसूत्रे पाल्योपममनमुक्तं तच्चायदेवले जो वाँ विश्लयतीति देवविशेषभणनेन यस्य सम्बन्धोऽस्मै प्रतिपाद्यसूत्रस्य ॥ जेदेवेत्यादि ॥ येदेवा सुरा वक्ष्यमाणविशेषणेभ्यो वेमानिका ज्ञानगाद्ये समया विसूत्रा ॥ उद्धृत्ति ॥ सर्वलोकस्तोप पन्नका उत्पन्ना ऊर्ध्वोपपन्नका स्तेच द्विधा कल्पोपपन्नका सौधर्मादिदेवलोकोत्पन्नास्तथा विमानोपपन्नका ग्रैवेयकानुत्तरलक्षणविमानोत्पन्ना कल्पा तीतास्त्वर्थं तथापरे ॥ चारोववन्नत्ति ॥ चरन्ति भ्रमन्ति ज्योतिष्कविमानानियत्र स चारो ज्योतिश्चक्रक्षेत्रं समस्तमेवमनुष्यक्षेत्रमानाभिप्रायेण भण्यमा नं निमित्तान्तरभावात् तत्रोपपन्नका चारोपपन्नका ज्योतिष्का नच पाल्योपममादि ज्योतिष्कत्वं भवति परिणामविशेषादिति तेपिच द्विधैव तथा हि चारे ज्योतिश्चक्रक्षेत्रे स्थितिरेव येषांते चारस्थितिका समयक्षेत्रमहिर्वर्तिनो घंटाकारव्यवस्थाय तथा गतो रति येषांते गति रतिका समयक्षेत्रवर्तिनस्तेच गतिरतयस्य सततगतयोपि भवन्तीत्यत आह गतिसमापन्ना समितिसन्तत आपन्ना प्राप्ता गतिसमापन्नका अनुपरतगतयस्तेच तेषां देवानां विविधानां सदा नित्यमनितं सततं सत्पाप पापासरवादि सततमकर्मणा ज्ञानार्चा क्रियते बध्यते पापकर्मबंधोमोर्य भवतिसम्पद्यतेहत्यर्थं ते देवा स्तस्य

जेदेवा उद्घोववन्नगा तेदुविहा पन्नत्ता तंजहा। कप्पोववन्नगा विमाणोववन्नगा चारोववन्नगा चारट्ठिइया

जदेवता ऊर्ध्वलोक ऊपनाछे ते बेमकारेंछे ते कहेंछे । कल्पते बारह देवलोकना ऊपना । विमाने ऊपना से नवग्रैवेयकना पांच अनुत्तर विमाननां ऊपना । चारे मन ते जोतिषीदेवता अढीद्वीपना । स्थिरजोतिषी अढीद्वीपबाहिर । चालवामांयिपे जोडने रतिछे ते गतिरतिक मनुष्यले

मेव भावाभावाभ्यामतिक्रमेसति । तत्थगयाविति । अपरित्यक्तारात्र सामर्थ्येसप्रयोग सत्यैव देवभवएव कप्यातीतानां वैमान्तरादिगमनासम्भवा दित तथाम्यवयम्स्थाम्यां भवएव विवक्षितो मनिमयगमनसमाहोमि गता यत्तमामाएके केचन देवा वेदना सुदर्मविपाकमनेस्वन्ति अनुभवन्ति । अन्नत्थगयाविति। देवभवान्यत्यैवभवान्तरे गता तत्पवासेवावेदनामनुभवन्ति केचित्तूभयत्रापि अन्ये विपाकोदयापेक्षया नोभयत्रापीति एतत्र विकल्पद्वयं सूत्रेणान्वित दि त्साधिकारादिति सूत्रोक्तमेव विकल्पद्वयं सप्तजीवेषु चतुर्विंशतिदण्डकेन प्ररूपयन्नाह । नेरइयाणमित्यादि । प्राय' सुगम नवर । तत्थगयावि अन्नत्थग यावि । एवमभिलापेनदण्डकोनेयो यावत् पञ्चेंद्रियतिर्यंचो मतएवाह । जीवेत्यादि । मनुष्येषु पुनरभिलापविशेषोऽस्य यथा । इहगयाविएमइयादति ।

गइरइया गइसमावन्नगा तेसिणदेवाण सयासमिय जेपावेकम्मे कज्जइ तत्यगयावि एगइया वेयणवेयति अ न्नत्यगयावि एगइया वेयणवेयति नेरइयाण सयासमिय जेपावेकम्मेकज्जइ तत्यगयावि एगइयावेयणवेयति अन्नत्यगयावि एगइयावेयणवेयति जायपचिंदियतिरिक्खजोणियाण मणुस्साण सयासमिय जेपावेकम्मे

थना । गतिनेविषें पहुचता एतले ज्योतिषी । ते देवताने सदा जेपापकर्म उपजेंडे बंधायेंडे तेहीज देवताना भवनेंविषें केतलाएक देवता वेदेंसो गव । केतलाएक देवता भवांतरें अनेंमें वदें भोगवें। नारकी जे सदा सर्वदा निरंतर पापकर्म करेंडे बांधेंडे तेपापना फल विपाक केतलाएक ति हांज नारकीमा रहिया वेदें भोगवें । अथवा बीजे भवांतरें गया थका पणि केतलाएक नारकी ते पापनां फल वेदें भोगवें । एम जाव पचेंद्रिय तिर्यचसमें जाणिवा जे भवें पापकरें तेहिजभवें भोगवें अनें बीजें भवें पणि भोगवें । मनुष्य जे सदा पापकर्म करेंडे तेपापना फल केतलाएक ते

मूयकारोदि मनुष्यो तमत्वेत्थेवंभूतपरोद्यानासवनिर्दिंसं विशुष्य मनुष्यसूत्रे दृश्येव निर्दिंयतिस्म मनुष्यभवस्यलोकस्तेम प्रत्ययासववाचिमदमुम्यस्य विपयत्वादिति पतएवाह । मनुष्यसवसासेसाएक्कगमत्ति । ग्रेपा व्यतर ज्योतिष्कवैमानिका एक्कगमा तुल्याभिलापा मनु मवसमूत्रएव ज्योतिष्क मेमा निकरेवानां विवक्षितावधाभिहितत्वात् किंपुनरिह तदभनेनेति उच्यते तथानुष्ठान फलदृशन प्रसङ्गेन भेदत योक्त्वा दित्तु एक्कगममेव सामान्यत योक्ता दिति मसोपोभवति इगते चेह तावतथ विशेषोक्तावपि सामान्योक्ति रितरोस्ती स्थितरेति तत्र गता वेदना वेद्यमतोयुक्त मतोनारकादीना ग तिं तद्विपर्यय प्यामागतिश्च निरूपयन्नाह । नेरइयस्रादि । एक्कगं वस्थो गवर नेरयिया नारवा इवो मनुष्यसति तिर्यग्गतिलक्षणो गत्वो रभिवरच भूतयो गति वैयाति तथा शाभ्यामेताभ्यामेवा वधिभूताभ्या मागति रागमनं येयाति तथा उदित नावासु नारकएव ममपदिश्यते यतउच्यते । नेरइए नेरइएसुत्ति । नारकेषुमध्ये इत्यर्थ इहचादेयत्रमयत्वयात् प्रथममवक्तेनागतिवक्ता । सेचेवपसेत्ति । योमागुपस्यादितो नरकमत सएवासौनारको नान्यो

फजाइ ड्हगयायिएगइयावेयणवेयति छन्नत्यगयायि एगइयावेयणवेयति मणुस्सवज्जा सेसाएक्कगमा नेरइ यादुगइया दुयागइया पन्नत्ता तजहा नेरइएनेरइएसुउववज्जमाणे मणुस्सेहितोवा पंचिंदियतिरिक्खजो

तिरजवें भोगवे । केतलाएक भवांतरें भोगवें । मनुष्यवर्जी शेषपीजा दण्डक व्यतर जोतिषी वैमानिक एकगमा सरीखा जाणिवा ॥ नारकीनें जावानीं येगतिवे प्रावानीं येप्रागतिवे तेकहेवें । नारकीनो प्राऊओ जेवे थांच्यो तेहमें नारकीज कहिये । ते नारकी नरकमां उपजेतो मनुष्यमांथी उप जे । अथवा पंचेंद्री तिर्यंचमांथी उपजे एह बे मांहियोज नारकीथाय वली तेहनारकी नारकीपणुं मूकितो नरकमाथी नीसरी मनुष्यमा आवी

ने नैवातानित्यर्थं निरयमिति । विपत्रक्षमावेति । विप्रत्यङ्म् परित्यजन् इत्य मूतभावरया नारकत्वपदेश पनेमवाव्यन मतिरत्ना इत्यत्र व्यास्था
तं तेजस्कायिकाया गतयश्चिर्वमनुष्यापेक्षया एकगतय श्चिर्वमपेक्षयेति वाक्यमुपजीव्येति । एवंमसुरकुमाराविति । नारकावक्तव्यात्स्वमं नवरं ये
वस मर्य विमेय तियग् मर्यचेन्द्रियेष्वेवोत्पद्यते पृथिव्यादिष्वपि तदुत्पत्ते रित्यत सामान्यतभाव । मैवेवर्षसेइत्यादि जाव तिरिक्खजोणियत्ताएवागच्छे
ज्जति एवंमम्मरेवत्ति । असुरवत् शाद्यापिरस्त्वपदानिवाच्यानि तेषामप्येकेन्द्रियेषूत्पत्ते रिति । णोपुढविकायश्चिंतोत्ति । अनेन पृथ्वीकायिकभिन्नेभ्यः

णिएहिंतोवा उववज्जेज्जा सेचेवणसे नेरइयत्तविप्पजहमाणे मणुस्सत्ताएवा पंचिंदियतिरिक्खजोणियत्ता
एवागच्छेज्जा एवमसुरकुमाराणवि णवर सेचेवणसे असुरकुमारत्तविप्पजहमाणे मणुस्सत्ताएवा तिरिक्खजो
णियत्ताएवा गच्छेज्जा एवसव्वदेवा पुढविकाइया दुगइया दुयागइया पन्नत्ता तंजहा पुढविकाइएपुढविका
इएसु उववज्जमाणे पुढविकाइएहिंतोवा णोपुढविकाइएहिंतोउववज्जेज्जा सेचेवणसे पुढविकाइयत्तवि

उपजे । अथवा पचेंद्रीतिर्यंचमां आवी उपजे एवेठिकाणे जाय । एम नारकीनीपरें असुरकुमार जाणवा पणि एतलोविशेष जेसे असुरकुमार देवता
असुरकुमारपणा मूकेतो मनुष्य मां ऊपजे अथवा पचेंद्रीतिर्यंच मां पृथिवी पाणी वनस्पति एहमां पणि ऊपजे एतलोविशेष । एमसर्वदेवतानां
व्यंतर जोतिषी सौधर्म इशान लगे जाणवो । पृथिवीकायमां जीव वमतोयेआय येमांथी आवे ते कहेछे । पृथिवी कायनो आयु बांधी पृथिवीकायमां
उपजे अने पृथिवीकायमांथी पृथिवीकायमां उपजे । नारकी वर्जीने बीजा सर्वस्थानमांथी आवी उपजे । पृथिवी प्रमुखकही तेविना बीजाथकी णोपृ

रैवाजायिकास्य मवें प्वीता विस्तानकागुरोधादिति तेभ्योया नारकजर्नेभ्य असुत्पद्येत । नोपुढविकाइयत्ताएत्ति । देवनारकवर्जाप्कायाऽदित्वया मन्धेदिति । एवं जावमणुस्सेति । यथा पृथ्वीकायिका दुगदयारत्वादिभि रभिलापै वाच्या एवमेभिरेवाप्कायादयो मनुष्यावसाना पृथ्वीकायिकशब्दस्था ने ऽप्कायादिव्यपदेशं कुर्वद्भिरभिधातव्याऽइति यन्तरादयस्तु पूर्वमतिदिष्टा एवेति २ जीवाधिकारादेव भव्यादिविशेषणे जीवाभि संस्कारस्वरूपया भाव नयभव्यदण्डक कंच १ पनन्तरस्वरूके । पर्यंतरति । एकस्मा दनन्तरमुत्पन्ना येते पनन्तरोपपन्नका तदन्यवात्तु परम्परोपपन्नका विवक्षितदेशापे क्षया या ये ऽनन्तरतयोत्पन्ना स्ते पाथा परपरयावितरेऽइति गतिदण्डके गतिसमापन्नका नरकाद्गच्छत इतरेतु तत्र ये मता भवया गतिसमापन्ना मा

प्पजह्रमाणे पुढविकाइयत्ताएवा णोपुढविकाइयत्ताएवा गच्छेज्जा एव जाव मणुस्सा दुविहाणेरइया प० तंजहा भवसिद्धियाचेव अभवसिद्धियाचेव जायवेमाणिया दुविहा नेरइया पन्नत्ता तंजहा अणंतरोववन्न गाचेव परंपरोववन्नगाचेव जाववेमाणिया दुविहाणेरइया पन्नत्ता तंजहा गइसमावन्नगाचेव अगइसमाव

यियी कह्यिे । यली तेज पृथियीकायमां जीव पृथियीकायपणो मूकी तो पृथियीकायमां ऊपजे। अथवा नो पथिवी ते थीजे सर्वस्थानके आय देयता मा रकी जोतिषी गततामां मजाय। एम जाव मनुष्यलगें आखवो। यली नारकी बे प्रकारें कह्यिा ते कहेंछे। एकभव्यनारकी बीजा अभव्यनारकी । एम जाय वैमानिक चोवीस दण्डकें जाणवा। यली नारकी व प्रकारें ते कहे छे। अनंतर ऊपना नारकी पथा एक उपना ॥ परंपरायें ऊपना त एकसमयेंएक बीजें समयें बीजो। एम जाय चोवीस दण्डकें वैमानिक लगें। यली नारकी बे भेद ते कहे छे। एक नरकमा जाता अथवा नरक पथो पाम्यो सुरत त

रथल म्मासा इतरेद्व द्रष्मारका प्रथमा बसमिरलापेक्षया ते प्रेवा इति प्रथमसमवदण्डके ॥ पढमेत्यादि ॥ प्रथम समय उपपन्नाना येषान्ते प्रथमस मयोपपन्नका तद्न्येऽप्रथमसमयोपपन्नका इति ॥ ४ ॥ आहारकदण्डके आहारका सर्वेण अनाहारकास्तु विग्रहगता येके दोवा समयौ ये गाडीमध्ये मला तर्वेणोत्पद्यन्ते वेसम्बया ते चोमिति उच्छ्वासदण्डके उच्छ्वसन्तीत्युच्छासका तत्पर्याप्तिपर्याप्तका इतरेत्वेतु नोच्छासका ॥ ६ ॥ इन्द्रियदण्डके सेन्द्रिया इन्द्रियपर्याप्त्या पर्याप्ता तदपर्याप्तास्त्वनिन्द्रिया पर्याप्तदण्डके पर्याप्ता पर्याप्तनामकर्मोदया दितरेत्वितरोदयादिति ॥ संज्ञिदण्डके संज्ञिनो मन प

न्नगाचेव जाववेमाणिया दुविहानेरइया पन्नत्ता त० पढमसमयउववन्नगाचेव अपढमसमयउववन्नगाचेव जाववेमाणिया दुविहानेरया पन्नत्ता तजहा आहारगाचेव अणाहारगाचेव एवजाव वेमाणिया दुविहा णेरइया पन्नत्ता तजहा उस्सासगाचेव नोउस्सासगाचेव जाववेमाणिया दुविहाणेरइया पन्नत्ता तजहा सइंदियाचेव अणिंदियाचेव जाववेमाणिया दुविहानेरइया पन्नत्ता तजहा पज्जत्तगाचेव अपज्जत्तगाचेव

गति समापन्न कहिये । जे पर्गा कासना तिहां छै त अगति समापन्न कहिये ॥ एम जाव चौवीस दण्डकें वैमानिक लगें जाणवा ॥ वली नारकी बे प्रकारे ते कहे छै । प्रथम समयना उपना बीजे समयना उपना । एम जाव चौवीस दण्डकें वैमानिक लगें जाणवा । वली नारकी बे भेदे ते कहे छे । सर्वेव आहार लेवे ते आहारक विग्रह गतियें करी मरणे उपजस्ये ते एकसमये बे समये अनाहारी । एम जाव चौवीस दण्डकें वैमानिक लगें जा णिवा । वली नारकी बे भेदें ते कहे छे । पर्याप्ता ते श्वासोश्वास ले । अपर्याप्ता श्वासोश्वास नथी लेता । एम जाव चौवीस दण्डकें वैमानिकलगें

र्यांस्रा पर्याप्तका मृताया अपर्याप्तकास्तु येते असंज्ञिन इति एवं । पंचेंदिसेत्यादि । असायमय' यथा नारका' सन्नसन्निभेदेनोक्ता' । एवन्निमचेन्द्रियवच्च

त्ति । विकलाक्षपरिपूर्णानि संस्पर्येंद्रियाणि येषागते विकलेंद्रिया स्ताम् पृथिव्यादीन् त्रिचितुरिन्द्रियांयवर्ज्जिता ये अन्ये चतुर्विंगतिदण्डके पचेंद्रि

या असुरादयो भवन्ति ते सर्वेपि संज्ञसंज्ञितया वाच्या दण्डकावसानमाह । जाववेमाणियत्ति । वैमानिकपर्यवसाना अभिवक्तव्या इति । कचिज्जाव

वाणमंतरत्ति । पाठ स्तावमव' तु असंज्ञिभ्योनारकादितोत्पद्यन्ते ते ऽसंज्ञिन एवोच्यते असंज्ञिनय नारकादिपुव्यन्तरावसाने पूत्पद्यन्ते न ज्योतिष्क

वैमानिकेष्विति तेषा मसंज्ञित्वाभावादिदमुक्तमिति । ८ । भाषाएत्यके भाषका भाषापर्याप्त्युदये अभाषका स्तदपर्याप्तकावस्थायामिति एकेंद्रियाश्चा

जायवेमाणिया दुविहानेरइया पन्नत्ता तजहा सन्नीचेव असन्नीचेव एवपंचिदियासव्वे विगलिंदियवज्जा
जायवेमाणिया दुविहानेरइया पन्नत्ता तजहा नासगाचेव अन्नासगाचेव एवमेगिंदियवज्जासव्वे दुविहानेर
इया प० त० सम्मदिठियाचेव मिच्छदिठियाचेव एगिंदियवज्जासव्वे दुविहानेरइया पन्नत्ता तजहा परि

यत्नी येप्रकारें नारकी ते कहेंछे । इत्रीसहित ते पर्याप्तें करी पर्याप्ता । अपर्याप्ता हजी पूरी पर्याप्ति नथी थई । एम यावत चौवीस दंडकें वै

मानिकलगें । वली नारकी बे प्रकारें ते कहेंछे । पर्याप्तनाम कर्मथी एक पर्याप्ता बीजा अपर्याप्ता हजी पूरी पर्याप्ति नथी थइ । एम याव

चोवीस दंडकें वैमानिकलगें । वली नारकी बे भेदे ते कहेंछे समी मन पर्याप्ति सहित असनी मन पर्याप्ति नथी थइ । एम सन्नी असन्नी पचेंद्री

सर्व जाणवा । विगलेंद्री थांइोने वेंद्री चौरेंद्री थांइोने एहने मन नहोय । एम वैमानिकलगें लेवो । वली बे प्रकारें नारकी ते कहेंछे । समकितदृष्टी

भापापयाप्ति मामोत्मतभाव । एवमित्यादि । १० । सम्यग्दृष्टिसूत्रके सम्यक्तमेकेंद्रियाणां नास्ति द्वींद्रियादीनान्तु सोसादनंमा दपीत्युक्तं । एगिंदिय वज्जाइमेति । ११ । संसारसूत्रके परित्तसंसारिका संचिप्तभवा इतरेत्विसरे । १२ । स्थितिसूत्रके काल सम्योधिमात् समय भाषारोपिका इत कालपासोममवेति कालसमय संख्येयो यपंप्रमाणत सयस्मांसा संख्येयकालसमया स्थितिरेषामसेपांति संख्येयकालसमयस्थितिका दृशवर्षसहस्रादि स्थितय इत्यय इतरेतु पल्योपमासंख्येयभागादिस्थितय । संखेज्जकालठियत्तिअवित्याठ । सवसुममएवेति । एवमिति नारकवत् द्विविधस्थितिका ए गाओमा विमर्श्वंपि नेतव्या पंचेंद्रिया असुरादय विमुक्तं भवति एकेन्द्रियविकलेन्द्रियवर्जा एतेमांहि द्वाविंशतिवर्षसहस्रादिकासंख्यातेवस्थिति पंचेन्द्रि यापपि विमर्श्वं नेतव्या यावद्व्यंतरा व्यंतराना एतेहि उभयसमाभामवन्ति ज्योतिष्कवैमानिकास्तु असंख्यातकालस्थितय एवेति । १३ । बोधिसूत्रके

सससारियाचेव श्रणतससारियाचेव जावघेमाणिया दुविहानेरइया पन्नत्ता तजहा संखेज्जकालसमयठिइ याचेव श्रसंखेज्जकालसमयठिइयाचेव एवपंचेंदिया एगिंदियविगलेंदियवज्जा जाव वाणमंतरा दुविहानेर

नारकी । मिथ्यादृष्टी नारकी । एम एकेंद्री टालीने सर्व दंडके एकेंद्रीमां समकित नहोय । वे प्रकारें नारकी कहिया ते कहेछे । एक थोडा भव शेष छे जेहना एहवो नारकी । बीजो अनंत संसारी । एम यावत् वैमानिकलगें । नारकी बे प्रकारें ते कहेछे । एक संख्याता काल समयनी स्थि तिना एतले दशहजार वरषना आऊखानी स्थितिना । बीजा असंख्यात कालसमय स्थितिना । पल्योपम सागरोपमना आऊखाना । एम पंचेंद्री लगे । एकेंद्री विगलेंद्री टालीने एहने असंख्यातो आऊखो नथी । एम जाव वाणव्यंतरलगे जोतिषी वैमानिकना असंख्याता आयु छे । बे प्रकारें

वाभि जिनधर्म सा सुलभा येषान्ते सुलभबोधिका एवमितरेपि ॥ १४ ॥ पाक्षिकसूत्रके शक्रो विग्रहत्वात्पधो भ्युपगम' शुक्लपक्षेण परीत्त शुक्लपा क्षिका शुक्लत्वेन क्रियावादित्वेनेति भावः क्रियावादिनः भव्या सुक्लपक्षिणोक्तिवचनक्रिया शुक्लानां नास्तिकत्वेन शुक्लानांपयोगा प्र थमत मृगभवा शुक्लपाक्षिका तद्विपरीतास्तुकृष्णपाक्षिकाइति ॥ १५ ॥ चरमद्वयके येषां स नारकादिभवश्चरम' पुनस्तेनैव नोत्पत्स्यति सिद्धिगमना त्ते चरमा भव्यविशेषरमा इति ॥ १६ ॥ एवमिते श्रादितोऽष्टादशद्वयका ॥ मार्ग्वेमानिकावरमावरमत्वेनोक्ता सोधावधिनाऽवधिनोऽवादो न्विदंस्वतस्तोवेदमे जीवस्वमवारदसमाद ॥ दोहीत्यादि ॥ सूत्रचतुष्टयं वाम्यां स्थानाभ्यां प्रकाराभ्यां श्रात्मावीनो ऽधीलोकभागावधिप्रानेन पश्चात्स्वावधिदर्शनेन समवहतेन वैक्रियसमुद्घातगतेनात्मना श्रभावेन समुद्घातान्तरगतेनवा श्रसमवहतेन स्वयपीति एवदेवश्चात्स्याति ॥ श्रहोहीत्यादि ॥ समवहतो वधिस्तेति श्रवा वधि'

इया पन्नत्ता तजहा सुलभबोहियाय दुल्लभबोहियाय जावयेमाणिया दुविहानेरइया पन्नत्ता तजहा कराह पक्खियाचेव सुक्कपक्खियाचेव जावयेमाणिया दुविहानेरइया पन्नत्ता तजहा चरमाचेव अचरमाचेव जा वयेमाणिया दोहिंठाणेहिंआया अधोलोग जाणइपासइ तजहा समोहएणचेव अप्पाणेण आया अहेलो

नारकी छ ते कहेछे । एक सुलभ बोधीछे जेहने जिनधर्म पामवो सोहिलो छे। बीजो दुर्लभ बोधीछे जेहने जिनधर्मनो पामिवो दोहिलो छे । एम जाव वैमानिकलगे जाणिवो । वली बे प्रकारे नारकी छे ते कहेछे । एककृष्णपाक्षिया जे बहु कर्मी छे । बीजा शुक्ल पाक्षिया जेहना कर्म हलु श्रा छे । एम जाव वैमानिकलगे जाणवा । नारकी बे प्रकार ते कहेछे । एक चरम जे फरी नारकीमा न आव मोक्ष जाय ते । बीजो अचरम जे

पादिदीर्घस्थमावतत्वात् परमावधेर्वा अधोवर्गवधिसंभ्य सोधोवधि रावा नियतक्षेत्रविषया ऽवधिमागी प्रवादाचित् समवहतेन कदाचिदसमवेवि समवह
ता समवहतेनेवि एवमित्यादि एवमिति यथा ऽधोलोक समवहतासमवहतप्रकाराभ्या मवधिविषयवलोक एवतिर्यग्लोकाद्ययोपोति सुगमानिच तिर्यग्लो
कोर्ध्वलोक केवल कल्पलोकसूत्राणि नवर केवल परिपूर्ण सवासो लोकायसामर्थ्यात्कल्प केवलज्ञानमिवापरिपूर्णतयेति केवलकल्पो भववाकेवलकल्प सम
यभाषया परिपूर्ण स लोकपरपर्यमव्याख्यमिति वैक्रियसमवातामतर वैक्रियशरीर भवतीति वैक्रियशरीरनाधित्या ऽधोलोकादिधाने प्रकारयमाह । दो
लोकादि सूत्रचतुष्टयं कंठ नवर । विक्रमएवानि । कृतवैक्रियशरीरेवेति । प्रामाधिकारएवेदमपरमाह । दोहोल्यादि यत्सूत्रो स्तागताभ्यां प्रकाराभ्याम् । देसे

गजाणइपासइ असमोहएणचेव अप्पाणेण आया अहोलोग जाणइपासइ अधोहिसमोहएसमोहएणचेव
अप्पाणेण आया अहेलोगजाणइपासइ एवंतिरियलोग उड्ढलोग केवलकप्प लोग दोहिंठाणेहिआयाअ
होलोगजाणइपासइ तजहा विउव्विएणचेव अप्पाणेण आया अहेलोगजाणइपासइ अविउव्विएणचेव अ

यती नारकीमां आसे यीजा भवकरीने । एम जाव वैमानिकसगे वे प्रकारे जीय अधोलोकने जाणे देखे ते कहे छे । वैक्रिय समुदघाते जीव स्वभा
वें करीने । अवधिज्ञानेकरी अधोलोकने आत्मा जाणे देखे अवधि दर्शनेकरी । बीजे भेदें वैक्रिय समुदघात विनाज जीव अधोलोक प्रतें जाणे देखे
अवधिज्ञाय अवधि दर्शनेकरी । अधोवर्ती अवधिज्ञानी जीव अथवा परमावधि ज्ञानवो यवी वैक्रिय समुदघातेकरी अथवा वैक्रिय समुदघात विना
पणि जीवस्वभावे करीने अधोलोकप्रति जाणे देखे । एमज तिरछा लोकप्रतें जाणे देखे । एमज ऊर्ध्वलोकप्रतें जाणे देखे । एमज केवलकल्प ते चौदे

चरिति। देशेन श्रयोत्येकेन श्रोत्रेणेत्र श्रोतोपघाते सति सर्वेणवाऽनुपहतश्रोत्रेन्द्रियो श्रोता संभिन्नश्रोतोभिधानलब्धियुक्त सर्वैरिन्द्रियैः श्रृणोतीति सर्वेणेति अपदिश्यते एवमितियथाम्नात् देयसर्व्वाभ्या एवंरूपादीनपि नवर जिह्वादेश अप्रसुप्तादिनोपघाताद्देशेनास्वादयतोऽवसेयमिति। अप्रस्थवणादयो जीव परिणामा उक्ता स्त प्रस्तावात् तत्परिणामान्तराण्याह। दोहीत्यादि। नवसूत्राणि सुगमानि नवरं पवमासते द्योतते देशेन खद्योतवत् सर्वत प्रदीपवत्

प्याणेण आयाअहेलोगजाणइपासइ अहोहिविउव्वियाविउव्विएणचेव अप्याणेण आयाअहोलोग जाणइ पासइ एयतिरियलोग उड्ढलोग केवलकप्पलोग दोहिठाणेहिआया सद्दाइसुणेइ तदेसेणवि आया सद्दाइ सुणेइ सव्वेणवि आयासद्दाइ सुणेइ एवंरूवाइपासइ गधाइ आघायइ रसाइआसाएइ फासाइपडिसवेएइ

रावमनामनमते जाये देखे। केवलनाव केवल दर्शनेकरीने। वली वे प्रकारें जीव अधोलोकप्रते जाये देखे शरीर आश्रीने। ते कहेछे। वैक्रिय शरी रें आरम्भयजावे जीव अधोलोकप्रते जाये देखे। वैक्रिय शरीर कीधा विना पणि स्वभावेंज अधोलोकप्रते जाये देखे। परमावधि नाणनो धणी एमज वैक्रिय शरीर करीने अथवा अणकरीने स्वभावज जीव अधोलोकप्रते जाये देखे। एमज तिरछालोक अने ऊर्द्धलोकना आलावा जाणिवा। वे पामके जीव शब्दप्रति सांभले ते कहेछे। देशथकी एकजकाने बीजा कानने उपघाते जीव शब्द सांभले एक काने बहिरो। अथवा सर्वथी वे कानेंकरी सांभले संभिन्नश्रोतो लब्धिनो धणी सर्व प्रकारें सांभले। एम वे प्रकारें रूप देखे एक आंखे काणो होय ते देशथी। एम नासिकाथी गंधलीयें देशथी सर्वथी ए वे भेद एम जीभथी रसलीयें देशथी पडजीभी प्रमुख रोग सर्वथी अन्यथास्तियें। एम फरशप वि देशथी सर्वथी फरिवूं वे

पथवा भवभामते आनाति सब देशत पड्डकावधिज्ञानो सम्वतोम्यन्तरावधिरिति एवमिति देयसर्वाभ्यां प्रभासते प्रकाशेनद्योतते २ विकरोति देशेन ह स्तादिविक्रियकरणेन सर्वेषसव्वमेवमायसेति ३ । परियारेशति । मैथुन सेवते देशेन मनोयोगादीनामन्यतमेन सर्वेण योगत्रयेणापि ४ भाषां भाषते देशे न जिह्वापादिना सर्वेण समपताल्वादिस्थाने ५ पाहारयति देशेन मुखमात्रेण सर्वेण पोजपाहारापेक्षया पाहारमेव परिणमयति परिणामयति पथरसविभागेन भक्तायदेशस्य शीर्षादिनावयलात् देशत पथ्यभासम्यत वेदयति पनुभवति देशेन हस्तादिना पवयवेन सर्वेण सर्वावयवेन रा कारमलान् परिणमितपुद्गलान् इष्टानिष्टपरिणामत निर्ज्जरयति सवसाधारिताम् परिणामिताम् वेदिताम् पाहारपुद्गलान् देशेन पपानादिना सर्वेण

दोहिंठाणेहिं आया ओभासइ तजहा देसेणवि आया ओभासइ सव्वेणवि आया ओभासइ एवपज्ञासइवियउ
व्वइ परियायेइ भासभासइ आहारेइ परिणामेइ वेएइ निज्जरेइ दोहिंठाणेहिं देवेसद्दाइ सुणेइ तजहा

पानकेकरी जीव तेजेंकरी दीपे ते कहेंछे। देशथी सजुभामो परें दीपे । सर्वथी दीयानी परें दीपे एम प्रकर्षथी दीपें देशथी सर्वथी। एम विकुर्वे देशथी हाथप्रमुख वैक्रियकरे सर्वथी काया । एममैथुन सेवे देशथी मनेंकरी सर्वथी विषीयें सवे । एम भाषा बोले देशे जीभथी सर्वथी तालु आदिकेंकरी एम आहार मुखमात्रे लीयें सर्वथी पूर्व आहार । एम परणमावे देशथी कोहो पेटमां होय तेने सवथी सव आमे । वेदे अनुभवे आहारनें हस्ता दिके अवयवें करी एकथी ते देवें । सव शरीरें भोगवे ते सवथी । देशथी छांडे अपानवात नीकले । सर्वथी आखे शरीरें परसेवनी परें । एहवे का रे आहारने देशथो सर्वथी । बे थानके करीनें देवता पचि शब्दमांत साम्भले ते कहे छे देशथी एक शब्द मांथी कांइक साम्भले । सर्वथी जे बोले

शरीरैमेव शब्देरकदिति भवचेतानि चतुद्दशापि सूत्राणि विवक्षितविषयवस्तापेक्षयानेयानि तत्र देशसर्वयोरयमर्थः यथा देशेनाप्नोति देशतोपिस्पृशोति विवक्षितशब्दानांमध्ये कांश्चित्स्पृशोति सर्वेणाप्नोति सर्वतस्तु सामस्त्येन सर्वानेवेत्यर्थः एवं रूपाद्योऽपि तथा विवक्षितस्य देशं सर्वेषां विवक्षितमवभास यत्येवं प्रभाप्रसरेणविद्युत्प्रदीपो विकुरुते परिचारयोय स्त्रीशरीरादिपरिचारयति भाषणीयापेक्षया देशतो भाषां भाषते सर्वतोवेति यत्ययद्दार्थमाहारय ति पाकतपरिणमयति वेदयत्यनुवेदयति देशतः सर्वतोवा एवमितरयत्रापि । देशसर्वाभ्यां सामान्यतः शब्दाद्युक्तविशेषविषयाभावो प्रधानत्वात् देवा भी तानाश्रित्यतदाह । दोद्दोचादि । एतदपि विवक्षित शब्दादि विशेषापेक्षया सूत्रचतुष्टयं नेयमिति देशतः सर्वतोवेति भगवतरोक्ताभावाः शरीरएवस ति सम्भवन्तोति देवानांच प्रधानत्वात् तेषामेव व्यक्तिशरीरनिरूपणायाह । मरुयेत्यादि । सूत्राष्टकं पाठ्यम् नवरं मरुतो देवा लोकान्तिकविशेषे येत उक्तं सारस्वता १ दित्य २ वह्नि ३ वरुण ४ गर्दतोय ५ तुषिता ६ व्याबाध ७ मरुतो ८ रिष्टा ९ चेति तेषैकशरीरिणो विपक्षेकार्थपदशरीरत्वात् तदेश भरं वैक्रियभावात् द्विशरीरिण इति शरीरयोः समाहारो द्विशरीरं तदस्ति येषांते तथा अथवा भवधारणीयमेव यदा तदेकशरीराः यदोत्तरवैक्रियमपि तदा द्विशरीराः किंचराणां प्रयोग्यत्वात् मेधा भवनपतयइति परिगणितभेदव्यपदेश भेदान्तरोपलक्षणं मनु व्यवच्छेदार्थं सर्व्वजीवानामपि विग्रहे एक शरीरत्वात्तथाद्विशरीरत्वच चोपपद्यमानत्वादिति ८ भतएवमासामान्यतमाह । देवानुविवेत्यादिवाक्यम् । द्विस्थानकप्रभितीय उद्देशको विवरणत स

देसेणवि देवेसद्दाइ सुणेइ सव्वेणविसद्दाइं सुणेइ जावणिज्जरेइ मरुयादेवा दुविहा पन्नत्ता तजहा एगस

ते सर्व सामल । एम जाव निर्जरावे बोले एवं सर्वमोल जाणिवा । मरुस देवता आठमा देव लोकांतिक देवता माहिँ ते बे प्रकारे कहिया ते

मान ॥ २ ॥ एको द्वितीयोद्देशको व्याख्यातोऽथ तृतीय आरभ्यते। अस्य चानन्तरेण सहायमभिसम्बन्धो ऽनन्तरोद्देशके जीवपदार्थो ऽनेकधोक्त अथ तु तदुप ग्राहकपुद्गलधर्मादिधर्मास्तिकायादिपदार्थरूपो योऽतो ऽत्रैवंसम्बन्धस्यास्येदमादिसूत्रमष्टकं ॥ दुविहेत्यादि ॥ अस्य पूर्वसूत्रेण सहायमभिसम्बन्धः इहानन्तरो देशकान्त्यसूत्रे देवानां शरीर निरूपितं तदाश्रयस्यादिधर्मकोभवतो अथ मन्दशावविकल्पत एवैवं सम्बन्धस्यास्य व्याख्या साप सुकरैव नवरं भाषायाश्शे भाषापर्याप्तिनामकर्मोदयो पादितो जीव शब्द इतर स्तु नोभाषाशब्द अक्षरसम्बद्धोऽक्षराभिलाप् नोअक्षरसम्बद्ध इत्यादि २ घातोद्य मठ्छादि रूप

रोरीचेव विसरीरीचेव एवंकिन्नरा किंपुरिसा गंधव्वा णागकुमारा सुवन्नकुमारा अग्गिकुमारा वायुकुमारा देवादुविहा पन्नत्ता तंजहा एगसरीरीचेव विसरीरीचेव ॥ बीयठाणस्सबीयउद्देसउ सम्मत्तो ॥ २ ॥ दुविहेसद्दे प० त० भासासद्दे चेव नोभासासद्देचेव भासासद्दे दुविहे प० त० अक्खरसंबद्धेचेव नोअक्खरस

कह्या छे। एक शरीरी जिवारे भवधारणीय एक शरीर छे। जिवारे उत्तर वैक्रियकरे तिवारे बे शरीर। एम किन्नर देवता वली किम्पुरुष देवता जाणिवा। एम गन्धर्व देवता नागकुमार देवता सुवर्ण कुमार देवता अग्निकुमार देवता वली वायुकुमार देवता सर्वे बे बे शरीर जाणवा। वली देवता बे प्रकार ते कह्या छे। एक शरीर जेहने भवधारणीय शरीर छे। बीजो उत्तर वैक्रिय शरीर धारी ॥ इति बीजा ठाणानो बीजो उद्देशो पूरो थयो ॥ २ ॥ हिवे बीजो कहे छे। बे शब्द छे। ते कहे छे। एक भाषा। एकनो भाषा बे बलीवली तथवी अक्षर न जणाय। भाषा बे प्रकारें ते कहेछे। अक्षर सहित। अक्षर रहित बोलता अक्षर न जणाय। नो भाषा बे प्रकारें ते कहे छे। एक ताडनामें करी तथवे बोलता

य' गन्द' मतथा नोपातीयमन्दोर्वयसोटादिरुप। ३ ततं मर्तंषोयधोदिवममातोर्च तथ विंचित् घमं यथापिष्मनवादि विवि ष्मुषिर यथा योयापटश दिवं तव्मित'गन्द मतो घन' शुषिरवेतिम्मपदिश्मते ५ विततं वतविवमर्षं तव्मादिरवितं तदपि घन भावयवत् ग्रषिर माश्वादिवत् तव्य'मन्दो विवतो घम' शुषिरवेति चतु'स्मानको पुनरिदमेवंभषिष्यते। ततंवीणादिवंप्रेयंचितत्तपटशादिवं घनस्तुर्वामततादि वंमादिशुषिरमवमिति १ विनयाम धाम्याय नविरोधी मग्तव्यइति ६ भूमर्त नूपुरादि नोभूपर्ण भूपपादन्यत् तालोइस्तताल' । सत्तियत्ति । कसिका स्तादि पातोघलेन नविपचिता इति पमना । खत्तिवासहेत्ति । पार्थिमचारमब्द' ८ उभा' मब्दभेदा इत स्वतृवारयमिकमयायाइ । दोषोल्पादि । वाम्बासामाम्यां वारयाम्यां यम्दो

यरुचेय णोन्नासासद्दे दुविहे प० त० श्चाउज्जासद्देचेय णोश्चाउज्जासद्देचेय श्चाउज्जासद्दे दुविहे प० त० ततेचेय यिततेचेय ततेदुविहे पन्नत्ते तजहा घणेचेय सुसिरेचेय एवंविततेवि णोश्चाउज्जासद्दे दुविहे पन्नत्ते तजहा नूसणसद्देचेय नोनूसणसद्देचेय नोनूसणसद्दे दुविहे पन्नत्ते तजहा तालसद्देचेय छत्तियासद्देचेय दोहिं ठा

दिकमो । बीजो ताळमा विना उपजे जिम थांस प्रमुख चीरता थाय । ताळनाये जे थाय ते बे प्रकारे ते कहेछे । लोइमी तांतनों । बीजो तांस रहित । तत वादित्र बे प्रकारे ते कहे छे। एक घन ते निविळतालप्रमुख । एक वितत वादित्र पनि वाजवो। विना ताळनायें उपजे ते बे प्रकारें ते कहे छे। भूषण नेउर झांझर प्रमुख। एक भूषण विनामों। नो भूषण बे प्रकार ते कहे छे । ताल ते हस्ततालनों । लातनो ते लापटपाटूनो प्रहार । बे प्रकारें शब्द ऊपजे ते कहे छे । सहग्यमान इयता यकां बादर पुदगलनों थाय ते घटा पर्ने तालायें वे पी उपजे । माजता वांस प्रमुखथी

ग्याद्या इति संहन्यमानानामेव संघातमापद्यमानानां सतां कायमूत स्कन्धोत्पाद स्यात् स्कन्धस्यैवापगच्छतीति संहन्यमानेभ्यस्तस्य पुद्गलानां चादरपरि
णामानां प्रचयापच्चयाभ्यां रेवभिद्यमानानामेव विगुम्यमानानां यथार्थमरक्षामामिति । पुद्गलसघातभेदयोरेव चारत्वनिरूपणायाह । दोहीत्यादि ।
गृहणवर्ग बंध भररं पर्यवेति अभावेनचा पश्चादिषिप पुद्गला संहन्यन्ते सम्बध्यन्ते कर्मकर्दमयोगोयं परेपया पुरुषादिनामा संहन्यन्ते सहता क्रियंते
बध्यमानोर एवभिद्यन्ते विघटन्ते यथा परिपतगित पर्वतयिउरादेरिवेति परिसटन्ति कुठारेर्निमित्ता इमुरुयादिवत् विध्वस्यन्ते विनश्यन्ति घनपट

णोंहि सद्गुप्पाएमिपा तजहा साहन्नताण चेव पुग्गलाण सद्गुप्पाएसिया भिज्जंताणचेय पोग्गलाण सद्गुप्पाए
मिया दोंहि ठाणोंहि पोग्गला साहन्नंति सयवापोग्गलासाहन्नंति परेणया पोग्गला साहन्नंति दोंहि ठा
णोंहि पोग्गला भिज्जंति तजहा सयया पोग्गला भिज्जंति परेणवा पोग्गला भिज्जंति दोंहि ठाणोंहि पो
ग्गला परिसडंति सयया पोग्गला परिसडंति परेणया पोग्गला परिसडंति एव परियडंति विद्धसंति दु
विहा पोग्गला पन्नत्ता तजहा भिन्नाचेय अभिन्नाचेव दुविहा पोग्गला पन्नत्ता तजहा भिउरधम्माचेव नो

ग्यजे पुद्गलनो । बे प्रकार पुद्गल बंधाय छे ते कहे छे । एक स्वभावे पुद्गल बंधाय यादल प्रमुख । परे करी पुद्गल बंधाय मोरक पर
पम बे प्रकारे पुद्गल भेदाये ते कहे छे । एक पोतानी मेलें पुद्गल सडीपडे छे । कोठपी भांगली प्रमुख । परथी पुद्गल सडीपडे छे ।
य पामक करी पुद्गल सडे ते कहे छे । पोतानी मेलें पुद्गल सडे छे । परथी । एम पडे छे पमतना शिखर । एम विखसे छे बादल । बे

नवरिति १ पुद्गलानेव बादरसूक्ष्मादि निरूपयन्नाह । दुविहेत्यादि । भिद्याविघटिता इतरेऽभिन्ना' समयेमभिद्यन्ते इति भिदुरभिदुरत्वं धर्म्मोयेषाम्ते भिदुरधर्माण' धर्मभूतमावमत्ययोय मतिपत्त' मतीतएवेति २ परमाणते ऽववेति परमाणव' नोपरमाणव स्कन्धा' सूक्ष्मा' येषां सूक्ष्म परिणाम गोवाणम्निमरूपत्वाद्वा वत्वारएवस्पर्शा स्रोत भाषादय' बादरा स्तु येषां बादर' परिणाम' पञ्चादयस्पर्शा' तेचौदारिकादय' ४ पार्श्वेनस्पृष्टा' देहत्व कारङ्गमा रेणुवत् पाश्वस्पृष्टा' ततोबद्धा' गाढतरंश्लिष्टा स्तनीतोयवत् पाश्वत'स्पृष्टाव तेबद्धाचेति राजप्रश्नादित्वात् बद्धपार्श्वस्पृष्टा' भावण पुद्गलैरण तन्तुभिबद्धमप्येतस्पर्शेति एतेच माणेन्द्रियादिग्रहणगोचरा' तथाणोबद्धा' किन्तु पार्श्वस्पृष्टा इत्येकपदनिषेधे श्रोत्रेन्द्रियग्रहणगोचरा' यतउक्तं पुट्ठ सुणेइसद्द रूवंपुणपासइअपुट्ठंतु गंधंरसंचफासं बद्धपुट्ठवियागरेत्ति ॥ १ ॥ उभयपदनिषेधे श्रोत्रादिविषयायत्तविषयावेति इन्द्रियापेक्षया बद्धपार्श्व

जिउरधम्माचेव दुविहा पोग्गला पन्नत्ता तजहा परमाणुपोग्गलाचेव नोपरमाणुपोग्गलाचेव दुविहा पोग्गला पन्नत्ता तजहा सुहुमाचेव बायराचेव दुविहा पोग्गला पन्नत्ता तजहा बद्धपासपुट्ठाचेव नोबद्धपासपु

प्रकारें पुदगल ते कहे छे । एक सुयासुया छे । बीजा एक मलिया छे । वली बे प्रकारें पुदगल ते कहे छे । पोताने मेलें मेलायते भिदुर स्वमाव छे । बीजा नोभिदुर स्वमाव छे वज्रादिक । बे प्रकार पुदगल ते कहे छे । परमाणु पुदगल जे नजर न आवे केवली जाणे । घण पुदगल घणानों समूह ते नोपरमाणु । बे भेदें पुदगल ते कहे छे । एक सुक्ष्म पुदगल ते भाषामन । बीजा बादर । बे भेदें पुदगल ते कहे छे । बद्धते बधाणा घणूं सरीर मे एकपासे फरस्या नाक प्रमुख इन्द्री गृहण योग्य । नोबद्ध ते बधाणा नथी जे काने शब्द सांभलाय ते । एमेद इन्द्री भाषीने । बे भेदें पुदगल

स्कन्धतापुद्गलानां व्याख्याता एवं जीवप्रदेशापेक्षया परस्परापेक्षयाच व्याख्येयेति ॥ परियादयत्ति ॥ विवक्षितपर्यायमतीता पर्यापाया सामस्त्यग्रहीता कर्मपुद्गलवत् प्रतिषेध सुगात पाता मगीता सीतया जीवेन परिग्रहमाणतया शरीरादितया वाइयन्तेस सर्वक्रियाविमिरितोष्टा कान्ता कमनी या विशिष्टवर्णादियुक्ता प्रिया प्रीतिकरा इन्द्रियाल्हादका मनसाज्ञायन्ते शोभना एत इत्येवम्भिकसमुत्पादयन्त शोभनत्वप्रपर्यायेते मनोज्ञा मनसो मता वल्लभा सपत्राम्युपभोगु सवदाय शोभनत्वप्रकर्षादेव निवर्तितविधिना मनामा इति १२ व्याख्यानान्तरमेवं इष्टा वल्लभा सदैव जीवानां छामा न्येन कान्ता कमनीया सदैव तत्रावितमप्रिया भदेष्या सर्वेषामेव मनोज्ञा कथयापिमनोरमा मन आमा मन प्रिया चिन्तयापीति विपक्ष सुगात स क्येति पुद्गलाधिकारादेववक्तर्मान् शब्दादीनमन्वरोचसविपक्षतादिभिर्नीयक्षपट्कविशिष्टान् ॥ दुविहेसद्देत्यादि ॥ सूत्रनिगमनाय चक्ष्यावेसमिति छत्ता

ठाचेय दुविहा पोग्गला पन्नत्ता तजहा परियादितच्चेय अपरियादितच्चेय दुविहापोग्गला पन्नत्ता तजहा अत्ताचेय अणत्ताचेय दुविहा पोग्गला पन्नत्ता तजहा इठाचेय अणिठाचेव एवकता पिया मणुन्ना म णामा दुविहा सद्दा पन्नत्ता तजहा अत्ताचेय अणत्ताचेय एवमिठा जावमणामा दुविहा रूया प० त०

ते कहेवे । पर्यायातीत जे समस्त गृहीया कर्मे पुद्गलनी परें । समस्त गृहिया नथी ते । वली बे भेदें पुद्गल ते कहेवे । जीव परिगृह तया श रीरपणे अंगीकार कर्या । जे नथी अंगीकार कीधा ते बीजा । वली बे प्रकारें पुद्गल ते कहेवे । एक इष्ट पुद्गल । एक अनिष्ट पुद्गल । एम कात मनावर्णादि सहित प्रिय इन्द्रियने सुखकारी । मनोहर देखतां मनने प्रिय लागे । बे प्रकारें शब्द कह्या ते कहेवे । एक जीवें गृहिया । एक नथी

पुद्गलभव्यां सम्मति धर्माविचारान्मोवधमामाह । दुविहेणायारे इत्यादि । सूत्रचतुष्टयं कंठ्यं नवरं भावरयमाचारो व्यवहारो मार्गं प्रमप्रागमस्तद्विषयाचार ज्ञानादिरष्टविधो ज्ञानाचार भावय कालेविणयेबहुमा नवहाणेअनिह्नवणे वंजणअत्थतदुभय अट्ठविहोणाणमायारोत्ति ॥ १ ॥ नो ज्ञानाचार एतद्भिन्नयथा दर्शनाचारइति दर्शनसम्यक् तदाचारो निःशंकितादिरष्टविधएव भावय निस्संकियनिक्कंखिय निव्वितिगिच्छाअमूढदिट्ठीय उववूहथिरीकरणे वच्छल्लपभावणेअट्ठत्ति ॥ १ ॥ नोदर्शनाचार चारित्रादिरिति चारित्राचार समितिगुप्तिरूपोऽष्टधा भावय पणिहाणजोगजुत्तो पंचहिंसमिईहिंगुत्तीहिं एसचरित्तायारो अट्ठविहोहोइनायव्वोत्ति ॥ १ ॥ नोचारित्राचार तपआचारमश्वति तत्र तपआचारोद्वादशधा उक्तंच बारस

श्रुत्ताचेव श्रुणशाचेव जायमणामा एवगधा रसा फासा एव मिक्कीको श्रालायगा ज्ञाणियह्वा दुविहे आयारे पन्नत्ते तजहा णाणायारेचेव नोणाणायारेचेव नोनाणायारेदुविहे पन्नत्ते तजहा दसणायारेचेव नोदसणायारेचेव नोदसणायारे दुविहे पन्नत्ते तजहा चरित्तायारेचेव नोचरित्तायारेचेव णोचरित्तायारे दुविहे

गृहिया । एम इट अनिष्ट जाव मनोहर अमनोहर जिम पूर्वे कहिया तिम बे बे भेद जाणिवा । रूपना बे भेद ते कहेछे । एम गंध रसनां पणि बे भेद जाणिवा । एम एकेकना छ छ आलावा भणिवा । आचारना बे प्रकार ते कहेछे । ज्ञानाचार आठ प्रकारे कालें विनयें । नो ज्ञानाचार एबीजो आचार दर्शनाचार । नो ज्ञानाचार बे प्रकारें ते कहेछे । एम दर्शनाचार आठ प्रकारें निस्संकिय निक्कंखिय इत्यादि । बीजो नोदर्शनाचार ते चारित्राचार पणिहाणजोगजुत्तो । नोदर्शनाचार बे प्रकारें ते कहेछे

विशमिजितवे पभितर वाचिरेकुसलसिंहे पमिवाएपणाओवी गायम्मोसोतवायारोति ॥ १ ॥ वीर्याचारस्तु प्रागादिष्वेव मनोरगोपनं तदनतिक्रमश्चेति उक्तं पवगूहियबलविरिओ परक्कमइजोजहुत्तमाउत्तो जुंजइयजहाथामं णायव्वोवीरियायारोत्ति ॥ १ ॥ पववीर्याचारस्यैव विशेषाभिधानायपट् गुणोमाह । दोपडिमेत्यादि ॥ प्रतिमाप्रतिपत्ति प्रतिज्ञेतियावत् समाधानं समाधि प्रशस्तभावलक्षण स्तस्य प्रतिमा समाधिप्रतिमा दुयाश्रुतस्कन्धो क्ता द्विभेदा श्रुतसमाधिप्रतिमा सामायिकादि चारित्रसमाधिप्रतिमा च उपधानंतप स्तत्प्रतिमा उपधानप्रतिमा द्वादशभिक्षुप्रतिमा एकादशोपासक प्रतिमाश्चेवरूपेति विवेचनं विवेकः त्यागः सचान्तराणां कषायादीनां बाह्यानां गणशरीरभक्तपानादीनामनुचितानां तत्प्रतिपत्ति र्विवेकप्रतिमा व्युत्स

पन्नत्ते तंजहा तवायारेचेव वीरियायारेचेव दोपडिमाओ प० तं० समाहिपडिमाचेव उवहाणपडिमाचेव दोपडिमाओ प० तं० विवेगपडिमाचेव विउसग्गपडिमाचेव दोपडिमाओ प० तंजहा भद्दाचेव सुभद्दाचेव

चारित्राचार आठ प्रकार पांच समिति त्रिण गुप्ति । नोचारित्राचार ते तपाचार प्रमुख । नोचारित्राचार बे प्रकार ते कहेछे । एक तपाचार आचार भेदें । बीजो वीर्याचार धर्मने विषे बलनों फोरविवो । बे प्रतिमा एतले प्रतिज्ञा नियम विशेषबे ते कहेछे । एक समाधि प्रतिमा प्रशस्तरूप प्रतिमा समनों परिणाम चोखा होय ते । बीजो उपधान पडिमा तपविशेष साधुनी बारह पडिमा श्रावकनी इग्यारह । वली बे प्रतिमा ते कहेछे । विवेक प्रतिमा कषाय प्रमुख अयोग्य वस्तुनों त्याग करिवो छांडवो । काउसग्गनो करिवो ते व्युत्सर्गप्रतिमा । वली पडिमा बे प्रकारें ते कहे छे । भद्रा प्रतिमा पूर्व दिशियें च्यार पहर लगें काउसग्गनों करिवो अथवा उपधान तप श्रावकने तथा साधुने योग्य तेहनो करिवो बे दिने पूरीथाय परोसहकर्मे

गमतिमा कायोत्सर्गरचमेवेति भद्रा पूर्वादिदिक्चतुष्टये प्रत्येकं प्रहरचतुष्टयकायोत्सर्गकरणरूपा अहोरात्रद्वयमानेति सुभद्राप्येवं प्रकारैवेवसम्भाव्यते यहष्टत्वेनतु नोक्तेति महाभद्रापि तथैव नवरं अहोरात्रकायोत्सर्गरूपा अहोरात्रचतुष्टयमाना सर्वतोभद्रातु दशसुदिक्षु प्रत्येकमहोरात्रकायोत्सर्गरूपा अहोरात्रदशकप्रमाणेति मोकप्रतिमा प्रश्रवणप्रतिमा साच काचभेदेन द्विविधा भवतीचभवतीति यतस्तत्र व्यवहारे । खुड्डियार्थमोयपडिमस्सेत्यादि । इयत्र द्रव्यत' प्रश्रवण विषया क्षेत्रतो ग्रामादेर्बहि' कालत' शरदि निदाघेवाभिपद्यते भुक्त्वाचेत्प्रतिपद्यते चतुर्दशभक्तेन समाप्यते अभुक्त्वातु षोडशभक्तेन भावतस्तु दिव्याद्युपसर्गसहनमिति एवम्महत्यपि नवरं भुक्त्वाचेत्प्रतिपद्यते षोडशभक्तेनसमाप्यते अन्यथाऽष्टादशभक्तेनेति यवमध्यं यवमध्यं यस्या' सा यवम

दोपडिमाउं प० तं० महाभद्देचेव सव्वतोभद्देचेव दोपडिमाउं प० तं० खुड्डियाचेव मोयपडिमा महल्लि

सुभद्रा प्रतिमा पणि इमज दश दिशि छे ते माटे बीजो प्रकार शास्त्रमां दीसतो नथी । वली ये प्रतिमा ते कहीं छे । महाभद्रापडिमा पूर्वनी परें एतलो विशेष एकेकदिशि अहोरात्रि काउसग एम च्यार अहोरात्रि प्रमाण । दशदिशि एकेक अहोरात्रि काउसग एतलें दश अहोरात्रि मान यता थे पडिमा ते कहीं छे । एक नान्ही मोकपडिमा एतले प्रश्रवण पडिमा । बीजी मोटीमोकपडिमा कालथी नान्ही मोटी द्रव्यथी प्रश्रवण ते पुनीत राशियी क्षेत्रथी ग्रामादिकथी बाहिर रहिवूं कालथी शरद ग्रीष्म काले जमी आहारीने पडिवजें तो चौद भक्ते पूरीथाय । वली ये पडिमा कही ते कहेछे । एक यवमध्यचन्द्रपडिमा यवधान्य सरिखो छे मध्यभाग जेहनो अने चन्द्रमानी परें वधती घटती कला अजुआली पडिवा दिने एक कवल आहार करे तथा प्रतिदिन एकेक कवल वधारे इम पूनिमदिनें पनरह कवल ते पछें अंधारी पडिवा दिने पनरह कवल ते एम दिनदिन

त्रा वन्तर चनाउदि दात्मिष्या वारतिमा मासंयूपतिमा तयाहि गुरुमतिपदिपर्कवस मध्याह्नत्य ततमतिदिनं कवलवृध्या पचदशपूर्णमास्यां छाप्य रिवादिव चवदमभुत्रा शनिश्विमेकवान्या पमावास्यायामेकमेवयष्यामाने मा वयमध्यावन्द्रमतिमेति यस्मान्तु छष्णमतिपदि पचदशभुत्रा एकैकवान्या दमावाशायामेकं वज्रनिवदिवैकमेव तत पुनरेकैककवलपूर्णिमायापचदश भुक्तिमाकचम्पेव मध्ये यस्या स्तत्विन्त्वव सायचमध्या चन्द्रमतिमेति एवं भि वशासदि सान्दमिति वतिमाय सामायिकसतामेवभवतोति सामायिकमाह ॥ दुविहेत्यादि ॥ समानां ज्ञानादीना मायो लाभ समाय सएवसामायिं

यारेय मोयपडिमा दोपडिमाउ पन्नत्ताउ तजहा जयमज्झेचेव चदपडिमा वइरमज्झेचेव चदपडिमा दुविहे सामाइए प० त० अगारसामाइएचेव अणगारसामाइएचेव दोरहउववाए प० त० देवाणञ्चेव नेरइयणञ्चेव

एकेक कवल पोछो करे एम अमावस्यायें एक कवल लीये यए यवमध्यचन्द्रपडिमा तप । बीजी वज्रमध्यचन्द्रपडिमा वज्रमरिखो मध्यमें जेहनीं एम अंधारी पडिवायें पनरह कवल लेइ बिन दिन एकेक कोछो करता अमावस्यायें एक कवल लीयें पछ्युआली पडवायें एक कवल लेइ दिन बिन वधार ते पूनमामांये पनरह कवल लीयें एम रीते तप करिया ते वज्रमध्य तप । सातो पाली पोजिय यांइ तो चौविहार तथा त्रिविहार कर पूरा माप आहार कीया विना पडवसें तो मानेलके पूरी थाय आवयो देयादि उपसर्ग सहे यए माझी मोकपडिमा मोटी पिण इमज लगमा विवस जे आहार सेहने पडिवजे तो मोनलाने पूरोथाय आहार विना पडियजे तो अठार लाके पूरोथाय । ये प्रकारें सामायिक छे ते कहे छे । गृहस्थ श्रावकने सामायिक देश विरति रूप । साधुनो सामायिक सर्वविरति रूप । ये उपपात छे ते कहे छे । च्यार निकायमा देवता

वमिति तद्द्विविधं मगारवदनगारस्वामिभेदाद्देशसर्वविरतोत्यर्थं जीवधर्माधिकारएव कर्मान्तरापि । दोवई उववाए । इत्यादिभि चतुर्भिःसूत्रैराह दुग मानिषेताभि नउर । दोवइति । द्वयोर्जीवस्थानयो रुपपतनमुपपातो गर्भसंमूर्छनलक्षणजन्मप्रकारद्वयविलक्षणो जन्मविशेषइति दोण्हतौ तिदेवा चतुर्निका या सुरा नैरयिका माम्पतेषां उक्तन मुक्तमा तत्प्रायावियंभी मरणनिलय तथनैरयिकभवमपासिनामेवैर्व्यपदिश्यते भग्येवान्तु मरणमेवेति नैर यिकाणां नारकाणां तथा भवनेयधोलोकदेवावासविशेषेषु वसं शीलमेषामिति भवनवासिन स्तेषां २ च्युतिश्चवनं मरणमित्यर्थः तच ज्योतिष्कवैमानिका नामेव व्यपदिश्यते ज्यातिष्षु नभस्सु भवा ज्योतिष्का यद्दमुष्णं रविरेवं प्रहतिमिमित्तायवचान्तु चन्द्रादयोज्योतिष्काइति विमानेपूर्ध्वलोकेषुभवा वैमा निका सौधर्मादिवासिन स्तेषां गर्भमर्माशये व्युत्क्रान्तिरुत्पत्ति गर्भव्युत्क्रान्ति मंनोरपत्याभिमनुष्या स्तेषा भितरोऽञ्चन्ति गच्छन्तीतितिर्यंच स्तेषां सम्बन्धि नीयोनिरुत्पत्तिस्थानं येषान्ते तिर्यग्योनिका तिर्यग्योनिकाश्चेकेन्द्रियादयोपिभवन्तीति विशिष्यते पंचेन्द्रियाय तिर्यग्योनिकायेति पंचेन्द्रियतिर्यग्योनिका स्तेषां तथा

दोराहउववहणा प० त० नेरइयाणचेय भवणवासीणचेव दोराहचयणे प० त० जोइसियाणचेव वेमाणिया णचेय दोराहगम्भवक्कंती पन्नत्ता तजहा मणुस्साणचेय पचेंदियतिरिक्खजोणियाणचेव दोराहगम्भत्थाण रमा

ते उपपात उपजियो । सात नारकीमो उपपातके गर्भेस्थिति नथी । ये उद्वर्तनाके उद्वर्तना ते नीकलयू मरण रूप ते कहीये । एव नारकीने मरण रूप उद्वर्तना । चौभी भवनपती देवताने पणि उद्वर्तना कहियी । ये ठिकाये मरण ते च्यवन कहियो ते कहीये । चंद्रसूर्य जोतिषी देवतानों चवन कहियो । वैमानिकदेवतानों चवियो ऊर्ध्वलोकना देवतानों । येनें गर्भमां उपजियोके ते कहीये । मनुष्यनें गर्भमां उपजियो छे । तथा पचेंन्द्रिय ति

र्योरेकमर्भस्थो राशरी इम्येया मर्भस्येवामावादिति ५ छवि मरीरोपचय ६ निर्वेदि स्थानि वातपित्तादिभि निर्गमस्या मावावत्वात् मिदराकम्ये बारिमत् ० वैक्रियलब्धिमता विकुर्वणा १ गतिपर्याय यसमं मत्वावागमतरिगमनमयो बपवैक्रियलब्धिमान्मर्भोद्विमत्स प्रदेशतोवहि संयामयति सवा मतिपर्याय उक्तम ममवमा वोवेषर्मतेमभगएसमाविनेरइएसुउववज्जेज्जा गोयमा मत्थेमइए ववक्जेज्जा मत्येमइएगोउववज्जेज्जा सेकेणट्ठेणं गो सेणंस विपंचिदिए सव्वाहिपज्जत्तीहिं पज्जत्तए वीरियलद्धीए वेउव्वियलद्धीए पराणीयमागयंसोचा निसम्मपएसे निच्छुभइ निच्छुभइत्ता वेउव्वियसमुग्घाएणं समो हणइ चाउरंगिणिंसेणं विउव्वइ विउव्वइत्ता चाउरंगिणीएसेणाए पराणीएणं सद्धिं संगामसंगामेइ इत्यादि । ८ । समुद्घातो मारणांतिकादि । १ । कालसंयोग कालअतावस्था । ११ । यावातिर्गर्भोविवम । १२ । मरणं मावण्याम । १३ । दोषबद्धविपश्यति । यवानामुमवेयो वविस्तिमद्वुप्सोपा

हारे पन्नत्ते तजहा मणुस्साणचेय पचेंदियतिरिक्कजोणियाणचेव दोगइगभ्भत्याणवुद्धी प० त० मणुस्साण चेय पचेंदियतिरिक्कजोणियाणचेव एवानियुद्धीविगुव्वणागइपरियाए समुग्घाइकालसजोगे आयाइमरणे दो गइवायपन्ना प० त० मणुस्साणचेव पचेंदियतिरिक्कजोणियाणचेव दोसुक्कसोणिश्चसत्तवा प० त० मणु

येयनें एकेंद्रियादिकनें मयी । बेनें गर्भमा आहारयें तेकहेंडे । मनुष्यनें गर्भमां आहार । तथा पंचेंद्रिय तिर्यंचनें मातानां उदरमाञ आहार लि येंछे । बेनें शरीरनी वृद्धि उपचय कहियो ते कहेंडे । मनुष्य गर्भमाअवकाश वधे । पचेंद्रिय तिर्यंच पणि वधे । बेनें शरीरनी हानिकही तेकहेंछे वात पित्त अपादिकेकरी । मनुष्यमें तथा तिर्यंचमें । एम विकुर्वणा वैक्रियलब्धिवंत । एम मतिपर्याय गर्भमांथी बाहिर गमन करें प्रवेश बाहिर

त् चविमंति त्वचग्ति । पम्मत्ति । पर्य्योचि सम्भिम्मगामि चविपर्य्योचि कचित् । चविमत्तिपाठ स्थान चविसीमात् चवि सएमचविच सपासो । भत्ताि । भाम्मात शरीरचविकामेति । चविपमत्तिपाठागतरे । चवि प्रामा जातेत्वर्थं गभसामामिति सवक्समन्स्मनोय । १४ । दोसुखेत्यादि । चयं मुमरेत गोणितमातपग्ताभ्यां सम्मोयेपागते तथा । १५ । कायठिदत्ति । कायेनिकाये पृथिव्यादिसामान्यरूपेण स्थिति कायस्थिति भसस्योत्सर्पि एयादिका भवेभवरूपावा स्थिति भवस्थिति भवकायस्तस्य । १६ । दोषहंति । यथाग्ग सुमयेपामित्यर्थं । कायस्थिति समाष्टभवप्रहरूपा पृथिव्यादी नामपि माश्रित नयामेगतभावच्छेद पमोमम्भवच्छेदपरत्वात् सुभावा मिति । १७ । दोष्हेत्यादि । देवनारकाणां भवस्थितिरेव देवादे पुनर्देवादित्वे ना गुत्पत्तेरिति । १८ । दुविहेत्यादि । महाकाल स्थानमान मायु'धर्मविशेषो ह्यायुर्भवात्वयेपि कायान्तराणुमामीत्वर्थो यथामनुष्यायु वक्षापिभवा

रसाचेव पचेदियतिरिस्कजोणियाचेव दुविहाठिई प० त० कायठिईचेव नवठिईचेव दोरहकायाठिई प० त० मणुस्साणचेव पचेंदियतिरिस्कजोणियाणचेव दोरहनयठिइ प० त० देवाणचेव नेरइयाणचेव दुविहे

फानी संग्राम करें एम मगवती सूभर्मा कहियोछे । एम मारणांतिक समुद्घात छे । एम कालमरणनी भवस्था छे । येनें चविपर्यं सभिम घनछे से करेछे । मनुष्यमें तथा पचेंद्रिय तिर्यच जलचर थलचर खचरमें योग । ये जीव शुक्र पितानों वीर्य सोणित मातानों रुधिर तेणेंकरी उपजेछे तेज रहेछे । मनुष्य तथा पचेंद्रिय तिर्यंच । जीवनी बेमकारें थितिकही तेकहेछे । पृथिवीमसुख च कायमां रहियूं । तथा भवनोंथिर्य रहियूं । येजीवनें का यथिति छे। मनुष्य मरीनें सात माठ मव करी मनुष्य माय एह काय थिति । पचेंद्रिय तिर्यचने । ये जीयमे भवस्थिति कही एण मवकरें से कहे छे

ममएयभागच्चमपि १ समाए भवमार्श्ववासमुव्वर्यती गुवत्तवइति तथा भवमधानमायु भैवायु मैवाव्वसेवयच्चलेव मवान्तरमणुयाति भवादेवायु रिति ॥ २ ॥ दोवहमित्यादि ॥ सुगमं भावितामेव ॥ दुविहेकम्मेत्यादि ॥ मदेशाएव पुद्गलाएव यत्रवेद्यते न मवानहोरस स्तम्पदेशमात्रतया वेद्यते मदेशकम यत्तु यनुभवो मवामहरसोवेद्यते तदनुभावतो वेद्यकर्नों गुभावकर्मेति ॥ २२ ॥ दोइत्यादि ॥ यथावदमायु यथायु पालयन्त्यनुभव न्ति गोपक्रमते तदिदितियावदिति देवानेरइयाविय भसवासाउयातिरियमणुया उत्तमपुरिसायतहा चरमसरीरानिरुवक्कमत्ति ॥ १ ॥ तयनेसव्वपि चेव मारकयो रैव भयनविद्याभवानुरोधादिति ॥ २३ ॥ दोवहमित्यादि ॥ संवर्त्तनमपवर्त्तनं संवर्त्त सपवर्त्तवाउपक्रमरकर्थं भायुष संवर्तकमायु सव

श्चाउए प० त० श्चद्धाउएचेव जवाउएचेव दोरहश्चद्धाउए प० स० मणुस्साणचेव पचेंदियतिरिक्खजोणियाण चेव दोरहजवाउए प० त० देवाणचेव नेरइयाणचेव दुविहेकम्मे प० त० पदेसकम्मेचेव श्चणुजावकम्मेचेव दोश्रहाउयपालेंइ तजहा देवच्चेव नेरइयच्चेव दोरहश्चाउयसंवट्टए प० त० मणुस्साणचेव पचेंदियतिरिक्ख

देवताने वर्ने नारकीने नारकी मरी वली नारकी थाय। वे प्रकारें आयु कह्यो ते कहे छे। काल प्रधान आयु बीजो जवप्रधान आयु। वे जीवनो कालप्रधान आउखो कह्यो ते कहे छे। मनुष्यनो। तथा पचेंद्रिय तिर्यंचनो। वे जीवनो जवप्रधान आउखो कह्यो ते कहेछे। देवतानो। तथा नारकीनो। वे प्रकारें कर्मछे ते कहेछे। प्रदेशकर्म पुद्गलरूपीज वंदें। बीजो अनुभावकर्म कर्मनो रस भोगवीयें। वे जीव जेतलो आउखो पा म्योछे तेतलो भोगवे ते कहेछे। देवता पूरो आउखो पाली चवे। नारकी पणि पूरो आउखो भोगवे। वे जीवनो संवर्तक आउखो छे ते कहेछे

गच्छति २४ पर्यायविचारान्नेर नियतयेवाचितत्वात् येषव्यपदेशान् पुरुषपर्यायानभिधित्सु । जंबूद्दीवेत्यादिना । येनमवरयभाह सुगमंचतत् नवरमि
ए जम्बूद्वीपप्रकरण परिपूर्णमण्डलाकारं जम्बूद्वीपं तमध्येमेरु उत्तरदक्षिणत क्रमेणच वर्षाविस्थापयित्वा तथथा भरतहैमवतैरण्यवतहरिवर्षरम्यकमहाविदेहेति रम्यकमेरवतय एरवतवेत्रवासादिति ॥ २ ॥ तथा वर्षान्तरेषु वर्षधरपर्वतान् स्थापयित्वा तथथा हिमवंत १ महाहिमवंत २ पम्मरामि
सठनोलवंताय ४ रूप्पो ५ सिहरो ६ एए वासहरगिरीसुणेयव्वति ॥ १ ॥ सवमेवयोक्तमिति मंदरस्य मेरोरुत्तरायां दक्षिणायां उत्तरदक्षि
णे तया दक्षिणोत्तरयारिति वाक्ये उत्तरदक्षिणेनेति व्यत्ययेनमत्ययविधानादिति हेवयेंछेवे मणते विने समतुल्यमन्य सधमायं अत्यंतसमतुल्ये व
इसमतुल्ये प्रमाणत पञ्जिपिचविंशीयक्षयचे नगनगरनद्यादिकृतविशेषरहिती प्रमाणाल्पे प्रचसर्पिण्यादिकृतामुरादिभावभेदयत्त्वित्त विसदृशप्रमतीव्याव
मध्यासे परस्पर नातिवर्तते इतरेतर नसङ्घचेल इत्यथ कोरिट्याह आयामेनदैर्घ्येण विष्कंभेण पृथुत्वेन संस्थानेनारोपितज्याधनुराकारेण परिणाहेन परि
धिनेति इत्थ हरेवयन्नाव चातृदति अथवा बहुसमतुल्ये आयामत तथाहि भरतपर्यंते मेवौ चौदसयसहस्साई सयाइ पत्तारिएगसयराइ भरहहुत्त

जोणियाणचेव जम्बुद्दीवेद्दीवे मंदरस्सपव्वयस्स उत्तरदाहिणेण दोवासा प० तं० बहुसमतुल्ला अविसेसम

मनुष्यमो । तथा पंचेंद्रिय तिर्यंचमो एकेंद्रियादिक पिण एहमाज जाण्या जलचर थलचर खचर सवनों । परिपूर्ण चंद्रमंडलाकार जम्बूद्वीप मेरुपर्वत
एक सारा योजन ऊंचो तेहनें उत्तरपासे तथा दक्षिणपासे बे वर्ष क्षेत्र छे ते कहेछे । प्रमाणथी बहुत सम बराबर सरिखा छे विशेष अधिकाई नथी
पवत नगर नदीमों विशेष नथी एकएकथी वधता नथी आरा मनुष्यमां भावेंकरी सांवणा पिहुलपणा संठाण आकार चढाव्या धनुषने आकार

रसीया हृषवताद्विवाविंषि ॥ १ ॥ वसाय योजनस्यैकोनविंशतिभागो इति । १४४७१ । ६ । १९ । ऐरवतेप्येवं तथा भवितव्यं विष्कंभत सप्तादि पंचसप्तोत्तरी हृषवतादिमहाहिमवदवर्षांति । ४२१ । ६ । १९ । भवमेव ऐरवतस्यापीति भमागासे ससामत भमोन्यं नातिवर्तंते परिवाहत परिवा इव व्यावृत्त पश्चार्धमात्रं तमव्याममात्रमुत्तमगुणपमात्रं स्थिरं षोडससहस्राणि पंचैवसया षड्त्रीसाषा एगारसयकलाओ सपडिपुण्णउत्तरदक्ष ॥ १ ॥ ॥ १४५२८ ॥ । ११ । १९ । यथा भरतस्यैरवतस्यापि तथैवेति एतावितामिवैतामियदानि भ्रयाकलाय मपुनरुक्तानि उक्तक्ष भमुवादादुरसीया भयावयि मियोमहेन्दसूयासु ऐरवतंसममविकमव मवनाभरवेष्पुनरुक्तमिति ॥ १ ॥ तथवा ॥ भरहेयैवेत्यादि ॥ उत्तरदाहिवेपंति ॥ एतस्यपाठस्य यथासंख्यत्वाया यवथा यथासत्तिन्यायावयवाय जंबूद्वीपस्थदक्षिणेमामे भरत माहिमवत स्पवेयोत्तरे मामे ऐरवत शिखरिव परतइति एवमिति भरतैरवतवत् एते नामिसापेन जंबूद्वीपेमंदरस्येत्यादिना उपारवेनापरसूत्रस्य वाच्य तयोपार्श्वविशेष ॥ हेमवएत्यादि ॥ तत्र हेमवतसविशत हिमवन्महाहिमवतोर्मध्ये

णाणत्ता अन्नमन्नणाइवहंति आयामविक्खंभसंठाणपरिणाहेण त० भरहेचेव एरवएचेव एवमेएणअहिलावे णनेयव्वं हेमवएचेव एरण्णवएचेव २ हरिवासेचेव रम्मयवासेचेव जंबुद्दीवेदीवे मंदरस्सपव्वयस्स पुरच्छि

तथा परिधि इत्यादिकथी सरिखाछे । ते कहेछे । एक भरतक्षेत्र पांचसे छव्वीस योजन छ कलाओ विस्तारें योजननो एकवीसमो भाग ते कला कहिये । बीजो एरवत क्षेत्र विस्तारथी भरत क्षेत्रथी बराबरि । एहरीते मान प्रमाण भाव सर्व एमज जाणिवा । तिम वली बे बे क्षेत्र सरिखा छे हिमवंत क्षेत्र दक्षिणदिशि हिमवान महाहिमवानने विचालें । हैरण्यवत क्षेत्र उत्तरदिशि रुक्मीपर्वत शिखरी पर्वतने विचालें हिमवत कर्ने हैरण्य

हेरण्यवतमुत्तरत रुक्मिशिखरिणोरत हरिवर्षं दक्षिणतोमहाहिमवन्निषधयोरत रम्यकवर्षं चोत्तरतो नीलरुक्मिणोरन्तरिति ॥ जम्बूद्वीपेत्यादि ॥ पश्चिमपश्चिमेन परस्तात् पूर्वस्यांदिशि यथाक्रमं पूर्वयासीविदेहश्चेतिपूर्वविदेह एव अपरविदेहइति एतेषामायामादिमत्वा गतादवमेयदिति ॥ जम्बूद्वीपे ॥ दक्षिणेनदेवकुरवउत्तरेणउत्तरकुरव सप्ताख्या विद्युत्प्रभसौमनसाभिधानवक्षस्कारपर्वताभ्यां गजदन्ताकाराभ्यां मा हता इतरेतु मध्यमादनमाल्यवद्भ्यामाहता उभवेषामी अर्द्धचन्द्राकारा दक्षिणोत्तरतोविस्तृता सहस्रमानमिदं अष्टसयानायामा एकादश[illegible]दोकलाभोव विकुभावकुरुम तेषांसम[illegible]जोवाभिं ॥ १ ॥ पूर्वापरायामायैता इति ॥ महस्रमहासयत्ति ॥ महान्तो गुरु षतोति मर्च्चतं महसातिमहा महागोयोजनाना मायामायामो महतिमहालयो महातिमहालयो वा समयमापयाना महांताविस्तार महाद्रुमो ममस्ततमा भावामो दैर्घ्यं विष्कम्भो विस्तार उच्चत्व मुच्छ्रय उद्वे

मपच्चत्थिमेण दोखित्ता प० त० वहुसमतुल्ला अविसेसाजाव पुव्वविदेहेचेव अवरविदेहेचेव २ जम्बूमंदरस्स पव्वयस्स उत्तरदाहिणेणं दोकुराओ प० त० वहुसमतुल्ला अविसेसाजाव देवकुराचेव उत्तरकुराचेव तत्थण

धत मरिखाछे । हरिवर्ष दक्षिणदिशि महाहिमवान निषधने विचाले । रम्यक वर्ष उत्तरदिशि नीलपर्वत रुकमी पर्वतने विचाले हरिवर्ष अने रम्य कवर्ष सरिखाछे । जम्बूद्वीप तेहना पूरुसाने आकारे तहमा मेरु पर्वतथी पूरवदिशि अने पश्चिमदिशि ये क्षेत्र कहिया ते कहेछे । बहु सम बरा बरि प्रमाणथी विस्तारथी नगर पर्वत नदी प्रमुखी विशेषमयी । आय एक पूर्व विदेह । पश्चिम विदेह । जंबूद्वीपमां मेरुथी उत्तरदिशि तथा द क्षिणदिशि ये कुरु कहिया ते कहेछे । मान प्रमाण थी वहुसम बराबर आय दक्षिणदिशि देवकुरु । उत्तरदिशि उत्तरकुरु । तिहां देवकुरु उत्तरकुरुमां

षोभुविमर्षेग समानमाकार परिवाह परिधिरिति तथानयो प्रमाणं रत्नमयापुष्कपक्षा विसमोपष्णप्रष्पस ओवषमुख्येशो संयोदोजोयणविको ॥ १॥ दाडीमाविष्कियो विडियाकओयवाविर्यभूए वाउद्दिसिपिसाया पुष्विसेतस्सासमि ॥ २॥ अवर्षकोसपमार्य समविक्कंतत्यवाठिससुरस्स तिसुपासाया मालेसुतेसुमीहासणारम्पाति ॥ १॥ माक्षयामप्पेवमेति कूटाकारा शिपराकारा यास्यकोकूटाख्यकोतिसंज्ञा सुष्टुदर्शनमस्या इति सुदर्शनेतोयमपिसप्रेति । तत्तिति । तयोमहानुमया महेत्वादि महतोवइ रायासपरिवाररत्नादिका वयाश्चो महर्षिको यावतृयणात् महष्णुह्या महाप्रभामा महायसा महायथा । महासोक्खेति । तत्र द्युति शरीराभरणदीप्ति रमुभागो ऽचिंत्यामति वैक्रियकरणादिका यश स्याति वंदसामर्थ्य शरीरस्य सोक्ष

दोमहइमहालया महादुमा प० त० यज्ञसमउल्ला अविसेसमणाणत्ता अन्नमन्नणाइवहति आयामविरकंभुच्चत्तोव्वेहसठाणपरिणाहेण तजहा कूडसामलीचेव जयूचेव सुदसणा तत्यण दोदेवामहिड्ढिया जाव महासोक्खा पलिउंवमठिइया परिवसति त० गरुलेचेय १ वेणुदेवे अणाठिएचेव २ जथूद्दीवाहिवई जयूमंदरस्सप

महा मोटा तमवत रहवा वे वृक्ष कहिया । माग प्रमाणयी सम बरावरि सोवणव विस्तार संचाई ऊंचैपं उडापण आकार परिधियी सरिखा माहोमाहि एकबीएक वषता नथी सांया पिहुला ऊंचा ऊंडा आकार परिधि यो सरिखाछे रत्नमयछे एहनो मानादिक गुण्यांतर थी जाणिवो से कहे छे । एक क्षिउराकारें सामली वृक्ष । बीजो जवूवक्ष सुदसम नामा जोइवा योग्य । तिहां दो देवता मोटी रिद्धिना धणी जाव मोटा सुखना धणी एक पल्योपमना आऊखाना धणी रहेछे । सुपर्णकुमार जातिना । एक वणुदेव । बीजो अणाठिय । जयूद्वीपना अधिष्ठाता स्वामीछे ।

मामन्दामर्श मवेमकादतिशवित्पाठ मवेमो मवेग्नरावित्याख्या मवोस्तो मवेग्यास्याविति पल्योपमंयावत् स्थिति रायुर्वयोस्तो तयागरव सुपयकुमा रजातोय वेणुदेवनामा । पचाठिमोत्ति माया । जंबूरत्यादि । मर्यवेनविशेषं धारयत व्यवस्थापयत इति मर्यधरौ । तुल्लत्ति । मवदपेचया लघुहिम वान् चुल्लहिमवान् भरतानन्तर गिरिरो पुनस्र त्मरमेरवसं तोय पूर्वापरतो लवणसमुद्रावगाढा वायामतय चउवीससहस्साइं नवयसयत्तीयवावयत्तीस चुल्लहिमवंतजीवा वायामेणंपन्नत्ता । १ । २४९३२ । ११ । १८ । एवंगिरिदरिवोपि तथा भरतद्विगुणविस्तारो योजनशतोच्छ्रयो पंचविंशतियोजनावगाढो वायतचतुरस्रसंस्थानसंस्थितो परिचायमु तयो पत्रवासोससहस्सा सयमेगपयवयवारसकलाओ महवतापहिमवत परिरओसिहरिस्सावित्ति । १ । ५३१ ८ । १२ । १८ । एवमिति यथा हिमवच्छिखरिणौ । जंबूदोवेत्यादिना । मिलापेनोक्तावेव महाहिमवदादयोपोति तचमहाहिमवान् सत्वपे चया मच दक्षिणत रम्योत्तरत एवमेव निषधनीलवन्तौ नवरमेतेषा मायामादयो विशेषत वेचसमासादवसेया विविधु तत्ताभिरेवोच्यते प

द्वयस्स उत्तरदाहिणेण दोवासहरपव्वया प० त० बहुसमतुल्ला अयिसेसमणाणत्ता अन्नमन्नणाइवट्टति आयामविक्खंभुच्चत्तोव्वेहसंठाणपरिणाहेण तजहा चुल्लहिमवंतचेव सिहरीचेव एवमहाहिमवंतचेव रुप्पीचे

जंबूद्वीपे मध्यो उत्तरदिशिं दक्षिणदिशि ये वर्षधर पर्वत वे क्षेत्रनी मर्यादा करें ते वर्षधर । घणूं सरिखा वे विशेष नथी भेद नथी एकएकथी वधता नथी माठा नथी लायपण पिहुलपण ऊंचपण ऊंडपण आकार परिधि एकएकथी सरीखा वे । नान्हो हिमवंत पर्वत सौ योजन ऊंचो । भरत तेहथी आगलि शिखरीपर्वत ऐरवतथी उरो । एम महाहिमवंत पर्वत मेरुथी आपासें । रूपीपर्वत मेरुथी पैलेंपासें । एम निषध आपासें

नसणवणीसे कमवलाभिग्रहधरवपास वससमवायमणिया मारसमवसाघोहिमवंते ॥ १ ॥ हेमवपर्वयविया एगवीससयापोपचयवतायो दसविमा पावसया एसणवतापोमवाहिमवे ॥ २ ॥ हरिवासेडमवोसर सुवमोरसपावलायपवाय सोससवसपभाय पावावाघोवतानिसठे ॥ ३ ॥ तेतोसंघसव पा वणसवावोसवावदुवसोवा पउरोववपासवसा महाविदेहस्सविक्खमो ॥ ४ ॥ बोयपसवसुविसा ववगमसपासिवरिपुवविमवंवा रप्पिमवाविम पंता दुसवपारूपववगमपा १ चत्तारिणोमवसए उभिहाभिसुढमोववताय मिसवोतवविम्नमयो पेरुविमोमोसपंतगिरो ॥ ६ ॥ उक्खेरपउमागो यो गामोपासमोमगवरार्य महपरिवोठतिमुवो मिपूवहमायमुतोत्ति ॥ ७ ॥ चवरसपरिविए पामामविक्खभविगृपाति ॥ जमूद्वादिदोवद्वेसडुपमवत्ति ॥ दोहतो पस्मावारत्वात् वेताच्चो मामत तोपतो पथ्यतोवेति विग्रह सवस्मपरिमाचो रयतमयो तम हैमवतेयम्सापातो घत्तरतसुएरस्मपतेविचटापातो

घ एग्रणिसढेचेव णीलवतेचेव जघूमदरस्सपद्मयस्स उत्तरदाहिणेणहेमवएरन्नवएसुवासेसु दोवदृवेयद्दुपव्वया पन्नत्ता तंजहा वञ्जसमतुल्ला अविसेसमणाणत्ता जायसद्दायईचेव वियडावईचेव तत्यण दोदेवामहिड्ढिया जायपलिओवमठिइया परिवसंति तंजहा साइचेव पत्तासेचेय जघूमदरस्सउत्तरदाहिणेण हरिवासरम्मएसु

नीलवत पैलेपार्से । जबूद्वीपना मेरुथी उत्तर दक्षिणदिसें हिमवतचेत्र ऐरण्यवत क्षेत्रमेविर्षे बे वृत्त वाटला वैताढ्य पर्वत छे । ते कहेछे । सम ने आकारें घणूं सरिखा विशेष भेद नथी शब्दापाती हैमवतमां । उत्तरें विकटापाती ऐरण्यवतमां । तिहां बे देवता मोटी रिद्धिना धणी प ल्योपम आउखाना धणी रहेछे । तिहां तेहना भवनछे ते कहेछे । स्वातीनामे प्रभासनामे । जंबूद्वीपना मेरुथी दक्षिणदिशि हरिवर्ष रम्यकवर्षे

ति । संभूत्यादि । पुव्वावरपा
ते । तत्थत्ति । तयाउत्तरवेताढ्यमो क्रमेण स्वातिप्रभासो देवो वसत स्त्रावन भावादिति एवं हरिवर्षमभ्यापातोक्रमेणेवेति । संभूत्यादि । पुव्वावरपा
त्ति । पाश्चात्यस्य प्रत्येकं तस्मात् पूर्वपार्श्वे मपरपार्श्वेष विभूते । एत्वत्ति । मघापकेनोपदर्शमानेन क्रमेण सोमनसविद्युत्प्रभोमप्रभो विमूलावध
अभद्रमो माल्योनियो पर्वसमाने उवतो यतो निषधसमीपे चतु गतोछितो मेरुसमोपेष पचगतो छतो इति भावष वासधरगिरीतेषं चंद्रार्धसंस्थानोवपस
ार वत्तारिसवम्भिा भागाकाआयपाम्भसर्य । १ । संघमएउछिवहा चोगाढापंचगाव्यसमाह संगुलपसक्रमाणो विक्खिमामदरतेषं । २ । मस्कारप
प्रयाप पायामातोमजायपसवग्गा चोविमभायमवक्खिा तपमला यापेपवनसंति । २ । मवनवरसि । घपकूटमरं चंद्रस्थापार्धसंस्थ स्वस यत्संस्थानमभा
ारा गजदन्ताकृतिरित्यर्थ तेनसंस्थिता उपाद्धचंद्रस्थानसंस्थितो मर्धचंद्रसंस्थानसंस्थिताविति प्रपिपाठ तत्रार्धमध्येन विभागमात्र विवक्षते न तु स

थासेसु दोचट्ठेयड्ढपइुया पन्नत्ता तजहा यञ्जासमतुल्लाजाव गधावईचेव मालवतपरियाएचेव तत्थणदोदेवा
महड्डियाचेव पलिउवमठिइया परिवसंति तजहा अरुणेचेव पउमेचेव जबूमदरस्सदाहिणेण देवकुराएपुव्वा
वरपासे एत्थण आसखधगसरिसा अधद्धचदसठाणसठिया दोवक्खारपव्वया पन्नत्ता तजहा यञ्जासमतुल्लाजाव

तो मेरुथी ये वृत्त यावला वैताढ्यखे ते कहेछे । पहलू सम बराबर छे । गंधापाती हरिवर्षमां । मालवत पर्याय तिहा ये देवता मोटी रिद्धिना
धणी पल्योपम आउखाना धणी वसे छे ते कहे छे । अरुणनामा पद्मनाम । जंबूद्वीपना मेरुथी दक्षिणदिशि देवकुरुथी पूर्वने पासें पश्चिमने पासें ।
इहा घोडाना खंध सरिखा आगलि मोला छेहलें ऊंचा निषधपासें चारसे योजन ऊंचो छे मेरुपासें पांचसे योजन अर्धचंद्राकार संस्थान सं

समविभागतेति ताभ्यां पाहयश्चाकारा देवकुरव उक्ता अतएव वखाराकारत्वेनकारिणो पर्वतौ वखारपर्वताविति ॥ जंबूइत्यादि ॥ तथैव नवरं मंद रपार्श्वे मघमादन पूर्वपार्श्वे माल्यवानिति ॥ दोदीहवेयड्डत्ति ॥ इहवैताढ्यस्यपंचदेशावर्धोर्धपदत्वं वैताढ्यौ विजयाद्धौवेति संस्कार तौच भरतैरवतयो मध्यभागे पूर्वापरतः लवणादधिं स्पृष्टवन्तौ पञ्चविंशतियोजनोच्छ्रितौ तत्पादावगाढौ पंचाशद्विस्तृतौ आयतसंस्थितौ सर्वराजता सुभयतो वेदि कांच नमंडमाद्याविति ॥ भाइच ॥ पणवीसउच्चिद्धो पन्नासजोयणाविविच्छिन्नो वेयड्ढोरययमओ भरहक्खेत्तस्समज्झम्मिति ॥ १ ॥ भारहेपमित्यादि ॥ वैताढ्ये

सोमणसेचेव विज्जुप्पभेचेय जंबूमंदरस्सउत्तरेण उत्तरकुराएपुव्वायरेपासे एत्थणदुवेवक्खारपव्वयाआससरिसाअस्सखंधसरिसावद्धरूपद्द सठाणसठिया दोवक्खारपव्वया प० तजहा यहुसमतुल्लाजाय गधमायणेचेय मालवतेचेय जंबूमदरस्सपव्वयस्स उत्तरदाहिणेण दोदीहवेयड्ढपव्वया प० तजहा यहुसमतुल्ला जाव भारहेचेय दीहवेयड्ढे ऐरायएचेय दीहवेयड्ढे भारहेणदीहवेयड्ढेदोगुहाउ प० त० यहुसमतुल्लाउ अविसेसमणाणत्ताउ अन्नमन्नणाइवट्टति

स्थित ये वक्षस्कार पर्वतछे । देवकुरुमा भद्रभाकार कीधो तेमाटे बे वक्षस्कार पर्वत कह्या ते कहेछे । घणूं सरिखा जाव सोमनस बीजो विद्यु त्प्रभ । जंबूद्वीपना मेरुथी उत्तरदिशि उत्तरकुरुक्षेत्रने पूर्वनेपासे तथा उत्तरने पासें इहां अश्वनास्कंध सरिखा अर्धचंद्राकार गधवत्ताकार बे वक्षस्कार पर्वत छे ते कहेछे घणूं जाव पूर्ववत् । पश्चिमने पासें गंधमादन नाम पूर्वने पासें मालवत । जंबूद्वीपथी मेरुने उत्तर दक्षिण पासे बे दीर्घ लांबा वैताढ्य पर्वत छे ते कहे छे । घणूं सम सरिखा छे । भरत क्षेत्रमा एक दीर्घ वैताढ्य पर्वे पूर्व लवणसमुद्र फरस्यो छे पचीस योजन ऊंचो बीजो

चपरत दासिस्रागुहागिरिविस्तारायामा हादशयोजनविस्तारा चष्टयोजनोच्छ्रया आयतचतुरस्रसंस्थाना विजयद्वारप्रमाणद्वारा वज्रमयकपाटपिहितावष्ट मध्येविभागनगराभ्यां त्रियोजनविस्ताराभ्यां सुषमनिमग्नजलाभिधानाभ्यां नदीभ्यां युक्ता तद्यथा खण्डप्रपातगुहेति ॥ तत्थणति ॥ तयो स्वामि याभ्यां गुहायां कृतमालक इतरस्यां नृत्तमालकइति ॥ एवमहत्यादि ॥ तथैव जम्बूद्वीपादि हिमवद्वर्षधरपर्वते क्षुद्रहिमवत्कूटानि सिद्धायतन १ क्षुद्रहिमव

श्रायामविक्खंभुच्चत्तसंठाणपरिणाहेणं तंजहा तिमिसगुहाचेव खंडगप्पवायगुहाचेव तत्थणं दोदेवामहड्डिया जाव पलिउवमठिइया परिवसंति तंजहा कयमालएचेव णट्टमालएचेव ऐरावएणंदोहवेयड्ढे दोगुहा प० तंजहा जाव कयमालएचेव णट्टमालएचेव जंबूमंदरस्सपव्वयस्स दाहिणेणं चुल्लहिमवंते वासहरपव्वए दोकूडा पन्नत्ता तंजहा बहुसमतुल्ला जाव विक्खंभुच्चत्तसंठाणपरिणाहेणं तंजहा चुल्लहिमवंतकूडेचेव वेसमणकूडेचेव

दीर्घ वैताढ्य पर्वतमां । भरतमां दीर्घ वैताढ्यमां बे गुफाओ छे ते कहेछे । घणी समी सरिखी एकएकथी विशेष भेद नथी । माहोमाही एकएक थी घणती नथी लांबपणे पिहुलपणे ऊंचपणे एहथी सरिखी छे ते कहेछे । एक तिमिस्रागुफा बीजी खंडप्रपात गुफा आठयोजन ऊंची पचासयोजन लांबी चउमय कपाट मध्यभागें बेयोजन आंतरे एकएकने तीन योजन विस्तारें एहवी उमग्गा निमग्गा नामें बे नदीछे । तिहां ब देवता मोटी रिद्धिना धणी एक पल्योपमना आउखामां घणो एहवा वसे छे । तिमिस्रा गुफानो स्वामी कृतमाल खंडप्रपातनो स्वामी नृत्यमाल । ऐरव तक्षेत्रमां पण दीर्घवैताढ्य तेहमां पण बेगुफाछे । ते कहेछे । आय कृतमाल नाटमाल । जंबूद्वीपे मेरुथी दक्षिणे लघुहिमवंत वर्षधर पर्वतना

ग २ भरत ३ इला ४ गङ्गा ५ श्री ६ रोहितांशा ७ सिन्धु ८ सुरा ९ हैमवत १ वैश्रमण ११ कूटाभिधानानि भवन्ति पूर्वदिशि सिद्धायतनकूटमत्र भूमेरा परतो न्यानि भवन्त्युभयानि स्वनामदेवतास्थानानि पञ्चयोजनशतोच्चयानि तावन्त्येव मूले विस्तृतानि उपरि तदर्धविस्तृतानि प्राच्ये सिद्धायतनं पञ्चा शद्योजनायाममर्धविष्कम्भं षटत्रिंशदुच्चं अष्टयोजनायामैश्चतुर्योजनविष्कम्भप्रवेशै त्रिभिर्द्वारै रुपेतं जिनप्रतिमाष्टोत्तरशतसमन्वित शेषेषु प्रासादा माध्यपीठिकाश्चतोषा प्रत्येकविमूला त्रयिकामिदेवतासिंहासनमलंकृति इयत्तु प्रवृत्तनगनायकनिवासभूतत्वा देवनिवास भूतानामेषां मध्ये प्राच्य त्वाप हिमवत्कूट मध्ये सर्वाभिमत्वाप वैश्रमणकूटमिति विश्रामकानुरोधेनेति भाष्य कल्पद्रदेसमाप्पर्य कल्पद्विषयतिनिरसिसार उक्तमकमशुता १ पाठान्तरसपोनिउत्तारति ॥ १ ॥ कूठमंधववार्य वेयड्ढ ९ मालवंते ८ विज्जुपहे ८ निसढ ९ नीलवंते ९ नवनवकूडाभिधिया एकारसिहरि ११ हिमवंते ११ ॥ १ ॥ रुप्पि ८ महाहिमवंते ८ सोमणस ८ गंधमायणगेसु ७ पहुः सत्तसत्तय वक्खारगिरीसुचत्तारिति ॥ २ ॥ जंबूद्वादि ॥ महा हिमवति घष्टोकूटानि सिद्ध १ महाहिमवत् २ हैमवत ३ रोहिता ४ ह्री ५ हरिकान्ता ६ हरि ७ वैडूर्यकूटाभिधानानि द्वयमप्येष पारप्पसुत्तमेव

जम्बूमन्दरदाहिणेण महाहिमवते वासहरपव्वए दोकूडा पन्नत्ता तंजहा यज्ञसमतुल्ला जाव महाहिमवत कूडे

येकूडे । ते कहेछे यतुसम जाव विष्कम्भपण ऊंचपण सठाण परिधियी सरिखा छे । ते कहेछे लघुहिमवत कूट । तथा बीजो वैश्रमण कूट सिद्ध प्रतिमा प्रासाद शाश्वताछे । जम्बूद्वीपें मेरुथी दक्षिण दिशि महाहिमवत वर्षधर पर्वतछे । तेहना बे वर्ष कहिये क्षेत्र तेहनी मर्यादा करे ते वर्ष धर कहिये । कूट ते शिखर ते कहेछे । यतुसम जाव एक महाहिमवत कूट । तथा बीजो वैरुलिय नामा कूट एम निषधवर्षधर पर्वतना बे कूटछे ते

इत्यादि एवंप्रकारात् जंबूद्वीपादिरभिलापोऽस्य निषधवर्षधरपर्वतेऽपि सिद्ध १ निषध २ हरिवर्ष ३ प्राग्विदेह ४ ह्री ५ धृति ६ ...
ह ८ रुचकाख्यानि ८ स्वनामदेवतानि नवकूटानि इहापि द्वितीयाख्ययोर्ग्रंथ प्रान्तात् व्याख्येयमिति । जंबूद्वीपादि । नीलवर्षधरपर्वतेऽपि सिद्ध १ नील
२ पूर्वविदेह ३ सीता ४ कीर्ति ५ नारिकान्ता ६ अपरविदेह ७ रम्यक ८ उपदर्शनाख्यानि नवकूटानि इहापि द्वितीयाख्ययोर्ग्रंथ प्रान्तादिति । एवमित्या
दि । रुक्मिवर्षधरे सिद्ध १ रुक्मि २ रम्यक ३ नरकान्ता ४ बुद्धि ५ रूप्यकूला ६ हैरण्यवत ७ मणिकांचनकूटाख्यानि अष्टकूटानि यथाभिधानं प्रान्तादिति
। एवमित्यादि । शिखरिणि वर्षधरे सिद्ध १ शिखरि २ हैरण्यवत ३ सुरादेवी ४ रक्ता ५ लक्ष्मी ६ सुवर्णकूला ७ रक्तोदा ८ गन्धापाति ९ ऐरवत १
तिगिच्छिकूटाख्यानि एकादशकूटानि इहापि यथोपपन्नतयैवेति । जंबूद्वीपादि । इह च हिमवदादिषु षट्सु वर्षधरेषु क्रमेणैते पद्मादयः षड्हृदाः

चेव वेरुलियकूडेचेव एवंनिसढेवासहरपव्वए दोकूडा प० तंजहा वइरसमतुल्ला जाव निसढकूडेचेव रुयग
कूडेचेव जंबूमंदरस्सउत्तरेण नीलवंतेवासहरपव्वए दोकूडा प० तंजहा वइरसमतुल्ला जाव नीलवंतकूडेचेव
उवदंसणकूडेचेव एवंरुप्पिम्मिवासहरपव्वए दोकूडा पन्नत्ता तंजहा वइरसमतुल्ला जाव तंजहा रुप्पिकूडेचेव

कह्यां छे । वइरसम जाव निषधकूट बने बीजो रुचककूट । जंबूद्वीपे मेरुथी उत्तरदिशि नीलवंत वर्षधरपर्यंते बेकूट तेकहेछ । वइरसम जाव नीलवंत
कूट । उपदर्शनकूट । एम रूपीवर्षधर पर्वतना बेकूट ते कहेछे । वइरसम जाव रूपीकूट तथा बीजो मणिकंचनकूट । एम शिखरी वर्षधर पर्व
तना बेकूट ते कहेछे । वइरसम जाव शिखरीकूट । तिगिच्छिकूट । जंबूद्वीपना मेरुथी उत्तर दक्षिणें लघुहिमवंत प्रमुखें शिखरी उत्तरें एह बे प

तथा पउमेव १ महापउमे २ तिगिंछि ३ केसरि ४ दहेचेव वरएमहापुंडरीए ५ पुंडरिए ६ चेवदहापो ॥१॥ हिमवतउपरि बहुमध्यभागे पद्म दहः पद्मपरिगत पौंडरीक सेव पूर्वापरायतो सहस्रयोजनायतविस्तृतो चतुष्कोणो दशयोजनावगाढो रजतकूलोवज्रमयपाषाणो तपनीयतलो सुवर्ण मध्यरजतमणिवालुको चतुष्यमणिसोपानो सभावतारो तोरणध्वजच्छत्रादिविभूषितो नीलोत्पलपुंडरीकादियितो विविधभंगिमत्स्यविरचितरचो पट पदपटलोपभोग्यादिति । तत्कमति । तयामहाउदगाउदेवते परिवसत पद्मद्रहे यो पौष्करीये कमो तेष भवनपतिनिकायाभ्यंतरभूते पल्योपमस्थि तिकत्वात् व्यंतरदेवीनांहि पल्योपमार्धमेवायु रुत्कर्षतोभवति भवनपतिदेवीनां तूत्कर्षतो अर्धपंचपल्योपमान्यायुर्भवतीति भावप महापद्मपंचम प

मणिकंचणकूडेचेव एवसिहरिम्मिवियासहरपव्वए दोकूडा पन्नत्ता बहुसमतुल्ला तंजहा सिहरिकूडेचेव ति गिच्छिकूडेचेव जंबूमंदरस्सउत्तरदाहिणेणं चुल्लहिमवंतसिहरीसु वासहरपव्वएसु दोमहद्दहा पन्नत्ता बहुस मतुल्लाअविसेसमणाणत्ताअन्नमन्ननाइवट्टंति आयामविक्खंभउव्वेहसंठाणपरिणाहेणं तंजहा पउमद्दहेचेव पु ण्डरीयद्दहेचेव तत्थणंदोदेवयाओ महिड्डियाओ जाव पलिओवमट्ठिइयाओ परिवसंति तं० सिरीचेव लच्छीचेव

यतने ऊपरि ये मोटा द्रह कहिया ते कहै छे । बहुसम सरिखा किस्यो विशेष नथी एक एकथी वधतो नथी घटतो नथी । लांबपण पिहुलपण ऊंडापण ऊंचपण संठाण परिधि थी सरिखा छे । ते कहै छे । पदमद्रह । तथा पुंडरीकद्रह । तिहां बे देवताबे मोटी रिद्धिना धणी यावत पल्यो पमना आउखाना धणी वसे छे । ते कहै छे । श्री देवता तथा बीजी लक्ष्मीदेवता । एम [illegible]

भिधानमपमुरश्चयमदेवोर्ष सेममनपदेवयाभय देवूर्वभद्रपक्षियसुबोमंति ॥ १ ॥ तयोच मशाहृदयोमध्ये योजममाने पद्मे भवयोसनवाश्चये सुमावमात्रे ममानात् विजायाश्चये वज्र । रिष्ट २ वैडूर्य १ मूल १ कन्द २ नाले २ वैडूर्य १ जाम्बूनद २ मयबाह्याभ्यन्तर २ पत्रे कनकमयिके तपनीयकनककेसरे तयो कर्णिके ऽर्धयोजममाने तदर्धबाहल्ये तदुपरि देवोभवनेइति ॥ एवमित्यादि ॥ महाहिमवति महापद्मो हक्षिणितुमहापौण्डरीक प्योपविसहस्रायामो तद् द्विविष्कंभो द्विपोजनमानपद्मप्रमाणसमी तयोर्देवते परिवसतो महापद्मे ह्री पौण्डरीके बुद्धिरिति ॥ एवमित्यादि ॥ निषधे तिगिच्छिह्रदे धृतिर्देवता नीलवतिके सरिद्रे कीर्तिर्देवता तोषह्रदौ चतुर्विसहस्रायामविष्कम्भाविति भवतिचात्रगाथा एएसुसुरवहूओ वसतिपलिओवमठितीयाओ सिरिहिरिधीकित्तीओ बुद्धीलच्छीनामाणाओति ॥ १ ॥ पंचूत्यादि ॥ तत्रहिमवत्प्रभावे महापद्महृदा इदक्षिणतोरणेन निर्गत्य योजनपञ्चशतानि योजनशतानि सातिरेकाणि दक्षिणता गिरिणायत्ता हाराकारयारिणा सातिरेकयोजनविमततेन प्रपातेन मकरमुखप्रणालेन महाहिमवतो रोहिदभिधानकुण्डे निपतति मव

एयमहाहिमयतरुप्पीसु यासहरपद्मएसु दोमहहहा प० बङ्गसमतुल्लाजायमहापउमद्दहेचेय महापोण्डरीयद्द हेचेव देयताउहिरिच्चेव बुद्धिच्चेय एयानिसहनीळवतेसु तिगिच्छिद्दहेचेय केसरिद्दहेचेय देयताउधिइच्चेव किसीचेय जयूमदरदाहिणेण महाहिमवताउ यासहरपद्मयाउ महापउमद्दहाउ दोमहाणईउपवहति तजहा

पद्मसम जाय महा पद्मद्रह बीजो महा पुण्डरीक द्रह तिहां बे देयांगना ह्री देवता तथा बीजी बुद्धि देवता । एम निषध नीलवंत तिगिच्छिद्रह । तथा केसरी द्रह । तिहां बे देवता वसे छे । धृति देवता तथा कीर्ति देवता । जम्बूद्वीपे मेरुथी दक्षिण दिशि महाहिमवत वर्षधर पर्वतना महापदम द्रहथी

एगुणविंशतियोजनायामेन चतुर्योजनविष्कम्भेन योजनबाहल्येन रोहितांशाप्रपातकुण्डाद् दक्षिणतोरणेन निर्गत्य हैमवतवर्षमध्यभागवर्तिनं शब्दा-
पातिवृत्तवैताढ्यं अर्द्धयोजनेनाप्राप्याऽपरविभागवर्तिनीत्वात् नदीप्रवाहे संमुखागमनवती सती विद्यमानं पूर्वतो लवणसमुद्र मभिगच्छतीति रोहितांशाप्रपाते अर्द्धयोजनाधिकद्वादशयोजन
विष्कम्भा योजनोद्वेधा ततः क्रमेण वर्धमाना मुखे पञ्चविंशत्यधिकयोजनशतविष्कम्भा सार्द्धद्वियोजनोद्वेधा उभयतो वेदिकाभ्यां वनखण्डाभ्यां युक्ता एवं सर्वा
महानद्यः पद्यतः सूत्राणि वेदिकादियुक्तानीति हरिकान्ताद् महापद्मह्रदस्योत्तरतोरणेन निर्गता पञ्चोत्तराणि षोडशयोजनशतानि सातिरेकाणि उत्त-
राभिमुखोपपर्वतेन गत्वा सातिरेकद्वियोजनशतप्रमाणेन प्रपातेन हरिकान्ताकुण्डे तत्रैव प्रपतति मकरमुखजिह्विकादिप्रमाणं पूर्वोक्तद्विगुणं अत्र प्रपात
कुण्डस्योत्तरतोरणेन निर्गत्य हरिवर्षमध्यभागवर्तिनं गन्धापातिवृत्तवैताढ्यं योजनेनाप्राप्ता पश्चिमाभिमुखीभूता षट्पञ्चाशता सलिलसहस्रैः समग्रा स-
मुद्रमभिगच्छति एवं हरिकान्तानामा हरितोयो रोहिताद्विगुणेति। एवमित्यादि। एवमिति जंबूद्वीपे दक्षिणाभिलापसूत्रनार्थं हरिस्सलिलादीति तिगिच्छिह्रद-
स्य दक्षिणतोरणेन निर्गत्य सप्तयोजनसहस्राणि चत्वारि चैकविंशत्यधिकानि योजनशतानि सातिरेकाणि दक्षिणाभिमुखी पर्वतेन गत्वा सातिरेकचतुर्यो-
जनशतिकेन प्रपातेन हरिकुण्डे निपत्य पूर्वसमुद्रे पतति शेषं हरिकान्तासमानमिति सीतोदाऽपि तिगिच्छिह्रदस्योत्तरतोरणेन निर्गता तावन्त्येव योजन

रोहियच्चेव हरिकंतएचेव एवंनिसहाउ वासहरपव्वयाउ तिगिच्छिद्दहाउ दोमहानईउपवहंति तं० हरिच्चेव

ये महा मोटी नदी नीकली कहे छे। ते कहे छे रोहिता तथा बीजी हरिकांता नदी एम निषधनामा वर्षधर पर्वतना तिगिच्छि द्रहथी बे नदी
नीकली छे ते कहेछे। हरिनदी तथा शीतोदा नदी। जंबूद्वीपना मेरुथी उत्तरदिशि नीलवंत वर्षधर पर्वतना केसरीद्रहथी बे मोटी नदी नीकली

महत्त्वादि निर्गत्योत्तराभिमुखीभूय सातिरेकचतुर्योजनशतिकेन प्रपातेन शीतोदाकुण्डे निपततीति जिह्विका मकरमुखस्य चत्वारियोजनानि पाया मेनपंचाशद्विष्कंभेन योजनमायामेनकुण्डादुत्तरतोरणेननिर्गत्य देवकुरून् विभजन्तो चित्रविचित्रकूटौ पर्वतौ निषधद्रहादींश्च पञ्चद्रहान् द्विधाकुर्वन्ती चतु रशीतिनदीसहस्रै रापूर्यमाणा भद्रशालवनमध्येन मेरुं योजनद्वयेनाप्राप्ता प्रत्यङ्मुखीभावर्त्तमाना अधोविद्युत्प्रभं वक्षारपर्वतंदारयित्वा मेरोरपरतोऽपर विदेहमध्यभागेन एकैकस्माद्विजया दष्टाविंशत्यानदीसहस्रै रापूर्यमाणा अधोजयन्तद्वारस्यापरसमुद्रं प्रविशतीति शीतोदादि प्रवाहे पञ्चाशद्योजनवि ष्कंभा योजनार्द्धं तत्प्रमाणबाहल्या परिवहमाना मुखे पञ्चयोजनशतानि विष्कंभा दशयोजनोद्वेधेति ॥ अमूरित्यादि ॥ शीतामहानदी केसरिद्रहस्य दक्षिण तोरणेन विनिर्गत्य कुण्डेपतित्वा मेरोः पूर्वतः पूर्वविदेहमध्येन विजयद्वारस्याधः पूर्वसमुद्रं शीतोदासमानवक्तव्या प्रविशतीति नारिकान्तातु उत्तर तोरणेननिर्गत्य हरिकान्तानदीसमानवक्तव्या रम्यकवर्षमध्येनापरसमुद्रंप्रविशतीति ॥ एवमित्यादि ॥ नरकान्ता महापुण्डरीकद्रहाद् दक्षिणतोरणेन वि निर्गत्य रम्यकवर्षं विभजन्तीति हरिकान्ता तुल्यवक्तव्या पूर्वसमुद्रमधिगता रूप्यकूलाद तस्यैवोत्तरतोरणेन विनिर्गत्य ऐरण्यवतवर्षं विभजन्तो रोहितवदो

सीतोत्थन्नेव जंबूमंदरउत्तरेण नीलवंताउ वासहरपव्वयाउ केसरिद्दहाउ दोमहाणईउ पवहंति तंजहा सीता चेव नारिकंताचेव एवंरुप्पीवासहरपव्वयाउ महापोंडरीयद्दहाउदोमहाणईउ पवहंति तंजहा णरकंताचेव

छे ते कहे छे । शीतानदी तथा नारिकान्ता नदी । एम रूपी वर्षधर पर्वतना महापुंडरीक द्रहथी बे मोटी नदी वहे छे ते कहेछे । नरकान्ता तथा रूप्यकूला । जंबूना मेरुथी दक्षिण भरत क्षेत्रे बे प्रपात द्रह छे मेरुना पर्वतथी नदीनो प्रवाह पडे छे ते कहेछे । गंगा प्रपातकुंड तथा सीओ

तत्थयमत्था पयरसमुद्र प्रच्चतीति । जंबूरत्यादि । पवाबद्धेति । प्रपतनमप्रपात तदुपलक्षितो कुण्डो प्रपातकुण्डो इह यच हिमवदादेर्नगात् गङ्गादिका महानदी प्रपातेनाधो निपतति स प्रपातकुण्ड प्रपातकुण्डमित्यथ । गंगापवायद्धेवेत्ति । हिमवद्वर्षधरपर्वतोपरिवर्तिनं पद्मद्रहस्य पूर्वतोरणेन नि

र्गता महानदी पूर्वाभिमुखीपञ्चयोजनशतानि गत्वा गङ्गावर्तकूटे भागता सती पञ्चयोविंशत्यधिकानि योजनशतानि साधिकानि दक्षिणाभिमुखी पर्वतेन गत्वा महान् घटमुखप्रवृत्तेन मुक्तावलीकल्पेन प्रपातेन यत्र प्रपतति तत्र षष्टियोजनायामविष्कम्भं किञ्चिन्न्यूननवत्युत्तरशतपरिक्षेपो दशयोजनोद्वेधो गङ्गाप्रपातकुण्डं

मित्यर्थः । ... सविविधतोरणा मध्यभागे गङ्गाद्वीपो ढयोजनायामविष्कम्भः सातिरेकपञ्चविंशतिपरिक्षेपः ... ततस्तस्माद्दक्षिण तोरणेन विनिर्गत्य प्रवहे ... गङ्गा उत्तरभरतार्धं विभजन्ती सप्तभिर्नदीसहस्रैरापूर्यमाणा अधः खण्डप्रपातगुहाया वैताढ्यपर्वतं विदार्य दक्षिणार्धभरतं विभजन्ती तन्मध्यभागेन गत्वा पूर्वाभिमुखी आवृत्ता सती चतुर्दशभिर्नदीसहस्रैः समग्रा मुखमार्गे ... जगतीं विदार्य पूर्वलवणसमुद्रं प्रविशतीति समग्राप्रपातकुण्ड एतदनुसारेण सिन्धुप्रपातकुण्डोऽपि व्याख्यातव्य अत एवेतो वक्ष्यमा

रुप्पकूलाचेव जयूमन्दरदाहिणेण नरहेवासे दोपवायद्दहा प० त० यङ्गसमतुल्ला जाव गगप्पवायद्दहेचेव

सिंधु प्रपातकुंड । एम जम्बूद्वीपना मेरुथी उत्तर दिशायें हैमवत क्षेत्रमां बे प्रपातकुंड छे ते कहे छे । रोहिता प्रपातकुंड क्षेत्रमां ——

दिग्गिीयणा मायामविष्कम्भाईधयरिखोर्ते भॅवमीयाविति सवपव मपातकुण्डा दगयीजमोधिा वक्ष्यमाणति यथेतॅ्यमधरनधिकारे गङ्गासिन्धुरोहिता मार्गा तथा सवणकूमारभारममतीमां मामिधामे तत् विसामकामुरोधात् तासोहि एकैकस्मात्पर्वतात् भर्मवर्य प्रवहतीति विसामवे मावतारहति एव मित्यादि प्रासम् । रोहियप्पशायद्दहेचेवत्ति । रोहिद्वुपकुण्डा मपपतति यय सविंशतिकं योजनशतमायामविष्कम्भाभ्यां त्रिविशूनायोत्यधिकानि मीचि शतानि परिपेपेण यस्य मध्यभागे रोहितद्वीपो षोडशयोजनायामविष्कम्भ सातिरेकपंचाश योजनपरिक्षेपो जलात्ता द्विक्रोशोच्छ्रितो ययरोहितदेवता भवनेन गङ्गादेवताभवनसमानेन विभूषितो परितनविमाग यरोहितप्रपातकुण्डमिति । रोहियसप्पवायद्दहेचेवत्ति । हिमवद्वर्षधरोपरिवत्ति पद्मद्रहोत्तरतो रणेनगित्य रोहितांशामप्रावहोचे पठममत्युत्तरेयामनयते सातिरेके उत्तराभिमखोपर्वतेन गत्वा योजनायामया पतुयोजयोजनविष्कम्भया क्रोशयाद् मपया जिह्विकया विवृतमकरमुखप्रणालेन धाराकारेण सातिरेकयोजनशतिकेन प्रपातेन मपपतति सत्र रोहितप्रपातकुण्डसमामनामान यस्मभध्ये रो हितांशाद्वीपो रोहितद्वीपसमानमान रोहितांशाभवनेन प्रागुक्तमानेनालङ्कृत सतय रोहितांशामहो रोहितनदीसमानसाना उत्तरतोरणेननिर्गत्य पश्चिम समुद्रमभिनियति सराहितांशाप्रपातकुण्ड इति । अनुराणादि । हरिप्पवायद्दहेचेवत्ति । हरिपदी प्रागुक्तमाना सत्र निपतति यय पेषतेपलारिंशदधिके

सिंधुप्पयायद्दहेचेव एवहेमवयएयासेदोपवायद्दहा प० वङ्गसमतुल्ला तजहा रोहियप्पवायद्दहेचेव रोहिय सप्पवायद्दहेचव जम्बूमदरदाहिणेण हरिवासे दोपवायद्दहा पन्नत्ता वङ्गसमतुल्ला तजहा हरिप्पवायद्दहेचेव

प्रपात रोहिता नदी पडेछे । तथा बीजो रोहितांशा प्रपात द्रहछे । जंबूनां मेरुथी दक्षिणें हरिवष क्षेत्रें बे प्रपात द्रहछे ते कहेछे । यथा

पायामविष्कम्भाभ्यां समयवानिएवोन पञ्चविंशानि परिक्षेपेण यस्य मध्यभागे हरिदेवताद्वीपः द्वात्रिंशद्योजनायामविष्कम्भः एकोत्तरशतपरिक्षेपः च शाल्ता द्विक्रोशोच्छ्रितो हरिदेवता भवन विभूषितो परितनभागो सोऽहरिद्प्रपातकुण्ड इति । हरिकतप्पवायद्दहेचेवत्ति । हरिकान्तोऽपरूपा महानदीय यनिपतति यत्र हरिकुण्डसमानो हरिद्वीपमानेन हरिकान्तादेवीद्वीपेन समवनेन भूषितमध्यभागः स हरिकान्ताप्रपातकुण्ड इति । जम्बूद्वीपादि । सीतप्य यावद्दहेचेवत्ति । यत्र शीतवत् शीतानिपतति यत्र चत्वारिंशयोजनाधिकानि योजनशतानि आयामविष्कम्भाभ्यां पञ्चदशाष्टादशोत्तराणि विशेषन्यूनानिपरि क्षेपेण यस्य मध्ये शीताद्वीपः चतुःषष्टियोजनायामविष्कम्भो द्व्युत्तरयोजनशतद्वयपरिक्षेपः जलान्तात् द्विक्रोशोच्छ्रितः शीतादेवीभवनेन विभूषितोपरित नमाग शीताप्रपातकुण्ड इति । सीतोदप्पवायद्दहेचेवत्ति । यत्र निषधात् शीतोदानिपतति स शीतोदाप्रपातकुण्डः शीताप्रपातकुण्डसमानः शीतादेवी द्वीपभवनसमानः शीतोदादेवीद्वीपभवनश्चेति । जम्बूद्वीपादि । नरकान्तनारिकान्ताप्रपातकुण्डौ च हरिकान्ताहरित्प्रपातकुण्डसमानौ स्वसमाननामद्वीप

हरिकतप्पवायद्दहेचेव जम्बूमंदरउत्तरदाहिणेण महाविदेहेवासे दोप्पवायद्दहा प० तजहा वज्जसमतुल्ला जाव सीयप्पवायद्दहेचेव सीओयप्पवायद्दहेचेव जम्बूमंदरउत्तरेण रम्मएवासे दोपवायद्दहा प० वज्जसमतुल्ला जाव नरकतप्पवायद्दहेचेव णारिकतप्पवायद्दहेचेव एवहेरन्नवएवासे दोपवायदहा प० वज्जसमतुल्ला जाव सुय

हरिप्रपातकुण्ड तथा हरिकान्ता प्रपातकुण्ड । जम्बूनां मेरुथी उत्तरदिशि दक्षिणदिशि महाविदेह क्षेत्रे बे प्रपात कुण्ड छे ते कहे छे । वज्रसम जाव शीता प्रपातकुण्ड बीजो शीतोदा प्रपातकुण्ड । जम्बूद्वीपे मेरुथी उत्तरदिशि रम्यकक्षेत्रे बे प्रपातकुण्ड ते कहे छे । नरकांता प्रपातकुण्ड बीजो नारिकांता

देवोपाशिति । एवमित्यादि । सुवर्णकूलारूप्यकूलाप्रपातह्रदौ रोहितांशारोहित्प्रपातह्रदसमानवक्तव्यौ विष्कम्भ...
देवोपाशिति । एवमित्यादि । सुवर्णकूलारूप्यकूलाप्रपातह्रदौ रोहितांशारोहित्प्रपातह्रदसमानवक्तव्यौ विष्कम्भ १२ ॥ जम्बूद्वीपे २ [illegible]
प्रपातह्रदौ महाहिमवत्प्रपातह्रदसमानवक्तव्यौ नवरं रक्ता पूर्वदिग्गामिनी रक्तवतीच पश्चिमोदधिगामिनीति । जम्बूद्वीपेमंदरस्यदाक्षिणेनभरतेवासेद्वौम
मानस्यादि एवमिति भणनक्रमेण । अवत्ति । यथा पूर्व वर्णितौ द्वौ प्रपातह्रदावुक्तौ एवमयौ वाच्यौ स्थाप्यौ गंगासिंधुतरंगे विष्कम्भेय
हरिकता हरिसलिलासीतासीतोदाः सतैयान्ता इति दाक्षिणभो । १ । सोपायमारिकांता नरकांतात्रैव रूप्यकूलाम सलिलासुवर्णकूला रक्तवतीरक्तान्तरभीति । २ ।
जम्बूद्वीपाधिकारात् क्षेत्रधर्मेऽभ्यपदेश्यपुद्गलधर्माधिकाराच्च जम्बूद्वीपसम्बन्धिभरतादिसत्वकालसमयपर्यायधर्माननेकधाष्टादशसूत्र्याह । जम्बूद्वीपेत्यादि ।

त्नकूलप्पवायद्दहेचेव रूप्पकूलप्पवायद्दहेचेव जम्बूमंदरउत्तरेण एरयएवासे दोपवायद्दहा प० बहुसमतुल्ला जाव रत्तप्पवायद्दहेचेव रत्तवइप्पवायद्दहेचेव जम्बूमंदरदाहिणेण भरहेवासे दो महानईओ प० बहुसमतुल्ला जाव गंगाचेव १ सिंधूचेव २ एवजहापवायद्दहा एवणईओ भाणियव्वाओ एवजहा एरयएवासे दोमहानईओ प० बहुसमतुल्लाओ जाव रत्ताचेव रत्तवईचेव जम्बूद्दीवेदीवे भरहेरवएसुवासेसु तीताए उसप्पिणीए सुसमदुसमाए

प्रपातकुंड एम ऐरवयत क्षेत्रे बे प्रपातकुंड तकहेवे । बहुसम जाव सुवर्णकूला प्रपातकुंड तथा रूप्यकूला प्रपातकुंड । जंबूद्वीपमां मेरुथी उत्तरदिशि ऐरवतक्षेत्रे बे प्रपातकुंड तेकहवे । बहुसमजाव रक्ताप्रपातकुंड तथा बीजो रक्तवती प्रपातकुंड । जंबूद्वीपे मेरुथी दक्षिण भरत क्षेत्रे बे मोटीनदीओ तेकहेवे । बहुसम जाव गंगानदी तथा बीजी सिंधुनदी । एम जिम अनुक्रमें प्रपातकुंड कह्यिा तेम अनुक्रमे नदीपिण कहिवी । यावत् ऐरवत क्षेत्रे बे

आयामविष्कम्भाभ्यां समप्रतानि एकोन पञ्चाशिकानि परिक्षेपेण यस्य च मध्यभागे हरिदेवताद्वीपः द्वात्रिंशद्योजनायामविष्कम्भः एकोत्तरशतपरिक्षेपः च
नाम्ना द्विक्रोशोच्छ्रितो हरिदेवता भवन विभूषितो परिसरभागो सो हरित्प्रपातकुण्ड इति । हरिकतप्पवायद्दहेचेवत्ति । हरिकान्तोक्तरूपा महानदीव
यन्निपतति यच्च हरित्कुण्डसमानो हरिद्वीपमानेन हरिकान्तादेवीद्वीपेन समभवनेन भूषितमध्यभाग स हरिकान्ताप्रपातकुण्ड इति । जम्बूइत्यादि । सीतप्प
वायद्दहेचेवत्ति । यत्र नीलवत सीताभिपतति यच्च चत्वारिंशद्योजनाधिकानि योजनशतानि आयामविष्कम्भाभ्यां पञ्चदशाष्टाशीत्युत्तराणि त्रिंशत्यूनानि परि
क्षेपेण यस्य च मध्ये सीताद्वीपः चतुःषष्टियोजनायामविष्कम्भो द्व्युत्तरयोजनशतद्वयपरिक्षेपः जलान्तात् द्विक्रोशोच्छ्रित सीतादेवीभवनेन विभूषितोपरित
नभाग स सीताप्रपातकुण्ड इति । सीतोदप्पवायद्दहेचेवत्ति । यत्र निषधात् सीतोदा निपतति स सीतोदाप्रपातकुण्ड सीताप्रपातकुण्डसमान सीतादेवी
द्वीपभवनसमान सीतोदादेवीद्वीपभवनयेति । जम्बूइत्यादि । नरकान्तनारिकान्ताप्रपातकुण्डौ च हरिकान्ताहरित्प्रपातकुण्डसमानौ स्वसमाननामद्वीप

हरिकतप्पवायद्दहेचेव जंबूमंदरउत्तरदाहिणेणं महाविदेहेवासे दोप्पवायद्दहा प० तंजहा बहुसमतुल्ला जाव
सीयप्पवायद्दहेचेव सीतोयप्पवायद्दहेचेव जंबूमंदरउत्तरेणं रम्मएवासे दोपवायद्दहा प० बहुसमतुल्ला जाव
नरकतप्पवायद्दहेचेव णारिकतप्पवायद्दहेचेव एवहेरन्नवएवासे दोपवायद्दहा प० बहुसमतुल्ला जाव सुय

हरित्प्रपातकुण्ड तथा हरिकान्ता प्रपातकुण्ड । जम्बूद्वीपे मेरुथी उत्तरदिशि दक्षिणदिशि महाविदेह क्षेत्रे द्वे प्रपात कुण्डे ते कहेवे । बहुसम जाव सीता
प्रपातकुण्ड बीजो सीतोदा प्रपातकुण्ड । जंबूद्वीपे मेरुथी उत्तरदिशि रम्यकक्षेत्रे द्वे प्रपातकुण्ड ते कहेवे । नरकान्ता प्रपातकुण्ड बीजो नारिकान्ता

देवोपाशिति । एवमित्यादि । सुवर्णकूलारूप्यकूलाप्रपातह्रदौ रोहितांगारादिप्रपातह्रदसमानवक्तव्यौ विशेषमूह्य इति । जंबूइत्यादि । रक्तारक्तवती प्रपातह्रदौ गङ्गासिन्धुप्रपातह्रदसमानवक्तव्यौ नवरं रक्ता पूर्वोदधिगामिनी रक्तवतीतु पश्चिमोदधिगामिनीति । जंबूद्दीवेमंदरस्सदाहिणेणमरहेवासेदोम हानईपाइत्यादि एवमिति यनशरक्रमेण । जहत्ति । यथा पूर्व वर्णितौ द्वौ प्रपातह्रदावुक्ता वेवमयोपाध्या स्तावेव गंगासिंधूतवरी दियंसरोहिसमर्पेम करिकता करिसमिमासातायामतेयार्तिहादिषभौ । १ । सीमायमारिकाता नरकांताचेवरूप्यकूलाय सव्रिवासुवर्णकूला रक्तवतीरक्तउत्तरभोत्ति । २ । जम्बूद्वीपाधिकारात् घवधर्मम्यपदेग्रपुद्गलधर्माधिकाराच्च जम्बूद्वीपसत्कभिमरतादिसत्कासमयचपर्यायधर्मानेकाष्टादशसूत्र्याह । जंबूद्दीवेइत्यादि ।

ल्लकूलप्पवायद्दहेचेव रूप्पकूलप्पवायद्दहेचेव जंबूमंदरउत्तरेणं एरवएवासे दोपवायद्दहा प० बहुसमतुल्लाजाव रत्तप्पवायद्दहेचेव रत्तवइप्पवायद्दहेचेव जंबूमंदरदाहिणेणं भरहेवासे दो महानईओ प० बहुसमतुल्लाजाव गंगाचेव १ सिंधूचेव २ एवजहापवायद्दहा एवणईओ भाणियव्वाओ एवजहा एरवएवासे दोमहानईओ प० बहुसमतुल्लाओ जावरत्ताचेव रत्तवईचेव जंबूद्दीवेदीवेभरहेरवएसुवासेसु तीताए उसप्पिणीए सुसमदुसमाए

प्रपातकुंड एम हेरणवयत क्षेत्रे बे प्रपातकुंड तकहेबे । यदुसम जाय सुवर्णकूला प्रपातकुंड तथा रूप्यकूला प्रपातकुंड । जंबूद्वीपना मेरुथी उत्तरदिशि येरवतक्षेत्रे बे प्रपातकुंड तकहेबे । यहुसमजाय रक्ताप्रपातकुंड तथा बीजो रक्तवती प्रपातकुंड । जंबूद्वीपे मेरुथी दक्षिण भरत क्षेत्रे बे मोटीनदीबे तेकहेबे । यहुसम जाय गंगानदी तथा बीजी सिंधुनदी । एम जिम अनुक्रमें प्रपातकुंडकह्या तेम अनुक्रमें नदीपिण कहिवी । यावत् येरवत क्षेत्रे बे

मुममागिषेताणि मवरं । तीताएत्ति । मतीता या उस्सर्पिणीमागव तस्यां तस्या या सुखमदु:खमामा मङ्गुखाया समाया खाममिभामस्य चतुर्थार
कमचनम्र । पामोत्ति । स्थिति' ममाणं या । होत्थत्ति । ममूवेति । एवमिति जंबूद्दीवे २ स्मादि । उत्तारखीयं मवर । इमोसेत्ति । भणां मत्वषायां वर्त्त
मागाया मित्यय' मयमयिभा मुभायायां । जावत्ति । सुसमदुसमाएसमाए खतीभारक इत्यर्थं । दोसागरोवमकोडाकोडीभो कासे पमत्ते । मभमद्रति
पूनमूत्र विशेष' पूनमूवेति । होत्थत्ति । भवितमिति । एवमिस्मादि । मागमिस्साएत्ति । भागमिष्यंत्या मुत्सर्पिण्यामिति भविष्यतीति पूर्वसूत्रविशेष'

समाए दोसागरोयमकोडाकोडीउ कालेहोत्था एवमिमीसे उसप्पिणीए जाव प० एवम्मागमिस्साए उसप्पि
णीए जाव भविस्सइ जयूद्दीयेदीवे भरहेरवएसु वासेसु तीयाएउसप्पिणीए सुसमाए समाए मणुया दोगाउ
याइउद्ध उच्चत्तेण होत्या दोन्नियपलिउवमाइ परमाउ पालयित्ता एवमिमीसेउसप्पिणीए जायपालयित्ता
एयमागमिस्साए उसप्पिणीए जावपालइस्सति जयूद्दीवेदीवे भरहेरवएसुवासेसु एगसमए एगजुगे दोअर

मसीहे। पहुमम आय रक्ता मदी तथा बीजी रक्तवती । जंबूद्वीपना भरत तथा ऐरवत क्षेत्रे मतीत गई उत्सप्पिणीकाले सुसमदुसमाआरें बे साग
रोपमकोटाकोटिकाल प्रमाणें थयो । एम भा उत्सर्पिणीकालें सुसमदुसमा त्रीजो आरो बे कोटाकोटि कालप्रमाणथयो । एम आवतीउत्सर्पिणीयें
पणि सुसमदुसमा आरो बे कोटाकोटिनों थास्ये जयूद्वीपना भरत ऐरवतक्षेत्रे गईउत्सर्पिणीयें सुसमाआरें मनुष्ययुगलियानो बे गाउ प्रमाण ऊंच
पण थयो । बेपल्योपमनों उत्कृष्टो आऊखोपालतातुभा एम भा वर्त्तमान उत्सर्पिणीयें पणि युगलियानों बे गाऊनों शरीर बे पल्योपमनों

२ । जंबूद्दीवादि । सुसमायापसमारखे । होत्पति । प्रभुत्व । पासयमति । पालितवन्त पूर्वसूत्राद्विशेष । जंबूद्दीवादि । एगेसुमेत्ति । पञ्चान्वित्व का मविगीया युगं तथैकस्मिं स्वसाध्येकस्मिन् समये । एगसमये १ एगजुगे । दृश्येमत्याठेपि व्याख्येयक्रमेवेवं त्वमेवार्थसम्बन्धा एवबावा भावनीयेति याव हतविंगो प्रवाहोएक्कामरतभमवो श्यपैरवत ममवहति । दसारति । दसारा समयमायपा वासुदेवा ८ । जंबूद्दीवादि । सदा सर्वदा । सुसमसुसम त्ति । प्रथमारकानुभाग सुखमसुखमा तथा सम्बन्धिनी वा सा सुखमेव तासुत्तमर्द्धि प्रधानविभूतिमुखेस्वायु उपदानभोगोपभोगादिका प्रासा प्रत्युत

हतवसा उप्पजिसुया उप्पज्जाति उप्पज्जिस्सतिवा एव चक्कयट्टियसा दसारवसा जायउप्पज्जिस्सतिवा जयू दोसु कुरासु मणुया सया सुसमसुसमिट्टिपत्ता पच्चणुब्भवमाणा विहरति त० देवकुराएचेव उत्तरकुराएचेव ज यूद्दीवेदीये दोसुवासेसु मणुया सयासुसमुत्तमिट्टिपत्ता पच्चणुब्भयमाणा विहरति हरिवासेचेव रम्मगवासेचे

भाऊखो यपो । एम भायती उत्सर्पिणीयें जाव ये पल्योपमनो भाऊखोभासे । जयूद्दीपें भरत एरवतक्षेत्रें एकसमयें एकयुगें युगत पांच वर्षनो चक्र चक्र प्रभिवर्द्धित चक्र प्रभिवर्द्धित थी थाय छे । ये भरिहत ते पूज्य भगवंतना मोटा वंश उपना उपजेछे वर्तमान चोवीसी भाश्रीनें भाव तेकाले उपजस्ये । एम चक्रयतिनायंश एकभरते एकएरवते । एम ये वंशवासुदेवना जयूद्दीपें भरत एरवतें एकसमयें ये भरिहत भतीतकालेऊपना वर्तमानकालें उपजेंछे भनागतकाले उपजसे । एम चक्रवर्ति वलदेव वासुदेव एम जाय उपना उपजेंछे उपजसें । जयूद्दीपें ये कुरुनें विषें मनुष्य सदाइ सुखमसुखमा पहिलाभारानी रिद्धि भोगता यकाथिया तिष्ठेंछे । ते कहेंछे । देवकुरु तथा बीजो उत्तरकुरु एह ये क्षेत्रमां सदैव पहिलो

विचरन्ति भासते इति भभिधीयतेष ।
रगतो वेदसगतो मसत्तामावेसर्व पवमा सुषमसुषमाकालविषिर्य मासा भधिमता उत्तमासदिमसमनुमंवमती विचरन्ति भासते इति भभिधीयतेष ।
सुविकूराममया तिपममरमाधपोतिमोसुषा पिइकरतससार्द सोवम्यवार्सपमाव । १ । सुषमसुसमाकमार्व पचमवमापेवववमोववसा भतपामपषि
रद् भइममतमभावारो ।२। देवकुरवो दविषा उत्तरकुरव उत्तरा सेचिति १४ । जबूदत्यादि । सुसमंति । सुषमा हितीयारकानुभाग शीर्ववषेव पल्य
व । हरिवासरमएसु भाउपमावसरीरउसेवो पलिपोवमाधिसोविव दोविवसोसुस्थियामविषा । १ । कासयमाहारो चउसहिदिपावपालयातेसिं
गमरकावसर्य महावीरसमुपेयम ति । १५ । जंबूदत्यादि । सुसमदुसमति । सुषमदुःषमावतीयारकानुभाग स्तथा या सा सुषमदुःषमाकादि येव
वेव । उक्तेव भाउवसुवापषिमो पमाउवीपल्यरिसवसंघयमा हैमवएरमवए भवमिंदगरामिइयवासी । १ । चउसीपिडवरं उपाचमवमापते

य जंबूदीवुवासेसु मणुया सया सुसमसुसमुत्तमिड्ढिपत्ता पच्चणुब्भवमाणा विहरति हेमवएचेव एरन्नवएचेव
जंबूद्दीवेदीवे दोसुखित्तेसु मणुया सया दुसमसुसमुत्तमिड्ढिपत्ता पच्चणुब्भवमाणा विहरति तंजहा पुव्वविदेहेचेव अवरविदेहेचेव जंबूद्दीवेदीवे दोसुवासेसुमणुया छव्विहंपिकालंपच्चणुब्भवमाणा विहरति तंजहा।

भारो छे ॥ जंबूना वेबेचत्रनें विषें मनुष्य सदैव सुखमा मामा बीजाआरानी रिद्धि पाम्या सुखनोगता विचरेंछे ॥ ते कहेछे ॥ हरिवर्षक्षेत्रनें तथा रम्यकक्षेत्रें ॥ जंबूद्वीपमां बे क्षेत्रे युगलिया मनुष्य सदाई सुखमदुखमा त्रीजा आराना सुखनोगता विचरेंछे ॥ हैमवतक्षेत्रें तथा ऐरण्यवतक्षेत्रें ॥ जंबूद्वीपमां बे क्षेत्रने विषें मनुष्य युगलिया नथी सदाई दुखमसुखमा चोथोआरो अनुभवता विचरेंछे ॥ पूर्वमहाविदेहमां तथा पश्चिममहाविदेह

मिमाहारी भत्तमसयउयमउ वत्तसीपदिवापपारमयति । १६ । जंबूत्यादि । दुसमसुसमंति । दु:खमसुखमापदुवोरकमतिभागस्यस्यभिनोऽक्षिदु षमसुषमेव गेयंतवेव यथीयतेव मणुवामपुम्मवोहो पाजपवोसियाधवसवाउ दुसमसुसमाउभावं भववुतिमरागियववार्वति । १७ । जंबूदीवेत्यादि उभिहंयिति । सुगमसुगमादिवं उवसपिवयवसप्पिणोरूप मिति । १८ । अनन्तरंजम्बूद्वीपेकालसमयद्रव्यपर्यायविशेषा उक्ता अधुनातु जम्बूद्वीपएव कालपदार्थजयानां ज्योतिषां विमानचारानुपातेन प्ररूपयन्नाह । जंबूद्वीवे२ इत्यादि सूत्रद्वयं । पभासिंसुवत्ति । प्रभासितवन्तो प्रकाशनीयमेवं प्रभास यत प्रभासयिवत चन्द्रयोय सोम्यदीप्तिकत्वा प्रभासनमात्रमुक्तं आदित्ययोय खररश्मित्वात्तापितवन्तौ पवतापवत स्तापयिष्यतइति यसुत स्तापन मुक्तं यनेन कालनक्षत्रगमनेन सवकालं नक्षत्रादीनां भावानां मस्तित्व मुक्त मत एवोच्यते नकदापिनीदृशं जगदिति नवाविद्यमानस्य जगत कर्तोकल्पयितुं शक्यो ऽप्रमाणकत्वात् सन्निवेशविशेषवत् तत् बुद्धिमत्कारणपूर्वकं दृष्टं यथाघट' सन्निवेशविशेषवत्तय भूधरादयो यच बुद्धिमानसौ गरो जगत्कर्तेति विशेषाभावंवस्तु सन्निवेशविशेषवत्त्वपि वल्मीके बुद्धिमत्कारणत्वस्यादर्शना द्विभ चतुर्विधं तच्छास्तरान्तराद्‌वसेयमिति द्विसंख्या च द्यया मत्परिवारस्यापि दिवमाह । दोकत्तियत्यादिना । दोभावश्चेतत्येतदवसानेन ग्रन्थेन सुगमत्वं नवरं देवतिर्थे गत्यपेक्षया भतु तारकापेक्ष

जरहेचेय एरयएचेय जयूद्दीवे दोचदापन्नासिसुवा पन्नासतिवा पन्नासिस्सातिया दोसूरियातवइसुया तयाति या तयिस्सातिया। दोकत्तियाउ दोरोहिणीउ दोमियसिराउ दोअद्दाउ एवन्नाणियव्वं । कत्तियरोहिणिमिय

मां ॥ जंबूद्वीपमां ये क्षेत्रे मनुष्य सप्रकारें भाराना कालप्रति उत्तमरिद्धिप्रति पावता भोगता विचरेंछे ॥ भरतक्षेत्रें तथा ऐरवतक्षेत्रें ॥ जंबूद्वी

वा इत्यैवंमवचेति । कत्तिवत्वादि । गायात्रयेण मथम सूत्रसंग्रह कृत्तिकादीनामष्टाविंशते र्नक्षत्राणां क्रमेणाग्न्यादयो ष्ठाविंशति रेव देवता भवन्ति ता भाव दावग्गी १ । एवंप्रजापती २ । सोमो ३ । रुद्दो ४ । भदिती ५ । वहस्सती ६ । सप्पो ७ । पितरो ८ । भगो ९ । भर्यमणो १० । सविताशे ११ । तट्टारो १२ । वायू १३ । इन्द्राग्गी १४ । मित्तो १५ । इन्दो १६ । निर्रुती १७ । भाप १८ । विस्सो १९ । बम्हो २ । विण्हू २१ । वसू २२ । वरुणो २३ । भजो २४ । विवृद्धी २५ । पस्मान्तरे भहिवुध्नापुस्ती पूसणो २६ । भस्सिनी २७ । यमाविति २८ । मत्याम्तरे पुन रष्टमोतरार म्येता एव मुक्ता भग्गि १ । यम २ । दहन ३ । वमलज ४ । भग्गि ५ । मूसमय ६ । दिति ७ । जोवपवि ८ । पितर ९ । योग्य १ । येम ११ । दिणकण्

सिर ऋद्दायपुणव्वसूयपुस्सोय । तत्तोयिश्चस्सलेसा महायदोफग्गुणीठ्य ॥ १ ॥ हत्योचित्तासाइ यविसाहा होतिश्चणुराहा । जेठामूलोपुव्वा श्चासाढाउत्तरारखेय ॥ २ ॥ श्चन्निइसवणघणिठा सयन्निसयादोयहोतिन्नद्द यया । रेवइश्चस्सिणिन्नरणी णेयव्वाश्चाणुपुव्वीए ॥ ३ ॥ एवगाहानुसारेणणायव्व जाव दोन्नरणीठ दोश्चग्गी

पर्मा यथक्रमा भनुभालों करसाथुवा वर्तमानकाले करेंछे भनागतकाले करस्यें ॥ तथा पवि वेसूर्य भतीतकाले तप्या वर्तमानकाले तपछे भना गतकाले तपस्यें ॥ भसी वे कृतिका नक्षत्रछे ॥ वे रोहिणी नक्षत्रछे ॥ वे मृगशिर नक्षत्रछे ॥ वे भाद्रा नक्षत्र छे ॥ एम भठावीस नक्षत्र गाथा थी जाणिवा ॥ कृतिका । रोहिणी । मृगशिर । भाद्रा । पुनर्वसु । पुष्य । तिवारपछी भश्लेषा । मघा । वे फाल्गुनी एक पूर्वाफाल्गुनी एक उत्त राफाल्गुनी । हस्त । चित्रा । स्वाति । विशाखा । तिमज भनुराधा । ज्येष्ठा । मूल । पूर्वाषाढा । भने उत्तराषाढा । भभिजित् । श्रवण । धनि

१२ । लट ११ । पवन १४ । मञा १५ । म्नि १६ । मित्रा १० । ध्मा ॥ १ ॥ ऐग्नोमैचतितोर्य विम्नोमाइरिवंसुवरुण पअपादोविर्बुध पूषावेती भरा भागाम् ॥ २ ॥ भह्मारचाइयी ऽट्टागोतिभवा सूचसिहा चेवसमअह्डपुस्सवेपु चेपुथिदेव यचोचा सव्वासम्वस्ततोति सूयमभ्रसणुसारेणासा विव्रसंवाइगोया तवाति तरमूत तत्यसुहमे भद्वासीरमभामजा पमसा तंजहा इमासए १ वियासए २ लोहियक्खे ३ सणिच्छरे ४ भाहुणिए ५ पाहुणिए ६ कणे ७ कण ए ८ कणकणए ८ कणवितालए १ कणसंतालए ११ सोमे १२ सहिए १२ भस्सासणे १४ कज्जोवए १५ कव्वडए १६ भयकरी १७ दुंदुभए १८ सखे १८ स

दोपयायई दोसोमा दोरुद्दा दोअइई दोवहस्सई दोसप्पी दोपिइ दोजगा दोअज्जमा दोसविया दोतठा दोवा ऊ दोइदग्गी दोमित्ता दोइंदा दोनिरइ दोआऊ दोविस्सा दोयम्हा दोविगहू दोवसू दोवरुणा दोअया दोवि विद्धी दोपुस्सा दोअस्सा दोयमा ॥ दोइगालगा दोवियालगा दोलोहियक्का दोसणिचरा दोआउणिया दोपाउणिया दोकणा दोकणगा दोकणकणगा दोकणगवियाणगा दोकणगसताणगा दोसोमा दोसहिया

ष्ट । शतभिष । वली वे पूर्वाभाद्रपद । उत्तराभाद्रपद । रेवती । अश्विनी । भरणी । एम अनुक्रमें वेये जाणिवा ॥ एम गाथाने अनुसारें चा विया जाय भरणीलगे ॥ हिंये ताराना स्वामी कहेछे । अग्नी देवता प्रजापती सोम रुद्र अदिती बृहस्पति सर्पपे पितर भग अर्यमा सवि ता त्वष्टा वायु इंद्राग्नी मित्र इंद्र निर्ऋती आप वूरूहा विश्व विष्णु वसु वरुण अज विवृद्धि पूषण अश्वि यम ॥ हिंये अठ्यासी गृहना नाम कहेछे । अंगारक सेमगल व्यास लोहिताक्ष शनैश्चर आधुनिक प्राधुनिक कण कणक कनकनक कनकवितान कनकसंतानक सोम सहित अश्वास

धूमवे २ संखवण्णासे २१ वासे २२ कंसवन्ने २३ कंसवन्नामे २४ नीले २५ नीलाभासे २६ रुप्पी २७ रुप्पाभासे २८ भासे २९ भासरासी ३ तिले ३१ तिल
पुप्फवन्ने ३२ दगे ३३ दगपंचवन्ने ३४ काए ३५ कायवंझे ३६ इंदग्गी ३७ धूमकेउ ३८ हरी ३९ पिंगले ४ बुहे ४१ सुक्के ४२ बहस्सई ४३ राहू ४४ अगत्थी ४५
माणवगे ४६ कासे ४७ फासे ४८ धुरे ४९ पमुहे ५ वियडे ५१ विसंधी ५२ नियल्ले ५३ पयल्ले ५४ जडियाइल्लए ५५ अरुणे ५६ अग्गिलए ५७ काले ५८
महाकाले ५९ सोत्थिए ६ सोवत्थिए ६१ वद्धमाणगे ६२ पलंबे ६३ निच्चालोए ६४ निच्चुज्जोए ६५ सयंपभे ६६ ओभासे ६७ सेयंकरे ६८ खेमंकरे ६९ आ

दोश्यासासणा दोकज्जोवगा दोकब्बडगा दोश्रयकरगा दोदुदुभगा दोसखा दोसखवन्ना दोसखवन्नाभा दो
कसा दोकसवन्ना दोकसवन्नाभा दोरुप्पी दोरुप्पाभासा दोनीला दोनीलाभासा दोभासा दोभासरासी दो
तिला दोतिलपुप्फवन्ना दोदगा दोदगपंचवन्ना दोकाका दोकायवंझा दोइंदग्गी दोधूमकेऊ दोहरी दोपि
गला दोबुहा दोसुक्का दोबहस्सई दोराहू दोअगत्थी दोमाणवगा दोकासा दोफासा दोधुरा दोपमुहा दो
वियडा दोविसंधी दोनियल्ला दोपयल्ला दोजडियाइल्लगा दोअरुणा दोअग्गिल्ला दोकाला दोमहाकालगा
दोसोत्थिया दोसोवत्थिया दोवद्धमाणगा दोपलंबा दोनिच्चालोगा दोनिच्चुज्जोया दोसयंपभा दोओभासा

म कज्जोवग कर्वट अयस्कर दुदुभक शंख शंखवर्ण शंखवर्णाभ कंस कंसवर्ण कंसवर्णाभ रूप्पी रूप्याभ नील नीलाभास भस्म भस्मराशी तिल तिल
पुष्पवर्ण दक दकपंचवर्ण काय कायवंध्य इन्द्राग्नी धूमकेतु हरि पिंगल बुध शुक्र बृहस्पति राहु अगस्ति माणवक काश स्पर्श धुर प्रमुख विकट

मंडरे ७ पभवरी ७१ भमराजिए ७२ भरए ७३ भसोगे ७४ वीयसोमे ७५ विमले ७६ वितत्ते ७७ वितत्थिय ७८ विसाले ७९ साले ८ सुव्वए ८१ भणियट्टी ८२ एगजडी ८३ दुजडी ८४ करकरिए ८५ रायग्गले ८६ पुप्फकेउ ८७ भावकेऊ ८८ । इसंतवेवसंयमयोगायाभि निवचित तयाहि । इंगालएवियाल ए । लोहियक्खेमणिच्छरैवेव । माडुवियणाडुविय । कणगसनामाविपंचेव ११ । १ । सोमेसहियमासा । सपेयक्खोमएयणक्खए । भयकरदुप्पविय सगममनामावितिवेव २१ । २ । तिवेवकंसनामा । गौसाकप्पोमवीतिपत्तारि । भासविणपुप्फवचे । दगायदगवममकायगभ्रेय २९ । ३ । इदग्मिधूमकेउ हरिपिंगलएबुद्धेयमुक्केय । वहसइराहुमगत्थी । माणवएकामफासेय ४८ । ४ । धुरएपमुहेवियडे । विसंधिकप्पेतहापयलेय । जडियालएयमरुणे । भग्गिल कालेमहाकाले ५८ । ५ । सोत्थियसोवत्थिए । वद्धमाणतहापलंबेय । निच्चालोएणिच्चु । ज्जोएयसयंपभेयओभासे ६५ । ६ । सेयकरखेमकर । भामकर पभंकरेयवाधव्वे । भरएविरएयतहा । असोगतहवीयसोगेय ७१ । ७ । विमलवितत्तवितत्थे । विसालतहसालसुव्वएचेव । भणियट्टीएगजडी । दुजडीकरकि

दोसेयकरा दोखेमकरा दोआभकरा दोपभंकरा दोअपराजिया दोअरया दोअसोगा दोविगयसोगा दोविम ला दोवितत्था दोवितत्था दोविसाला दोसाला दोसुव्वया दोअणियट्टी दोएगजडी दोदुजडी दोकरकरिगा

विसंधि नियल पडल जटितालक अरुण अग्गिल महाकाल स्वस्तिक सौवस्तिक वर्द्धमान [पूसमानक अंकुश एह येगूरमा नाम गृन्थान्तरेके] प्रलय नित्यालोक नित्योद्योत स्वयंप्रभ सजस श्रेयकर खेमंकर आभंकर प्रभंकर अपराजित अरज अशोक विगतशोक विमल वितत वित्रस्त विशाल स ल सुव्रत अनीवत एकजटी द्विजटी करकरिक राजगल पुष्पकेतु भावकेतु एह सब अठ्यासी गृह ये मे जाणिया ॥ जम्बूद्वीपमाहा द्वीपनी वेदिक

जीवाजीवसमे ८४ ॥८॥ नरविरएरायणक । जीवन्वेपुप्फमाणवेळव ८८॥ पद्मासीरगशायमु । नेमव्यापाणुपुब्बीय त्ति ॥८॥ जंबूद्वीपाधिकारादेवेदमपरमाह जम्बूरित्यादिव्यावणरं पद्मसमा अष्टयोजनोच्छ्रयाया चतुर्दशयोपयधोविस्तवाया जंबूद्वीपनगरमाकारकत्साया जगत्या विमध्यूतोच्छ्रितेन पंचधनु शतवि स्तृतेन नानारत्नमयेन जालकटकेनपरिक्षिप्ताया उपरिवेदिकेति पद्मवरवेदिकेत्यर्थ पंचधनु शतविस्तीर्णमवाचक्षेमकिरिम्बोधएकायुक्त देवानां मासमग मन मोहनविविधक्रीडास्थान मुमयतो वनखण्डपतोवि जम्बूद्वीपवत्सण्यवान्तरत्वादेव लवणसमुद्रवक्तव्यतामाह । लवणेपमित्यादि । कच्च नवर पद्मवा धनविष्कम्भ प्रमुखे चक्रवालविष्कम्भ खेनेति समुद्रवेदिकासूत्रं जम्बूवेदिकासूत्रवदभिधेयं येनमस्तावा लवणसमुद्रवक्तव्यतानन्तर धातकीखण्ड म तव्यतां । धायइसंडेत्यादिना । वेदिकासूत्रानेनपश्चेनाह यस्ववायं नवर धातकी खण्डमवरपमपि जम्बूद्वीपलवणसमुद्रमध्य वलयाकृतिं धातकीखण्ड मासिकम् हिमवदादिवर्षधरान् जंबूद्वीपानुसारेण योमयत पूर्वापरविभागेन भरतहेमवतादिवर्षोपिव व्यवस्थाप्य पूर्वापरदिशोर्यत्सवविष्कम्भमध्येमेरुच स्थापयित्वा ऽध्येतव्यं धर्मेणवक्रमेण पुष्करवरद्वीपार्धमपीति तत्र धातकीनां प्रथमविशेषायां सत्यो यत्र समूहरत्ना धातकीखण्ड स्तथुक्तो योद्वीप स

दोरायगला दोपुप्फकेऊ दोन्नायकेऊ ॥ ८८ ॥ जंबूदीवस्सणदीवस्सवेइया दोगाउआइ उडुउच्चत्तेण प० लवणेण समुद्दे दोजोयणसयसहस्साइं चक्कवालविक्खंभेण पण्णत्ते लवणस्सणसमुद्दस्स वेइया दोगाउआइ

कोटसरिखी आठ योजनऊंची ते ऊपरि वली वेगाऊऊंची पांचसे धनुष पिहुली पद्मवरवेदिका कहीछे । नानारत्नमय कहीछे ॥ लवणसमुद्र बेलाख योजन पिहुलपणें चक्रवालमळस तेहनुं पिहुलपणछे एतले पूर्वथी पश्चिमनें कांठें दक्षिणथी उत्तरें बे लाख योजनछे । लवणसमुद्रना कों

धातकीखण्डएवोच्यते यथा दण्डयोगाद्दण्डइति धातकीखण्डवासीद्वीपश्चेति धातकीखण्डद्वीप स्तस्य । पुरस्थिमेति । पौरस्त्यं पूर्वमित्यर्थो यस्यैवविभाग धातकीखण्ड द्वीप पौरस्त्यार्ध पूर्वापरदैर्घ्येण लवणसमुद्रवेदिकातो दक्षिणत उत्तरतश्च धातकीखण्डवेदिकां यावत् गताभ्यां मिषुकारपर्वताभ्यां धातकीखण्डस्य विभक्तत्वादिति तत्र च पंचसयजोयणाणं सहस्समेगंच चौतिविच्छिण्णा कालोयलवणजलसे पुढवितले विच्छिन्नतरओ ॥ १ ॥ दोण्हसुकारनगवराणं मज्झेणमणुपरिट्ठिया तेवडुमाणिदिसमपुव्वमवरपव्विमभरवेयवन्ति ॥ २ ॥ तत्र च मितिवाक्यालंकारे मन्दरस्समेरो रित्येवं धातकीखण्डपूर्वार्धपश्चिमार्धमध्य वे प्रत्येक मेरोमन्तस्तितूभममाचे जंबूद्वीपप्रकरणवत् द्रष्टव्यं ग्रावयेये यातएवाह । एवं जहा जंबूद्दीवेतहेवादि । नवरं वर्षधराविषकृप मायामादिसम तावेव भावनीया पुव्वावरायममज्झे मेरुस्सपुवदाहिणुत्तरओ । वासाइ विभिन्तिवि विदेह वासंपमज्जंभि ॥ १ ॥ भरविवरसठियाइ चउरोसक्खाइंता ई सेताइ [दीर्घतया] पंतोसविस्ताइ दंदयराइ कमेणपुणपुढो ॥ २ ॥ भरहेमुहविक्खंभो छावट्ठिसयाइ चोदसहियाइ । अउवत्ती सेयसयं वारसहियइ मयभाये ॥ ६६१४ भरहरवयसहस्सप्पंचसयमावठंतिसीयाणा । पणवच्चंपसस्यं वावीरओ भरहविक्खंभो ॥ १८५४० चउगुणियभरहवासो [व्यास १२८

उत्तकुरुए पम्हस्स घायईरुक्खेणं दीवे पुरत्थिमद्धेणं मंदरस्स पव्वयस्स उत्तरदाहिणेणं दो वासा पणत्ता य

हवी ऊपरली वदिका थेगाळ कंकपर्वे कही धातकीखंड द्वीपनें पूर्वदिशि मेरुपर्वतथी उत्तरें तथा दक्षिणें बे क्षेत्रजे ते कहेंछे । बहुसम जाव भरत क्षेत्र अनें ऐरवतक्षेत्र ॥ एम जिम जम्बूद्वीप माहें तिम वक्षप्रति कहिवूं जाव ते क्षेत्रनें विषे मनुष्य कमकारना कालमति जोगता विचरेंछे ते कहेंछे भरतक्षेत्र येरवतक्षेत्रें एतलो विशेष कूटशामली वृक्षने बीजो धातकी वृक्षवे महर्धमामा देवताछै वेणुदेवता सुदर्शनदेवता । धातकीखंड

र्मर्थ] हैमवएतवउग्गुणेतरवे [वरिवर्षमित्यर्थ] वरिवाससंवउगुणियं मवाविदेहस्सविक्खंभो ॥ १५१ २१२ ॥ ५ ॥ जवविक्खमोदाहिणदिसा २१२ पवव
उत्तरविपासतिए ॥ जहपुव्वेसतमो तहयवरविविवासार ॥ ६ ॥ सत्तावउरसवड्ढा सत्तावउयाइ महस्समाइ । तिबेमवउसाइं कुरूवमायामवाय
त्ते ॥ विक्खम इति ॥१८०८०। ८२ ।२१२ । मवववसयंतिवी ससवस्सारोयवउयोवामो सोमहमिरीवायामो संवित्तोतंववक्कइ । ८ वासहर १२ गिरी
वक्खारएपमया १२ पुव्वपच्छिमदेसु । वउवीसमउगुणा विक्खंभोवस्सएतज्जा ॥ ८ ॥ कवणगव्वसगसुरकुरु नगासमेयुव्वदीवाय विक्खभोव्येवसमु ववएयवववं
सुरेविम । वक्खार तिविदोवा विप्पुप्पवगवमामवाहोपि वपवत्तवसवड्ढा होपिसमासत्तवीसाम ॥ ११ ॥ मउवहाहोपिसमा सपसत्तरिसवड्ढसव्वाय ।
सोमवसमावपता होवारसहाएमसवार ॥ १२ ॥ सम्मापोविमरइपो विक्खमोव्वेवदुगुणमायामो । सीवासोभोवाय वपाविदुगुणायिविक्खमो ॥ १३ ॥ वन
सुमानोअक । काववरुवकुरुसुरा [पर्वतपरेपुव्वपुष्पवेजरार्मर्थ] नर्पवज्जार तेसुमिद्दीवा उव्वेइवसयजा विक्खमायामपोदुगुणा ॥ १४ ॥ जंबूद्दीपवायेवसेपि
विवपूर जंबूदीपमवरव धातकीवववपूर्वापरभिधापेन याव्वमित्याव ॥ जावदोसुवासेसु मणुये स्यादि ॥ एतस्मापि सूत्रात्परतो जंबूदीप प्रकरवे यन्नाति
व्योतियां सूत्राण्योतानि तानिव धातकीखण्डपुष्करार्धपूर्वापरेषु गमव्वयन्ति [illegible] धातकीखण्डाहोव चन्द्राहोनां मह
स्वाहिति भावय दोपंदाहवहीवे चत्तारिसमावरीसववतोये यायरयउदोपे पारसवसासपूरापत्ति ॥ १ ॥ चन्द्रावामविलेन नयचाहोनामपि [illegible] मसाप्
ततोविमाने मवतारइति जंबूदीपमवरपावमविशेपस्यंमवाव ॥ मवरसिमवादि ॥ मवरवेपसमर्यविशेपप्रत्यर्थं कुरुसूत्रानन्तरं वयकुरुसामवोचेव जंबूत्तेव सु

उसमतुसमा जाव भरहेचेव एरवएचेव एवजहा जंबूद्दीवे तहा एत्यवि भाणियव्वं जाव दोसुवासेसु मणुया छ

रमचेति उत्तंन   एवत् जंबूम्बाने धायरुस्रेपेवत्ति वताधं प्रमाणंप तबो जंबूद्वीपगाख्यभ्यादियत् तयोरेवएवमूने भचाटिपचेव जंबूदोवाश्वियह रुल्वचत
ये ॥ मुदंमचेवेयत्ति ॥ रुवतत्म्यमिति धायरुखंडेदोवेल्मादि पयिमार्धंमवरधं पूर्वार्धवदनुसर्तव्यं भतएवाह ॥ जावछम्बिहंकालमित्यादि ॥ विशेषमाह नवरं
कूडसामलोत्यादि । धातकीपंडपूर्वार्धोत्तरकुरुषु धातकीवृक्षएव रुक्ता महाधातकीवृक्षोपवेतस्यो देयमूने वितीय सुदर्शनसूचाधीत रुवत् प्रियदर्शनोध्येतव्य
ति पूर्वाद्धपश्चिमाद्धमीलनेन धातकीखण्डद्वीपंसम्पूर्णमाश्रित्य विकामर्थं । धायईखंडेचमित्यादिनाह चेमरते पूर्वाद्धपश्चिमाद्धयोर्दक्षिणदिग्भागेतयोर्मोवा

म्निहपिकाल पञ्चणुझवमाणा यिहरति । तजहा नरहेचेव ऐरवएचेव णवर कूडसामलीचेव धायईरुक्खेचेव देवा गरुलेचेय वेणुदेये पियसुदसणेचेव धायइखण्डदीवपच्छिमद्धे मदरस्स पव्वयस्स उत्तरदाहिणे ण दोया सा पणात्ता बहुसमतुल्ला जाव नरहेचेव एरवएचेव जाव छब्बिहपिकाल पञ्चणुब्भवमाणा विहरति । नरहे चेव एरवएचेव णवर कूडसामलीचेव महाधायइरुक्खेचेव देवा गरुलेचेव वेणुदेवे पियदसणेचेव धायईख

द्वीपना पश्चिमार्ध विषें मेरुपर्वतने उत्तरें दक्षिणे ये वर्षक्षेत्र बहुसम जाव माम प्रमाणवी सरिखा एक भरत बीजो ऐरवत जाव तिहांमा मनुष्य ममारामा सुखदुःखमर्ते भोगवे पिरतामारा भावें भरतक्षेत्र तथा एरवतक्षेत्र । एतलो विशेष के तिहां कूटसामलीमामा वृक्ष्छे । बीजो महाधात की वृक्ष्छे । तिहां गरुडदेवता वेणुदेव प्रीतिदर्शनवछे ॥ धातकीखण्डद्वीपना पश्चिमार्धनेविषे येभरतक्षेत्रछे । धातकीखण्डद्वीपने विषें ये भरतक्षेत्र छे ऐरवतक्षेत्र छे । ये हिमवतक्षेत्रछे । य हैरण्यवतक्षेत्र छे । ये हरिवर्षक्षेत्र छे । ये रम्यक्वर्षक्षेत्रछे । ये पूर्वमहाविदेह क्षेत्रछे जिहां सदैव ।

रिखेषं सर्वभरतादीनामरूपमागुतं । दोदेवकुरुमहादुमत्ति । दो कूटथाव्मलीपृषाविलयं दोतमाखिदेवो देपुदेवावित्ययं । दोउत्तरकुरुमहादुमत्ति धातकीछमहाधातकीछमाविति पदेवो सुदमनमिवदगमाविति सुवडिमवदादय पठवर्षधरपवता गमदापातिविकटापातिमादयवत् पर्योयाश्रतवेताढ्याव ववियासिदातिमभासारूपमनामदेवानां दयेमदमेन सहिता ममेवदोडादुषा । दोमाखवंतत्ति । मासवन्तादुत्तरकुरुत पूर्वदिग्व

रूपच्छिमरु मदरस्सपव्वयस्स घायइसंडे ण दीवे दोजरहाइ दोएरवयाइ दोहिमवताइ दोहेरणवयाइ दो हरियासाइ दोरम्मगवासाइ दोपुव्वविदेहाइ दोअवरविदेहाइ दोदेवकुराउ दोदेवकुरुमहदुमा दोदेवकुरुमहदुमावासी देवा दोउत्तरकुराउ दोउत्तरकुरुमहदुमाउ दोउत्तरकुरुमहदुमावासी देवा दोचुल्लहिमवता दोमहाहिमवता दोनिसहा दोनीलवता दोरुप्पी दोसिहरी दोसद्दावई दोसद्दावईवासी साइदेवा दोवियडावई दोवि

[चौथो धारोवे । वे पश्चिममहाविदेहवे । वे देवकुरुवे । वे देवकुरुमार्मे मोटा वृक्ष रत्नमय शास्वतावे । वे देवकुरुमोटावृक्षना वासी देवतावे वसी तेज धातकीखंडमां वे उत्तरकुरुवे युगलियाना । तिहां उत्तरकुरुनामा मोटा वृक्षवे । वे उत्तरकुरुमोटावृक्षना रहनार देवतावे । वे लघु हिमवतपर्वतवे । वे मोटाहिमवतपर्वतवे । वे निषधपर्वतवे । वे नीलवतपर्वतवे । वे रूपीपर्वतवे । वे शिखरीपर्वतवे । वे शब्दापातीना मा वृत्तवैताढ्यवे । वे शब्दापाती वैताढ्यनां वासी स्वातिदेवतावे । वे विकटापाती वैताढ्यवे । वे विकटापातीना रहनार प्रभासनामा देवता वे । वे गंधापातीना वासी अरुणनामा देवता वे । वे मालवतपर्याय नामा वृत्तवैताढ्य पर्वतवे । वे मालवंतपर्यायनां वासी पद्मनामा दे

तिमो गजदन्तयोस्र मातोमद्रगामवनतवेदिका विजयेभ्य परो मोतोत्तरकूलवर्त्तिनो दक्षिणोत्तरायतो चित्रकूटो वक्षस्कारपर्वतो ततोविजयेनास्त रणया विजयेनवाम्तरिता वक्षो तवेवाग्यो पुनरुवेनाम्नापितिपुन पूर्ववनमुखवेदिकाविजयाम्मा मवांम् मोताप्रचिपकूलवर्त्तीनि तथैव त्रिकूटादोना च सारिव्याणि तत सोमनसो देवकुरुपूर्वदिग्वर्त्तिनो गजदन्तको ततो गजदन्तकावेव देवकुरुपश्चम्भागवर्त्तिनो विद्युत्प्रभो ततोमद्रशालवनतवेदिका विजयेभ्य परत मतवेनाडावत्यादीनां चत्वारि दयाभियोतोदादक्षिणकूलवर्त्तीनि पुनरन्यानि पश्चिमवनमुखवेदिकाविजयाभ्या पूवत क्रमेण तथैव

यक्षावईयासी पन्नासीदेया दोगधावइवासी श्चरणादेवा दोमालवतपरियागा दोमालवतपरियागायासी पउ मादेया दोमालयता दोचित्तकूडा दोपउमकूडा दोनलिनकूडा दोएगसेला दोतिकूडा दोवेसमणकूडा दो श्च जणा दोमातजणा दोसोमणसा दोयिज्जुप्पन्ना दोश्चकावई दोपम्हावइ दोश्चासीविसा दोसुहावहा दोचद

यसाबे । ये मालयतनामा गजदंतपर्वतबे । ये चित्रकूट पर्वतबे । ये पदमकूट पवतबे । ये नलिनकूट पवतबे । ये एकशैल पर्वतबे । ये त्रिकू ट पयतबे । ये वैसमणकूटबे ॥ ये अंजनपर्वतबे । ये मातजनपर्वतबे । देवकुरुनी पूर्वदिशियें सौमनस गजदंताकार पर्वतबे । देवकुरुपासे ये विद्युत्प्रमबे । तेहनी आगलि ये वयावती नगरीबे । ये पद्मावती नगरीबे । ये आशीविषा नगरीबे । ये सुखावहा नगरीबे एम च्यारपुरी सीतोदा नदीमें श्रीमयें पासेंबे । तिहांथी आगलि पूर्वे ये चन्द्रपर्वतबे । ये सूर्य पर्वतबे । ये नागपर्वतबे । ये देवपर्वतबे । सियारपछी बे ग धमादन गजदंताबे । उत्तरकुरुने पश्चिमभागें एहसर्व धातकीखंडनां पूर्वार्द्ध अने पश्चिमार्द्ध मा के तेमाटें बेबे कह्या । ये इषुकार धातकीख

ह्रपवताद्दोर्मापस्लारिद्याभि ततोगन्धमादमादुत्तरकुपयिमभागवर्त्तिनो भजवद्गतवाविति पतेधातकीपण्डस्य पूर्व्वार्द्धपयिमार्द्धे च भवन्तीति पोद्दापुका
शिति इपुकारो दक्षिणोत्तरयोर्द्दिंशो धातकीपण्डविभागकारिणाविति । दोचुल्लहिमवन्तकूडाइत्यादि । हिमवदादय पटवर्षधरपर्व्वता सेपुये देवे पू
टे बनूदीपमनरचे मभिहिते ते पवतानांद्विगुणस्ता देवेकयो बातामिवर्षधरायाद्विगुणत्वात् पद्मादिद्रहानपि द्विगुणा स्तदेव्योप्येवमिति पद्मद्रयानां गङ्गा
दिमहानदीनां पूर्वपयिमार्द्धापेचया द्विगुणत्वात् तत्प्रपातकुण्डानपि बोदोस्तु रिव्वाद । दोगङ्गप्पवायदहेत्यादि दोरोद्दिवाभो । इत्यादी गणधिकारे गङ्गा

पञ्चया दोसूरपञ्चया दोणागपञ्चया दोदेवपञ्चया दोगधमायणा दोउसुगारपञ्चया दोचुल्लहिमवतकूडा दोवेस
मणकूडा दोमहाहिमवतकूडा दोवेरुलियकूडा दोनिसहकूडा दोरुयगकूडा दोनीलवतकूडा दोउवदसणकूडा
दोरुप्पिकूडा दोमणिकचणकूडा दोसिहरिकूडा दोतिगिच्छिकूडा दोपउमद्दहा दोपउमद्दहवासिणीउ देवीउ

ङ्गना दक्षिणउत्तर भाग जीणोवे । ये लघुहिमवंत पर्वतना कूटवे ये पर्वतना येकूट एम सर्वत्र जाणिवा । वे वैश्रमणकूट । बे महाहिमवत पर्व
तना कूट । ये वैडूर्यकूट । ये निषधपर्वतना कूट ते शिखरवे । ये रुचकना कूट । बे नीलवंतपर्वतना कूटवे । वे उपदर्शनकूट । वे रूप्पकूट
वे मणिकंचनकूट । वे शिखरीनां कूट । वे तिगिच्छिकूट ॥ एम बे पद्मद्रह वे तिमणा चेत्रमांहे । तिहा ये पद्मद्रहनी वासी रहनारी श्री देवी
वे । ये महापद्मद्रह वे । तिहां महापद्मद्रहनी रहनारी ये ह्री नामें देवीवे । एम जाव वेपुंडरीक द्रहवे । तिहा बे पुंडरीक द्रहनी रहनारी
लक्ष्मी देवतावे । ये गंगाप्रपात द्रहवे । जिहा ऊंचाथी गंगानो प्रवाहपडेवे एम जाव बे रक्तवती प्रपात द्रहवे । बे रोहितानदी एम जाव रूप्प

दिमहानदीनां मदृपिव्विलनाम अंशुद्वीपप्रकरणोक्तम । महाहिमवतामावासवरपर्वयो पोमहापउमद्दहाओ दोमहानदीपी पवहंतोसमादि । सूत्रक्रमस्य श्रवणात् तथहि रागितादय एवाद्योऽयुक्त इति विषकूटपद्मकूटवक्षस्कारपर्वतयो रन्तरे शीतावर्षधरपर्यंतनितम्बवर्तित्वात् ग्राहवतीकुण्डादिनिर्गारणविनिर्गता पञ्चविंशतिनदीसहस्रपरिवारा शीताधियायिनी सुकच्छमहाकच्छविजयो विभाजकारिणी ग्राहवतीनदी एवंमासोगविजयोर्मध्ये ऽस्मारपर्वतयो विजयया एतत्क्रमेण प्रदक्षिणया द्रहवत्यग्रतरमसो बोध्या एतासु च पूर्ववदिति पङ्कवतोऽत्र वेगवतीति ग्रन्थान्तरे दृश्यते धारोदेत्र चागहेत्वम्मय सिंहस्रोतात्सत्र शीतस्रोताश्चपरत्र फेनमालिनी गम्भीरमालिनी चेति इह व्यत्ययः दृश्यत इति माल्यवत्पदगतमन्दरासपमाभ्यामा

सिरिह दोमहापउमद्दहा दोमहापउमद्दहवासिणीहिरीहदेवीह एवजाव दोपुण्डरीयद्दहा दोपुण्डरीयद्दहवासिणीह लच्छीह देवीह दोगंगप्पयायद्दहा जाव दोरत्तवईपवायद्दहा दोरोहियाह जाव दोरूप्पकूला दोगाहावईह दोदहवईह दोपंकवईह दोतत्तजलाह दोमत्तजलाह दोउम्मत्तजलाह दोखीरोयाह दोसीहसोयाह दोअंतोवाहिणीह दोउम्मिमालिणीह दोफेणमालिणीह दोगम्भीरमालिणीह दोकच्छा दोसुकच्छा दोमहा

पूना येमदी । ये ग्राहवतीनदी । ये द्रहवती नदी । एह सर्वे पवतथी नीकली विजयमां आवीये । ये पङ्कवती नदी । ये तप्तजला । ये उन्मत्तजला नदी । ये क्षारोदा नदी । ये सिंहस्रोता नदी । ये अन्तर्वाहिनी नदी । ये ऊर्मिमालिनी । ये फेनमालिनी नदी । ये गम्भीरमालिनी नदी ॥ य कच्छ विजय । सुकच्छ विजय । महाकच्छ विजय । ये महाविदेहे ये धातकीखण्डमां दो एकेकमां बत्तीस विजयवे थय चोसठ विजयवे

रमणच्यारोमि दानिमविजयधेवगुगलामि मरचिमनोयगम्तम्यामोति तथा कच्छादिपु कृमिपचेमादि पुरीषांगुमसामि दाभिपस्वगम्ताव्यामोति मद्र

कच्छा दोकच्छगावई दोआवत्ता दोमगलावत्ता दोपुस्कला दोपुस्कलावई दोवच्छा दोसुवच्छा दोमहाव च्छा दोवच्छगावई दोरम्मा दोरम्मगा दोरमणिजा दोमगलावई दोपम्हा दोसुपम्हा दोमहापम्हा दोप म्हगावई दोसखा दोनलिणा दोकुमुदा दोनलिणावई दोवप्पा दोसुवप्पा दोमहावप्पा दोवप्पगावई दो वग्गु दोसुवग्गु दोगंधिला दोगंधिलावई दोखेमाउ दोखेमपुराउ दोरिठाउ दोरिठपुराउ दोखग्गीउ दो मजूसाउ दोओसहीउ दोपुंडरीगिणीउ दोसुसीमाउ दोकुंडलाउ दोअपराइयाउ दोपहंकराउ दोअंकाव

तेहना नाम वे चोंने एकेकविजयमा येवे नगरी छे। वे कच्छगावती महाविदेहमाहे। वे आवर्ता वे मगलावर्ता। वे पुष्कला। वे पुष्कलावती। वे वच्छा। सुवच्छा। महावच्छा। वच्छगावती। रम्मा। रम्मगा। रमणिज्जा। मगलावती। पद्मा। सुपम्हा। महापम्हा। पम्हगाव ती। सखा। नलिना। कुमुदा। नलिनावती। वे वप्पा विजय। व सुवप्पा विजय। वे महावप्पा विजय। वे वप्पगावती विजय। वे व ग्गु। सुवग्गु। गंधिला विजय। गंधिलावती विजय। खेमा विजय। खेमपुरा विजय। रिष्ट विजय। रिष्टपुर विजय। वे खड्गी विजय वे मंजूषा विजय। वे ओषधी विजय। वे पुंडरीकिणी विजय। वे सुसीमा विजय। वेकुंडला विजय। वे अपराजिता विजय। वेप्रभंकरा विजय। वे अंकावती विजय। वे पम्हावती विजय। व शुभा विजय। वे रत्नसचया विजय। वे आसपुरा विजय। वे सिंहपुरी विजय। वे

गामाद्दोनि मेरौवखा।जिनानि भूमोपमहनार्म मेघवशुयमंमिदोषिरम्याइ चंदपसोमपसाद पंडगपरिमडियसिहरति वपनात् मेवोंडिसेंवपनामोडिस मिति गिरायतस्रा मेरौपरुमयवनमध्ये चूलिकाया कृमेणपूर्वादिपु भवयावे पडमवपंसिपवडरीमिलामोपवसुविदिसासुषूमाए चउओयपूसियाभो सम्म जपवंयनमयाया । १ । पपसयामामाभो मज्झेदोहत्तपवर्ददाभो चंदवसंठियाभो कुमसोयरहारमोराभोत्ति । २ । मन्दरीमेरो चूलिका।गिपरविगी प' मरूपमम्मा मेरुमठपरिघूना जिनभवणविमूसियाउवोसुया बारसमझयघवरो मूलेमम्मुवरिदुंदायत्ति । १ । वेदिभासूर्त जंबूडीपवत् घातवोखंडानंत

स्त्रे दोपम्हायईउ दोसुन्नाउ दोरयणसचयाउ दोआसपुराउ दोसीहपुराउ दोमहापुराउ दोयिजयपुराउ दोअयराजियाउ दोअयराउ दोअसोयाउ दोयिगयसोगाउ दोयिजयाउ दोवेजयतीउ दोजयतीउ दोअप राजियाउ दोचक्कपुराउ दोखग्गपुराउ दोअवज्झाउ दोअउज्झाउ दोभद्दसालवणा दोणदणयणा दोसोमण सवणा दोपण्डगयणा दोपाण्डुकयलसिलाउ दोअतिपाण्डुकवलसिलाउ दोरत्तकवलसिलाउ दोअइरत्तकवलसि

महापुरी। ये यिजयपुरी। ये मपराजिता विजय। ये मवराया विजय। येमगोका विजय। ये विगतशोका यिजय। ये विजया । ये वैजयती विजय । ये जयंती यिजय ये मपराजिता। ये चक्रपुरा विजय । ये खड्गपुरा विजय । ये मवध्या विजय । ये मयोध्या ॥ एम सर्व यिजय येवे जाणवी ॥ तिहा ये मेरुपयतवे हेमाटे ये भद्रसालयन धरतीवे । ये नदनवन मेरुसानें मध्येवे । ये सोमनसवन मरुसाइ पवतनें मध्येवे । ये पांडकवम मेरुनें शिखरें वे । ये एक वनमा च्यारच्यार शिलावे तीर्थंकरमा जन्माभिषेक करवामी पांडुकवसा शिलावे । ये मतिपांडुकयसा शिलावे । ये रक्तकयसा शि

दंकालोद समुद्रोमवतीति तदवम्यतामाह । कालोदेत्यादि । अव्यम् कालोदागन्तर मनन्तरत्वादेवपुष्करद्वोपस्य पूर्वार्धपश्चार्धतउभयप्रकारत्वात्पा पु
ष्करेत्यादि चोत्पत्तिरेवप्रधानात्यतिदेशस्मयार्थं सुममएव नवरं पूर्वार्धापराद्धता घातकीषण्डवदिषुकाराभ्यामसमन्तरया भरतादोनांचायामादिसमतै
वं भावनीया एगयालीससहस्सा पंचेवसमाइवतिलक्खोवा तेवत्तरमेससर्य मुहविक्खंभोमरहवासे । ४१५७८१०१ । २१२ । पणहिसहस्साइं चत्तारिसयाइंव
तिवायाला तेरसचेवयसंसा माझिरमोमरहविक्खंभो ६५४४६ । १३ । २१२ । पणगुणियमरवासो [विस्तरत्वयं] हेमवएतंवउगुणपवदस [हरिवर्षमि

लाओ दोमदरा दोमदरचूलियाओ घायइसण्डस्सण दीवस्स वेइया दोगाउयाइ उड्ढ उच्चत्तेण पन्नत्ता कालोद
स्सण समुद्दस्स वेइया दोगाउयाइ उड्ढ उच्चत्तेण पन्नत्ता पुक्खरवरदीवड्ढपुरच्छिमद्धेण मदरस्स पव्वयस्स
उत्तरदाहिणेण दोवासा पन्नत्ता बहुसमतुल्ला जाव भरहेचेव एरवएचेव जाव दोकुराओ पन्नत्ताओ देवकुरा
चेव उत्तरकुराचेव तत्थण दो महति महालया महद्दुमा पन्नत्ता तजहा कूडसामलीचेव पउमरुक्खेचेव देवा

सार्दे ॥ बे घाति रत्नमया शिलाढे ॥ बे मेरुनी चूलिकाढे ॥ धातकीखण्डनामा द्वीपनी वेदिका काठरूप बेगाउ ऊंची ऊंचपणें कही ॥ कालोद
धि समुद्रनी वेदिका बे गाउनी ऊंचपणें कही ॥ पुष्करार्धद्वीपथी पूर्वदिशि मेरुपर्वतथी उत्तरदक्षिणें बे वर्ष क्षेत्र कहियां बहुसम जाव भरतक्षेत्र
तथा बीजो ऐरवत क्षेत्र ॥ तिमज यावत् धातकीखण्डनी परें पुष्करार्धमां पणि जाणिवा ॥ जाव बे देवकुरुक्षेत्र ॥ देवकुरु तथा बीजो उत्तरकुरु ॥ तिहा
ते दयकुरुमां येमोटामहालयर्णे मोटावृक्षकहियाढे तेकहेछे कूटसामलीवृक्ष बीजोपदमवृक्ष तिहांदेवतावसेछे गरुडदेवता वेणुदेव बीजो पदमदेव

सय] हरिवासंवउगुणियं महाविदेहस्सविक्खंभो ॥ एवमेरावतादीनिसंतम्मासि ससत्तरिसयाइं चोइसहियाइं ससरसमक्खा चोइसविक्खंभो मइयभा गापपरिमेसा ॥ १ । १० ७३१४ । ८ । २८ ॥ वसारिसक्खत्तीस सहस्सानवमयासबोलहिया [एयाणुबजोवा] ४३६८१६ । दीपवगिरीयायामो संखित्तो संधणुपुढ्यं सीसममममानवता दोहावीसंमवेसयसक्खा ॥ १ ॥ तेवासोममक्खा मउआवोसावदोविस्सया ॥ २ ४३२१८ सोलसियंसयमेगं सम्मोससक्ख मामसयमक्खा विजुप्पभोगमोगं भमाययबोवेवदोशाभो ॥ १६२९११६ महाहुमाजबूदीपवसमहाडुमतुल्या' तथा भायवरमिवीये जोविक्खंभावबोहसनगाणं माडुगुणानायम्मा पुस्करवेनगाणंतु ॥ १ ॥ मासहराबक्खारासवनरकुडावचायसीवाह दोधिंशीवेदुगुणी बित्तरभोवस्सएतमा ॥ २ ॥ ससुयारवमगकंचण वि

गरुलेचेय येणुदेवे पउमेचेव जाय छव्हिहपि काल पञ्चणुब्भयमाणा विहरति पुस्करवरदीवढ्ढपञ्चत्थिमद्धेण मदरस्स पव्वयस्स उत्तरदाहिणेण दोवासा पन्नत्ता तंजहा तहेवणाणत्त कूडसामलीचेव महापउमरुक्खेचेव देवागरुलेचेव येणुदेवे पुंडरीएचेव पुस्करवरदीवढ्ढेण दोभरहाइ दोएरययाइ जाव दोमंदरा दोमंदरचूलियाओ पुस्करवरस्सणं दीवस्स वेइया दोगाउयाइ उड्ढं उच्चत्तेणं पन्नत्ता सव्वेसिं पिणं दीवसमुद्दाणं वेइयाओ

पायत् तिहासूधी जाणवूं यस्मारानांसुरकुरुजोगवेवें सधर्संवेत्रें मलीने रहेवें पुष्करवरद्वीपपश्चिमें मेरुपर्वतथी उत्तरदक्षिणदिशियेंयबेक्षेत्रकहियां से कयेंये तिमजाणवूं पूयमी पर्रें एतलो विशेष जे वृक्ष कूटसामली बीजो पदम देवता गरुलनामें येणुदेव बीजो पुंडरीक ॥ पुष्करवरद्वीपमां ये भरतक्षेत्र ये एरवतक्षेत्र एम यावत् ये मेरुपर्वत ये मेरुपर्वतनी चूलिका ॥ पुष्करवरद्वीपमां वेदिका येगाऊ ऊंची ऊंचपणें कही ॥ एम सघला द्वीप समुद्रनी

सविविक्तायव्यइयेयतुा दोवेदोवेतुसा तुमेदसाअेवयेमंतुति ॥ २ ॥ पुष्करवरद्वोपवेदिकामरूपयामंतर ग्रेपद्वोपसमुद्रवेदिकामरूपयामाद ॥ सव्वेसिपिपवमि त्यादि॥ वष्व्य एतेष द्वोपसमुद्रा इन्द्राणामुत्पातपर्वतायया इतोंद्रवक्रम्पतामाद ॥ दोपसुरेत्यादि पसुएचेवेत्येतदत सूत्र सुगम ॥ नवरं पसुरादोनोदशानां भवनपतिनिकायानां मेम्पेपया दक्षिणोत्तरदिग्वयाविवत्नेन दिविषत्वादिंद्रतिरिन्द्रा स्वप चमरोदाभिधान्वो वसो खोदोप्य इत्येवं सवंत्र एवमन्तप

दोगाउयाइ उद्ध उच्चत्तेण पन्नताठ दोअसुरकुमारिंदा पन्नत्ता चमरेचेव वलीचेय दोनागकुमारिंदा पन्नत्ता धरणेचेव भूयाणदेचेय दोसुवण्णकुमारिंदा पन्नत्ता तजहा वेणुदेवेचेय वेणुदालीचेव दोविज्जुकुमारिंदा प० तजहा हरिच्चेय हरिस्सहेचेय दोअग्गिकुमारिंदा पन्नत्ता तजहा अग्गिसिहेचेय अग्गिमाणवेचेव दोदीव कुमारिंदा पन्नत्ता तजहा पुन्नेचेय वसिठेचेव दोउदधिकुमारिंदा पन्नत्ता तजहा जलकतेचेय जलप्पभेचेव दोदिसाकुमारिंदा पन्नत्ता तजहा अमियगईचेव अमियवाहणेचेव दोवाउकुमारिंदा पन्नत्ता तजहा वेलवे

वेदिका परना कोटकागरा विना ते वेदिका कहिवी वे गाऊ लगी ऊचपणें वधी ॥ एह सघला द्वीपसमुद्र उत्पाद पर्वत इंद्र आश्रयीनें तेमांटें इंद्रनो अधिकार आव्यों ते कहेछे ॥ वे असुरकुमारना इंद्र छे तकहेछे ॥ चमरेंद्र बलेंद्र । वे नागकुमारजातिना इंद्र धरणेंद्र अने भूतानेंद्र । वे सुपर्ण कुमारजातिना इंद्र कहिया वेणुदेव अने वेणुदाली । वे विद्युतकुमारजातिना इंद्र कहिया हरिकांत हरिसह । वे अग्निकुमारना इंद्रछे तेकहेछे अ ग्निशिख अग्निमाणव ॥ वे द्वीपकुमारना इंद्र पूर्ण अनें वशिष्ट ॥ वे उदधिकुमारेंद्र तेकहेछे जलकांत बीजो जलप्रभ ॥ वे दिशिकुमारेंद्र अमितगती

चेव पन्नजणेचेव दोपणियकुमारिंदा पन्नत्ता तंजहा घोसेचेव महाघोसेचेव दोपिसायइंदा पन्नत्ता तंजहा कालेचेव महाकालेचेव दोभूयइंदा पन्नत्ता तंजहा सुरूवेचेव पडिरूवेचेव दोजक्खिंदा पन्नत्ता तंजहा पुण्णभद्देचेव माणिभद्देचेव दोरक्खसिंदा पन्नत्ता तंजहा भीमेचेव महाभीमेचेव दोकिन्नरिंदा पन्नत्ता तंजहा किन्नरेचेव किंपुरिसेचेव दोकिंपुरिसिंदा पन्नत्ता तंजहा सप्पुरिसेचेव महापुरिसेचेव दोमहोरगिंदा पन्नत्ता तंजहा अइकायेचेव महाकायेचेव दोगंधव्विंदा पन्नत्ता तंजहा गीयरईचेव गीयजसेचेव दोअणपन्निंदा पन्नत्ता तंजहा संनिहिएचेव समाणेचेव दोपणपन्निंदा पन्नत्ता तंजहा धाएचेव विधाएचेव दोइसिवाइंदा

बीजो अमितवाहन ॥ ए वायुकुमारनामा भवनपतीना इंद्र कहिया ते कहेछे वलंब अनें प्रभंजन ॥ ए स्तनितकुमारेंद्र घोष महाघोष ॥ एह वीस भवनपति निकायनां इंद्र आखिया दश निकायना मलीनें ॥ हिवें व्यंतरनिकायना आठइंद्र कहेछे । ए पिशाचना इंद्र कहिया काल अनें महाकाल ॥ ए भूतनें सुरूप अनें बीजो प्रतिरूप ॥ ए यक्षना इंद्र पूर्णभद्र बीजो माणिभद्र ॥ ए राक्षसना इंद्र भीम बीजो महाभीम ॥ ए किंनरेंद्र बे तेकहेछे किंनर किंपुरुष ॥ ए किंपुरुषना इंद्रबे तेकहेछे सुपुरुष अनें महापुरुष ॥ ए महोरगना इंद्र कहिया तेकहेछे ॥ अतिकाय तथा बीजो महाकाय ॥ ए गंधर्वना इंद्रबे गीतरती बीजो गीतयशा ॥ वली बीजी आठ व्यंतरनी जातिछे इहांथी दश अणपन्नदेठी बे अणपन्नी निकायना इंद्र ते कहेछे । सन्निहित समाण ॥ ए पणपन्नी निकायना इंद्रबे । धाती बीजो विधाती ॥ ऋषिवाय निकायना इंद्रबे । इसी इसिवासी

चामरनिकाया नां द्विगुणत्वात् पाठयेन्द्रा तथा भवपविकादीनामष्टानामेवं व्यंतर विशेषनिकायानां द्विगुणत्वात् षोडश्येति ज्योतिष्कानांस्वसंख्यातत्व
श्चसूर्यत्वपि जातिमात्राश्रयणात् चावेवचंद्र सूर्याख्या विंद्रावुक्तो सौधर्मादिकल्पामान्तु दशेन्द्रा इत्येवंसर्वेपि चतुःषष्टिरिति देवाधिकारात्सन्निवासभूतविमा

पन्नत्ता तजहा इसिस्रेय इसियालेचेव दोभूयवाइंदा पन्नत्ता तजहा ईसरेचेय महेसरेचेय दोकंदिदा प०
तजहा सुवत्येचेय विसालेचेव दोमहाकंदिदा पन्नत्ता तजहा हासेचेय हासरईचेय दोकुम्भंडिदा पन्नत्ता
तजहा सेएचेय महासेएचेव दोपयंगिदा पन्नत्ता तजहा पयएचेय पयगयईचेव जोइसियाण देयाण दो
इंदा पन्नत्ता तजहा चंदेचेव सूरेचेय सोहम्मीसाणेसुण कप्पेसु दोइंदा पन्नत्ता तजहा सक्केचेव ईसाणेचेय
एय सणकुमारमाहिंदेसु कप्पेसु दोइंदा पन्नत्ता तजहा सणकुमारेचेय माहिंदेचेय बंभलोयलंतगेदोइंदा

ये भूतवादे निकायना इन्द्रकहिया ते कहेछे । प्रथम बीजो महेश्वर ॥ ये कंदी निकायना इन्द्र ते कहेछे । सुवच्छ बीजो विशाल ॥ ये महाकंदी नि
कायना इन्द्र कहिया ते कहेछे । हास तथा बीजो हासरती ॥ ये कुम्भड निकायना इन्द्र कहिया ॥ श्वेत महाश्वेत ॥ ये पतगेंद्र कहिया पतग प
तगपती ॥ एह सोलह व्यंतरना इन्द्र कहिया सर्वमिली बतीस थया ॥ ज्योतिषी देवताना बे इन्द्र कहिया ते कहेछे चंद्रमा बीजो सूर्य ॥ सौधर्म
प्रथम देवलोक बीजो इशान देवलोक तिहां बे इन्द्र ते कहेछे सक्रेंद्र ईशानेंद्र ॥ इमज बे देवलोक सनत्कुमार माहेंद्रे बे इन्द्र कहिया सनत्कुमारेंद्र
तथा बीजो माहेंद्र ॥ पिना बोलमांहें बे देवलोक एकठा कहिया ॥ ब्रम्हदेवलोक पांचमु लांतक छट्ठुं तिहां बे इन्द्र कहिया ब्रम्हेंद्र बीजो लांतकेंद्र

नपक्षप्ततामाह । महामृहेत्यादि । बंध्य नवरं हारिद्राविपोतानि क्रमयाय सौधर्मादिविमानवर्णविषयो यथा सौधर्मेशानयो पञ्चवर्णानि ततो द्वयोरक्त
ष्मानि पुनर्ध्यारक्तपीतानि ततोद्वयो' ग्रहसहस्राराभिधानयो पीतशुक्लानि तत ब्रह्माभ्वेत्याह । सौधर्मेषवका एवगवाचीवआसहस्रारो दोदोउ
प्राक्ष्या तेषपरपद्गरोयाइ ति । देवाधिकारादेव विमानकानुपातिनो तद्वर्णवनामाह । मेविज्ज मायभित्यादि । पूर्ववत् व्याख्येयमिति । विमानवर्ण

पन्नत्ता तजहा यन्नेचेव लतएचेव महासुक्कसहस्सारेसुण कप्पेसु दोइदा पन्नत्ता तजहा महासुक्केचेव सह
स्सारेचेव आणयपाणयारणअच्चुतेसुण कप्पेसु दोइदा पन्नत्ता तजहा पाणएचेव अच्चुएचेव महासुक्कसहस्सा
रेसुण कप्पेसु विमाणादुवणा पन्नत्ता तजहा हालिद्दाचेव सुक्किल्लाचेव गेविज्जगाण देवाण दोरयणीउ

महाशुक्र सातमुं सहस्रार आठमुं देवलोक तेहमां वे इंद्र कह्या ते कहेछे महाशुक्रेंद्र बीजो सहस्रारेंद्र आनत नवमुं प्राणत दशमुं आरण इग्या
रमुं अच्युत बारमुं एह च्यारदेवलोकमध्ये बे इंद्र कह्या तेकहेछे । प्राणतेंद्र नवमा दशमामों इंद्र अच्युतेंद्र इग्यारमो बारमोनो इंद्र ॥ देवतानो
अधिकार भाव्यामाटें विमाननो अधिकार कहेछे ॥ महाशुक्र सातमु सहस्रार आठमु देवलोक एह बे देवलोकने विषे विमान बे वर्णना कह्या
पीलावर्णनां तथा उजला श्वेतवर्णना ॥ इहा क्रम एहवोछे । सौधर्मईशान देवलोकें पांच वर्णना विमान सनत्कुमार माहेंद्र देवलोकें रातानी
ला पुनह तथा सातमें काला नीला नवग्रैवेयकना विमान तथा पांच अनुत्तर विमान एक उज्वलवर्णछे ॥ नवग्रैवेयकना देवतानी देहायनी का
या ऊंचपणमी कहो ॥ इति बीजाठाणामो त्रीजोउद्देशो पूरोथयो ॥ ३ ॥ हिवे काल ते अजीव पणि जीवप्रायपोडे अजीव जेपुद्गल

प्रमोद देवचमधान ॥ २ ॥ समभूतोमेऽयम मार्गं वचुमारभते प्रस्तव जीवाजीवचतायतामतिवद्यम्य पूर्वप्रस्तावे सम्बन्ध पूर्वस्मिन् दि उत्तरत्रैवमत्र उत्तरत्र मरजीवाजीवामवमितिवाण मम्बेनमयमयेमायातम्यारेयमम्येमानि पञ्चविंशतिराशिसूत्राणि ॥ समयेत्यादि ॥ एर्वावान प्रस्तुतार्थमस्य पूर्व जीवविमेघावानुवत्तमयपोधमीभिहित इतत् सर्वाधिकारादेव ममयादिम्मितिमयवोधमौ जीवाजीव सम्बन्धो जीवाजीवतये वमधिकारमेवेभोत्पत्तति । तत्र मयीवासममायाखामाय परमसूक्ष्मो अभीयो निरवयव उत्पसपभयतम्यतिमेदाघुदाहरणो पवचित समय स्वासया गौतादि विरचवा वहवा वहरवमित्याद ॥ समयारवाम्याधि ॥ इति मन्दपदयमेवा मन्दोविवन्धे तथा अर्थपवावसममसमुदयाभिवा भावलिवा ग्रस समयवावमानम्य घटपद्मामनुत्तरविमतनममागमूता इति तवममया इति वा भावलिका इतिवा सत्वामवगु तदविगानेन जीवाइतिव जीवपर्यायत्वात्

उद्द उन्नेग पन्नत्ता ॥ तइच्चोउद्देसो ॥ ३ ॥ समयाइवा आवलियाइवा जीयाइवा अजीवा

गइने तिपनिनावें वायपीरे समयपी माठी पुदगल तथा जीव सागरोपमतांई प्रकरयामनें मकाराये रहे तेफालमीय । अजीव येमें मायितदें से मांहे परणायामो पड कामभागमी पभिमार कहियो ॥ मयमो नाहींकाल तेह समय कहियें । समयपी मोटो कालमान ते मावलिका काल म संख्यातसमयनो । एह काल जीवाश्रितमाटें जीव कहिय अजीव पुग्गलाश्रितमाटे अजीवपणि होय । आणापाणू त मासोस्वासमो काल । मा भोगाम एकपो प्राव प्राव मातें एक पोव पाय । एहनें जीवाश्रितपणा माटें जीयकालज अजीव तेमाटें अजीव तेमाटें विजभेद कहिया एव मल्पासमाएरूप । सव मातपोवमो पाय । एहनें एमज जीवकहियें । अजीवपणि कहियें । एम मुहूर्तयेपर्णीनो तीनहमार मातसे तिहो

पर्यायपर्यायविशेष कर्मविषभेदात् तथा अजीवानां पुद्गलादीनां पर्यायस्ता इत्यीवादइति चकारोसमुच्चयार्थो दीर्घताच प्राकृतत्वात् प्रोच्यते अभिधीयतइ
ति मनोपाश्चिन्तिरिक्त समयादय तथाहि जीवाजीवानां सादिसपर्यवसानादिभेदा या स्थिति स्तश्रेदा समयादय साच तयो धर्मधर्मिणोनात्यंत
भेदा नस्यन्तभेदेहि विप्रकृष्टधर्मसमायोपलब्धो प्रतिनियतधर्मधर्मिणि विपर्यय संयोगस्या तद्रूपेणोपि तथाभेदविशेषात् छद्मस्थ यदा कायिकरिततवत
पुन मागधविप्ररविवरान्तरत विमपिपलपमति तदा विनिमपताचा विना वधाने स्वयं प्रतिनियतधर्म्यविषयसंयम इति अभेदेपि सर्वथा संयमात्
त्पत्तिरेव गुणभ्यवच्यतएव तथापियजीवत्वादिति इत्यमेसगवा यथा जीवाइतिवेत्यापुत्त इत्य समयावलिकासमयार्थजयजीवाजि इत्यामत्कतथा भ
वना हिसामवावतारो इत्य एव मुत्तरसूत्राण्यपि नेयानि विशेषस्तु वक्ष्यामइति। आणापाणूइत्यादि। आनप्राणाविच्छ्वाससनि श्वासकाल संख्याता
वलिकासमाय आणच उच्छ्वासनिश्वासकालयुक्तो पर्योच्छ्वासनिश्वासे एसपाणत्तिवुच्चइ ॥ १ ॥ तथा स्तोका सप्तोच्छ्वासनिश्वासप्रमाणा
लवा संख्यातप्रायसलवा सप्तस्तोकप्रमाणा लवा एवमिति यथायोगमेसूत्रद्वये जीवाइति यथा अजीवा इतिच प्रोच्यते इत्यधीत मेवं सर्वपूत्तरसूत्रेष्वि
त्यध मुहूर्तो लवसप्ततिप्रमाणा उक्तंच सत्तपाणूविसेथोवे सत्तथोवाविसेलवे लवाणंसत्तहत्तरिए एसमुहुत्तेविआहिए ॥ १ ॥ तिविसहस्सासत्तय

इया पवुच्चइ आणापाणूइया थोवाइया जीवाइया अजीवाइया पवुच्चइ खणाइवा लवाइवा जीवाइवा
अजीवाइवा पवुच्चइ एवमुहुत्ताइया अहोरत्ताइया पक्खाइया मासाइवा उऊइया अयणाइया संवच्छरा

तरसासोस्सासनी येपनो थाय । त्रीसमुहूर्तनो एकअहोरात्रि थाय । पनर अहोरात्रिनो एकपक्ष थाय । बेपक्षनो एकमास थाय । बेमासनो

मवाहतेउत्तरिवउच्चासा एससुहृतोभविभो सव्वेहिभवंतनाचौविति ॥ २ ॥ भवोराषा रिषमकुहतंप्रमाचा' पचा पचदशाहोरात्रप्रमाचा मासा द्विपचा मतयोहिमासमाना वसन्ताचा भयनानि भव्दुभयमानानि समक्षरा भयनद्वयमाना युगानि पचसम्बत्सराचि वर्षमतादीनिप्रतीतानि पूर्वांगानि चतुरशीतिपर्यंतपप्रमाचानि ॥ पूर्वांचिपूर्वांगान्येव चतुरशीतिपर्यंतमगुचितानि इसवेषांमाज पुषसउपरिभावं सयरिवसुधौतिकोडि सकापो वपमंयसहस्सा वोधव्वावासकोडीयं ० ५६ ० पूर्वांचि चतुरशीतिसचगुचितानि चुटिताङ्गानिभवन्ति एवपूर्वमपूर्वस्व चतुरशीति

इचा जुगाइया वाससयाइया वाससहस्साइया वाससयसहस्साइया वासकोडीइया पुव्वगाइया पुव्वाइया तुडियगाइया तुडियाइया अडडगाइया अडडाइया अववगाइया अववाइया हुहुयगाइया हुहुयाइ

एकऋतुथाय । त्रिणऋतुथी एकअयनथाय दक्षिणायन तथा उत्तरायण । बे अयनथी एकसंवत्सर वरस थाय । पांचवरसनो एकयुगथाय । एम सोवरस तेभसिद्धहुवे थीसयुम । एम हजारवरस दससौना हजारथाय । एम लाखवरस चौराशीलाखथी एकलाखथाय । एम कोटिवरस सौ लाखथी एककोटिथाय । चौरासीलाखवरसनो एकपूर्वांगथाय । पूर्वांग चौरासीलाख गुणाकीजे ते सत्तरलाखकोडिवरस छप्पनहजारकोडिव रसथी एकपूर्वथाय । चौरासीलाखपूर्वथी एकत्रुटितांगथाय । ते चौरासीलाखगुणाथी एकत्रुटितथाय । त्रुटितांगथी अडडांगथाय । अड डांगथी अडडथाय । अडडथी अववांगथाय । अववांगथी अववथाय । अववथी हुहुतांगथाय । हुहुतांगथी हुहुतथाय । हुहुतथी उत्पलां गथाय । उत्पलांगथी उत्पलथाय । तहथी पद्मांगथाय । तेहथी पद्मथाय । पद्मथी नलिनांग कालमान थाय । नलिनांगथी नलिन

मघगपनेमोत्तरमुत्तरं संख्यानमभवति यावच्छीर्षप्रहेलिकेति तस्मां चतुर्नवत्यधिकमङ्कस्थानशतम्भवति अनवरचगाथा इच्चियठाणेवगुणं पणसुण्णचउरसीद्मुवियम काञ्चतरयारे पुव्वमारचमुबसंखं ॥ १ ॥ शीर्षप्रहेलिकान्तं सांव्यवहारिकं संख्यातं कालं तेनच प्रथमपृथिवीनारकाणां भवनपतिव्यन्तराणां भरतैरवतेषु सुषमदु:षमायां पश्चिमेभागे नरतिरश्चामायुर्मीयतइति किंच शीर्षप्रहेलिकायाः परतोप्यस्तिसंख्यातं कालं सचानतिशायिनां नव्यव

या उप्पलंगाइवा उप्पलाइवा पउमंगाइवा पउमाइवा णलिणंगाइवा णलिणाइवा अत्थणिउरंगाइवा अत्थणिउराइवा अउअंगाइवा अउआइवा णउअंगाइवा णउआइवा पउअंगाइवा पउयाइवा चूलिअंगाइवा चूलियाइवा सीसपहेलियंगाइवा सीसपहेलियाइवा पलिओवमाइवा सागरोवमाइवा उस्सप्पिणी

थाय । नलिनथी अर्थनिकुरांगथाय । अर्थनिकुरांग चोराशीलाखगुणाकरें तिवारें अर्थनिकुरथाय । अर्थनिकुर चोराशीलाखगुणाकरें अयुतांग थाय । अयुतांग चोराशीलाखगुणाकरें तिवारें अयुतथाय । अयुत चोराशीलाखगुणाकरें तिवारें नियुतांगथाय । नियुतांगथी नियुतथाय । नियुत चोराशीलाखगुणाकरें तिवारें प्रयुतांगथाय । प्रयुतांग चोराशीलाखगुणाकरें तिवारें प्रयुतथाय । प्रयुत चोराशीलाखगुणाकरें तिवारें चूलिकांगथाय । चूलिकांगथी चूलिकाथाय । चूलिकाथी शीर्षप्रहेलिकांग थाय । शीर्षप्रहेलिकांगथी शीर्षप्रहेलिका थाय । एम इहां एकसो चोराणुं अंकस्थानक थयांछे । एह व्यावहारिक संख्यातो कालनो मान शीर्षप्रहेलिकालगें छे एह उपरांतपणि संख्यातोकालछे ते अनतिशायी पुरुषोंके व्यवहारमां नथी आवतो तेमाटें उपमितछे । तेकहेछे । व्यारगाउना कूआने मानें पल्योपम थाय असंख्यातकोटिवरस थाय । दशकोडाकोडि प

कारत्रियय इतिपल्योपम्येवमिसो ऽतएवसोपमइदेसिकाया परत पल्योपमायुपन्यास तत्रपल्योपमायेषु तानि पल्योपमानि असंख्यातवर्षकोटीकोटीप्र
मापानि तत्प्रमाणसमयानि सागरोपमा येषु तानि सागरोपमाणि पल्योपमकोटीकोटीदशकमानानीति दशसागरोपमकोटीकोट्य उत्सर्पिणी
एवमेवावसर्पिणीति कालविशेषयत् ग्रामादिवस्तुविशेषापपि जीवाजीवाश्चेति द्विपदे समस्ताश्रितासूत्रैराच ॥ गामेत्यादि ॥ तत्र प्रत्येकं जीवाश्चे
त्यादि सामान्येभिमतो ग्रामादीनाच जीवाजीवतामतीतैव तत्रकरादिगम्या ग्रामा नैतेषुकरोऽस्तीति नकराणि निगमा वणिग्निवासा राजधान्यो रा
जाभिषेको भिमिषक्तो खेटानि धूलीप्राकारोपेतानि कर्बटानि कुनगराणि मडंबानि सर्वतोर्द्धयोजनात्परतोवस्थितिग्रामाणि द्रोणमुखानि येषां जलस्थल

इवा उसप्पिणीइवा जीवाइवा अजीवाइवा पवुच्चइ ॥ गामाइवा णगराइवा निगमाइवा रायहाणीइवा
खेडाइवा कब्बडाइवा मडंबाइवा दोणमुहाइवा पट्टणाइवा आगराइवा आसमाइवा संवाहाइवा संनि

ल्पोपमथी एक सागरोपम थाय । दशकोडाकोडि सागरोपमथी एक उत्सर्पिणी काल थाय । एमज दशकोडाकोडि सागरोपमथी एक अवस
र्प्पिणी थाय । एसर्व कालमान जेज वस्तुनें भाषितवे जीवनें तथा अजीवने पुद्गलादिकनें एम जाणिवो । कालनीपरें ग्रामादिकपणि जीव अजीव
पणोलेवदे ॥ राजादिकनो जिहां कर लागे ते गाम । जिहा कर नलागे ते नगर । जिहां वणावाणियां वसें ते निगम । जिहा राजानो राज्याभि
षेकथाय ते राजधानी । जिहां धूलनोकोट तेखेडा । कुनगर ते कर्बट कहियें । च्यारेंदिशि वेढनें वेमसा गामहोय ते मडंब कहियें । जिहा जल
थलनो मारग होय तेद्रोणमुख । जिहां जलो रतनवस्तु उपजें तेपाटण । जिहा लोहादिकनी खाणिहोय तेआकर । जिहां तीर्थस्नान थाय ते आ

पथा सुभावपिस्त' पत्तनानि वैपुलसम्बलपथयोरन्यतरेणपर्यासारप्रवेश भावरा' सोवाद्युत्पत्तिभूमय' भाश्रमा स्तीर्थस्थानानि सम्बाहा' समभूमौ क विकृत्वा येषु दुर्गभूमिभूतेषु धान्यानि कृषीवला' संवहन्ति रक्षार्थमिति ६ सन्निवेशा' सार्थकटकादे' घोषा' गोष्ठानि ७ आरामा' विविधवृक्षलतो पशोभिता' कदल्यादिप्रच्छन्नगृहेषु स्त्रीसहितानां पुंसां रमणस्थानभूता इति उद्यानानि पत्रपुष्पफलच्छायोपशोभितानि बहुजनस्य विविधवेषस्य यत्र मानस्य भोजनार्थं यानं गमनमिति ८ यत्रानेकविधजातीयवृक्षाविपिन यत्र चैकजातीयोत्तमवृक्षा' ९ वाप्यो चतुरस्रा पुष्करिण्यो वृत्ता पुष्करवत्यो वेति १ सरांसि जलाशयविशेषा' सरः पंक्तय' सरसीपङ्क्तय' ११ । अगडन्ति । अवटा १२ तडागादीनि प्रतीतानि १३ पविवोरवप्रभासिका उदधिस्तरु

घेसाइवा घोसाइवा श्रारामाइवा उज्जाणाइवा वणाइवा वणखमाइवा वावीइवा पुस्करणीइवा सराइवा सरपतियाइवा श्रगमाइवा तमागाइवा दहाइवा णदीइवा पुढवीइवा उदहीइवा वातखघाइवा उवास

श्रम ॥ संवाध जिहां समीभूमि यावो कठिनभूमि राखै राखिमसुखमां ॥ सनिवेस जिहां साथ उतरे ॥ नदीना तटमें पासे वसै ते घोषगाम ॥ जि हां घणीजातिना वृक्षवेलि होय केलिना घरहोय जिहां स्त्री पुरुष क्रीडाकरे ते भाराम ॥ जिहां पत्रपुष्पफलफूल छायायें सोभित घणालोक उजा णीकरे ते उद्यान ॥ वन जिहा एकजातिना वृक्षहोय ॥ जिहा घणीजातिना वृक्षहोय ते वनखंड ॥ चौखूणी होय तेह वावी ॥ वाटली तथा पु ष्कर कमल जिहांहोय ते पुष्करिणी ॥ सरोवर जलाशय विशेष ॥ सरोवरनी पंक्ति ये ध्यारभेषि होय ॥ कूआ ते अगड कहिये ॥ तलाव क हिये ॥ ... ॥ वायुगालव घनवात तनवात प्रमुख ॥

घायमोदधि' १४ वातस्कन्धा' घनवाततनुवाता' इतरेषां घनवायाम्बराणि वातस्कन्धावकाशाख्यानि' अवकाशान्तराणि ओपतापेत्ता घनपृथिवीकाखिका दिनोवच्या मस्तात् १५ वसवाणि पृथिवीनांविहगानि घनोदधिघनवाततनुवातवाचामोति विग्रहा लोकनाडीवक्राणि ओववापेयापूर्ववत् १६ दीपा' समुद्राश्च तीता' १७ वेला समुद्रवलरुहि वेदिका' मतीता' १८ द्वाराणि विजयादीनि तोरणानि तेष्वेवेति १९ नैरयिका' क्लिष्टसत्वविशेषा' तेषांवाओपता कर्मं पुद्गलापेक्षया तदुत्पत्तिभूमयो नैरयिकावासा' तेषांच ओपतापृथिवीकायिकापेक्षया इति एवमष्टाविंशतिदण्डकोभिधेय' ४३ मतएवाह यावदित्यादि कल्पादेवलोका इतेमा' कल्पविमानावासा' ४४ वर्षाणि भरतादिक्षेत्राणि वर्षधरपर्वता हिमवदादय' ४५ कूटानि हैमवतकूटानि कूटागाराणि तेषेषु

तराइया वलयाइया विग्गहाइया दीवाइया समुद्दाइया वेलाइया वेइयाइया दाराइया तोरणाइया णेरइयाइया णेरइयावासाइया जाव वेमाणियावासाइया कप्पाइया कप्पविमाणावासाइया वासाइया

अवकाशांतर जिहां सूक्ष्म पृथ्वीना जीवनस्थानें आकाशप्रदेश ॥ वलय ते पृथिवीना घनोदधि घनवातना वलय ते ॥ विग्रह ते लोकनाडी त्रस माहे जीव ते जिहां रहियाछे ॥ द्वीप ते जंबूद्वीपादि समुद्र लवण समुद्रादिक ॥ वेल समुद्रना जलनी ॥ वेदिका कोटकांगरा रहित द्वीपनी ॥ द्वार विजयादिक जंबूद्वीप प्रमुखना ॥ तोरण जेदरवा जामे ऊपर लगाडिये ॥ नारकी नरकमां रहेनार ॥ नारकीना रहवाना ठाम ते नरका वासा ॥ एम यावत् चौवीसदंडके वैमानिक देवतासने ॥ जीव धर्मे अजीव ते कर्मपुद्गलसहितछे ॥ देवताना उपजवाना विमान तेपृथिवी कायनी अपेक्षाये जीव अजीव सहितपणामाटे ॥ कल्पते देवलोक ॥ तहना अग्र ते कल्पविमानावास ते जीव अजीव पणामाटे बेमेद ॥ वर्षते भ

देवमयनानि ४९ विजया यत्रवत्तिविजेतव्यानि कपाटादीनि येनर्वदानि राजधान्य देमाद्रिका जोवेत्यादौ सर्वं सम्बन्धनीयमिति ४० वेपिपुरुषग्या मोपि तयेवेत्यार । छायेत्यादि । सूपपतयं गतार्थं नगर छाया वृषादीना मातपमादित्यस्य । दोसिनातिवत्ति । ज्योत्स्ना चन्द्रकारादि तमां सि भवमानानि येवादोनि उमानानि तुलायपादोनि मतिमानगृहाणि नगरादिप्रवेशे यानिष्कहाविनतीनानि मवसिवासशिष्यवाय वठिती वसेधा इति त्रिमितसवमित्या जीवादति जीवप्यासत्वात् तदावितत्वात् भजीवादतिव पुद्गलाजीवरूपसामर्याचितत्वादिति मोक्षतेजिनै प्रकल्पते इति इ

घासहरपइयाइवा कूडाइवा कूडागाराइवा विजयाइवा रायहाणीइवा जीवाइवा अजीवाइवा पयुच्चइ
छायाइवा आतवाइवा दोसिणाइवा अंधकाराइवा उमाणाइवा पमाणाइवा उम्माणाइवा अतिताणगि
हाइवा उज्जाणगिहाइवा अवलिवाइवा सणिप्पयायाइवा जीवाइवा अजीवाइवा पयुच्चइ दोरासी प०

रतादिक्षेत्र ॥ वर्षधर हिमवतादिपर्वत ॥ हिमवंतादिकना कूट तेशिखर ॥ कूटागार ते जिहां देवतानाघरछे ॥ विजयते कच्छमहाकच्छादिक बतीस क्षेत्रतर्राह महाविदेहमा ॥ राजधानी तेमादिकनगरी जिहां राजारहै ॥ एम सघला योलमां जीव भने भजीव एह बेभेद कहिया पुद्गलामितप यांभाटें ॥ एहपुद्गल स्वनायछे तेपणि इमज वेभदें । छाया वृक्षादिकनी । भातप सूर्यादिकनो । छाया ते भजीव पुद्गनी तेमाटें जीव भजीव एह येभद कहिया । ज्योत्स्ना कांति भथवा तेज । भधकार तमस । भयमान तेहत्थादि । प्रमाण ते हाथ गज प्रमुख । उम्मान ते तुलादि कर्ष मासो पालादि । भतितामगृह तेप्रवेशमा नगर । उद्यानगृह तेयाडीना घर । भयलिय देशवियोप । सणिप्पपात पणि एमज रूढिथी जा

रर जीवाश्वेत्यादि सूत्रपञ्चकेपि मत्वेवमभ्येतस्य सिवि ० भव समयादिवस्तुजीवाजीवरूपमेवकस्मादभिधीयते उच्यते तविवयवरासन्तराभावादत
याह दोरासीत्यादि कंठ्यं जीवराशिव हिधा यसुक्तभेदात् बन्धहानां निरूपयन्नाह । दुविहेत्यादि । प्रेमरागो मायालोभकषायलक्षणो द्वेषस्तु क्रोधमा
कषायलक्षणो यदाह मायालोभकषाय येत्येतद्रागसंज्ञितद्वन्द्व । क्रोधोमानयपुन द्वेष इति समासनिर्दिष्ट इति प्रेम्णः प्रेमसयचचित्तविकारसम्पादकमो
मोयकर्मपुद्गलरागेणोधनं जीवप्रदेशेषु योगप्रत्ययत प्रकृतिस्वरूपतया प्रदेशरूपतयाच सम्बन्धनं तथा कषायप्रत्ययत स्थित्यनुभागविशेषापादानंच प्रेम
बन्ध एवंद्वेषमोहनीयसम्बन्धो द्वेषबन्ध इति उक्तं हि जोगापयडिपएसं ठिइअणुभागंकसायओकुणइत्ति प्रेमद्वेषबन्धयोरन्यत्वं सर्वज्ञमवान्यां जीवान
मद्यमक्रमबन्धो भवतीत्याह । जीवाणमित्यादि । अथवा पूर्वसूत्र मन्धवाच्याख्यान सम्बन्धान्तर मन्य मिधते सामान्येन बंधोविधा प्रेमतो द्वेषत चेति
तथा निवृत्ति सूक्ष्मसम्परायांता नगुणस्थानिनः प्रतोत्व द्वष्टव्यो वस्तूपशान्तमोहक्षीणमोहसयोगिनां सयोगप्रत्ययएव सतु बन्धलेन नविवक्षितो बंधव्यापि

तजहा जीवरासीचेव अजीवरासीचेव दुविहेबंधे पन्नत्ते तजहा पेज्जबंधेचेव दोसबंधेचेव जीवाण दोहिठाणेहि पावकम्मंबंधइ तजहा रागेणचेव दोसेणचेव जीवाणदोहि ठाणेहि पावकम्मंउदीरेइ त०

मिर्द । एमपला बोल जीवामितपर्णा मांटे जीव बर्णे पुद्गलमाटे अजीव कहिवा । बे राशिकरी तेकहेछे । एक जीवराशि बीजी अजीवराशि
यमकारे बंधकह्यो तेकहेछे । एक प्रेम ते रागनो बंध मायालोभरूप । द्वेषबंध क्रोधमानरूप । जीवने बेथानकेकरी पापकर्मनो बंधहे पापब
धायहे तेकहेछे । रागेकरी पापबंधायछे द्वेषेकरी पापबंधायछे । जीव बेथानकेकरी पापकर्म उदीरेछे अवसर आव्याविना उदये आवे ते उदी

तस्य शेषकर्मबन्धविरहकत्वात् यत्कि कर्मणोऽसौतद्व्यस्थितिकादिविशेषणं स्तोक मध्यमपरमसंयं बहुलबन्धकस्त्वविरसवेव संदमश्चय तिय मायावद्बन्धवर्धतीति । मम्यक्त्वस्य मारस्परिणामस्य स्वभावतो मधुमधये मन्दत्वेयतो पातयामन् मशारसं स्वोपसमात् एतदेवस्वरूपपरमार्थ । जीवाणमित्यादि । जीवा सत्ता च वाम्यासहारे बाम्या खामाम्या करणाम्यापापमशुभनिबन्धनत्वात् नतु निरनुबन्धं विसमयस्थितिक मसन्त शुभ तस्य केवलयोगप्रत्ययत्वादिति बध्नन्ति सूक्ष्मापयसं कुर्वन्ति रागेणचैव द्वेषेणचैव कषायैरित्यर्थः नतु मिथ्यात्वाविरतिकषाययोगा बन्धहेतव इत्यर्थ क पायापेक्षाता इत्युच्यते कषायाणां पापकर्मबंधं प्रति प्राधान्यख्यापनार्थं प्राधान्यं स्थित्यनुभागप्रत्ययकारकत्वात्तेषामिति अथवा मत्यन्तमनर्थकारित्वात् एतेच कोदुसंपावेस्था कषायस्वोदवेतिविनिर्योत्तोत्ता कोपनस्वेत्यमुक्तं रागद्वेषाकारणत्वोमति अथवा बन्धहेतुद्वयपापकर्मेदं सूत्र हिंसानवायत्त दोषादिति नदोष उत्साधनपपचपापकर्मबन्ध यतो दीरयीवृनिर्जरा कुर्वन्ति वेदयन्ति तथा सूत्रयेषाह । जीवित्यादि । सताम् नपर मुदीरयंति च मातानभरं इहुदबे प्रवेशयन्ति अभ्युपगमेनाङ्गीकरणेन निर्वृत्ता तथवा भवा अभ्युपगमिकी तया शिरोलोचतपश्चरणादिकया वेदनयापीडया उपक्रमे ण कर्मोदीरणकारणेन निर्वृत्ता तत्रभवा वा औपक्रमिकी तया ज्वरातिसारादिजन्यया एवमिति उक्तप्रकारद्वयवेदयन्ति विपाकतोऽनुभवन्तीत्युदीरितस

आभ्योवगमियाएण्वेय वेयणाएउवक्कमियाएण्वेय वेयणाएएवयवेदेंति एवणिज्जरेंति आभ्योवगमियाएण्वेय वेय

रणा तेकहेंछे । स्ययसें आदीमे शिरोलोचन तप आदिकें वेदना पीडा भोगवे । बीजी उपक्रमिकी उपक्रमथी उपजीवेदना ते ताप अती सारादि रोगथी उपजी वेदना एमज बेप्रकारे वेदे भोगवे उदय आव्युं कर्म । एम बेप्रकारें निर्जरे खपावे छे । जे आदीमें शिरोलोचनादि कि

धिति निर्जरयन्ति प्रदेशेभ्यः शाटयन्ति इति निर्जरयेव अथवा देशतः सर्वतश्च भवान्तरे व्रिजतां तस्य शरीरान्निर्गमो भवतीति सूत्रयब्धव तदाह । देसेणावि । यस्य शरं आभोगकारणं । देसेणविति । देसेनापि कतिपयप्रदेशलक्षणेन येषामपि प्रदेशाना मिलिकागतोत्पादस्थानं गच्छताणो वेन शरीराद्बहिः स्थितत्वात् भावार्थोऽयं शरीरदेशं स्पृष्ट्वा निर्याति शरीराच्चरमकालेऽपि निस्सरतीति । सव्वेणविति । सर्वेण सर्वात्मना सर्वजीव प्रदेशैः कन्दुकगत्योत्पादस्थानं गच्छता शरीराद्बहिः प्रदेशानां मसिमत्वादिति अथवा देशेनापि देशतोऽपि अपिशब्दः सर्वेणापीत्यपेक्ष आत्मा शरीर को य शरीरं देशं पादादिकं स्पृष्ट्वा अथवा अन्यतरेभ्यः प्रदेशसकाशात निर्याति सच ससारो सर्वेणापि सर्वतयाप्यपिनिर्देशापीत्यपेक्ष सर्वमपि शरीरं स्पृष्ट्वा निर्यातीतिभावः यत्सिद्धो भवतिच पादविक्षेपाभिरप्रसुतवचनतोयादि यावत् सर्वमनिष्क्रामाभिसेसुत्ति । आत्मना शरीरस्य सम्पर्श्नेसति स्फुरणं भवतीयत उच्यते । एवमित्यादि । एवमिति शोचिठावेति एवमाद्यभिलापसंसूचनार्थं तन्देशेनापि स्थितिरप्याप्यप्रदेशैः रिविकामतिचासे । सव्वेण विति । सर्वैरपियेन्तुकमतिचासे शरीरं । फुरित्तावंति । स्फोरयित्वा संस्पन्दयित्वा निर्याति अथवा शरीरस्य देशतः प्रदेशेसमित्वर्थं स्फोरयित्वा पा दादिनिर्गमवाचे सर्वत शरीरंस्फोरयित्वा सर्वाङ्गनिर्गमावसरत्वेति स्फुरणाय सात्मकस्य स्फुटं भवतीत्याह । एवमित्यादि । एवमितितेषेव देशेनात्म

णाएउवक्कामियाएवेव वेयणाएदोहिठाणेहि आया सरीरफुसित्ताण णिज्जाति देसेणविआयासरीरफुसि

यादिकें मेदना मेदें । तेकहेछे । उपक्रमवेदनायें ते रोगादिकनी वेदना । वेयानके आत्मा जीव शरीरनें फरसीनें भवांतरें अथवा मुक्तियें जाय छै ते देशथी तथा सर्वथी पगप्रमुख फरसी नीकलें ते देशथी सफलीकरयर फरसें जीव नीकलता ते ठिकाणु फरके जीवनें शरीरनें स्पर्शत थके ते

देशेन शरीरकं स्फुटितमिति । सचेतनतया स्फुरणविशेष स्फुटहस्ता ष्वविकागतो सर्वेषसर्वात्मना स्फुटकला गैंडुकगतामिति भयवा शरीरकंदेशत
सामथ्यतया स्वट कृत्वा पादादिना निर्वाचयति सर्वत सर्वाङ्गनिर्वाणमस्तायरति भथवा स्फुटित्वा स्फोटयित्वा पिपीलिकाका तप्रदेशतो ऽस्मादिविषा
तेन मजत समनिग एवमहेश्वरोपादिशोवगदिति शरीरकं आत्मकायः स्फुटीकृत्य स्वरसंवसनमपि कथितमरीतीत्यात । एवमित्यादि । एवमिति तथैव
। मंसहरतामिति । सवर्णसंजारव शरीरकं देशेनैकिकामतो शरीरस्थितप्रदेशै सर्वेषसर्वात्मना मे दुःखाणतो सर्वात्मप्रदेशानां शरीरस्थितत्वा 'चियो
तोति भथवा शरीरकं शरीरिव सुमचारा एवमसीमारम्भपुवमयत् तप्रदेशत संगमं भवारिपोमिममापय पादादिगतजीवप्रदेशसंहारा कवेस
सु निर्वामंतुरिति भथवा शरीरकं देशत सवर्णं हस्तादिसकोचनेन सर्वत सर्वशरीरसकोचनेन पिपीलिकादिवदिति भावसय सवसनक्रुर्व्वन् शरीर
स्वनिश्चतन शरीतीत्यात । एवमिवद्दत्तावति । भवेव मिवर्त जीवप्रदेशस्य शरीरकं एवपृक्कमोकर्म तत्प्रदेशेनैकिकागतो सर्वेष मेंदुखमता भथवा प्र
देशत शरीरकं निवर्णात्मन पादादिनिर्याचयत् सवत सर्वांगनिर्वाणमामिति भथवा पञ्चविधशरीरसमुदयापेक्षया देशत शरीरमौदारिकादि
निवद्य तैजसकार्मणसाहारयेन तथा सर्वेष सवशरीरसमुदायं निवर्णं निर्यांति सिद्यतीत्यर्थ भनमतरं सर्वनिर्याचसूत्रं तच परम्परयाकर्मपचपवाभादित्व

घ्राण णिज्झाति सव्वेणयिश्वायासरीर फुसिज्ञाण णिज्झाति एवफुरिज्ञा एवफुडित्ता एवसवाहिंसा निव्वाहिंसा

सथयो । एम करमें शरीर देशथी सर्वथी । एम शरीरनें फोडी जीव मोक्षली देशथी सर्वथी । एम सकोचीनें शरीरनें देशथीसथथी हस्तिकासनें
तथा दवानीगतें । जीवप्रदेशथो शरीरपगुलसथय त देशथोसथथी । क्षेमासकै भातमा जीवक्षितापित धर्मप्रति पासें मांमसवापी । ते कहेछे ।

ेव मवाप्तु समासयंवचाव । दोहेत्यादि । कम्म पवरं । कम्मवेवत्ति । माणावरणोयस्स दर्शनमोहनीयस्य ममय मट्यमासस्य यदेव निर्जर
ेन मनुदितस्य चापशमेन विपाकानुभवेन चायोपशमेनेत्युर्क भवति भावलक्षणात् केवलं बोधिमुज्येत मुंडेभविता भगाराभोयमगारियंपव्वएज्जा ।
केवलंबंमचेरवासमावसेज्जा केवलेणं संजमेणं संजमेज्जा केवलेणं संवरेणं संवरेज्जा केवलमाभिणिबोहियनाणमुप्पाडेज्जा इत्यादिद्रष्टव्यं । मायमन मयं
माणमुत्पादयेदिति केवलमानतु भयादेवभवतीति तयोत्त मिवच यदपि बोधादय सम्यक्त्वारित्ररूपता स्तेवकेन चयोपशमेनव भवन्ति तदाप्येते
चयोपशमेनापि भवन्ति नवराभिनिबोधिकादीनितु चयोपशमेन भवन्तीति सर्वसाधारण चयोपशमकत्व पदद्वयेनात सएतस्माकात इति बोधा
भिनिबोधिक श्रुतावधिमानानिच षट्षष्टिसागरोपमस्थितिकामुत्कृष्टतो भवन्ति सागरोपमाणिच पल्योपमाश्रितानि वदितप्ररूपणायाच । दुविहेच्यादि । उपमाचौपम्यं तया निर्वृत्त मौपमिकं यथा काल स्तद्विषय मौपमिकमद्धौपमिकं उपमानमन्तरेण यत्कालप्रमाणं अनतिशयिना ग्रहीत
ग्रमक्ते तदौपमिकमिति भाव तथाविधा पल्योपमंचैव सागरोपमंचैव तत्र पल्यवत्पल्य स्तेनोपमा यस्मिं स्तत्पल्योपमं तथा सागरेणोपमा यस्मिंस्त

दो हिठाणेहिं आया केवलिपन्नत्तंधम्मं लभेज्जासवणयाए तंजहा खएणचेव उवसमेणचेव एवंजाव मणपज्ज
वनाणं उप्पाडेज्जा तंजहा खएणचेव उवसमेणचेव दुविहे अद्धोवमिये पन्नत्तेतंजहा पलिओवमेचेव सागरो

मानावरणी दर्शनमोहनीया क्षयेणी अथवा उपशमाख्येणी अन्यथा सानलवायीपचिधर्मनपावे। एम यावत् मतिमान श्रुतमान अवधिनाण मनपर्य
वनाय उपजावे पां मैं केवलज्ञान तेकहेंदे । मानावरणी क्षयेणी अथवा उपशमथी । मतिश्रुतअवधिनाणनी उत्कृष्टस्थिति छासठि सागरोपमनीछे

रमागरोपमं सामरवमवापरिमाणमिमय इदंव पल्योपमसागरोपमरूप मौपमिकं सामान्यत उद्वाराद्धाक्षेत्रभेदात् त्रिधा पुनरेकैकं सव्यवहारसूक्ष्मभेदा द्विधा तत्र सव्यवहारपल्योपमनाम यावता कालेन योजनायामविष्कंभो सत्पल्यो मुंडमानन्तरमेकादिसप्ताहोरात्रप्ररूढाणां वालाग्राणां भृत प्रति समयं वालाग्रोद्धारेमति निर्लेपोभवति सकालो व्यावहारिकपल्योपम मुच्यते तेषांच दशभि कोटीकोटीभि व्यावहारिकमुद्धारसागरोपम मुच्यते तेषा मेव वालाग्राणां इष्टिगोचरातिसूक्ष्मद्रव्यासंख्येयभागमात्रसूक्ष्मपनकायमात्रमा दसंख्यातगुणरूपखंडीकृतानां भृत पल्योपेम कालेन निर्लेपोभवति तदे वोद्धारे तत्सूक्ष्ममुद्धारपल्योपमं तथैव सूक्ष्ममुद्धारसागरोपम मनेनच द्वीपसमुद्रा परिसंख्यायन्ते भावच उद्धारसागराणां यद्धाइज्जाणकेत्तियासमया दु गुणादुगुणपवित्थर दीवोदहिरज्जुएवइयत्ति ॥ १ ॥ अद्धापल्योपमसागरोपमेपि सूक्ष्मबादरभेद एवमेव नवरं वर्षशते २ वालाग्र वालासंख्येयखंडस्य चो द्धरति यदेनमारकादिलिलयो मीयन्ते क्षेत्रतोपिते द्विविधे एवमेव नवरं प्रतिसमयमेकैकाकाशप्रदेशापहारे यावताकालेन वालाग्रस्पृष्टाएव प्रदेशा उद्भियन्ते सकालोव्यावहारिकइति यावता वालाग्रासंख्यातखंडै स्पृष्टाश्चास्पृष्टायोद्भियन्ते सकाल सूक्ष्मइति एतेच मरूपणामात्रविषयाएव भाव्याव इति बादे सूक्ष्माप्रदेशविभागेन द्रव्यमानेप्रयोजनमिति यूयते बादरेच त्रिविधेपि मरूपणामात्रविषयएवेति तदेवमिह प्रक्रमे उद्धारपल्योपमिकयो निरु पयामला इहौपमिकस्यैव चोपयागित्वा दद्वेतिविधेयं सूत्रेउपात्तमिति मतएवा द्धापल्योपमलक्षणाभिधित्सयाह सूत्रकारः ॥ सेकिंतमित्यादि ॥ यद्वविव

वमेचेव सेकितपलिउवमे पलिउवमे । जजोयणविच्छिन्न पल्लएगाहियप्परूढाण । होज्जानिरतरणिचिइ न्नारि

तेसागरोपमनो नाम कहिवानें कहेछे ॥ वेमकारें कालनुं उपमान तेप्रमाणछे तेकहेछे । एक पल्योपमनु नामछे बीजो सागरोपमनु नामछे । तेस्यु

त्वचोपम पल्योपमित्वतया निर्दिष्टमिति प्रश्ने निर्वचन मेतदनुवादेनाह । पलितोपमस्ति । पल्योपममेवं भवतीति वाक्यशेषः । समासः । विततत्मोक्ष मविस्तोर्णमित्युपलक्षणत्वाद्वर्तो वत् योजनप्रमाणं पल्यंधान्यस्थानविशेष एकाहएव एकाहिक येन मस्तकानां छद्मानां मुण्डितेशिरसि एकेनाह्ना याव त्सप्तमेनाह्ना एतावतोपलक्षणता प्ररूपितः सप्ताहप्ररूढानां वालाग्राणां कोटयोविभागाः सूक्ष्मपल्योपमापेक्षया असंख्येयखण्डानि बादरपल्योपमा पेक्षया कोटयः संख्याविशेषा स्तासां किंभवेत् भरितं भृतं । बहुभिर्वालाग्रैः । निरंतरं निचितं निबिडतया निचयवत क्षतमिति ॥ १ ॥ वाससयाः । एकस्मात् पल्यात् वर्षशतेवर्षशते तिष्ठत्येकसति प्रतिवर्षशतमित्यर्थः एकैकस्मिन् वालाग्रे असंख्येयखण्डेऽपहृते सति यः कालोयावतो भवति प्रमाण त सतावान् कालोबोद्धव्यः किमित्याह उपमा उपमेयः पल्येनाह एकस्य पल्यस्य इदमुक्तंभवतिसः काल एकंपल्योपमं सूक्ष्मं व्यावहारिकंचोच्यते इति गयसिंमाह्ना । तेषा मेवोक्तरूपाणां सूक्ष्मबादराणां पल्यानां पल्योपमानां कोटीकोटीभवेत् दशगुणिता यदिति गम्यते दशकोटीकोट्य इत्यर्थः तदेकस्य सूक्ष्मरूपस्य बादररूपस्य वा सागरोपमस्यैव भवेत् परिमाणमिति एतेच सेपां मोक्षादीनां फलभूतकर्मस्थिति विरूप्यते तत्स्वरूपनिरूपणायाह

इत्यालगकोशीण ॥ १ ॥ वाससएवाससए एक्केक्केअवहडंमिजोकालो । सोकालोबोधव्वो उवमाएगस्सपल्ल

पल्योपमनुमान तेकहेवें । जे च्यार माळनुं उड़ो पिहुलो पालो कूवो होय एकदिनथी मरडीसातदिवस जन्म्या युगलिया तेहना माथामाबेश्रपी कूवोजरिये आंतरारहित ठांसीने भरिये तेवालाग्र जे दृष्टिमापविलमाय तेवालाग्र सौसौवरसे एकेको निकाले तेकाढतेकाढते कूवोजेतलेकाले ठा लीथाय तेतलाकालनी उपमा कावली एक पल्योपमनो कालमान जाणिवो । एह पल्योपमनुंकालदशगुणुंकीजे तिवारे सागरोपमनुं कालथाय एत ले दसकोडाकोडि पल्योपमें एकसागरोपमथाय । बेप्रकारेकोप तेकहेवें । आत्मप्रतिष्ठित ते आत्माथी उपनो निष्कारणकोप अथवा प्रीतिप्रमुखें

। दुविहेकोहेत्यादि । मा मापराधा ऐहिकापायप्रमादाप्रभिप्रतिठित आत्मविषयीजात आत्मनावा परप्राक्रोशादिना प्रविष्ठितो जनित आत्मप्र तिठित परेणाक्रोशादिना प्रतिठित उदीरित परस्मिन्वा प्रतिठितो जात परप्रतिष्ठितइति एवमिति यथा मामाम्यतो द्विधा क्रोध उक्त एवंनारकादीनां चतुर्विंशते वाच्य नवर पृथिव्यादीना मर्त्सना मुतलचय आत्मप्रतिष्ठितत्वादिपूर्वभवसंस्कारात् क्रोधवसमवगन्तव्यमिति एवंमानादीनि मिथ्यात्वान्तानि पापस्थानप्राण्यात्मप्रतिठितविशेषणानि सामान्यपदपूर्वकं चतुर्विंशतिदण्डकमेणाध्येतव्यानि अतएवाह । एवंजावमिच्छादंसणसल्लेत्ति । एतेषां मानादीना नविषयप्रातपरजनितत्वाभ्यां आत्मतत्परात्मवर्तित्वाभ्यां वा सपरप्रतिठितत्वमवसेय मेवं एते पापस्थानाश्रिता जीवोदयदण्डका इति उक्तविशेषणा नि पापस्थानानि संसारिणामेव भवन्तीति तान् भेदत आह । दुविहेत्यादि । व्यक्ष नतु संसारिणएवजीवा उताग्येपि संति तत्वेनेति भाव समवद्य

स्स ॥ २ ॥ एतेसिपल्लाण कोडाकोडीहवेज्जदसगुणिया । तसागरोवमस्सउ एगस्सज्जवेपरीमाण ॥ ३ ॥ दुवि हेकोहे पन्नत्ते तजहा आयपइठिएचेव परपइठिएचेव एव णेरइयाण जाव वेमाणियाण एव जाव मिच्छा दसणसल्ले दुविहा ससारसमावन्नगा जीवा पन्नत्ता तजहा तसाचेव थावराचेव दुविहा सव्वजीवा पन्नत्ता

आपणाणं क्रोधे प्रीतिमें हणे । परप्रतिष्ठित जे परमायचम सांजली क्रोधउपजे । एम नारकीआदिदेव वैमानिकतांई चौवीसदंडके बेप्रकारें क्रोध जाणिवुं । एम यावत् मिथ्यादर्शनशल्यादि अठारह पापस्थानकसगें आत्म अनें परनेआश्रित । संसारनाजीव बेप्रकार तेकहेछे । त्रस बेइन्द्रियादि थावर पृथिव्यादिक एकेंद्री ॥ अथवा बेप्रकारसर्वजीव तेकहेछे । एक सिद्ध जेमोक्षपाम्या बीजा असिद्ध जेमोक्षनथीपाम्या ॥ अथवा बेप्रकारसर्वजी

भाव भयोगमधी भाव । दुविहेत्यादि । अस्यार्थ्य भवर्त सेंद्रिया संसारिणो ऽनिन्द्रिया अपर्याप्तकाकेवलिसिद्धा । एवंएसत्ति । एवंसिद्धादिसूत्रोक्तम

मेव दुविहासम्बजीवेत्यादि तथवेन एवमक्रमाया मस्तुतसूत्रसपदमाया सभंगीया अनुसरणीया एतदनुसारेण भयोदयापि सूत्राण्यध्येतव्यानीत्यर्थं

मतएवाह । आससरीरोचेव असरीरीचेवत्ति । सिवयाया । सिवा सेन्द्रियाव सेतराश्चा एव । वायेति । कावा पृथिव्यादय स्तानाश्रित्य

सवमोचा सविपर्ययायाश्चा एवंसवीधि व्याख्येयानि यावनायेव । सकायसेव भकायवेव । सकामा पृथिव्यादि षड्जीवकायविशिष्टा संसारिणो

ऽकाया सारिसमचा सिद्धा सयोगा संसारिणो ऽयोगा भयोगिन सिवाच ४ । वेदत्ति । सवेदा संसारिण भवेदा भनिवृत्तबादरसम्परायविशेषा

एव यद्सिवाय ५ । कसायत्ति । सकषाया सूक्ष्मसम्परायान्ता भकषाया उपशान्तमोहादयश्चलाट सिवा व ६ । लेसामत्ति । सलेश्या सयोग्यन्ता

संसारिणोलेश्या भयोगिन सिवाच ७ । नावेत्ति । ज्ञानिन सम्यग्दृष्टयो ऽज्ञानिनोमिथ्यादृष्टय भावप भविसेसिवाभरणविय समदिट्ठिमसामरवायं

तजहा सिद्धाचेव असिद्धाचेव दुविहा सव्वजीवा पन्नत्ता तजहा सइंदियाचेव अणिंदियाचेव एवएसागाहा

फासेयव्वा जाव सरीरीचेव असरीरीचेव । सिद्धसइंदियकाए जोगेवेएकसायलेसाय । णाणुवओगाहारे ञ्जास

व तेकरेवे । इंद्रियसहित एकेंद्रियादिक जीवा अनिंद्रिय इन्द्रियरहित सिद्धनाजीव ॥ एम गाथानें अनुसारें तेरबोल जाणिवा । यावत् शरीरी स

शरमाजीव शरीररहित मोक्षनाजीव सिद्ध असिद्ध इंद्रियसहित इन्द्रियरहित कायासहित कायारहित योगसहित योगरहित वेदसहित वेदरहित

कषायसहित कषायरहित लेश्यासहित लेश्यारहित ज्ञानसहित ज्ञानरहित साकारोपयोगी दर्शनोपयोगी आहारी अनाहारी भाषासहित भाषारहि

सदयनार्थमिच्छा दिट्ठिससुयपिएमेवत्ति ॥ १ ॥ अज्ञानतायां मिथ्यादृष्टिबोधस्य सदसतोरविशेषणात् तथाहि सत्सर्वोदयमसत्वं कथंचिदिति विशेषितव्यं भवति सद्रूपेत्यय मिथ्यादृष्टिश्च मन्यते सतएवेति ततयापररूपेणापि तेषांसत्वप्रसङ्ग तथा नर्वसर्वोदय तदसत्वं कथंचिदिति विशेषितव्य भवति पररूपेणेत्ययं मतु असत्वमेवेति मन्यते तथाच तत्प्रतिपेधवचनसाध्याभाव प्रसजतीति अथवा यथाविधायादयो असत्वीत्येवल्पकथंचिदिति विशेषणीयं यत स्ते ययमसत्वादिसमवेततयैव असंजित मतु यमवशियार्थंच यथयथा विपार्थं मतिपूर्वभवपदापेक्षया यथाविपार्थं तद्रूपतयापि असंतोति तदेवं सदस तो कथंचिद्वितेतस्य विशेषणस्या अभ्युपगमा तस्य ज्ञानम प्ययथार्थत्वेन कुत्सितत्वा दज्ञानमेव भावय अश्रुम्नयचमनयर्थ कुत्सियगोयमसोसमसद्दए अयादतत्वार्थपिचु मिथ्यादिट्ठिग्रयार्थति ॥ १ ॥ तथा मिथ्यादृष्टे रध्यवसायो अज्ञानं भवहेतुत्वा मिथ्यात्वादिवत् तथायदस्योपसत्वे ययतत तथा ज्ञानम मस सतक्रियानुपभावा दस्यस अयदृतगतदोपमत्रायवदिति भावय अदसदविसेसणाओ भवहेउअर्द्दच्छिभोवलभायो नाणफलाभावाओ मिच्छाद्दिट्ठि स्सपयार्थति ॥ ८ ॥ उवओगित्ति ॥ सागारोवउत्तेवेवअणागारोवउत्तेवेवत्ति ॥ सहाकारेण विशेषांशग्रहणरूपविकल्पेन वर्त्तते स उपयोग सहाकारो ज्ञानो पयोग इत्यर्थ स्तेनोपयुक्ता साकारोपयुक्ता अनाकारस्तुविकल्पो दर्शनोपयोग इत्यर्थो भिर्मीयतेच असामयन्यरूप मावापनेमस्तुभागार पविसेसिऊणम त्ये दंसणमितिवुथरसमएति ॥ १ ॥ तेनोपयुक्ताअनाकारोपयुक्तादति ८ ॥ आहारेत्ति ॥ आहारका ओजोलोमप्रक्षेपभेदभिन्ना आहारविशेषयाहिण आहार आयाहारओसा समपपजतयामुचेयमा पञ्चतमायलोम पक्खेवेकौतिभइयमा ॥ १ ॥ एगिंदियदेवाणं नेरइयाणंअपज्जत्तियसेसो सेसाणंओयाय संसारत्था पक्खेवोत्ति ॥ २ ॥ अनाहारकास्तु विग्रहगत्यापन्ना केवलिनोसमुद्घातगतोयोग सिद्धायथाहारा सेसाआहारयाओवत्ति ॥ २ ॥ भासत्ति ॥ भाषका भाषापर्याप्तिपर्याप्तका स्तद्विपरीतास्त्वभाषका अयोगिसिद्धा एकेंद्रियाच ॥ ११ ॥ परमत्ति ॥ परमा येषांपरमोभवोभविष्यति अपरमास्त्वेषां भव्येष्वस्यपि

चरमोभवो न भविष्यति गमिर्वाणगतोऽर्थः ॥१२॥ ससरीरत्ति । सह सवासम्भवं पञ्चविधशरीरेण येते इगसमासान्तविधे सशरीरिणः संसारिणो अशरी रिणस्तु शरीरमेषामस्तीति शरीरिण तद्विपिधादशरीरिणः सिद्धाः ॥ ११ ॥ एतेष संसारिणः सिद्धाश्च मरणामरणधर्मकाः अप्रशस्तप्रशस्तमरणवन्तेते भव गतोविप्रशस्ताप्रशस्तमरण निरूपणाय मवस्थोमाह । दोमरणाइं इत्यादि । अस्यायिर्यं भवरं डेमरणे श्रमणेनभगवतामहावीरेण आख्याते तपस्वोति श्रमणा स्तेषां तेन माम्बादयोपिया सन्तोत्तं निर्ग्रन्थ १ सन्न २ तापस ३ गैरुय ४ आजीव ५ पञ्चहासमणाइत्ति तदृश्यपाकेसार्थमाह निर्ग्रन्था अवास्त्रा भ्यन्तरादिति निर्ग्रन्था साधव स्तेषां नोनित्यं सदावर्णिते वा स्वयो प्रशस्तमितु मुपादेयत्वतया माभिहिते । बिन्निवाइंति ॥ कोर्त्तितें नामत सम्यक्ति उपादेयधिया । बुइयाइंति । व्यक्तवाचोक्तेणपादेयरूपत पाठान्तरेणपूजितेषा तस्कारिपूजनत प्रशस्ते प्रशसिते श्लाघिते सुसुताविहितवचनात् अभ्यनुज्ञाते अनुमते यथा कुरुतेति । बलवमरणेत्ति । व्रततांसंयमाविवर्त्तमानानां परीषहादिबाधितत्वा मरणं बलम्मरण । वसट्टमरणेत्ति । इन्द्रियाणा

गधारिमेयससरीरी ॥ १ दोमरणाइं समणेणंभगवया महावीरेण समणाणं णिग्गंथाणं णोणिच्चं वण्णियाइं णो णिच्चं कित्तियाइं णोणिच्चं बुइयाइं णोणिच्चं पसत्थाइं णोणिच्चं अब्भणुण्णाइं भवंति तंजहा वलयमरणेचेव

त चरम तेजभवेंमोक्षजाय अचरम बीजा शरीरी अशरीरी ॥ शरीरीमें बेमरण तेमांटे मरणाधिकार कहेंछे श्रमणतपस्वी भगवान श्रीमहावीरस्वामी श्रमण तपस्वी क्रमगांठियी रहित साधुनें नथीनित्यसदाएं वखाण्या वखाण्या नथी नित्यआदरवा कह्यांथी । नथीनित्य पूज्नित एथी पूजा नथामें नथी प्रशस्या नथी आज्ञादीधी भगवंतें । तेकहेछे बलम्मरण जे संयमथीपडतो परीसहथी प्राणी मरे । इन्द्रियनें परवशपणे मरेते वसट्टीयो

पगमधीमता गतागतानां खिन्नदीपकशिखावलोकमाकुंभितपतमाशीमाभिव मरणं यथात्तमरणमिति भावः सजमबोगविसया मरतिजेतवलाय मरणेत इंद्रियविसयवसगवा मरतिजेतेवसट्टु ॥ १ ॥ एवमिवावेत्यादि ॥ एवमितिदोमरणाइंसमपेणभिस्वाय्भिसापसोतरसूत्रेष्वपि सूत्रमाह मरिश्मो गादिभावमानिशानं तस्पूर्वकंमरणं निदानमरणं यस्मिन् भवे वर्तते जंतुस्तद्भवयोग्यमेवायु यथा पुनस्तिर्यमापद्य मरणं तद्भवमरणं एतच संख्यातायुष्कम रतिरयाभिव तिर्यग्भिव तद्भवायुर्बंधोभवतीति उक्तंच मोत्तुमकम्मभूमिग नरतिरिएसुरगणिणेरइए सेसाणंजीवाणं तब्भवमरणंतुकेसिंचित्ति ॥ १ ॥ मत्यावाडचेत्ति ॥ मरणेष गुरिकादिना भवपाटनं विदारणं स्वशरीरस्य यस्मिंस्तत् शस्त्रावपाटनं ॥ ५ ॥ कारणेपुणेत्यादि ॥ शीलभंगरक्षणादौ पाठांतरेतु कारणेन प्रमतिषद्धे वा प्रनिवारितेति भगवता पूर्वपाक्षाया पुष्टत्वात् विशासविमभसि भवं वेहायसं मालतसेमतु येशायस मिस्तुम मिति मार्गे सृष्ट

यसहमरणेचेव एव णियाणमरणेचेव तब्भवमरणेचेव गिरिपडणेचेव तरुपडणेचेव जलप्पवेसेचेव जल णप्पवेसेचेव विसभक्खणेचेव सत्थोवाडणेचेव दो मरणाइं जाव णोणिच्चं अब्भणुन्नाइं भवंति कारणेण पुण अप्पडिकुट्ठाइं तजहा वेहाणसेचेव गिद्धपिट्ठेचेव दोमरणाइं समणेण भगवया महावीरेण समणाण निग्ग

देणी पतंगमरे । एम रिद्धीयादिकमां नियाणुकरीमरे ते मातुमरण कहियो । तेहीजभवम योग्य आऊखो बांधीमरे । पर्वतथी भैरवजाप खावं मरे तेगिरिपडणमरण । वृक्षथी पडी मरे तेतरुपडणमरण । पाणीमां झंपावी मरे तेजलप्रवेशमरण । अग्निमां पेसी मरे ते जलणप्रवेशमरण । विषखाइ मरे तेमातुंमरण । शस्त्र कटारीप्रमुख खाइमरे ते । एसी वेमरण जाव मणी भाखा दीधी जगयते ॥ पणि कारणे शीलादिराखिवामें

सर्यंमे बस्मिन् तत् घम्रपष्टं सदिवा मघावो मर्व प्रष्मुपसमघला द्रुदरादिप तत्रर्व मरिकरभादिमरोरागुभवेगेन मशासखम सुमुर्यो र्वस्मिंप्तात् घम्रसरभिति गाधाव गघादिभक्षवगर पष्प्रसुर्म्यंघपास्दिवेशर्स पर्वेरोम्निबिमरणा कारणमाएघपुवायेत्ति ॥ १ ॥ घमगस्तमरणानतरं तत् प्रमस्थं मघानो भवतोति तशष ॥ दोमरणारं दत्यादि ॥ पादपोपृम स्वसेवस्थिपतितघोपयमन मघ्रतमिषेहतया ऽवस्माने यस्मिष्तात् पादपोपगमनं मर्वा भोषम यमेर नवेहाया पयि पादपोपगमनदव मघाख्यान मननं यरिसंस्तत् महभघाख्यानमिति ॥ मोशारिमेति ॥ यदसवे रेकदेमे विधीयते तनत' मरीरस्स निहरणा विषारणा विर्होरिमं बत् पुनर्गिरिकन्दरादौ तपनिहरणादनिर्हारिमे ॥ णियमंति ॥ विमतिपरिणामा नियमा दमतिकर्म्म

पाण णिग्ग वक्षियाङ्ग जाय ण्णणुन्नाइ नवति तजहा पाठवगमणेचेव नत्तपच्चक्खाणेचेव पाठवगमणे दुविहे पन्नत्ते तजहा णीहारिमेचेव श्रणीहारिमेचेव णियम श्रप्पडिक्कम्मे नत्तपच्चक्खाणे दुविहे पन्नत्ते

वारत्यामयी । तेकर्हेवे घाकायमरण वे वचमी घाचार्मे गसोवाघी मरे । गृध्रपृष्टमरण ते रुटभमुखना कलेवरमां पेसी गृध्रपंखिपा पादपघरावे ए सर्वमरण मीसादिरापिवामें भारर्वे मिघस्यानथी मम्पमा मियेष्यावे । एद घमघस्तमरण कहिया । वे मघस्तमरस प्रस्थनेंदोष ते कहेछे । श्रमण भगवत महावीरस्वामी श्रमणसाधुने सदार्थे वर्षेव्या धाव पूर्वनोपरे भाया दीधोछे । एक पादपोपगमन वृक्षनी कापी भासीनीपरे चेष्टारहित । बीजो भातपाणीनो जावजीव पचखाण करवुं परिहारवाले । पादपोपगमन बेमकारें कहियो भगवतें तेकहेंछे । एक नीहारिम ते शरीरनो सार नबरे सिंहाविकनवर्मे पावेकरे । बीजो अनिहारिम गिरिगुफामां गई करे । ए बेपादपापगमन निये शरीरनो शुश्रूषा सारराखितछे । भक्तमरणा

सरीरमतिकियावज्जं पादवीयगममिति भवतियाचमाणा सोयादिसुयभिभूमोपायवगमणंचरेइविरचित्तो भावभिवज्जते विवाविमोनवरगोमलो ति ॥ १ ॥ इदमव्वाघातपदुष्पते निर्व्याघातं तु यत् सूत्रार्थनिष्ठितचरमंतो बारसमसमा कतपरिकम्मोसन् कासएवकरोतीति तविविधायं चत्तारिवि त्तार्इ विगईनिज्जूहियाइंचत्तारि संवच्छरियदुविह एगंतरियंचभावामं ॥ २ ॥ नाइविगिट्ठोयतवो छम्मासेपरिमियचभायामं यमेविगक्कमासे होइवि गिट्ठतवोकम्मं ॥ ३ ॥ वासंकोडीसहियं भायामंकाउभाणुपुव्वीए संघयणादणुरूवं एत्तोयद्धायमिवमेयं ॥ ४ ॥ मत देहसियसंखिविए सबसायायो विणिज्जमावेहिं वायणपडस्माय सरीरियोवरमकारणमि ॥ ५ ॥ खिव भावमविसंसिवेह जियप्पयोपयभावजोगेव मूसममावचाविम परिमइपो हिमूणाई ॥ ६ ॥ भावेइभाविमप्पा विसेसपोमवरतमिकासमि पचईएमिगुयत्तं संसारमहासमुद्दस्स ॥ ७ ॥ जम्मजरामरणचलो पवाइमंवसपसायवा इयो जीवाणदुक्खहेउ कड्डाइभवसमुद्दो ॥ ८ ॥ धमोह जेयमए पयोरपारमिमवरमेयंति भयवमसच्चमणुजाइ सबसत्पजावंति ॥ ९ ॥ एमस्सपसावेण पाविज्जंतमसंपमत्तेणं जम्मंतरेविजीवा पावंतिनदुक्खदोहग्गं ॥ १० ॥ चिंतामणीचउण्णो एसमपुव्वोसचप्पवसोत्ति एवंपरमोसंतो एवपरमामसंपत्व ॥ ११ ॥ इयवंयाजच्चियं गुरुमाईणंमवायभावायं वेसियमाविवेयं पततवपाविमयचेव ॥ १२ ॥ तेसिमनमोतिसिमनो भावेयपुचोवितेसिवेपनमो भणइ भयपरिवयरया वेयंदितिजोवायमित्यादि ॥ १३ ॥ संविग्गिउपमायं एयंपमप्पिमेत्तुफलगाई गुरुमाइयसमं खमाविमोभावसुद्धीए ॥ १४ ॥ जम्मूहि ऊणसेमे पडिवुहंतम्मितवविससेव धम्मेउज्जमियम्मं सजोगाइवविओमंता ॥ १५ ॥ मयवंहिवयदेवे जराविविंसिसयगुसमाए पञ्चक्खाइतुतपो तमतिए सम्मामावार ॥ १६ ॥ समभावम्मिठियप्पा सम्मसिवंतमविसममेण गिरिकंदरमिमतुं पायवगमणंपवकरेइ ॥ १७ ॥ सव्वत्यापडिवद्धो संडायसमाइठाणमि ठाउ जामज्जीवंविहइ निच्चिट्ठोपायवसमाणो ॥ १८ ॥ पढमिमुसंघयणो महापभावामरितिपवमिप पावमुवमावचिय निवसपयकारणंपरमं ॥ १९ ॥

भत्तपरिन्नाणसर्व चउव्विहाहारपच्चक्खाणनिष्पन्नं सपडिक्कमणनियमा अहासमाहीविविविहिइत्ति ॥ २ ॥ इङ्गितमरणंखिङ्गगीतं विसाल काअुरीयात् ततश्चर्य चेदं इंमियदेसंमिसव चउव्विहाहारपाणनिष्पन्नं उम्मतवाहरतुसे नवेपउद्दंगिणीमरणंति ॥ २१ ॥ इत्यमरणादिस्वरूपं भगवता लोके प्ररूपितमिति लो कस्वरूपमरूपणाय मर्थाकारयन्नाह ॥ वेधयनिमादि ॥ वेदतिमन्नाम पयमिविशेयत मलाघ भासकय भथ भगवता मरणादिमयस्तामग्रस्कसमस्तवस्तु लोमतस्य मम्मयाभि लोकमतदतिलोक इतिप्रन्नो धर्मिवंधनं जीवाजीवाजीवावेति पंचास्तिकायमयसा लोकस्य तेषांजीवाजीवमत्स्वरूपत्वादिति लक्षण पंच स्तिकायमयत्वं लोगमपाइविवयजिवक्षायवि लोकस्वरूपमूतानांच जीवाजीवानां स्वरूपं मन्नपूर्वकेव सूत्रवेनाह ॥ केमपंतेइत्यादि ॥ के भनंता लोके इतिमन्न भनोत्तर जीवाअजीवावेति एतएवच यासता प्रम्पार्थतयेति सेचेतेभनंता यावताच जीवा लोकेविमोक्तचवचवमंसोमा दुलामूलाइयमवयविवि

तजहा णीहारिमेचेव अणीहारिमेचेव णियम सपडिक्कम्मे के अय लोए जीवच्चेव अजीवच्चेव अणतालोए जीवच्चेव अजीवच्चेव केसासयालोए जीवच्चेव अजीवच्चेव दुविहा वोही प० त० णाणवोहीचेव दसणवो

अमाममरण वेप्रकारदे तेकहेछे । एक नीहारिम बीजो अनाहारिम पचिर निमे शरीरसुमूपासहित होय एमरणादिस्वरूप भगवते लोकमा कह्यो तमाटे लोकनुंस्वरूप कहेछे । जीव अह लोक कहिये जीव अर्ने अजीव ए द्रव्यरूप लोकछे धर्मास्तिकायादि जेहना अंतमयी तेलोक कहिये एहज जीव अर्ने अजीव एह ब द्रव्यनों अनतमयी । किम लोक शास्वतोछे । एहज जीवाजीवादि षड्द्रव्यरूपलोक शास्वतोछे । एह छद्रव्यमां जीवद्रव्य जो धिपावे तेहना वेमकार कहिया । एक नाणबोधि ते जिनधर्मनीप्राप्ति बोधिते भामाटे बोधिस्वरूप कहेछे । अवधिमानादिकनी प्राप्ति । सम्यक्त

श्रमनाय दिस्वाम त्रानुपातेन सूचचतुष्टयमाह । दुविहेत्यादि । बोधनंबोधि जिनधर्मलाभ ज्ञानबोधि ज्ञानावरणक्षयोपशमसमुत्था ज्ञानप्राप्ति दर्शनबोधि दर्शन मोहनीय क्षयोपशमादिसम्भव श्रद्धानलाभइतिपतदृती द्विविधा बुद्धा एतेच धर्मतएव भिन्ना सवधिततया ज्ञानदर्शनवारस्योस्वामिनामूलत्वादिति । एवमोहे मूर्ति । मवा नाधि वराय द्विविधोक्ता मुत्वा मोहेमूढाय स्यादिति तथाहि । दुविहेमाहेयमत्ते तं नाणमोहेचेव दंसणमोहेचेव । ज्ञाने मोहयता श्राद्यतोतिज्ञानमाहा ज्ञानावरणादय एवंदंसणमोहेचेव सम्यग्दर्शनमाच्छादयतीति । दुविहामूढाये त नाणमूढाचेव । ज्ञानमूढाएव ज्ञानावरणा । दंस णमूढाचेव । दर्शनमूढा मिथ्यादृष्टयइति द्विविधोप्यसंमाहो ज्ञानावरणादिकमनिबन्धम मितिसम्बन्धेन ज्ञानावरणादिकमपा मष्टाभिःसूत्रैर्विभमाह । नाणे स्यादि । सुगमानिचैतानि नवरं ज्ञानमावृणोतीति ज्ञानावरणीयं चाच्य सदसमायस सिनिमस मरणजीवस्वाभावमिव नाणावरणकर्म पडोवमंवोदए वत् । १ । देशंज्ञानस्याभिनिबोधिकादि मावृणोतीति देशज्ञानावरणीय सर्वज्ञान केवलाख्य मावृणोतीति सर्वज्ञानावरणीय केवलज्ञानावरणीमिति आदित्यकल्प

हीचेय दुविहा बुद्धा प० तजहा णाणबुद्धाचेव दंसणबुद्धाचेव एव मोहे मूढा णाणावरणिज्जे कम्मे दुविहे पन्नत्ते तजहा देसणाणावरणिज्जोचेव सव्वणाणावरणिज्जेचेव दरिसणावरणिज्जेकम्मेएवचेव वेयणिज्जे कम्मे

मीमांप्ति ते दर्शनमोहनीमा त्रणनी । मायदर्शन सहितहोय तेवुद्ध कहिये ते बेप्रकारेछे । एक नाणयुद्ध बीजो दर्शनयुद्ध एक नाणदानमाटे बेकहि या मसि जीयभाग्रितपर्याामाटे एकज माणदर्शन एकनेंजहोय एसंसारीछे। एमज मोहमूढ मूढ नाणमोह दर्शनमोह । मोहते नाणावरणयी वधा य माणावरणीमा बेभेदछे एक देशनाणावरणी ते मतिमानादिक ढांके । बीजो सर्वनाणावरणी जे केवलनाणढांके । दर्शनावरणपणि एमज देशथी

केवलज्ञानरूपस्य जीवस्यावारकतया साम्रमेव सन्दधातमिति तत्सर्वघातावरणं मत्याद्यावरणन्तु घनाच्छादितादित्येषप्रभाकल्पस्य केवलज्ञानदेशस्य घटकुड्यादिरूपज्ञानावरणतुल्यमिति देशावरणमिति पठ्यते च केवलनाणावरणं दंसणछक्कं मोहबारसगं [पनगाणुअन्नाओवव] ता सव्वघाइसव्वा सर्वतिमिच्छत्तवीसइमंति ॥ १ ॥ अथवा देशोपघातिसर्वोपघातिप्रकृत्यपेक्षया देशसर्वावरणत्वमस्य यदाह मइसुयनाणावरणं दंसणमोहं च तदुवघाईणि तप्फड्गाइ दुविहा ह देससव्वोवघाईणि ॥ १ ॥ सव्वेसु सव्वघाईसु हएसु देसोवघाइयाणं च भोगेहि सुवमाणो समए२ चयते हिं ॥ २ ॥ पढमसमइयगारं एवं खवगमेवमपाति पामसोविसुज्झमाणो कहइसमत्तंगमोवार ॥ ३ ॥ तथा दर्शनघामार्थावेवीपरूप मागुचीतीति दर्शनावरणीयं तच्च दंसणमोसेवीये दंसणवारवरेहणर्या तंपडिवारसमाय दंसणवरणमवेणोपेति ॥ ४ ॥ एवं दंसनि ॥ देसदंसणावरणीयं चक्खुचक्खुरवधिदर्शनावरणीय सर्वदर्शनावरणीयं तु निद्रापयुकं केवलदर्शनावरणीयवेतावं भावनातु पूर्ववदिति ॥ २ ॥ तथावेद्यते अनुभूयते इति वेदनीयं सातं सुखं तद्रूपतयावेद्यते यत्तथा दीर्घत्व माकतस्मात् इतरदेतद्विपरीतं भाहच महुलित्तनिसियखग्गधारा लेहणं व दाएसारिसं विसयं तारिसयं वेयणिसं सुहदुक्खुप्पायणमुवहत्ति ॥ १ ॥ मोहयतीति मोहनीयं तथाहि जहमज्जपाणमूढो लोएपुरिसोपरव्वसोहोइ तहमोहेणविमूढो जीवोयपरव्वसोहोइत्ति ॥ १ ॥ दर्शनमोहयतीति दर्शनमोहनीयं मि

दुविहे प० त० सायावेयणिज्जेचेव असायावेयणिज्जेचेव मोहणिज्जे कम्मे दुविहे प० त० दंसणमोहणिज्जे

चक्षु अचक्षु अवधिदर्शनावरण सर्वघाती पांचनिद्रा केवलदर्शनावरण एवंभेद । एम वेदनीकर्म बेप्रकारें तेकहेछे । एक सातावेदनी तेसुख बीजो असा तावेदिनी तेदुखमय्ये मरडीखडगधारा चाटवुं । मोहनीकर्म बेप्रकारें कहियो ते कहेछे । दर्शनमोहनी ते मिथ्यात्वमोहनी मिश्रमोहनी समकित

प्यात्वमिश्रमम्यक्त्वभेद चारित्रं सामायिकादि मोहयति यत्कषाय नोकषायभेदं ततश्च एविध यातिचे स्यात् एतद्रूपंच दुर्लभदेश्याउं गमियसुर्वदेश्य
तमुविभावमु दुःखसुखाभाधार धरेरदेहस्थिंजोवेति ॥ १ ॥ भवायु चामसिथितिरूपं भावमायुमाम्यत् भवायु भैवस्थितिर्विति विविधपर्याये गमयतिय
रिचमवति यस्मोर्व तयाभ एतत् स्वरूपच चश्चित्तमरोनिश्चो यथेमरूपाद कुचररूपाद सोहचमसोहचार चचउमचचोहिंवमेर्वि ॥ १ ॥ तचनामपिशुचर्च
पचेगरूपाद्कुचरजोवस्य मोहचमसोहचार घाविशाविसीयच्छति ॥ २ ॥ यमंतोर्थकरादि चमुभमगादेयस्वादोति पूज्योऽपूज्योयमित्यादि व्यपदेशरूपा
श्री पार्श्वायते इति गोत्रं सरूपचाभेद चचकुंभारोमच्चार कुचरपुज्येतराद्योगच्च इयगोत्रंकुचरश्रियं शोपपुज्येतरायत्तुति ॥ १ ॥ उर्वेगोत्रमूल्यलभिवन्य
म मितरत्तद्विपरीत ॥ ७ ॥ जोवदार्थसाधनं चान्तरापति यतो तन्तरायमिदचैवं चवरायादाचार्य मजुपरमंजारिएमित्युच्यि एवंचेचजीवो चान्तं

चेय चरित्तमोहणिज्जेचेय श्चाउकम्मेदुविहे प० त० श्चद्धाउएचेव भवाउएचेव णामकम्मेदुविहे प० तजहा
सुभणामेचेय श्चसुभणामेचेव गोत्तेकम्मेदुविहे प० त० उच्चागोएचेव णीयागोएचेव श्चंतराइएकम्मे दुविहे

मोहनी । चारित्रमोहनी ते सामायिकादिचारित्रने मूझवे कषाय नोकषायरूप । चाउखो कर्म वेमकारें कह्यियो हडसरिखुं तेकहेंवे । भवायु
ते कायस्थितिरूप नरतिर्यंचने भवायु भवस्थितिरूप देवता नारकीने । नामकर्म वेमकारें कह्यियो चितारासरिखुं तेकहेंवे । एक सुभनामकर्म ती
र्थंकरादि वीजो असुभनामकर्म अनादेयनाम । गोत्रकर्म वेमकारें कुंभारसरिखुं तेकहेंवे । उचगोत्र ते पूजनीक नीचगोत्र ते निंदनीक । अंतरा
यकर्म ते वेमकारें भंडारीसरिखो तेकहेंवे । एक मत्युत्पन्नविनाशि जे उपनोंयूपे विनसाडे ते अंतराय । बीजुं चावतो अर्थसाजरूपें ते पिहि

पंतरावति ॥ १ ॥ पडुप्पन्नविणासिएचेवत्ति । प्रत्युत्पन्नवर्त्तमान सर्थे वस्तु प्रस्थवीं विनाशित मुपघ्नते येन तत्तथा पाठान्तरेण प्रत्युत्पन्न विनाशयतीत्ये यौमें प्रत्युत्पन्नविनाशि चेवसमुचये इत्येवमन्यत्र पिधत्तेव निरुणद्धि आगामिनोसम्भ्यवस्तुन पन्था आगामिपथ इमिति क्वचिदागामिपथानि तिदृश्यते करोति । आगमपर्यंति । तत्थ सामर्थ्यमित्यत्र यदंपार्थियं सर्वे मूर्च्छा अम्यमिति मूर्च्छास्वरूपमाह । दुविहेत्यादि । सूत्रद्वय व्यक्तं न पर मूर्च्छामोह' सदसद्विवेकनाय' प्रेमरागो व्यक्तित्वरूपं प्रत्यवोचाद्वेद् यथा' सा प्रेमप्रत्तिका प्रेमप्रत्ययावा एवंद्वेषप्रत्तिका द्वेषप्रत्ययावेति मूर्च्छोपास वर्मावच पदआराधनवेति तसूत्रमेवाह । दुविहेत्यादि । सूत्रं व्यक्तं नवर आराधनआराधना ज्ञानादिवस्तुनो ऽनुकूलमतिंन निरतिचारज्ञानाचारो वेति याश्न् धर्मेण श्रुतचारित्ररूपेण चरन्तीति धार्मिका' साधव स्तेषामियं धार्मिकी साचासावाराधनाचेति निरतिचारज्ञानादिपालना धार्मिकाराधना

प० त० पडुप्पन्नविणासिणेचेव पिहतिमस्साआगामिपह दुविहामुच्छा प० तंजहा पेज्जवत्तियाचेव दोसवत्तियाचेव पेज्जवत्तियामुच्छा दुविहा प० त० माएचेव लोभेचेव दोसवत्तियामुच्छा दुविहा प० त० कोहेचेव माणेचेव दुविहा आराहणा प० त धम्मियाराहणाचेव केवलिआराहणाचेव धम्मियाराहणा दुविहा प०

तथाणामितंतराय । एमाठ कमथी मूर्च्छा तेमोह सपजे तेमाटे मूर्च्छानो स्वरूप कहेछे । बेप्रकारेंमूर्च्छा एक प्रेम रागनी मूर्च्छा पुत्रधनादि हे पणो मूर्च्छा । प्रेमप्रतिमूर्च्छा बेप्रकारें एक माया कपटादि बीजो लोभथी धनादिकनीमूर्च्छा । द्वेषवर्तिकामूर्च्छा बेप्रकारें एक क्रोधथी एक मानथी । मूर्च्छादिकमनो क्षय धमाराधनथी होय तेमाटें आराधना कहेछे । बेप्रकारें आराधनाकही । एक चारित्ररूप धर्मने आराधिवो ते

केवलिनांश्रुतावधिमनःपर्यायकेवलज्ञानिना मियं केवलिकी सासासावाराधनाचेति केवलिकाराधनेति ॥ सुयधम्मेत्यादी ॥ विषयभेदेना राधनामेद एक केवलिकाराधनेत्यादौतु फलभेदेनेति तत्र अंतोभवति यस्य क्रियां तक्रिया भवच्छेद इत्यथ सकेतु यो राधना शैलेशीरूपा सा अंतक्रियेत्युपचारात् एषाच क्षायिकज्ञानिकेवलिनामेव भवति तथा कल्पेषु देवलोकेषु मतुज्योतिषादि विमानानि देवावासविशेषा यद्वा कल्पाय सौधर्मादयो विमानानिच तदुप रितनि ग्रैवेयकादीनि कल्पविमानानि तेषु उपपत्ति रुपपातो जन्म यस्या सकाशात् सा कल्पविमानोपपातिका प्रागाद्याराधना एषाच श्रुतकेवल्यादी नां भवतीति एवंफलाचेय मनंतरफलद्वारेणाता परंपरयातु भवांतक्रियानुपातिन्येवेति प्रागाद्याराधनानंतरमुक्ता तत्फलभूतांश्च तीर्थंकरा स्तेषां सामस्त ता देयितापीति तीर्थकरान् विभागशानुपातेनाह ॥ दोतित्थगरेत्यादि ॥ सूत्रचतुष्टयं कण्ठ्यं नवरं पद्मं रक्तोत्पलं तद् गौरौ रक्ताविलयं तथा चन्द्रगौरौ चंद्रप्र

तजहा सुयधम्माराहणाचेय चरित्तधम्माराहणाचेय केवलिआराहणा दुविहा पन्नत्ता तंजहा अंतकिरियाचेय कप्पविमाणोववत्तियाचेय दोतित्थगरानीलुप्पलसमावन्नेण प० त० मुणिसुव्वएचेव अरिट्ठणेमीचेव दोतित्थ

धार्मिकीआराधना केवलीनें श्रुत अवधि मनपर्यव केवलज्ञानरूप श्रुताराधना । धार्मिकीआराधना बेप्रकारें कही श्रुतधर्म ते सिद्धांतनी आरा धना चारित्रधर्म पंचमहाव्रतादिकनी आराधना सेवना । केवलीनी आराधना बेप्रकार तेकहेछे । अंतक्रिया तसवर्नो उच्छेद मोक्षजाय क्षायिक केवलज्ञानी उत्कृष्टी नवग्रैवेयक अनुत्तरविमानें उपजे ते कल्पविमानोत्पत्तिया श्रुतकेवली प्रमुखनें । बे तीर्थंकर नीलाकमलसरीखा वर्णेकरी ॥ मुनिसुव्रत वीसमा तथा अरिष्टनेमि बावीसमा । बेतीर्थंकर प्रियंगुवर्णसम वर्णपी नीला कहिया मल्लिनाथ उगणीसमा तथा पार्श्वनाथ तेवीस

भार्तिक गाथार्थं पउमाभवासुपुज्जा रत्तासखिपुप्फदंतससिगोरा सुव्वयनेमीकाला पासोमल्लीपियंगाभत्ति ॥ १ ॥ तीर्थंकरस्वरूपमनंतरसुक्तं तीर्थंकर्तृ
साच तीर्थंकरा एतोयच प्रवचन मत प्रवचनैकदेशस्य पूर्वविशेषस्य विभागकारस्तारावाह ॥ सच्चप्पवाएत्यादि ॥ सज्जो जीवेभ्यो हितं सत्य संयम सत्यवच
नंवा यत्र सभेद सप्रतिपक्षश्च प्रवर्त्योच्यते ऽभिधीयते तत् सत्यप्रवाद तच्च तत् पूर्वंकच सकलश्रुतात् पूर्वंक्रियमाणत्वादिति सत्यप्रवादपूर्व तस्यषट्
तत्परिमाणच एकापदकोटी षट्पदाधिका तस्य देवस्तुनो वस्तुच तद्विभागविशेषो ऽध्ययनादिवदिति सगम्यरं षष्टपूर्वस्वरूप मुक्त मधुना पूर्वगम्य
माम्यात् पूर्वमद्यपरागमयस्वरूपमाह ॥ पुव्वेत्यादि ॥ वल्वं गणधरस्थाना वचनान्तरस्वरूपं सूचयन्नेवाह ॥ उत्तरेत्यादि ॥ चाच गणधरपन्तव दीपा सम

गरा पियगुसमायखेण प० तं० मल्लीचेव पासेचेव दोतित्थगरापउमगोरा पउमेण प० तं० पउमप्पहेचेव
वासुपुज्जेचेव दोतित्थगराचंदगोरा चंदेण प० तं० चंदप्पभेचेव पुप्फदंतेचेव सच्चप्पवायपुव्वस्सण दुवेवत्थू
प० पुव्वभद्दवयानक्खत्ते दुतारे प० उत्तरभद्दवयानक्खत्ते दुतारे प० एवपुव्वफग्गुणी उत्तरफग्गुणी अतोण

मा ॥ बेतीर्थंकर कमलसरिखागोरा वर्णंकरी तेकहेवे । पद्मप्रभ छठा वासुपूज्य बारमा ॥ बेतीर्थंकर चंद्रसरिखागोर कहिया वर्णंकरी । तेकहेवे
चंद्रप्रभ आठमा तथा पुष्पदंत बीजुनाम सुविधिनाथ नवमाजिनवर ॥ एह तीर्थंकर तीर्थना करणार तेतीर्थंकर सत्यप्रवाद पूर्वछठुं जिहां स
त्यवादछे तेप्रवचन तेहनो एकदेश तेपूर्वछे तेवतीपूर्वनो अधिकार कहेछे तेसत्यप्रवादपूर्वना बेअध्ययनकहिया । पूर्वशब्दमांहें पूर्वाभाद्रप
दनक्षत्रना बेताराछे । एमज उत्तराभाद्रपद नक्षत्रना बेताराछे ॥ एम पूर्वाफाल्गुनी तथा उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र बेतारा कहिया ॥ नक्षत्र

प्राचेति समुद्रविस्थानसमाप । मंतोचमित्यादि । मंतर्मध्ये मनुष्यक्षेत्रस्य मनुष्योत्पत्त्यादिविशिष्टाकाशखण्डस्य पञ्चचत्वारिंशद्योजनलक्षप्रमाणस्य श्रेयं चरम मिति मनुष्यक्षेत्रस्याशा भरतक्षेत्रोत्पन्नौ तत्पुरुषाणां नरकगामितया दिशामवतारमाश । दोषकाहोत्यादि । द्वौ चक्रेष रत्नभूतप्रवरचक्रि पिव वर्त्तितुंशीलं ययोस्तौ चक्रवर्त्तिनौ । कामभोगत्ति । कामौच शब्दरूपे भोगाच गन्धरसस्पर्शा कामभोगा' अथवा काम्यंतइति कामा मनोज्ञत्वेन' तेषते भुज्यंतइति भोगाच शब्दादय इति कामभोगा' अपरित्यक्ता स्तै याभ्यां तौ तथा । कालमासेति । कालस्य मरणस्य मास उपलक्षणत्वेन पक्षाहोरात्रादि कालपकालमासे मरणावसर इतिभाव' कालंमरणं कृत्वा अधःसप्तम्यां पृथिव्यां तमस्तमायामित्यर्थ' अप्रतिष्ठानकाभिधे नरके उपरि ता चिन्हमातारसमभा पि प्ता हिताभोग्यत्वं चमतितामे नरके पतालो मध्यमे नैरयिकत्वेनोत्पन्नो सुभूमोष्टमो ब्रह्मदत्तश्चद्वादश उभय तत्री मध्यस्थितिमत्सागरोपमाणि स्थितिरि ति नारकानाच संस्थैककासापि स्थिति भंवतीवि भवमपञ्चादीनामपि ता त्वयंचम् पत्रसूचीमाप । मसुरेत्यादि । मसुरेश्वो पमरयत्रो तज्जितागान्तया

मणुस्सखेत्तस्स दोसमुद्दा प० तं० लवणेचेव कालोदेचेव दोचक्कवट्टी अपरिचत्तकामभोगा कालमासे का लंकिच्चा अहेसत्तमाएपुढवीए अप्पइट्ठाणेनरए नेरइयत्ताए उववन्ना तंजहा सुभूमेचेव बंभदत्तेचेव असुरिं

सहित द्वीपसमुद्रवे तेमाटें पैंतालीसलाख योजन मनुष्यक्षेत्रवे तेहमां बसमुद्रवे तेकहवे । एक लवणसमुद्र बीजो कालोदधि समुद्र ॥ मनुष्य क्षेत्रमां वेचक्रवर्त्तिना प्रस्तावथी भरतक्षेत्रमां उपनां उत्तमपुरुष ये नरकमां गया कामभोग छांड्याविना कालकरी आयुपूर्णकरी हेठें सातमी नरकपृथिवीयें अप्रतिष्ठाननाम नरकावासानें विषे नारकीपणे उपना तेंतीससागरना आउखानेविषे । एक सुभूम चक्रवर्त्ति बीजो ब्रह्मदत्त

मानिकवर्जितानामसुरवर्जभवनवासिनां देवानां असुरेन्द्रवर्जानां नागकुमारादीन्द्राणामित्यर्थं उत्कर्षतोऽर्द्धपल्योपमे किञ्चिदूने स्थिति प्रज्ञप्ता उत्कृष्ट सम
रणवि भारमहिय सेसाणसुराण भवणवइ देसूणपलियदुगं उद्देसत्तरिणार्थं ॥१॥ उत्कर्षत एवैतत् जघन्यतस्तु दशवर्षसहस्राणीति भावः दसभव
णवणयराणं वाससहस्साठिई जहन्नेणं पलिओवममुक्कोसं वंतरियाणं वियाणेज्जत्ति ॥ १ ॥ मेव सुगमं नवरं सौधर्मादिष्विषंस्थिति दोसाहियसत्तसाहिय ४ दस
१ चोद्दस ६ सत्तरेव ० अयराइ सोहम्माजासुठी तदुवरिइक्किक्कमारोविणि ॥ १ ॥ इयसुकृष्टा जघन्यात् पलिअमहियं २ दोसा र १ साहिया ४ सत्त ५
दसय १ चोद्दसय ० सत्तरसस्सहस्सारे ८ तदुवरिइक्किक्कमारोविणि ॥ १ ॥ देवलोकप्रस्तावात् लगादिकारेण देवलोकादिसामान्यावतारं सप्तसूत्राण । दोसु

दवजियाण ञयणवासीण देवाण देसूणाइ दोपलिउवमाइ ठिई प० सोहम्मेकप्पे देवाण उक्कोसेण दोसा
गरोयमाइ ठिई पन्नत्ता ईसाणेकप्पे देयाण उक्कोसेण साइरेगाइ दोसागरोयमाइ ठिई पन्नत्ता सणकुमारे
कप्पे देवाण जहन्नेण दोसागरोयमाइ ठिई पन्नत्ता माहिंदेकप्पे देवाण जहन्नेण साइरेगाइ दोसागरोय

बारमो चक्रवर्ति ॥ भारकीनी असख्यातकालनी स्थितिछे तिम भवनपतीनी पण तकछे । असुरेंद्र ते चमरेंद्र बलेंद्र वर्जीने बीजा नागकुमा
रेंद्रादिकनो उत्कृष्टो देशोऊणो बे पल्योपमनो आऊखो कहियो जघन्य दशहजारवर्षनो चमरेंद्र तथा बलेंद्रनी उत्कृष्टी सागरोपमनी झाझेरीथिति
छे ॥ एम सौधर्मदेवलोके देवतानी उत्कृष्टी बेसागरोपमनी थितिकही ॥ ईसानदेवलोके उत्कृष्टी झाझेरी बेसागरोपमनी थितिकही ॥ सनत्कु
मार त्रीसरेदेवलोके देवतानें जघन्य बे सागरोपमनी थितिकही ॥ माहेंद्रदेवलोके देवतानी जघन्य झाझेरी बे सागरोपमनी थितिकही ॥ देव

स्मादि। कप्पया देवमोवया त्रिय कम्पसिमो देव परता नसन्ति येयं कपवमिति मवर। तेउलेसन्ति। तेजोरूपा लेश्या येयाम्ते तेजोलेश्या स्रोध सोध र्मेशानयोर्न मपरत तयोय तेजोलेश्याएव मेतरे भावय किवह्यागोसाभाज तेउलेसायमनपर्वतरिया वोदससोहम्मीसाबे तेउलेसामुनेयम्मत्ति ॥ १ ॥ ॥ कायपरियारमत्ति। परिचरन्ति सेवंते स्त्रियमिति परिचारका कायत परिचारका कायपरिचारका एवमुत्तरत्रापि मवरं स्पर्शादिपरिचारका म्पर्शरे देवापगागतदेवापतापा भवंतोत्यभिप्राय भानतादिषु चतुर्षु कल्पेषु मन परिचारका देवा भवन्तीति वक्तव्ये विमानकानुरोधात् दोदन्देसुत्त

माइठिइ प० दोसुकप्पेसु कप्पत्थियाओ पण्णत्ताओ तं० सोहम्मेचेव ईसाणेचेव दोसुकप्पेसुदेवा तेउलेस्सा पन्नत्ता तजहा सोहम्मेचेव ईसाणेचेव दोसुकप्पेसुदेवा कायपरियारगा पण्णत्ता तजहा सोहम्मेचेव ईसाणे चेव दोसुकप्पेसुदेवा फासपरियारगा पण्णत्ता तजहा सणकुमारेचेव माहिंदेचेव दोसुकप्पेसुदेवा रूवपरि यारगा पण्णत्ता तजहा बंभलोएचेव लंतएचेव दोसुकप्पेसुदेवा सद्दपरियारगा पण्णत्ता तजहा महासुक्केचेव

ताना परिकारमांटें देवीनो अधिकार कहेछे ॥ बे देवलोकनें विषे देवलोकनीवासी देवांगनाछे सौधर्मदेवलोकें इशानदेवलोकें। बेदेवलोके देवतानें तेजोलेश्या कही सौधर्मदेवलोकें तथा ईशानदेवलोकें ॥ बेदेवलोकें देवतानें कायायेंकरी देवांगनानो भोगछे मनुष्यनीपरें। सौधर्मदेवलोकें ईशान देवलोके। बे देवलोकें देवताने फरसथी आलिंगनादिकथी स्त्रीनोंभोग कह्यो सनत्कुमार तीसरें देवलोकें माहेंद्र चउथे देवलोकें। बेदेवलोकें देवता रूपदीठांथी भोगपूर्वथाय यूम्ए पांचमें देवलोके लांतकछठेंदेवलोकें ॥ बेदेवलोकें देवता देवांगनाना शब्दथी भोगसेवेछे महाशुक्र सातमें देवलोके

मानतादिषु द्वाविंशतिरिति मावार्थ दोसागरप्रमिताया वाप्याकरिसेवदोविंशोत्वे सहस्रेवरोमचे उवरिंपरिवारधानलिति ॥ १ ॥ द्वयष परिवार या कथत कथच चोवा सहेतुमि वासनमेपि चिताववस्स कुर्वतोस्माव । जीपावमित्यादि । घ्नाविनट सुममानि गमरं चोवा जतयो पवाक्यास हारे द्मो यानबो राजयबो वसकावरकावसमबो समाहारो द्विकानं वर्धमिथ्यात्वादिभिर्विनिमवितता सामाभ्येनोपाजिता वचमाचावस्थायट कवोत्पोछता वचोर्नोत्सागयो निर्वृत्ति येनास्ते द्विस्थानमिर्वृत्तिका स्तान् पुद्गलान् कार्मणान् पापकर्मवातिकर्मसवमेववा प्रामावरणादि तद्भावस्तता तया पापकर्मतवा तद्रूपतयेत्यव चितवंतोवा यतीते काले चिन्वति वा सम्मति चेष्यंतिवा यनागते काले चोचिदिति गम्यते चयन कपायादिपरिणतस्य कर्मपुद्गलोपादानमात्रं उपचयनंतु चितस्या याधावार्ध सुक्षा प्रामावरणीयादितया निषेक सचैवं प्रथमस्थितौ महुतरं कर्मदलिक निषिचति ततो द्विती

सहस्सारेचेव दोछदामणपरियारगा पनत्ता तजहा पाणएचेव अचुएचेव जीयाणदुठाणनिव्वत्तिए पोग्गले पावकम्मत्ताए चिणसुवा चिणतिवा चिणिस्सतिया तजहा तसकायनिव्वत्तिएचेव थावरकायनिव्वत्तिए

सहस्रार पाठमेंदेवलोके ॥ बेहूने ममयी देवांगनाना भोगमी सेयाछे प्राणतेंद्र नवमा दसमा देवलोकनो धणी अच्युतेंद्र इग्यारमा बारमानोधणी नवमा दसमा इग्यारमा बारमा देवलोके ममथोजोगवेछे पणि बेठाकाना अधिकारमांटे इंद्र कहिया ॥ एजोगादिकनी इच्छा ते जीवनें वे थानके उपना कर्मयी उपमावेछे तेमांटे पापकर्मनु स्वरूप कहेछे । रागा मिथ्यात्वादिके करी पापकर्मपणें पुद्गलनों सेवु चिवनु कहिये चिवता हुआ अतीतकाले वर्तमानकाले चिणेछे आगामिकाले चिणस्ये । तेकहेछे । त्रसकायनिर्वर्तित जे बेइंद्रियादिक त्रसकायमा उपजीने पापकर्मनों नी

यामां विशेषहीनमेवं । जाणुओसियाएविसेसहीणंनिसिंचइत्ति । यस्मान्नु तस्यैव ज्ञानावरणादितया निषिक्तस्य पुनरपि कषायपरिणतिविशेषा थिबाधन मिति उदीरणंतु अनुदयप्राप्तस्य करणेनाकृष्योदये प्रक्षेपणमिति वेदन मनुभवः निर्जरा कर्मणो ऽकर्मतामवनमिति कर्मैव पुद्गलात्मकमिति पुद्गलान् द्रव्य येनकालभावे क्षिमागमावतारेण निरूपयन्नाह । दुपएसोत्यादि । सूत्रयोर्विंशति सूत्रमापेयं नवर एव सापत्नरवात् दुसमयट्ठिएरत्याद्विसूत्रापेक्षयैवं यति वाच्यानि कामं पंचविंशाष्टभेदा दर्शगमरससमगांया यित्येति भावनायैव । दुसमयट्ठियापोग्गलेत्यादि । क्षिकालमबसपतुर्थोदेश्यक समास ।

चेय उवचिणसुवा उवचिणंतिवा उवचिणिस्संतिवा चयिंसुवा चयंतिवा चयिस्संतिवा उदीरिंसुवा उदीरंतिवा उदीरिस्संतिवा वेदिंसुवा वेदिंतिवा वेदिस्संतिवा णिज्जरिंसुवा णिज्जरिंतिवा णिज्जरिस्संतिवा दुपएसियाखंधा अणंता पण्णत्ता दुपएसोगाढा पोग्गला अणंता प० एवजाव दुगुणलुक्खापोग्गला अणंता

गियुं तथा थावरकायनिवर्तित जे पृथिव्यादि पांचथावरमां भवतरी पापकर्मनों भोगिवु एहवाकर्मपुद्गल गृहवै ॥ एम गहिया कमनों बाधाबा कालमुंकीनें पापपुंयिजेपणी तेमांथी हीमकरवु एतले भाषाथाकाल बेतलुंमोडुं तेउपचय अतीतकालेंकीधा तेकर्मनुं कषायथी निकाचवु तेबंध तेया थताहुया थांपेंछे थांधस्यें । एमज त्रसथावरपणा में उदीरण वेउदयकथीधाप्या तेकारकथी बलात्कारें उदयभावें उदीरताहुया उदीरेंछे उदीरसें वे दयु तेनोगिवु येदताहुया वेदेंछे वदसें निजरा ते भोगव्यांपछी कमते धकर्मभाव निर्जरताहुया निर्जरेंछे निर्जरसें त्रिणकालें एजीव त्रसथावरपणें ॥ कर्मते पुद्गलरूपछे तेपुद्गलनुं स्वरूपकहेंछे । येमदेसियापुद्गलनासंघ अनंतछे । वेधाकाशना प्रदेशने अवगाही आश्रयीरहियाछे एहवा अनंतापुद

तत्समाप्तौ च श्रीमदभयदेवसूरिविरचिते स्थानाङ्गविवरणे द्वितीयमध्ययनं द्विस्थानकाभिधानं समाप्तमिति ॥ ग्रन्था १६०२ ॥ २ ॥
द्विस्थानकानन्तरं त्रिस्थानकमिदमवाप्तं संख्याक्रमप्रामाण्यादित्यनेन संबन्धेनायातस्य चतुरनुयोगद्वारस्य चतुरुद्देशकस्य च तथापि द्वितीयाध्ययनस्यादावेव जीवादिपर्याया उक्ता इहाप्यध्ययने प्रथमोद्देशके तदभिधीयत इत्येवं संबन्धस्य तत् प्रथमोद्देशकस्य तथा अनन्तरोद्देशकान्त्यसूत्रे पुद्गलधर्मा उक्ता एतत् प्रथमसूत्रे तु जीवधर्मा उच्यन्त इत्येवंसंबन्धस्य तदादिसूत्रम् । तथेदमादि । व्याख्या साच सुकरैव नवरं मिह नामेन्द्रः इन्द्र नामसत्यं तदेव यथार्थं सि द्धत्वपराक्रम मिंद्रो नामेन्द्रो यथा सचेतनस्य चेतनस्य वा यदिन्द्र इत्यभिधानं नामस्थितं समासनामभवतोरभेदोपचारात् नामवासाविन्द्रश्चेति नामेन्द्रो यथा नाभेयेन्द्र इन्द्राभिधानं नामेन्द्र इति नामकरणं पुनरिन्द्र वस्तुनोऽभिधानं स्थितमन्यार्थं तदर्थनिरपेक्षं पर्यायानभिधेयं यावद्द्रव्यभावि च ॥ १ ॥ एवमन्यः यदस्त्यादिना यथा मिंद्रस्थापना स्थित मित्यादिना समयार्थं गोपालादा विद्रत्वादि शब्दं भगवंत इत्यादीति यथा यत्किञ्चनार्थं निरपेक्ष लोकासादिषमथुन इन्द्रस्यादिना अभिधानं यथार्थंतया समाश्रय यथार्थं स्थित तथामेति इन्द्रादिवस्तुनोऽथ अभिधानं मिंद्रनामयन्निरपेक्षं सतो याथात्म्य यथार्थं स्थितं नामेति तथा इन्द्राद्यभिप्रायेण स्थाप्यत इति स्थापना लेप्यादिकर्म सेन्द्र स्थापनेन्द्र इन्द्रप्रतिमा साकारस्थापनेन्द्र यथाविन्यास

पणत्ता ॥ दुठाणसमत्त ॥ २ ॥ तउ इंदापणत्ता तजहा णामिंदे ठवणिंदे दविंदे

गलदे । एम यावत् बेगुणलूखा पुद्गल अनंता कहिया भगवंते ॥ इति द्विस्थानकनामे बीजूं अध्ययन पूरो थयो ॥ २ ॥ ॥
नामथी इन्द्र जे वस्तुनो नाम इन्द्र । इन्द्रनी प्रतिमा ते स्थापना इन्द्र । जे भव्यजीव आवते भवे इन्द्र थाय ते द्रव्येन्द्र । अथवा इन्द्रसिंह अथवा वस्तुनो

क्षितरइति मापनाक्षपचमिदं यतुतदर्थविकुर्म तदभिप्रायेचवपतत्करचि क्षेप्यादिकमतस्मा पम्रेतिविमते स्वकार्यचेति ॥ १ ॥ तथा क्षेप्यगचनीव्रत्विति
एम मम्भाग्नियाभवेठवचा कोइयसभावोपुचइक्षितिमिरागिरैयक्लोत्ति तथा प्रयतिमच्छवि तास्काम् पर्यायाम् द्रूयतेवा तेषे पर्याये द्वीवासत्ताया चयपवी
विकाराचा वर्णादिगुणानां ग्राव समूहइतिद्रम्य तच भूतभावभाविभावचेति भावच द्रवएगुचतेदीरच यर्थोविभारोगुचाचसंदावो द्रम्यभम भाव स्वभुवभावं
पजग्रामेति ॥ १ ॥ तथा भूतस्वभाविनोधा भावस्विकारपतुयचोचे तत्द्रम्यतत्वपे सचेतनाचेतनंगदित ॥ २ ॥ तथा पनुपयोगो द्रम्य समप्रधानचेति तच
द्रम्यशमाश्रिम्रयेति द्रमेंद्र सच द्विधा पागमतो नापागमतय पचागमत पसत्वागममधिकत्य प्रामापेचयेवर्व गोपामममतस्तु तद्विपर्यय साप्यित्वतथा
गमतदन्द्रयन्दापेता गुपयुक्तो द्रम्येंद्रो ऽगुपयोमो द्रम्यमितिवचनात् पयमेवार्थो मंमस माविश्च माष्येव स्वचाधि पाममपोगुचतो मंमसशाशुचाविपो
यता तथामम द्विशुत्तो विपोचपत्तोत्तिनोदम्येति ॥ १ ॥ तथा गोपागमत स्त्रिविधो द्रम्येंद्र स्तपथा प्रमरोरद्रम्येंद्रो मध्यमरोरद्रम्येंद्रो प्रमरोरमध्यमरोरव्यति
रिक्तो द्रम्येंद्रचेति तचप्रम्य मरोर प्रमोरमेव द्रम्येन्द्र प्रमरोरद्रम्येंद्र एतदुक्तमवति इंद्रपदार्थप्रम सच्चरोर मामरहित मदतीतकालानुभूत तद्भावानुभवा
मिवधिस्तातमारिमतमपि घृतघटादिन्यायेन गोपागमतो द्रम्यन्द्रइति इंद्रागमशून्यत्वात तथैव सर्वनिपेधएवनोभन्द तथा मच्यो योग्य इन्द्रमन्दार्थं मापति
योगतावद्विजानातिसभव्यइति तच मरोर भव्यमरोर मतदेवभावेंद्रो भव्यमरोरद्रम्येन्द्र पचमभभावाचो माविनीतिषत्ति माचोवस्ये म्त्रोपयोगाधारत्वा प्मधुघ
टादिन्यायेनैव तथाचादिमरोर भव्यमरोरद्रम्येन्द्रइति नोमव्द पूर्ववत् उक्तच मकृतमधिकत्य मगतपवत्वचापय देवोभव्यसपाशजीवोवि गोपागसमो
दम्य पागमरहितमातिवंभविवंति ॥ १ ॥ प्रमरोरभव्यमरोरव्यतिरिक्तद्रम्येंद्रो भावेन्द्र कार्येच व्यापृत पागमतो गुपयुक्तद्रम्येंद्रवत् तथा यच्चरोर मामद्र
यम्मा तोतभावेंद्रपरिणाम मतोभयातिरिक्तद्रम्येंद्रो प्रगरोरद्रम्येंद्रवत् तथा योभावेंद्रपर्यायमरोरयोग्य पुद्गलराशि यच भावींद्रपर्याय मामद्रम्य तदप्युभया

तिरिओइन्द्र भवमरीरइन्द्रवत् यथा वस्त्रामेदेन विविध स्त्रयथा एव भविओ भवाउओ ऽभिमुखनामगोत्रयेति तदेकस्मिन् भवेतस्मि येवाविमान्ते
भावी एवमविओ योमन्तरएव भावेन्द्रतयो त्पत्स्यतेऽति यथाममंत स्मोऽपि पल्योपमानि मयभित देवकुर्वादिमिथुनकाद भवनपत्यादोत्पत्तयो त्पत्तिसथ
मा।रिति तथा सव्वेगग्रायुर्वन्धानन्तर मवसाउरनेनेति यवाउयवते यथोत्कर्षत पूर्वकोटिविभागं यावद् आत्परत आयुष्कबन्धाभावात् तथा याभिमुखे
समुखे जघन्योत्कर्षाभ्या समयान्तमुहूर्तान्तरभावितयानामगोत्रे इन्द्रसम्बन्धिनो यस्य तथा तथा मावेश्वर्ययुक्ततोऽनन्तरादिभावेन्द्रापेक्षया ऽप्रधानस्या
न मावित्वेन्द्र इन्द्रनपरिणामेन भवतीति वा यथाशास्त्रिनिरूपितेति भावेन्द्रो यदाह भावोविवक्षितक्रिया नुभूतियुक्तोऽहिविशेषसमाख्यात सर्वज्ञैरिन्द्रादिव दिहें
इनादिविविधानुभवात् ॥ १ ॥ तत्र द्विधा आगमतो नोआगमतश्च तत्रागमत इन्द्रज्ञानोपयुक्तो जीवो भावेन्द्र कथं मिनै द्रोपयोगमात्रा तन्मयता यतस्य
ते मदग्निज्ञानोपयुक्तो माणवको मिरेव दहनपचनप्रकाशनाद्यर्थक्रियाप्रसाधकत्वाभावादितिचेत्रा मिभ्रायापरिज्ञानात् सं[?]पुज्ञानमयमसौ मात इत्य
नयोस्तर मवधार्याभिधानमथवा शुद्धनामधेयाति सर्वज्ञादिना मविसंवादस्थानं यथाज्योतिष्ठ मिभवमात्र घटमप्यदृक्षिमप्रज्ञानं घटऽति पभ्निरितिव
यत्राणं तदव्यतिरिक्तो ज्ञाता तन्मयो भवते अन्यथा तज्ज्ञाने सत्यपि नोपलभ्येता ऽतन्मयत्वात् प्रदीपवत्स्वाम्यवत् पुरुषान्तरवद्वा जवाभाकारं त
त्पदार्थान्तरव विवक्षितं पदार्थोपरिच्छेदमसङ्गात् अन्यायमापत्र ग्रामाग्रामस्तुल्यत्वेन स्वपरिणामान्यत्वात् भावागम भवानर सवएव दहनाद्यर्थक्रियाम
साधको भवत्व्यवयाम्निना व्यभिचारादिति ग्रत प्रसङ्गेन नोआगमतो भावेन्द्र इन्द्रनामगोत्रे कर्मणोपेदयम् परमैश्वर्यभाजन सम्यंनिधिपत्यपनस्सा यो‍य
न्दन मत एव मेन्द्रपदार्थधान मिन्द्रनपदेमनियममतया विवक्षित मिन्दनक्रियायाएवच विवक्षितत्वात् अथवा तथाविधज्ञानक्रियारूपोय परिणाम

ममागममप्य केवलो मपामागम इत्यतो मिथ्यपचनत्वा मोमम्दस गोभाममत इत्यास्मावतइति मनु नामस्थापना द्रव्येभिन्द्राभिधानं विवक्षितभावम्
न्यसात् द्रव्यस्य समानं पत्ती मतव वपर्याविधेय भावच घमिन्द्रावदम्यत्तंतदव्यसुततपंचतुष्टार्ई वोभावचव्यियार्थ नामार्थेवपदविसेसोत्ति ॥ १ ॥
घघाच्यते यथाहि स्थापनेन्द्रेपत्तु इन्द्राकारो लक्ष्यते तथाकर्तु सद्भूतेन्द्राभिमायो भवति यथा द्रष्टु स्तसाकारदर्शना दिन्द्रमव्यय स्तवा प्रवतिकृतधिमय
फलाधिन' स्तातुं मवर्तते पर्यंच माप्नुवन्ति केचिदेवतानुपहा मतथा नामद्रव्येन्द्रयोरिति तस्मात् स्थापनाया स्तावदित्वं भेदइति भावच भागारा
भिप्रायो बुद्धेविरियाफलंचपाएच कसाईसइठवपिंदे गतहागामिदइव्विदेत्ति ॥ १ ॥ यथाच द्रव्येन्द्रो भावेन्द्रकारणतां मतिपद्यते तथोपयोगा
पेक्षाया मपि तदुपयोगतामादय त्वघामयोय मतथ। नामस्थापनेन्द्रा वित्थयं विभिन्नइति भावच मावक्षकारण पाइ दव्वंभावोयतस्सपव्वायो उवयोगप
रिणइमपो गतहागामंनयाठवर्वत्ति ॥ १ ॥ उभानामस्थापनाद्रव्येन्द्रा' इन्द्रागो भावेन्द्रं विस्तागवायततारेचाइ । तयोरदेस्यादि ॥ वाच्चं नवर भावेन मा
नस्य भावेपा इन्द्र' परमेश्वरो भावेन्द्रो मतिपयवत् स्पुताचान्यतरभावयमविवेधितवस्तुविषय' केवलीया पयंदर्शनेन्द्र' घायिकसम्यक्त्वंशी चारित्रेन्द्रो यथा
ख्यातचारित्र' एतेषांच भावेन सकलभावप्रधानघायिकसम्यक्त्वेन विवक्षितघायोपशमिकसम्यक्त्वेनवा भावत' परमार्थतो ऐन्द्रस्वात् सकल संसारप्रासपूतगु
वलमोसचचपरमैश्वर्ययुक्तस्वात् भावेन्द्रत्वमस्येति एक माध्याभिमैश्वर्यापेक्षया भावेन्द्रत्वमित्य मथवा द्वैश्वर्यापेक्षयातदेवाह । तयोरदेस्यादि। भाषितार्थं

॥ तउ इदा पयत्ता तजहा णाणिदे दसणिदे चारित्तिदे ॥

पक्षी गोपेंद्र भूमीन्द्र इत्यादि नाम ॥ यसी त्रिण प्रकारें इंद्र कहिया तेकहेछे । नार्णेद्र केवली पूर्व नाथवंत । दर्शनेंद्र ते घायिक समकितनोंधणी

मरं देवा वैमानिका ज्योतिष्कवैमानिकाया रूडे असुरा भवनपतिविशेषा भवनपतिव्यन्तराया सुरपर्युदासात् मनुजेंद्र चक्रवर्त्यादिरिति चरणाचामध्येयां वै क्रियकरणादि मतिपुक्ततयें द्रत्वमिति विकुर्वणानिरूपणाचाह ॥ तिविहेत्यादि ॥ सूत्रमोक्त्वा नवर वाह्यान् पुद्गलान् भवधारणीयशरीरा भवगाढचेत्र प्रदेशवर्त्तिनो वैक्रियसमुद्घातेन पर्यादाय गृहीत्वा याविकुर्वणा क्रियतइति शेष स्थानपर्यादाय बाह्य भवधारणीयरूपेव सा स्था यत्पुन भवधारणीयस्यैव कि चिद्विशेषापादन सा पर्यादाया अपर्यादायापीति ततोया व्यपदिश्यते भववा विकुर्वणा मूयाकरणं तव वाह्यपुद्गला नादाया भरणादीन् भपर्यादाय चेम

तत्थ इदा पच्चत्ता तजहा देविंदे असुरिंदे मणुस्सिंदे तिविहा विगुव्वणा पण्णत्ता
तजहा बाहिरएपोग्गले परियाइत्ता एगाविगुव्वणा बाहिरएपोग्गले अपरियाइत्ता
एगा विगुव्वणा बाहिरएपोग्गले परियाइत्तावि अपरियाइत्तावि एगाविगुव्वणा

चरित्रेंद्र यथाख्यातचारित्र ॥ वली त्रिण इद्र कहिया तेकहेछे । देवेंद्र जोतिषी वैमानिक ना । असुरेंद्र भवनपती व्यंतर ना । मनुष्येंद्र चक्रवर्त्यादि एह त्रिणने वैक्रियविकुर्वणा होय तेमाटे विकुर्वणानो अधिकार कहेछे । त्रिणप्रकारें विकुर्वणा कही तेकहेछे । भवधारणी जे मूलशरीर अवगाही अतलुंक्षेत्र रह्योछे तेहथी असमा क्षेत्रना पुद्गल वैक्रियसमुद्घाते करी गृहीनें जे यथारूपनी विकुर्वणा करें ते एक विकुर्वणा ॥ जे बाह्यक्षेत्रना पुद्गल अणलीधें मूलगाज शरीरमांहिला पुद्गल विशिष्ट गृहीनें विकुर्वणा करें ते बीजी विकुर्वणा । बाह्यपुद्गल गहीनें तथा अणगहीनें एतले कांईक बाह्यपुद्गल गहीनें केतलाएक मूलशरीरना लियें एम विकुर्वणा ते तीजी विकुर्वणा ॥ वली त्रिणप्रकारें विकुर्वणा कही तेकहेछे । अभ्यंतर

गग्गममारत्वमादिना उभयतस्तू भयवेति भयवा पपयाद्वायेति प्रयवासत्प्योद्योमा रत्नवकचादिवरचसमयेति एवं वितीयसूत्रमपि नवर मम्यन्तरपुद्गला भयधारणीयेनो दारिकेनवा गरीरेण ये चेत्रदेशमवगाढा स्तेपेव ये वत्तन्ते ते भयसेया विभूपायचेतु निशोवनारयो भ्यंतरपुद्गलादिति । ततीयन्तु वाह्मा भ्यंतरपुद्गलयोगेन वाच तयापि उभयेया मुपादाना भवधारणीयमिष्पादन तदनन्तर मावेन क्षेमादिरचनच भनादाना चिरविकुर्भितमेव मुखादिविका रकरण मुभयतश्च वाह्माभ्यंतराचा मनभिमताना मादानता म्येवाचा मादानतो ऽनिष्टरूपभवधारणीयतररचनमिति भनन्तर निकुर्व्वणोक्ता साच नार

तिविहा यिउव्वणा पन्नत्ता तजहा भ्रम्नतरएपोग्गले परियाइत्ता एगा विउव्वणा भ्रम्नतरएपोग्गले भ्रपरिया इत्ता एगा यिउव्वणा भ्रम्नतरएपोग्गले परियाइत्ता यि भ्रपरियाइत्तायि एगा विउव्वणा तिविहा विउव्वणा पन्नत्ता तजहा वाहिरम्नतरएपोग्गले परियाइत्ता एगा विउव्वणा वाहिरम्नतरेपोग्गले भ्रपरियाइत्ता एगा यिउव्वणा याहिरम्नतरएपोग्गले परियाइत्ता यि भ्रपरियाइत्ता यि एगा यिउव्वणा तिविहा नेरइया पन्नत्ता

पुद्गल ते भवधारणी तथा औदारिक शरीरें क्षेत्रदेशें भवगाही के पुद्गल तेमाहिज विकुर्वणा करे ते एक विकुर्वणा । भभ्यंतर पुद्गल भणगही मत बीजी विकुर्वणा । एम भभ्यंतर पुद्गल कांइक गहीनें कांइक भणगहीनें त्रीजी विकुर्वणा ॥ वली त्रिणप्रकारें विकुर्वणा कही तेकहवे । वाहर भनें भभ्यंतर पुद्गल गृहीनें एक विकुर्वणा । वाहर भभ्यंतर पुद्गल भणगहीने एक बीजी विकुर्वणा । वाहर भभ्यंतर पुद्गल गहीने कांइक भ णगहीने एक त्रीजी विकुर्वणा । इहां केतलाएक भाव बहुश्रुत गम्यछे । विकुर्वणा नारकीमें पणि होइ तेमाटे नारकीनो भधिकार कहेछे ॥ त्रिण

णाणामध्यस्तीति णारका विरूपयणाह । तिविहेत्यादि । कंठ्य नवरं कतीत्यनेन संख्यावाचिनो डाद्य संख्यावन्तो ऽभिधीयन्ते ययपा न्यप ग्रस्थविधि टमध्याशावतया एकोपोह संख्यामावे द्रष्टव्य तथनारका कतिकतिसंख्याता एकेकसमये येऽत्पन्ना संत सचिता कस्मुत्पत्तिसाधर्म्या कुणा राशी कृता से कतिसचिता एवा नवरि नसंख्याता इत्यक्ति असंख्याता अनन्ताना तथये नवत्यक्ति असंख्याता असंख्याता एकेकसमये उत्पन्ना संत ए मेव सचिता स अकतिसंचिता एवा य परिणामविशेषो नकतिनाष्यकतीति नमते यतु सोऽवक्तव्य सचेव इति तत्सचिता अवक्तव्यसंचिता स मवेसमये एकतयो त्पवाहत्यव उत्पद्यन्ते विनारका एकसमये एकादयो ऽसंख्येयान्ता उत्प एमेवरोक्तविविध सवमसंखाणएगसमयएं उववज्जंतेवरमा इम्मईतायिएमेवंति । १ । एतदेव परिमाण मेतदेवमारकाणामपि वतउक्तं सवापुव्वसुरवरतुलत्ति कतिसंचितादिवमसमसुरादीनां इंवकोत्वागा भवि

तजहा कतिसंचिया अकतिसंचिया अवत्तव्वगसंचिया एवमेगिंदियवज्जा जाव वेमाणिया । तिविहा परियारणा पराता तजहा एगेदेवे अन्नेदेवे अन्नेसिदेवाण देवीतय अन्निजुजियअन्निजुजिय परियारेइ । अप्प

प्रकारें नारकी कहिया ते कहेछे । एक समय केतला संख्याये उपना छे ते कति संचिता । एक समय असंख्याता उपजे ते अकति संचिता समये एकेको उपजे ते अवक्तव्य संचिता कहिये । उपजवानी संख्यायें एकठा थया ते कति संचिता नारकी । एक समय एक बे त्रिण उपजे संख्याता पणि उपजे असंख्याता पणि उपजे एक समय त्रिण प्रकारें ॥ एम एकेंद्री वर्जीने चोवीस दंडक वैमानिक ताई एकेंद्रीना एक समये असंख्याता अनंता उपजे पणि एक बे तथा संख्याता न उपजे तेमाटे अतिशब्द एकज थावे ॥ त्रिण प्रकारें परिचारणा ते देवमैथुन सेवा ते कहिये ।

दिगपाइ । एवमिति । मारखवयेषा यतुर्विंमतिदण्डकोला वाप्या एकेंद्रियवर्जा यत स्तेषु प्रतिसमयमसख्याता प्रमत्तावा भवतिमन्दवाप्याएवोत्प वगते मलेक संख्यातावाइति भाष्च प्रपसममसंखिज्जा संखिज्जाभोवतिरियमणुयाय एगिंदियसुमहे मारादेसावदेवाय ॥ १ ॥ एगोमसंखभागो बइउत्रमइपोवयावम्भि एमनिगोएनिर्च एवसेसेसुविसएवत्ति ॥ १ ॥ ममन्तरसूत्रे व्यतिसचितादिको भर्थो वैमानिकानां देवाना सुमो शुना देवाना सा माम्येन परिचारणाधमनिरूपणाजाइ । तिविहापरेत्यादि । ममु मवरं परिचारणा देवमैथुनसेवेति एक कश्चिदेवो मसर्वोप्येवमिति किं । पवेदेवेत्ति । मन्यान्देवा मन्यदिव्यान् तथा ग्येषां देवानां सभा देवीया भियुज्या २ अभ्यामिय प्रयोजयत्वा परिचारयति परिभुंक्ते वेदयाचोपशमासेति मप मसभव ति देवस्य देवसेवा पुंसेने त्वामइनोपं मनुवेष्वपि तवाप्यवमा मथा चार्वे मरामरयो मायो विशेषोस्ती लोकएवाय प्रकारो देवदेवोना मन्यस्वसामान्या एतएव प्रयोरपि पदयो देव स्त्रियाभिसम्बध्यइति एव मात्मीया देवो परिचारयतीति वितीय स्त्राबा माममेव परिचारयति मम मात्मना विउव्वविउव्व

णिज्झिहाइ देवीइ अभिजुंजिय अभिजुंजिय परियारेइ । अप्पाणमेवअप्पाण विउव्विअयविउव्विअ परिया रेइ । एगेदेवे णोअन्नेदेवे णोअन्नेसिदेवाण देवीउ अभिजुंजियअभिजुंजिय परियारेइ । अप्पाणिज्जिताउ देवीउ अभिजुंजियअभिजुंजिय परियारेइ । अप्पाणमेवअप्पाण विउव्विय विउव्विय परियारेइ । एगेदेवे

एक कोईक देवता अपना अयो बोजी दिव्यमा देवतानी अनेरा देवतानी देवीने वशकरीने भोगवे । एतले पारकी देवांगनाने भोगवे । कोईक पोतानीज देवांगनाने आश्लेषी आलिंगी आलिंगीने भोगवे । एतले देवता पोतानी स्त्रीने भोगवे । अथवा पोतेज आत्माने विकुर्वि विकुर्वीने

परिचारयाबोम्य विधावेति वतीय' एवं प्रकारत्रयरूपा येवेयं परिचारणा प्रमभिस्मूलटकामैकपरिचारकत्वमादिति यथा ग्योदेव आद्यप्रकारपरिचारी या त्र्यपकारत्रयेन परिचारयतीति द्वितीयेव ममभविरूपितकामपरिचारकदेवविशेषा तथा ग्योदेव आद्यप्रकारत्रयवर्जनेना त्र्यपकारेव परिचारयतीति वतीया मुत्कटकामात्मर्षकदेवविशेषस्वामित्वादिति परिचारणेति मैथुननिषेव उक्तो भुनातदेवमैथुनं सामान्यत' प्ररूपयन्नाह । तिविहेमेहुणेत्यादि । यम्म मवर मिथुन स्त्रीपुंसयुग्मं तत्कर्ममैथुन मारकाणां तत्सम्भवति प्रयतइति चतुर्थं नास्त्येवेतिगोत्रं मिथुनकर्मभवएव मारकानाह । तमोइत्यादि ।

णोश्रन्नेदेवे णोश्रन्नेसिदेवाण देवीठ णोश्रप्पणिज्जियाठ श्रप्पाणमेवश्रप्पाण विउव्वियविउव्विय परियारेइ तिविहे मेहुणे पन्नत्ते तंजहा दिव्वे माणुस्सए तिरिक्खजोणिए । तठ मेहुण गच्छति तंजहा देवा मणुस्सा तिरिक्खजोणिया । तठ मेहुण सेवति तंजहा इत्थी पुरिसा णपुंसगा । तिविहे जोगे पन्नत्ते तंजहा मणो

ग योग्य शरीर करें देवांगनानु अने पछे भोगवे ए तीन बोल मली एक परिचारणा ॥ कोइक एक देवता बीजाथी रिद्धिवंत बीजा देवतानी दे वीने वशकरीने भोगवे । एतले प्रकारें थयो बीजो प्रकार पणि ए रीति भोगवे पोतानी देवांगनाने भोगवे अने आत्माथी पणि विकुर्वीने भोगवे ते बीजी परिचारणा । एकदेवता अन्यदेवतानी देवीनें भोगिवानें असमर्थ पोतानी पणि भोगिवानें समर्थ नथी एतले ए भेदथकी आत्माथी विकुर्वणाकरी देवांगनाने भोगवे एह तीजी परिचारणा मैथुनसेवाकही ॥ देवतानां मैथुनना अधिकार मांहे तेहीज मैथुन कहेछे । त्रण प्रकारें मैथुन देवतानुं मनुष्यनु तिर्यंचनु नारकीने मैथुन नथी नपुंसक माटें । त्रणि मैथुनना सेवणारछे । देवता मनुष्य तिर्यंच । त्रणि मैथुननां सेव

कर्त्तं तेषामेवभेदानाह। तथोमेहुणभित्यादि। अंश्च अबरं रत्यादिलक्षणमिह मायमते विवक्षवा' योनिर्मृदुत्वमस्थैर्यं। सुग्धताक्लीवतास्तनौ। पुंस्कामितेति लिङ्गानि। मसत्तोलेमपचने। १। मेहनंखरतादार्व्यं। सौण्डीर्यंमश्रुधृष्टता। स्त्रीकामितेतिलिङ्गानि। सप्तपुंस्त्वेमपचाते। २। स्तनादिश्मश्रुकेशादि। भावाभावसमन्वितं। नपुंसकंबुधा प्राहु। मौंहानलसुदीपितं। ३। तथा न्यथाप्युक्तं स्तनकेशवतीस्त्री स्याद्रोमश पुरुष स्मृत उभयोरन्तरंयच तदभावेनपुंसक मित्यादि एतेष योगवन्तो भवन्तीति योगप्ररूपणायाह। तिविहेजोएइत्यादि। इहच वीर्यान्तरायक्षयक्षयोपशमसमुत्थलब्धिविशेषप्रत्यय मभिसन्धि मनभिसन्धिपूर्व मात्मनो वीर्यं योग' प्राहुः योगाविरियंकाभो उच्छाहपरक्कमोतहाचिट्ठा सत्तीसामत्थंतिय जोगस्सहवंतिपज्जायत्ति। १। सच द्विधा सकरणो ऽकरणश्च तत्रालेश्यस्य केवलिन' कृत्स्नयो र्ज्ञेयदृश्ययो रथयो' केवलज्ञानं दर्शनयो पयुञ्जानस्य यासा वपरिस्पंदो प्रतिघो वीर्यविशेष' सोऽकरण' सच नेहा धिक्रियते सकरणस्यैव विवक्षितत्वात्तत्रिला एत स्यैव व्युत्पत्ति रुक्तैव चान्विष्य सूक्ष्मास्त्रा युज्यते योग' समभि येन कर्मसंयोगनिमित्तमध्यवसितमयवगात् यत्तेषा मर्थसेर्य पर्याय सयोगी वीर्यान्तरायक्षयोपशमजनितो जीवपरिणामविशेषइति भावश्च मवसायवसावाये चयापिश्रुतसविरियपरिणामो जीवस्सअप्पविसओ सजोगसयोजियक्साओ। १। तेपोजोगेपवत्ता रत्ततार्थक्षस्मपरिणामो जीवकरणप्पओमे विरियमविभप्पपरिणामोत्ति। २। मनसा करणेन युक्तस्य जीवस्य योगो वीर्यपर्यायो दुर्बलस्य यष्टिकाद्रव्यव दुपष्टम्भकरो मनोयोगइति सचतुर्विध' सत्यमनोयोगो मृषामनोयोग' सत्यमृषा मनोयोगो ऽसत्यमृषामनोयोगश्चेति मनसोवा योग' करणकारणानुमतिरूपो व्यापारो मनोयोग एव वाग्योगोपि एवं काययोगोपि नवर'स सप्तविध' औदारिकौदारिकमिश्रवैक्रियवैक्रियमिश्राहारका ५ हारकमिश्र ६ कार्मण ७ काययोगभेदादिति तत्रौदारिकादय' यथा सुबोधा औदारिकमिश्रस्तु औदारि क एवा परिपूर्णोमिश्र उच्यते यथा गुडमिश्रन्दधि नगुडतया नापिदधितया व्यपदिश्यते तत्ताभ्या मपरिपूर्णत्वादेव औदारिकमिश्र कार्मणेन औदारिक

तया भाषिकार्मणतया व्यपदेश यस्य अपरिपूर्णत्वादिति तस्य मिश्रव्यपदेश एवं वैक्रियाहारकमिश्रावपीति अतएव टीकाकारेण अनुप्रायमाप्याख्यातोय स्वे व मोदारिकाया यथा ग्रयपर्याप्तकस्य मिश्रा ग्रपर्याप्तकस्येति तथो त्यक्ता मौदारिककाय कार्मणेन मौदारिकशरीरिणय वैक्रियाहारककरणकाले वै क्रियाहारकाभ्या मिश्रोभवतीति एवमौदारिकमिश्र एवं वैक्रियमिश्रो देवाद्युत्पत्ती कार्मणेन कृतवैक्रियस्य मौदारिकप्रवेशाभावा मौदारिकेण याहार कमिश्रस्तु साधिताहारककायप्रयोजन पुनरौदारिकप्रवेशे मौदारिकेणेति कार्मणस्तु विग्रहे केवलिसमुद्घातेनेति सर्वएवा संयोग पञ्चदशधेति सत्यमोष सर्व १ मोर्स २ मोर्स ३ असच्चमोर्स ४ मणोवएवेव कामोउराल १ विउव्व २ आहारग ३ मोस ४ कम्मए गोत्ति ॥ १ ॥ सामान्येन योगं प्ररूप्य विशेषतो नारकादिषु चतुर्विंशती पदेषु तमतिदिशन्नाह ।एवमित्यादि। अथ च भवर मतिप्रसंगपरिहारार्थे दमुक्तं ॥ विगलिंदियवज्जार्णति ॥ तत्र विकलेन्द्रिया एकेंद्रिया स्तेषां एकेंद्रियाणां काययोगएव द्विविधहरिन्द्रियाणांतु काययोगवाग्योगाविति मनःप्रभृतिसम्बन्धेन वैदमाह ॥ तिविहेपयोगेइत्यादि ॥ क च भवर मनःप्रभृतीनां व्यापिव्यमाणानां जीवेन हेतुकत्वभूतेन व्यापारणं प्रयोजनं सत्ययोगो मनस प्रयोगो मनः प्रयोगएव मितरावपि नवेत्या

जोगे वयजोगे कायजोगे। एवं णेरइयाणं विगलिंदियवज्जाणं जाव वेमाणियाणं। तिविहे पओगे पण्णत्ते

नारकी । स्त्री पुरुष नपुंसक । एह त्रणि योगवत छे ते मांटे योग कहेछे । त्रणि प्रकारें योग मनोयोग मननो व्यापार वचनयोग वचननो व्या पार काययोग कायानो व्यापार आत्मवीर्यनें योग कहिये । एम नारकीनें त्रणियोग कहिवा विगलेंद्री बेंद्री तेंद्री चउरिंद्री वरजीनें एहनें मननो योग नथी थाय यावत् वैमानिक चौवीस दण्डकें कहिवा ॥ त्रणि प्रकारें प्रयोग प्रयुंजवारूप फोरवणु तेकहेछे । मनप्रयोग वचनप्रयोग कायप्रयोग

पतिदेमण्ते पूवपन्नावनीयमिति मन प्रभृतिसम्भधेने वेदमपरमाव । तिविहेकरणेत्यादि । कच्च भवर् क्रियतेयेनतत्करणं मननादिक्रियासु प्रवर्त्त मानस्या मन उपकरणभूत फ्रपा तयापरिणामवत् पुद्गलसङ्घातइतिभाव स्रम मनसएव करणं मन करण मेवमितरेष्वपि एवमित्थापतिदेमण्ं पूर्ववदेवभावनीयमिति भवा योगप्रयोगकरणमन्दाना मन प्रभृतिकमभिधेयवशा योगप्रयोगकरणष्वे मभिहितमिति मार्गभेदोम्वेपचोय सयाचाम येवामेवावतया मामने वतुम प्रवृत्तिदर्शनात् तथाहि योग पंचदशविध मतकादिषु ब्यास्यात प्रयापगायाम्बेवमेवायमयोगमस्वेनोक्त स्तयाहि च तिविहेचमतेपघागेपबत्ते मोपमा पचरसविहेत्यादि तथा भावम्बे ममेव करणतयोक्त स्तथाहि पुंचकरणतिविह मणवरस्याएयसचखिसयाद सहा शैलेसिभेपो चउववासतत्तावेवत्ति । १ । प्रकारान्तरेण करणमेवाभिधमाह । तिविहेत्यादि । यारम्भसमारम्भ पृथिव्याद्युपमर्द्दन मत्र घाति करणं

तजहा मणपउंगे वयपउंगे कायपउंगे । जहा जोगो विगलिंदियवज्जाण जाव वेमाणियाण तहा पउंगोवि तिविहे करणे पण्णत्ते तंजहा मणकरणे वयकरणे कायकरणे । एव णेरइयाण विगलिंदियवज्जाण जाववेमाणियाण । तिविहे करणे पण्णत्ते तजहा आरम्भकरणे सरम्भकरणे समारम्भकरणे । णिरतर जाव वेमाणियाण

जिम योग तिम प्रयोग पवि जाणिवा विगलेंद्री वरजीनें चोवीस दण्डके कहिया ॥ एविप्रकारें करण जेहथी क्रियादि करियें ते करणे । मनकर ए मनकरें तेपुण्यपाप । वचनेंकरें ते वचन करण कायायोकरें ते कायकरण ॥ एमज विगलेंद्री वरजीने यावत् वैमानिक सादे चोवीस दंडके कहि वा ॥ वली त्रवि प्रकारें करण कहिया तेकहेछे । आरम्भ ते जे कायनो हणवुं तेहनुं करण । सरम्भ पृथिव्यादिकने हणवानो संकल्प । समारम्भ ते

सपयमा वरचमित्थारम्भकरच मेव मितरैमपि वाचो गवर ममविमेव संरम्भकरणं पविम्यादिविषयमेव मन सङ्कल्पकरणं समारम्भकरणं तेषामेवसंताप करणमिति भाष्य संकप्पोसंरमो परितावकरोभवेसमारमो भारंभोउद्दवमो सुद्धनयाणंतुसव्वेसिति ॥ १ ॥ इदमारम्भादिकरणचर्य नारकादीनां वैमा निकान्तानां भवतोमतितिदिमनाह ॥ निरंतरमित्यादि ॥ सुगम नवरं संरम्भकरण मसम्भिना पूर्वभवसंस्कारानुवृत्तिमात्रतया भावनीयमिति भारम्भादिक रणस्य विषयगतस्य पदसुपदययमाह ॥ तिविहेणामित्यादि ॥ तिहिं ठाणेहिं जीवा अप्पाउयत्ताए कम्मं पगरेंति ॥ अप्पाउयत्तायेति ॥ अल्पं स्तोक मायु जीवि तस्य सोत्पायु स्तस्य भावस्तत्ता तस्मै अल्पायुष्कताये तदर्थं वचिवक्ष्यमाणमित्यर्थः कर्मांयुष्कादि अथवा अल्पमायु जीवितं यत् भायुष अल्पमायु स्तस्य भावस्तत्ता तया कर्मायुर्लक्षणं प्रकुर्वन्ति बध्नंतीत्यर्थः तद्यथा भाषान् भाविनो अतिपातमितेति योताकेनकमभिति कर्मविविकतोयेति भावेना विनाशन मोक्षदमर्थ एवंभूतो वोभवति एवं मृषावादभ्यका मय भवति तथा तथाकारं रूपं स्वभावो नेपथ्यादिर्वा यस्य सतथाकृयो दानोचितइत्यर्थः संयाम्यति तप

तिहिं ठाणेहिं जीवा अप्पाउअत्ताए कम्मं पगरेंति तंजहा पाणे अइवाइत्ता भवइ मुसंवइत्ता भवइ तहारूव

कायाने मनथी संताप करवुं । एह सर्व करव भांतरा रहित चौवीसदंडकें वैमानिकपर्यंत भसम्मीने पाक्ता जवनी भपेक्षाये थाय ॥ भारंभादिक मु फल कहिवाने कहेछे । त्रणियानके करीने जीव भल्प थोडुं भाऊखामु कर्म बांधें थोडु भायू भपामें तेकहेछे । प्राणातिपात करतो जीवहणतो मृषावाद बोलतो कूडुंबोलतो तथारूप गुरु श्रमण माहण हिंसाथी निवर्त्या एहवा साधुने अप्रासु सचित्त जीवसहित एषणाशुद्धनथी अकल्प भ निप्तपणि असूझतो एहवा भशन पान खादिम स्वादिम वोहरावें भापे एह त्रणि थानकेंकरी जीव भल्प भायुकर्म बांधे एतले थोडुं भायु बांधे ॥

भतोति यमन भतपोसुप मस्मावगरत्वाचटे य परमति सर्वजननिग्रा सविति समाहनो मूलग्रपधर एवं मामश्री विमिषवसस्वयार्वी मगताधसवो
ऽमुमंत मादिमो यमा तमामुर्मं तमियेवा एमामुपं सपेतनमिस्वं तेन एप्यते गवेषते छसमादिदोपविवमतवा साहुभि मततेपवोयं मार्म तमिपेधा द
गपणोयं तेन पयते भुज्यते इत्यमन पीदनादि पोयतइति पामड सौवोरमादि यारनं यादि स्रौनमिमस्त यादगाय तस्म भिवर्यमानत्वादिति याशिम
न मझोपयादि मादनमाद स्नेगनिर्यत माटिमेव इगतपावमादि इति समाहारसम स्तेन मायायाव भसवपोयवसतुय सुभवमारायचजगविशेष यो
शरणुरत्नोऽसमपनिद्रविशेयं ॥ १ ॥ पायमौरोरमवो इमारविस्तसुरारसयेव मावमापोसमो मयवगयमारवमतवा ॥ २ ॥ मत्तोसंदतादे यन्
रमालिमेरदमार मवविषमयपविसा इमाभिषवाइमेनेवं ॥ ३ ॥ देतवयतवांसे पितमजगगुवेवमादये मद्दमिण्मविसठाई यदियजारामेवोशति
४ ॥ मतिममयिता वामयमं मरोतो सर्वमोगोपममवति ते ऽत्मायुमतया यमझुर्मेतोतिमयम ॥ इचेपिंशिति ॥ एमेते मावातिपातादिभि यमयमारे
भिरभि मवाने बीवा यल्यायुष्यतया ममकुर्वन्तोदि भिगममभिति इवम प्रावातिपातविमादिमुवयनिर्वेधेयि परयातिपमदोमा मेवा आयुर्वन्धनिवम्य
मसेन तत्मारनसमुमं दृष्टमिति एवं यास घुनसभावना ऽध्यवमायविमेपेव एतमय समोमपवसमपतीत्यवा योगि जीवो विनादि शुवपयमातितया
तम्गमायवं पतिमापारमेण मासापयारादिनाव प्रायातिपातादिषु मवते तय मरागसयममनिरवयदानमिमित्तायुमायेमवे म मल्यायुमसमयपेवेति
मयमेतदेव निर्विशेयणत्वात् सूत्रमा मायुमस्य सुमममपयनकमस्यापि प्रावातिपातादिष्वेतती मुज्यमानत्वा एत भाव मभिधीयते पविमेपयप्रावाति
पातादिनिर्वा यौव पापविशी पाचपायल्यतेति स्थते पविमेदपत्तेपि सूत्रम प्राणातिपातादे विशेषण ममझ मावन यत इत स्तृतीयसूत्रे प्रावातिपा
तादितएरा गमदोयायदा भवति नहि समामधेता कायवेयस्थ गमने सवपा नाम्माधमसत्वात् तया समयोवासयस्यास्य भते सदारूवं समणवा मारणा

पघामुएण पचेसणिज्जेण समणपाणखाइमसाइमेणं पडिलाभे माणस्स किंकज्जइ गोयमा बहुतरियासे निज्जराकज्जइ अप्पतराएसे पावे कम्मे कज्जइ इति भगवतीवचनप्रथा इवसोयते नैवेदं सुबहुमपयगवरूपा ऽप्रासुका गविसरपपापबहुनिज्जरानिबन्धनखा गुडाणस्स सुबहुमपयगपनिमित्तता सधाप्यते जिनपूजाधनुठानस्यापि तथाभसङ्गात् अथवा ऽप्रासुकदानस्य अपतूवारपासुडा प्राणातिपातमृषावादयोस्तु सुबहुमपयगपमेव फलमिति नैतदेव मेव योगप्रवृत्तत्वा इतिजिवरत्वाचेति अथमिथ्यादृष्टिप्रमत्ताप्रमत्ताणां यदप्रासुकदानस्ततो निरुपचरितेवारपासुष्टा मुच्यते इतराभ्यास्तु कोविचारइति नैव मप्रासुकेनेति तथ विषयपक्षा गवंकवात् प्रासुकदानस्याप्यरपासुष्टा फलत्वाविरोधा सुश्रुतभगवत्यां समणोवासयस्स णं भंते तहारूवं असंजय विरयपच्चक्खियपच्चक्खायपावकम्म फासुएणवा अफासुएणवा एसणिज्जेणवा अणेसणिज्जेणवापसणं ४ पडिलाभेमाणस्स किंकज्जइ गोयमा एगंतसो पावेकम्मेकज्जइ नोसेकाइनिज्जराकज्जइति यच पापकर्मणएव कारणं तदप्यासुष्टाया अपि कारणमिति नन्वेवं प्राणातिपातमृषावादावप्रासुकदानेच वतस्य मापन्नमिति उच्यते भावस्तांभाम भूमिकापेक्षया को दोषो यत अविकारिवशा च्छास्त्रे अभसाधनसक्तिति व्यवधिमतिश्रियाद्युक्ता विशेषा गु णदोषयो मता च महिमं प्रतिजिनभवनकारणपक्षमुक्तं एतदिश्मावयक सद्दृष्टिपोत्पन्नफलमिदंपरमं अभ्युदयाभ्युच्छित्तिया निममाइपवर्णंमोक्षमिति १ ॥ तथा भवइजिणपूयाए कायवहोजइविकोइकहिंचि तहवितइपरिसुद्धो गिहीणकूवाहरणजोगा ॥ १ ॥ असदारंभपवत्ता जंचगिहीतेणतेसिविसेसा तविघित्तिफलमिय एमापरिभावणीयमिदं ॥ २ ॥ दानाधिकारेतु यूयते तेहि द्विविधा श्रमणोपासका सविग्नभाविता लुब्धकदृष्टान्तभाविताश्चेति स योग्य संविग्नभावितानां लोकयदिहतभावितानांच सुतृप्तमेवताके मायपक्वइहितिसुहलमिति ॥ १ ॥ तत्र लुब्धकदृष्टान्तभाविता यथाकथंचि द्दति संवि ग्नभाविता एषोविशेषेनेति तथेदं सयर्थमिपसुद्द दोषविगिषसंतदेतयापत्रिय भावदर्शितेन तंचेसहियअसंवरवेत्ति ॥ १ ॥ तथा मायगयाच कप्प वि

स्रार्भ मवपाचाद्दर्व स्मात देमकासमह्रासकारजम्मशुभमित्यादि सवित्याचे मत्वाद्दत्ता मुसंवद्दत्ताद्दत्मेवं भवति मम्यवर्माषासना तथापि सप्वाधं मामरवमान्तता म्वामशेवा माषामतिपातसपोक्षा श्रमण मतिसम्य मसाशुट्या मामकप्रतीति मकाम ग्रेपं तवैव पत्रमा मतिसम्पन् स्मागमसे वेतरे विप्रेप पे तथादि प्राषामतिपात्याधाकर्मादिकरणतो मपोक्षा यथा भोसाधो सार्मसिवमिद धम्मादिकरपनोय मकम्पनोयंवा न गशाकार्यमादि मतिसम्प तथा कम कुर्वतोति मभृम दत्व दमस विप्रेपत्वे मैकमविप्रेष्यत्वेन भिक्षागवस्य मपगम्तव्य गथीराव चेदं सूत्र मतो ऽन्यथापि भावनोयमिति पत्पाय पतासारम्भा भुक्षा मपुमे तद्विपययस्ये वाग्वेव विपर्यस्ततया कारणाभ्याद ॥ तिहिवत्यादि ॥ प्राम्बदवसेय नवर ॥ दोहाउयत्ताएत्ति ॥ शुभदोघायुष्टा पे शुभदोघायुष्टयावेति मतिपत्तव्य माषातिपातविरम्यादोना दोर्घायुष शुभस्यैव निमित्तत्वा दुक्तम मवमयमपशुमपरिं पाघतपाषामभिक्षराएप देवा उपनिवंभर सम्यदिहोपशोजोपो ॥ १ ॥ तथा पर्मएतसुमसाधो दाबरमोसोससंपमविहतो मक्षिमगुवेविशुत्तो मपयाउयंवंधपओवो ॥ २ ॥ देवमनु ष्पासुपोषप्रभितति तथा भगवत्यां दानमुद्दिश्योत समणोपासयस्सणं भते तहारूवं समणंवा माहणंवा पासुएसणिज्ज वं मसण ४ पडिलाभे मापस्स किं

समणवा माहणवा अफासुएण अणेसणिज्जेण असणपाणखाइमसाइमेण पडिलाभित्ता भवइ । इच्चेएहि तिहिठाणेहि जीवा अप्पाउअत्ताए कम्म पगरेंति । तिहिठाणेहि जीवा दीहाउअत्ताए कम्म पगरेति त

तिम यतो अवि पानके जीव मोढुं आयुकर्म बांधे तेसहेवे । प्राणातिपात जीवहिंसा मकरतो मृषावाद मृदु नयी बोलतो तेहयो महापुरुष म मण माहण फासू अचित एषणीय सुझमाण निरवद्य अशन पान खादिम स्वादिम आहार आपे एह त्रणियानकेकरी जीव दीर्घ मोढु आयुबांधे

सम्बर मोसमा एग तेसे भिम्बरा सम्बर पोसेवेर पावेसमे मम्बदत्ति यष निर्मराकारच तत् प्रमसोर्षायु'कारचतवा गमिबद्ध महाम्रतपसिति पनन्तर मायुषो सोर्पतावारचा म्युबानि तप प्रमायमभिति तथासो ताव दपमायुर्दीर्घता कारवाम्याव । तितिरम्यादि । माम्पत् गमरं भप्पमदीर्घायुष्टाये इति गारकायुम्भायेतिभाव स्वबादि पप्रर्भप तत् पाप मव्रतिरूपत्वात् दोपस तप पघम्यतोपि दपपमसहस्र स्थितिवाला दुत्कृष्टतश्च पयस्त्रिंशत्सागरोपमरूप स्तात् भपमदीर्घ गतदेवमूत मायुर्जीवित यस्मा त्समव स्वदपमदीर्घायु स्तदावस्तत्ता तस्मै तयावेति भावाम् मापिन इत्यबो ऽतिपावविता मवति यथा वारच यमा मवति तथा श्रमणमाहनादोनां शोसनादि छत्वा मतिसम्पविता मवती स्वघरपटमा शोसहठ पालापुरहमतो निम्दन मुनसाभिसग जनसमर्च गर्हेव तमक्षर्प भपमानन मनम्मुत्रामादिभि रम्यतरेष वहता मधे एमतरेव कपि स्वम्वतरेवेति गवमवे पमनोभेन सरूपतो मोभनेन

जहा णोपाणे श्चइवाइत्ता नवइ णोमुसवइत्ता नवइ तहारूव समणवा माहणवा फासुएसणिज्जेण श्चसण पाण खाइम साइमेण पडिलाभेत्ता नवइ । इच्चेएहिं तिहिं ठाणेहिं जीवा दीहाउश्चत्ताए कम्म पगरेति । तिहिं ठाणेहिं जीवा श्चसुनदीहाउश्चत्ताए कम्म पगरेति तजहा पाणे श्चइवाइत्ता नवइ मुसवइत्ता नवइ

वतो मिस्यामके जीव मसुभ दुखनु मोटुं मायु वांधे ते कहेछे । प्राणातिपातकरतो मपा मृदु बोसतो तपारूप श्रमणमाहननी वचनेंकरी हीसना करतो जातिउघाडतो ममपी खिसना करतो सोकसमर्चे दोप उघाडतो भपमानकरे साधुनें देखी ऊठो मपाय तपा मम्पतर कोई जातिनो मम मोग्य रूपपी माठो भप्रीति भसंतोपनुकरनार नागसिरीयें साधुनें कडुच तुम्बो माप्यो एहवा भसन पान खादिम स्वादिम वोहरावे एव त्रिन

मरमारिमा मतएवा प्रीतिकारकोप भभिमत स्वमनोप्रमपि मनोप्रमेव तस्करवसा वामबन्दनावाख्य मायबन्दनया रि कुच्छाया सपक्षोपक्षता भगवती महावीराय पयारिमोनपास्माषिकमपयपारणको दत्ता सदेवच तस्सा सोवनिगडानि हेममयनूपुरो सम्यषी येमा पूर्ववदेव आता पवमर्णत्रिभिधरवरामिभि गृंद भृत सेन्द्रदेवदानवमरनायको रभिमम्बिता कावेना वामचारिनाच सिद्धिसौघमिधर सुपगतेति इत्यच सूत्रे भयनादिमा मुषापामुपसादिमा न विसेषितं सोनमादिकर्तु मासुकादिविशेषपक्ष पक्षविशेष मत्सयारपत्सा मत्सरजनितहोलनादिविशेषणानामेव प्रधानतया तत्कारपत्सादिति मापाविमावमपावादयो सोमविशेषणपक्षमाखानमपि घटत एव मपप्रारम्भेपि माणातिपातादे हंस्समानत्वादिति भवतिष प्राणा तिपातादे मरणादु मशाइष मिथ्यादिष्टिमवार भपरिम्मकोतिम्यसोभनिवधीसी मरणाउयंनिबंधद पापमर्द्दवपरिणामोत्ति ॥ १ ॥ उक्तविपर्ययेषा सु नेतएदाद ॥ विविंठापेरिरव्यादि ॥ पूपव मपरं मन्दिता गुला ममपिसा मपस्य सत्कारविला मपादिमा समानविला प्रतिपत्तिविशेषेष मनार्थं

तहारूय समणया माहणया हीलेत्ता निदेत्ता खिसेत्ता गरिहित्ता अवमाणित्ता अन्नयरेण अमणुन्नेण अ पीइकारएण असणया पाणया खाइमया साइमया पडिलाभेत्ता जवइ । इच्चेएहिं तिहिं ठाणेहिं जीवा अ सुभदीहाउअत्ताए कम्म पगरेंति । तिहिंठाणेहि जीवा सुभदीहाउअत्ताए कम्मपगरेंति तजहा णोपाणेअ इवाइत्ता जयइ णोमुसवइत्ता जयइ तहारूवसमणया माहणया वंदित्ता नमंसित्ता सक्कारेत्ता सम्माणेत्ता

पानकें करी जीव भशुभदीर्घ भायुकम बांधे॥ग्रथि पानकें जीव शुभदीर्घ आयुकर्म बांधे ते कहेंबे । माणातिपात जीव हिंसा नकरतो मृषा

ममवि मवेतसा साधुरपि कल्याणमेव मङ्गल विघ्नक्षय मद्योगा मङ्गल मेवतमिव दैवतेव दैवत चैत्यमिव चिनाहिमप्रतिमेय चैत्यं श्रमण मर्युपास्य छप
मेयेति द्दापि प्रासुकाप्रासुकतया दान मविशेषित मपूर्वसूत्रविपर्ययत्वा दन्यपूर्वसूत्रकथा विशेषणतया महसत्वा दिति नच प्रासुकाप्रासुकदानयो फल
म्पति मविशेषास्ति पूर्वसूत्रयो मस्य प्रतिपादितत्वात् तस्मा दिह प्रासुकैषणीयस्य कल्पमासादितरस्य चेद् फलमवसेयं ममवा भावमवपविशेषा दनेपयो
यम्पायी दम्पन मविरूपतें भपित्यत्वा विसमरिवते साहि वाप्रमा गुरुणतयैव मफलानि साधयति भरतादीना मिवेति प्रथम प्रथम भन्नासु घूर्ण
द्वितीय मविपरामृतीय ममभदोषांसु घूण चतुर्थं गतविपर्ययति मपुनवलतेति प्राणातिपातनादिष गुप्तिसद्भावे भवतीति गुप्तीराह । तयोरत्यादि ।
कच्च मपरं गोपनंगुप्ति मैनमभवीनां कुमनसाना मवर्त्तन मकुमलानाम निवर्त्तनमिति भावक मथगुप्तिवाम्यापी गुप्तीघोतिविसमयवेषोषि मवि

कल्लाण मंगल देवय चेइय पज्जुवासेत्ता मणुन्नेण पीइकारएण असणपाणखाइमसाइमेण पडिलाभेत्ता भ
वइ इच्चेएहिं तिहिं ठाणेहिं जीवा सुहदीहाउअत्ताए कम्मं पगरेंति । तओ गुत्तीओ पन्नत्ताओ तंजहा मणगु

याज्जू नवोमतो तथा रूप श्रमण माहणने वंदनाकरीने नमस्कारकरी वस्त्रादिकथी सत्कार सन्मानदेई विनयकरीने कल्याणकारी मंगलकारी देव
परिकमनीयरूप प्रतिमानी जिम सेवाकीजे तिम साधुनी सेवाकरे वली मनोज्ञ प्रतिकारी अशन पान खादिम स्वादिमें करी पडिलाभें वोहरावें
एह त्रिण थानकें करी जीव शुभ दीर्घ आयुकर्मबांधै देवतानु भरतचक्रीनीपरें पाचसे साधुने आहार आप्यो पूर्वभवें ॥ जीवहिंसादिकथकी ते गुप्ति
ते माटे गुप्ति कहेछे । त्रणगुप्ति मनोगुप्ति माठायोगथी मनमोरोकिवु । वचनगुप्ति पापवचन नवोलिवु । कायगुप्ति पापमा कायानप्रवर्तावे ॥

यारेयरक्या मिहिाघोजघोभवियं ॥ १ ॥ समिघोनियमागुत्ती गुत्तोसमइत्तणमिमइयव्वो कुसलवयमुईरंतो वंवयगुत्तोविसमिघोविति ॥ २ ॥ एता यतुर्विंशतिदण्डके विस्यमाना मनुष्याणामेव तथापि संयतानां नतु नारकादीना मित्यतभाह ॥ सजयमणुस्साणमित्यादि ॥ कोव मुक्ता गुप्तय क्वचिप ययमूता भवागुमीराह ॥ तमोरस्यादि ॥ बावत विशेषत यतुर्विंशतिदण्डके एता मतिदिशमाह ॥ एवमित्यादि ॥ एवमिति सामान्यसूत्र नारका दीनां तिस्रो गुप्तयो वाच्या शेषं वाच्यं भवर मिरे केन्द्रियविकलेन्द्रिया णोक्ता वाग्मनसो रोधां ययायोग मसम्भवात् सयतमनुष्या भपि णोक्ता स्तेषां गुप्ति मतिपादनादिति भगुप्तय या भन परेषां च दण्डकानि भवन्तीति दण्डा विरूपयमाह ॥ तमोरस्यादि ॥ कव भवर मनसा दण्डन मामनं

ती वयगुत्ती कायगुत्ती । सजयमणुस्साण तहं गुत्तीउं प० त० मणवयकाए । तउ अगुत्तीउ पणत्ताउ त० मणअगुत्ती वयअगुत्ती कायअगुत्ती । एव णेरइयाण जाव थणियकुमाराण पचिंदियतिरिक्खजोणियाण असजयमणुस्साण वाणमतराण जोइसियाण वेमाणियाण । तउ दंडा प० तजहा मणदंडे वयदंडे काय

चोयोसदंडकमांहि मनुष्यनेंज तेमांहि सयमवत मनुष्यने ए त्रण गुप्ति होय ते कहेंछे । मनोगुप्ति वचनगुप्ति कायगुप्ति ॥ एम तीन अगुप्ति मांठे पापनेयोगे प्रयत्तु ते कहेंछे । मनअगुप्ति मनयी पापयघाये । वचने पापयघाये तेवचनअगुप्ति । कायायें पापयावे तकाय अगुप्ति । एम चोयोस दंडकमां नारकीने यावत् स्तनितकुमार दश भयनपतीने ए तीन अगुप्तिहोय । पचेंद्री तिर्यचनें पणिहोय ॥ एकेंद्री बेंद्री तेंद्री चउरिंद्री में मयी होय मन नथी ते माट पचेंद्रियतिर्यच असयती मनुष्यमें होय सयतमें गुप्तिकहीछे । व्यतर ज्योतिषी वैमानिकने अगुप्तिहोय ॥ अगु

परपीडात मनादण्ड: अथवा दण्ड्यते नेनेति दण्डो मन एव दण्डो मनोदण्ड इति एव मितरावपि विशेषविवक्षायां चतुर्विंशतिदण्डके । नेरइयाणंत
मित्येवमादि । यावद्वैमानिकानामिति सूत्र वाच्य सर्वं । विगलिंदियवज्जंति । एकद्वित्रिचतुरिन्द्रियान् वर्जयित्वेत्यर्थ तेषां हि दण्डत्रयं नसम्भवति
यथायोगं वाग्मनसो रभावादिति इदञ्च सर्वदण्डो भवतीति मत्वा सूत्रमाह । तिविहेत्यादि । सूत्रस्य मतार्थ सदरं गर्हते जुगुप्सते इत्यर्थ स्वकीयं पर
कीयं मात्मानम् । मणसावित्ति । सकारस्य मभिकत्वात् मनसा एके वचमित्यादि पापानां कर्मणां अकरणतया हेतुभूतया हिंसाद्यकरणेनेत्य
ए आवमर्हति पापकर्मात्मत्वेन भवतीतिभाव: अथवा पापजुगुप्सातत्वा सम्यग्परिणतचेतसस्सतत पापोद्रेकीकरण मतद्विन्तावेत्युक्तमतद्दति ॥ १ ॥
अथवा पापकर्मणां अकरणतायै एतदकरणार्थमिति अपि गर्हते अथवा चतुर्थ्यर्थे षष्ठी तत पापेभ्य कर्मभ्यो गर्हते तानि जुगुप्सनीयत्वेन विमत अकरणतायै

दण्डे । णेरइयाणं तउ दण्डा पन्नत्ता तंजहा मणदण्डे वयदण्डे कायदण्डे विगलिंदियवज्जं जाव वेमाणियाणं
तिविहा गरिहा पन्नत्ता तंजहा मणसावेगे गरहइ वयसावेगे गरहइ कायसावेगे गरहइ पावाणंकम्माणं अक

प्तियसमे अपदंड कहिया ते कहेछे । कर्मे दडाये तेदंड कहिये । मनोदण्ड वचनदण्ड कायदण्ड मनेकरीदडाये वचनथी दंडाये कायथीदडाये । ना
रकीनें अथि दंडछे ते कहेछे । मनोदंड वचनदंड कायदंड विगलेंद्री वर्जीने एकेंद्री माहिज थाव्या जाव वैमानिक सर्वे अवतरु जाणिवा ॥ दंडते
गर्हणीय तेमाटे गर्हा कहेछे । त्रणि प्रकारें गर्हाकरी ते कहेछे । मनथी आत्माने तथा परनें गर्हे । एक वचनथी आत्माने तथा परने गर्हे ।
एक कायथी पापकर्मना अणकरवें । पापकर्मने अण करवे लेगहथा पापकर्म नहीकरवं एमाटुछे । अथवा गर्हा तीन प्रकारें कही ते कहेछे । एक

माबाध मवमेवामोति । दोषंपगेमवति । दोष बाले बावदित्वव तवा बाय मथ्येश प्रतिसवरति निवबति बथा पापानो कर्मवा मकरवतवा वेद
भूतया तदकरणेन तदवारणतायेवा तेम्मो गर्हते बार्य वा प्रतिसंवरति तेम्यो ऽकारणतायै तेषा मेवेति पतोतेदृणो गर्हो भवति सावोता भविष्यतिष
मम्माग्यानमिति सूववेन तदाव । तिविहेत्यादि । गताय यवर । गरहत्ति । गर्हावा भाषापवो वेमो । मवसेत्यादि । कायसावेगेपवक्वार पा
पाम कम्मान मयरणयाए इत्येतद्गत एव मथवा पचक्वावे तिविहे पवत्ते तंवथा दोष एगेषव पवक्वार इस्वंएगे मई पवक्वार वाम एगेपडिसाहरद
पावार्ण कम्मार्ण मयरणयाए इतिद्वितीय सायकाय मथ्येक प्रतिसंवरति पापकर्माकरणाय मथवा कार्य प्रतिसवरति पापकमभ्यो ऽकारणतावै तेयामे
वति पापकमप्रत्याख्यावारव परोपकारिवा भवन्तीति तदुपसमनाय दृष्टान्तमूतफलानां वहारूटोम्तिकानाव पुरुषाणां मरूपणायमाव । तमीवखेत्या

रणयाए । अहवा गरहा तिविहा पन्नत्ता तजहा दीहवेगेगरहइ हूस्सवेगेअ्रट्ठगरहइ कायवेगेपडिसाहरइ
पायाणकम्माण अकरणयाए । तिविहे पच्चक्खाणे पन्नत्ते तजहा मणसावेगेपच्चक्खाइ वयसावेगेपच्चक्खाइ

पवा कालमी गहवाकरे यव योडाकालनी गहवाकरे । एक यतमान कायाने पापने मवकरवें संवरवाले ए प्रव प्रकारें पापने मवकरवें मतीत
कालमी गहवा होय तेकही ॥ मनागत पचखाणहोय ते करेछे । प्रव भेदे पचखाण एक मनथी पचखाण करेछे । एक वचनथी पचखाण करेछे ।
एक कायाथी पापकमने मवकरवें करी पचखाणकरेछे । एम त्रिमगहेथा तिम पचखाणने विषे पणि येमालावा कहिया ॥ पापकर्मसु पचखाण
ते परोपकारोछे तेमाटे वृक्षनों वृष्टांत सुघटेछे ते कहेछे । त्रणवृक्षकहिया एक पत्रसहित एक फूलसहित एक फलसहित । एहमीपरें त्रणि पुरुष

दि । सूत्रयं पत्तासुपगच्छति माप्नोति पत्तोपम एवमितरो एवमेवेति । दार्ष्टांतिकोपनयार्थं पुरुषजातेति पुरुषप्रकारा यथा पत्तादियुक्तस्तेनो पकारमा त्रविशिष्ठविशिष्टतरोपकारकारित्वो र्वमेवं द्यमा प्रका लोकोत्तरपुरुषा सूत्रार्थोभयदानादिना यथोत्तर सुपकारविशेषकारित्वा तत्वमाना मंतव्या एवं लौकिका यपोति इत्य पत्तोवगएरस्वादी याम्ये पत्तोवास्त्वादि माकृतत्वयथया कुर्ता समावयमनापिच सामावदति मव पुरुष प्रस्तावात् पुरुषान् सत्तसूप्या निरूपयमाह । तभोइस्वादि । वस्त्व मवरं नामपुरुष पुरुषदति नामेव स्थापनापुरुष पुरुषमतिमादि द्रव्यपुरुष पुरुषत्वेन य उत्पत्स्यते उत्प यपूर्वोवेति विशेषो ज्वेन्द्रसूत्रात् प्रश्नो मयत्वभावगाथा भागमभोष्वयत्तो इयरोह्म्यपुरिसोविहाठरपो एगभवियावदतिविचो मुलुत्तरविभिपोवाचि । १ । मूलगुणनिर्मित पुरुषभावोप्याभि द्रव्याणि उत्तरगुणनिर्मितस्य तदाकारवंति ताम्येवेति भावपुरुषभेदा पुन प्रौगपुरुषाख्य श्रागकवचभावप्रधान

कायसावेगेपच्चक्खाइ एवजहा गरहा तहा पच्चक्खाणेवि दोआलावगा भाणियव्वा । तउ रुक्खा पन्नत्ता त० पत्तोवा पुप्फोवा फलोवा । एवमेव तउ पुरिसजाया पन्नत्ता तजहा पत्तोवारुक्खसामाणे पुप्फोवारुक्खसा माणे फलोवारुक्खसामाणे । तउ पुरिसजाया पन्नत्ता तजहा णामपुरिसे ठवणपुरिसे दव्वपुरिसे । तिविहा

करिया ते कहेछे । पत्रसहित वृक्षसरिखा त विशेषउपकारी वचनादिके सूत्रसिद्धांत सांभलावे । फूलसहितवृक्षसरखा ते अर्थधर्मना आपनार । फ ससहितवृक्ष सरखा ते सूत्रार्थ बन्नो आपनार ए लोकोत्तर पुरुष । पुरुषनामरतावधी पुरुषनु सूत्र कहेछे । त्रण पुरुषनी जातकही एक नाम पुरु ष ते पुरुषनामें । स्थापनापुरुष जे पुरुष प्रतिमा । द्रव्यपुरुष जेपुरुषपणे उपजस्ये स्त्री पुरुष नपुंसक ॥ वली त्रण पुरुष जातिकही तेकहेछे । भाव-

पुरुषो मानपुरुष एवमितिराव पि वेद' पुरुषवेद स्तदनुभवनप्रधान' पुरुषो वेदपुरुष' सच स्त्रीपुंसनपुंसकसम्बन्धिषु त्रिष्वपि लिङ्गेषु भवतीति तथा पुरुषचि ह्ने श्मश्रुप्रभृतिभि रुपलक्षित' पुरुष चिह्नपुरुषो यथा नपुंसकमश्रुचिह्नमिति पुरुषवेदोवा चिह्नपुरुष स्तेनचिह्नते पुरुषइति कृत्वेति पुरुषवेषधारीवा स्त्या दिरिति अभिलप्यतेनेनेत्यभिलाप' शब्द' सएवपुरुष' पुल्लिङ्गतया भिधानात् यथा घट' कुटीवेति भाष्य अभिलावोपुल्लिंगा भिहाणमेत्तयस्तोव्वविसेस पुरिसाभिलंगमुत्ती वेयोवापुरिसवेसोवा ॥ १ ॥ वेयपुरिसोतिसिमो विपुरिसवेसाण्णमूयचारानिमित्ति ॥ धम्मपुरिसत्ति ॥ धर्म' क्षायिकचारित्रादि स्तदर्जन

पुरिसा प० त० णाणपुरिसे दसणपुरिसे चरित्तपुरिसे । तउ पुरिसजाया पण्णत्ता तजहा वेदपुरिसे चिंघपुरिसे अभिलावपुरिसे । तिविहा पुरिसा प० त० उत्तमपुरिसा मज्झिमपुरिसा जहन्नपुरिसा । उत्तमपुरिसा तिविहा पण्णत्ता तजहा धम्मपुरिसा भोगपुरिसा कम्मपुरिसा । धम्मपुरिसा अरिहता भोगपुरिसा चक्कवट्टी

पुरुष जे ज्ञानसहित । दर्शन पुरुष जे समकित सहित । चारित्र पुरुष जेचारित्रसहित एह तीन जाव पुरुषके । वली त्रण पुरुषकहिया ते कहेछे । पुरुष वेदमें ऊपजवे ते वेदपुरुष ते स्त्री पुरुष नपुंसक तीनमां पामवे । चिन्ह पुरुष ते दाढीमुछ सहित स्त्री पुरुष वेसधरे । अभिलाप पुरुष जे पुरुष शब्दे बोलाविये ते घडो कूवो भांवो इत्यादि ॥ वली त्रण पुरुष तेकहेछे । एक उत्तम पुरुष । बीजो मध्यम पुरुष । त्रीजुं जघन्य पुरुष ॥ उत्तमपुरुष त्रण प्रकारें तेकहेछे । एक धर्मपुरुष क्षायिक समकितना उपजावणहार । बीजा भोग पुरुष मनोहर भोगना भोगवनारा । त्रीजा कर्म पुरुष महा आरंभकारी नरकना आगार वासुदेवादि ॥ धर्म पुरुष ते अरिहंत । भोगपुरुष ते चक्रवर्ति । कर्म पुरुष वासुदेव नियाणा

परा पुरुषा धर्मपुरुषा उक्तंच धम्मपुरिसोतस्थय धाधारपतोजयासाहुत्ति ॥ २ ॥ भोगा मनोज्ञा शब्दादय स्तत्परा पुरुषा भोगपुरुषा भावच भोगपुरिसोसमब्जिय विसयसुहोभवहिंसत्ति कर्माणि महारंभादिसपापानि नरकायुष्कादीनीति यथा ममवतो मामेवस्स राज्यकाले ये धारम्भिका पापमय भोया स्वजन गुरव राजन्या ज्ञातेय कवचा स्वयुतं उभामोमाराय वयत्तियारसंगवोभवेयच्या धारभियगुरुयवसा सेसाविवत्तियातेठात्ति ॥ १ तद्यमजापपि तहरपदेसमारति यथाच मध्यमध्यमनुष्यश्वाधवम्यलाभ्यामिति दासा दासीपुत्रादय भृतका मूल्यत कर्मकरा ॥ भाइसमत्ति ॥ भागो विद्यते येषां ते भागवन्त मरचातुर्विंकास्यदति उक्त मनुष्यपुरुषाणां वैविध्य मधुना सामान्यत स्तिरथां जलचरस्थलचरखचरविशेषाणां ॥ तिविहास च्छेत्यादि ॥ धूत्रे वीरमभि स्वराज सुममानि चैतानि नवर मप्रख्याता मच्छा पोत वत्स तद्दत्तरासुवनितच्छा ख्याता पोतादिवमा वाक्षिता ख्या

कम्मपुरिसा वासुदेवा । मज्झिमपुरिसा तिविहा पणत्ता तजहा उग्गा भोगा राइन्ना । जहन्नपुरिसा तिवि हा पणत्ता तजहा दासा भयगा भाइल्लगा । तिविहा मच्छा पणत्ता तजहा अण्डया पोयया समुच्छिमा

षड् महारम्भेकरी नरकें जाय । मध्यम पुरुष त्रण प्रकारें ते कहेछे । उग्र ते रिषभदेवें कोटवालपणें थाप्या । भोगकुलना जे गुरु स्थानकें थाप्या । राजन्य कुलना क्षत्रिय पोता सरखा थाप्या ॥ जघन्य पुरुष त्रण प्रकारें ते कहेछे । दास ते दासीना पुत्र । भृतक ते मोलथी काम करें । चोथो भाग भापीये से चौथिया ते भागवत कहिये ॥ पुरुषनुं त्रिविधपणुं कही हिवे तिर्यंच जलचरनुं कहेछे । मच्छ त्रण प्रकारें कहिया इंडाथी ऊपना ते अंडज । वस्त्रें वींटया ऊपजे जरविना ते पोतज । समूर्छिम जे गर्भ विना ऊपजे ॥ अंडज मच्छ त्रण प्रकारें ते कहेछे । स्त्री पुरुष नपुंसक ॥

ता पातजा। सम्मूच्छिमा पगर्भजास्तस्य सम्मूच्छिमानां स्त्र्यादिभेदो नास्ति नपुंसकत्वात् सेयामिति स सूत्रे नदर्शित इति पक्षिणोऽण्डजा हंसादय पोत
जा वग्गुलीप्रभृतय सम्मूच्छिमा पक्षमध्यादय उद्भिज्जत्वेपि तेषां सम्मूर्च्छजत्वव्यपदेशो भवत्येव उद्भिज्जादीनां सम्मूर्च्छनजविशेषत्वादिति ॥ एवमिति ॥
पक्षिवत् एतेन मत्स्येणा भिलापेन ॥ तिविहाउरपरिसप्पेत्यादि ॥ सूत्रचयसलेन उरसा वक्षसा परिसर्पन्तीति उरपरिसर्पा सर्पादय सोपि भणित
व्या तयाभुजाभ्यां बाहुभ्यां परिसर्पन्तीति ये ते नकुलादय स्तेपि भणितव्या ॥ एवचेवत्ति ॥ यथा पक्षिण स्तथेत्यस्य इहापि सूत्रचयमभ्येतव्यमितिभाव

अण्डयामच्छा तिविहा प० त० इत्थी पुरिसा णपुंसगा । पोययामच्छा तिविहा प० त० इत्थी पुरिसा ण
पुंसगा । तिविहा पक्खी पण्णत्ता तजहा अण्डया पोयया समुच्छिमा । अण्डया पक्खी तिविहा पन्नत्ता तजहा
इत्थी पुरिसा नपुंसगा । पोयया पक्खी तिविहा पण्णत्ता तजहा इत्थी पुरिसा णपुंसगा । एवमेएणअभिला
वेण उरपरिसप्पावि भाणियव्वा । भुयपरिसप्पावि भाणियव्वा । एवचेव तिविहाउ इत्थीउ पण्णत्ताउ तजहा

पोतज मच्छना त्रण भेद ते कहेछे । स्त्री पुरुष नपुंसक। समूर्छिममां स्त्री पुरुष नथी नपुंसक होज छे ॥ त्रण प्रकारें पक्षी कहिया ते कहेछे ॥ अण्ड
ज हंस प्रमुख । पोतज वागुल प्रमुख । संमूर्छिम खञ्जन प्रमुख एह सर्व पचेंद्री ॥ अंडज पक्षी त्रण प्रकारें कहिया ते कहेछे । स्त्री पुरुष नपुंसक
पोतज पक्षी वागुल प्रमुख त्रण प्रकारें स्त्री पुरुष नपुंसक ॥ एम एणें अभिलापें करी उरपरिसप हियें चाले त सर्प ते पणि त्रणि प्रकारें कहिवा ।
एमज भुजपरिसर्प जे भुजायें चाले ते पणि जाणिवा ॥ एणें प्रकारें त्रणि प्रकारनी स्त्री कही ते कहेछे तिर्यंचनी स्त्री । मनुष्यनी स्त्री । देवनी

एवं तिर्यग्विशेषाणां त्रैविध्यं इदानीं स्त्रीपुरुषनपुंसकानां तदाह ॥ तिविहेत्यादि ॥ नवसूत्री सुगमा नवरं ॥ कर्मेति ॥ प्राकृतत्वेन समासान्तमिति कृष्यादि कर्मप्रधाना भूमिः कर्मभूमिः भरतादिका पंचदशधा तत्र जाता कर्मभूमिजा एवमकर्मभूमिजा नवरमकर्मभूमिः भोगभूमिरित्यर्थः देवकुर्वादिका त्रिंशद्विधा अन्तरे मध्ये समुद्रस्य द्वीपा येते तथा तेषु जाता अन्तरद्वीपा स्ता एता अन्तरद्वीपिका विशेषणैविशेषसूत्रा सामान्येन स्त्रियः ततदाह ॥ तिविहेत्यादि ॥ कण्ठ्यं स्या

तिरिक्खजोणित्थीओ मणुस्सित्थीओ देवित्थीओ । तिरिक्खजोणित्थीओ तिविहाओ पन्नत्ताओ तजहा जलचरीओ थलचरीओ खहचरीओ । मणुस्सित्थीओ तिविहाओ पण्णत्ताओ तजहा कम्मभूमियाओ अकम्मभूमियाओ अंतरदी वियाओ । तिविहा पुरिसा पण्णत्ता तजहा तिरिक्खजोणियपुरिसा मणुस्सपुरिसा देवपुरिसा । तिरिक्खजो णियपुरिसा तिविहा पण्णत्ता तजहा जलचरा थलचरा खहचरा । मणुस्सपुरिसा तिविहा प० त० कम्मभू

स्त्री ॥ तिर्यंचनी स्त्री त्रण प्रकारें कही ते कहेंछे । जलचरी माछली प्रमुख । थलचरी गाय भैंस घोडी प्रमुख । खचरी पंखी चिडिया प्रमुख जे आकाशमां चाले । मनुष्यनी स्त्री त्रण प्रकारें ते कहेंछे । पांच भरत पांच एरवत पांच महाविदेह एह पनरह कर्म भूमिमां जे स्त्री । जिहां असि मसी कृष्यादि कर्म असी ते खड्गादि कर्म मसी ते लिखवानो कर्म कसी ते खेतीनो कर्म एह तीन कर्म नथी ते अकर्म भूमिमां जे स्त्री युगलिया मनुष्यनी स्त्री देवकुरु प्रमुख तीस अकर्म भूमिछे । अंतरद्वीप ते छप्पन समुद्रमांहे तिहां युगलिया छे तेहनी स्त्री ॥ हवे पुरुष कहिया ते कहेंछे । तिर्यंच योनिना पुरुष । मनुष्य पुरुष । देवपुरुष ॥ तिर्यंचयोनिनां पुरुष तीन प्रकारें जलचर मच्छप्रमुख । थलचर हाथी घोडा प्रमुख । खचर पंखी हंस प्र

द्विपरिणतिव जीवानां लेश्यावमतो भवयोवि तविभ्रमनवमकारवला गासा मिति नारकादिपदेषु लेश्या विशालवावतारेव निरूपयमाह । नेरइया चमिस्यादि। एणकसूत्रं कण्ठ्यं मवरं। नेरइयायंतमोलेश्यावीति । एतासामेव तिसृणां सद्भावा द्वितीयपदो निर्देशो असुरकुमाराणाम् चतसृणां सद्भावात्

मिया अकम्मभूमिया अंतरदीयया । तिविहा णपुंसगा पण्णत्ता तंजहा णेरइयणपुंसगा तिरिक्खजोणिय णपुंसगा मणुस्सणपुंसगा । तिरिक्खजोणियणपुंसगा तिविहा प० त० जलचरा थलचरा खहचरा । मणुस्स णपुंसगा तिविहा प० त० कम्मभूमिगा अकम्मभूमिगा अंतरदीयगा । तिविहा तिरिक्खजोणिया प० त० इत्थी पुरिसा णपुंसगा । णेरइयाणं तओलेस्साओ प० त० कण्हलेस्सा नीललेस्सा काउलेस्सा । असुरकुमा राणं तओ लेस्साओ संकिलिट्ठाओ प० त० कण्हलेस्सा नीललेस्सा काउलेस्सा । एवं थणियकुमाराणं एवंपुढ

मुए ॥ मनुष्यपुरुष त्रण प्रकारें कर्मभूमिनां । अकर्मभूमिनां अंतरद्वीपनां ॥ त्रण प्रकारें नपुंसक । नारकी नपुंसक सप्तलाई सात नरकनांमली । तिर्यंचयोनिना नपुंसक । मनुष्यनपुंसक । देवता नपुंसक नथाय ॥ तिर्यंच योनिमां नपुंसक त्रण प्रकारें तेकहेंछे । जलचर नपुंसक । थलचर नपुंसक । खचर नपुंसक ॥ मनुष्य नपुंसक त्रण प्रकारें तेकहेंछे । कर्मभूमिनां । अकर्मभूमिना । अंतरद्वीपनां ॥ त्रण प्रकारें सामान्यजावें तिर्यंचकहिया तेकहेंछे । स्त्री पुरुष नपुंसक ॥ स्त्री आदिकवेद जीव लेश्यावी थंघायें तेमाटे लेश्याकहेंछे चौवीस दंडके नारकीनें त्रण लेश्याकही तकहेंछे । कृष्ण लेश्या । नीललेश्या । कापोतलेश्या । असुरकुमारनें त्रणलेश्या संकिलिष्टमां कही चौथी तेउ लेश्या असुरकुमारनें छे पणि ते

संक्लिष्टाइति विशेषित चतुर्थोंहि तेषां तेजोलेश्याऽस्ति किन्तु सा नसंक्लिष्टेति पञ्चिम्मादि असुरकुमारसूत्रममतिदिशवाह ॥ एवपुढवीइत्यादि ॥ पृथिव्य म्बनस्पतिषु देवोत्पादसम्भवा चतुर्थी तेजोलेश्यास्तीति सविशेषणो लेश्यानिर्देशो ऽतिदिष्ट स्तेजोवायुद्विनिचतुरिन्द्रियेषु देवानुत्पत्तातदभावा त्रिविधैव वर्तते भतएवाह ॥ तेपोइत्यादि ॥ पंचेन्द्रियतिरश्चां मनुष्याणाञ्च षडपीति संक्लिष्टासंक्लिष्टविशेषणत यतसूत्रो भवत मनुष्यसूत्रे ऽतिदेशेनोक्तइति व्यन्तर

विकाइयाण आउवणस्सइकाइयाणवि तेउकाइयाण वाउकाइयाण बेइंदियाण तेइंदियाण चउरिंदियाण वि तउ लेस्सा जहा णेरइयाण । पंचेंदियतिरिक्खजोणियाण तउ लेस्साउ संकिलिट्ठाउ प० त० कराहलेस्सा नीललेस्सा काउलेस्सा । पंचिंदियतिरिक्खजोणियाण तउ असंकिलिट्ठाउ लेस्साउ प० त० तेउलेस्सा पम्ह लेस्सा सुक्कलेस्सा । एवमणुस्साणवि वाणमंतराणवि जहा असुरकुमाराण । वेमाणियाण तउ लेस्साउ प०

संकिलिष्ट भणी तेकहेछे । कृष्णलेश्या । नीललेश्या । कापोतलेश्या ॥ एम यावत् स्तनित कुमारलगें एह तीन लेश्या संकिलिष्ट जाणवी ॥ एम पृथिवीकाय वनस्पतिकायमें च्यार लेश्या जाणवी देवता एहमां आवी उपजै तेमाटे तेजोलेश्या पावै तेमाटे असुरकुमारनो सूत्रमां कहियो । एम तेउकायमें । वाउकायमें । बे इंद्रीमें । तेइंद्रीमें । चौरइंद्रीमें एहतीन लेश्याहोय । जिमनारकीमें ॥ पंचेंद्रीतिर्यंच योनियामें त्रणि लेश्या संकिलिष्ट पापनी कही तेकहेछे । कृष्णलेश्या । नीललेश्या । कापोतलेश्या । एह त्रण लेश्या पंचेंद्री तिर्यंचने ॥ त्रण लेश्या असंकिलिष्ट रूडी कही तेकहेछे । तेजोलेश्या । पद्मलेश्या । शुक्ललेश्या । चोवीसदंडकें कही । एम मनुष्यमें पणि जाणवी व्यंतरमें तीन तेमाटे व्यंतरमें जिम असुरकुमारनेंकही

सूत्रे मलिप्ता गाथा मतरवोस । वाणमवरेत्यादि । वैमानिकसूत्रं निर्विशेषणमेव मसक्लिष्टस्येव पवस्य सद्भावात् व्यवच्छेद्याभावेन विशेषणायोगादिति ज्योतिष्कसूत्र योत्र लेपा तेजालेश्यावा एवभावेन विसागमावतारादिति भगवतं वैमानिकानां लेश्याद्वारेषे शावतार ज्योतिष्काणान्तु तत्रा तस्स भरा पननधमेव तमार । तिहीत्यादितारारूवेति । तारवमार्थ । चलेज्जा । स्थानस्थानं सकेत् वैक्रियं कुर्वता परिचारयमाणवा मैथुनायं संरम्भमुक्तमि स्थस्य स्थानका है यस्मात् स्थानान्तर संक्रामन् गच्छदित्यर्थं यथा भावकोपवादि मेव परिहरदित्यर्थः मथवा कवि मचद्दिवे देवादौ घमरव वैक्रियादि कुर्वाति सति तमाम्पदानाव चलेदिति उक्तव तत्यर्थं जे से वायारए पंतरे से जमेव दोविहाणविओयपसए समोसेव वारसवोवसङ्गणारंति तत्र ध्यायातिव मतर मह्वविकदेवस्य मार्गदानादिति भगवतर स्तारकदेववलक्रियाकारत्वा भुत्वा ध्याय देवस्यैव विद्युत्स्तनितक्रियबो' कारवानि सूचवये माव । तिहीत्यादि । कस्य मपरं । विज्जुयारति । विद्युत् वहित् सैतत्रियतत्इतिकार' कार्यं विद्युतोका वरण हार' क्रिया विद्युत्कार स्व विद्युत कुर्या

तजहा तेउलेस्सा पम्हलेस्सा सुक्कलेस्सा । तिहिठाणेहि ताराख्वेचलेज्जा विकुव्वमाणेवा परियारेमाणेवा ठाणाउंया ठाणसकममाणे ताराख्वे चलेज्जा । तिहिठाणेहि देवे यिज्जुयारकरेज्जा त० यिउव्वमाणेवा परि

तिम गाथियी । वैमानिक देवनें त्रणि मसंक्लिष्ट भली लेश्या कही । ते कहेछे । तेजो लश्या । पदम लेश्या । शुक्ल लेश्या । चोवीस दण्डके कही । जोतिषीनें तेजो लेश्या छे तेमांटे न कहिया तेहने चालिया स्वभाव छे । ते कहेछे । त्रणि थानके जोतिषी तारा चलै थोआनथी स्वस्थानथी चलै । वैक्रिय मथी विकुर्वणा करतो । तथा देवांगनाथी मैथुनसेवा करवानें । पोताना थानकथी बीजे थानके जातो तारा रूप

र्स्थय वैक्रियकरणादीनि वि सद्यस्य भवन्ति तत्प्रहतस्य दर्योतासवत स्तनविद्युदादि स्पिमवन्तीति स्तनविद्युत्कारादीनां पेक्षिताद्रि कारण तयोन्न मिति ऋद्धि विमानपरिवारादिका द्युति शरीराभरणादीनां यश प्रख्याति बलंशारीरं वीर्यजीवप्रभव स्पुरुषकारस्या भिमानविशेष सएव नि ष्पादितस्वविषय पराक्रमयेति पुरुषकारपराक्रमं समादारम्भ स्तेतखर्व सुपदर्शयमानहति तथा स्तनितशब्दो मेघगर्जितं एवमित्यादि ख्यनं परिवा रेमानेना तथारूपस्ये त्यादाबापवसूत्रमावमिति विद्युत्कारस्तनितशब्दा उत्पातरूपा श्चमत्कारमुत्ता यथो त्पातरूपाश्चैव लोकान्धकारादीनि पञ्चदशसूत्रा तिठिाणेहिमित्यादिकया । मात्र अथवा येय वपर लोके देवलोके न्धकार नमो लोकान्धकारं स्याद्भवेत् शृण्वती लोकानुभावात् भावतोवा प्रकाशकस्वभा

यरेमाणेया तहारूवस्स समणस्सवा माहणस्सवा इहि जुइ जस बल वीरिय पुरिसक्कारपरक्कम उवदंसेमाणे देवे विज्जुयार करेज्जा । तिहिठाणेहि देवे थणियसद्द करेज्जा तजहा विउव्वमाणे एवजहा विज्जुयार तहे

यसे । अथवा कोइक महर्द्धिक दवता वैक्रिय रूप करतानें मार्ग आपवानें चालें ॥ त्रणि थानके देवता दपवत वीजलीनी परें उद्योत करें ते कहें छे । वैक्रिय रूपादि विकुर्वणा करतो । देवागमामी परिवारना भोग करतो । तथारूप जे श्रमण साधु माहण तेहनें महानुभावनें रिद्धि परिवार विमानादिकनी । द्युति शरीर आभरणनी दीप्ति । यश कीर्त्ति । बल शरीरनु । वीर्य जीवनु । पुरुषात्कार पराक्रम अभिमान उ दयम एह सर्व देखाडतो वीजलीनी परें झात्कार ते विद्युत्कारप्रति करें ॥ त्रणि थानकें देवता स्तनित शब्द ते गाजनी परें ते गाजवु ते प्रति करेंछे । विकुर्वणा करतो जिम विजलीकरें तिमज स्तनितशब्द पणि त्रणि प्रकारें जाणिवो । एतवॉ स्तनित विद्युत इत्यादि उत्पातरूप लोकमां

श्प्रागभावादिति तथवा भर्हत्व मोक्षाद्यष्टप्रकारा म्परममतिपरसुरासुरविसरविरचिता जन्माम्बरमशाश्वकाश्वविश्वानपथशासनाजताभिषिक्तपुरुषम वातवजन्मपयजन्या मपापातिशयैकपा विशिसमतिपन्निप्रपयात् सिद्धिसौधशिखरारोहणं चेत्यर्हत उत्तम भरईतिवंदवमर्म सवाभिमरहति पूयमवारं मिदिगमपंचपरत्रामरहंतातेषुयति ॥१॥ तेषु व्यवच्छिद्यमानेषु निर्वाणं गच्छत्सु तथा तत्प्रणीते धर्मे व्यवच्छिद्यमाने तीव्रव्यवच्छेदकाले तथा पूर्वाणि दृष्टिवादान्भागभूतानि तेषु गत म्पविष्टं तदभ्यन्तरीभूत गतस्वरूपं यत् श्रुतं तत्पूर्वगतं तेषु तत्र व्यवच्छिद्यमाने दहन राजमरणदेयनगरभङ्गा दानपि हृष्यते दिशा मन्धकारमाव रजसततयेति यत्पुनर्भगवत्सु भवदादिषु निखिलभुवनजनानन्दनयनसमानेषु विगच्छत्सु लोकान्धकार भवति तत् किमद्भुतमिति सावोचोतो लोकानुभावात् मनुष्यलोके देवागमात् ॥ भाण्यमयमहिमात् ॥ केवलज्ञानोत्पादे देवकृतमहोत्सवेष्विति देवानां भवनादि

य थणियसहेपि । तिहिठाणेहि ळोगधयारेसिया तजहा अरहतेहि वोच्छिज्जमाणेहि अरहतपन्नत्तेधम्मे वोच्छिज्जमाणे पुव्वगएवोच्छिज्जमाणे । तिहिठाणेहि ळोगुज्जोएसिया तजहा अरहतेहि जायमाणेहि अ

उत्पात अपकार रूप तेमाटे अंधकारनु स्वरूप कहेवे । त्रणि थानकें लोकमा अंधकार ते कहेछे । अरिहंत प्रथमप्रमातिशयवंत अतिशय यत मोक्ष गाते लोकमां अंधकार थाय प्राय्यो ग्यानी गया माटे। अरिहतनों भाष्यो धम विच्छेद जाते। भरत ऐरवत भाग्नीमें पूर्वगत दृष्टि वाद विच्छेदजाते। सिद्धांत विच्छेदजाते। द्रव्यथी पणि राजा मरण देश नगरमा भंगादियी अंधकार थाय ॥ एम त्रणि थानके मनुष्यालु पणि थाय मनुष्य लोकमां ते कहेछे । अरिहतनों जन्मथातां । तथा दीक्षा लेतां । अरिहतनें नाण उपजवामां उच्छवनें विषे ॥ त्रणि थानकें दे

न्मधकार न्देवांधकार लोकानुभावादेवेति लोकान्धकारे उक्तेपि यद्देवान्धकार मुक्तं तदर्थं तान्धकारसद्भावप्रतिपादनार्थमिति एवंदेवोद्योतोपि देवसन्नि पातोभुवि तत्समवतारो देवोत्कलिका तत्समवायविशेष ॥एवमिति॥ त्रिभिरेव स्थानै ॥ देवकहकहकइत्ति ॥ देवकृतप्रमोदकलकल त्रिभिरेवेति ॥ कम्मति॥

रहंतेसुपव्वयमाणेसु ग्ररहंताणणाणुप्पयमहिमासु । तिहिठाणेहिं देवंधयारेसिया तंजहा ग्ररहंतेहिं वोच्छि ज्जमाणेहिं ग्ररहंतपण्णत्ते धम्मे वोच्छिज्जमाणे पुव्वगएवोच्छिज्जमाणे । तिहिठाणेहिं देवुज्जोएसिया तंजहा ग्ररहंतेहिं जायमाणेहिं ग्ररहंतेहिं पव्वयमाणेहिं ग्ररहंताणणाणुप्पयमहिमासु । तिहिठाणेहिं देवसन्निया एसिया तंजहा ग्ररहंतेहिं जायमाणेहिं ग्ररहंतेहिं पव्वयमाणेहिं ग्ररहंताणणाणुप्पयमहिमासु । एव देवुक्क लिया देवकहकहए । तिहिठाणेहिं देविंदा माणुसलोगं हव्वमागच्छंति तंजहा ग्ररहंतेहिंजायमाणेहिं ग्रर

यताना भवनादिकमें विषें अंधकार थाय ते कहेछे । अरिहंतने मोक्षजाते । अरिहंतभा धर्मविच्छेदथाता भरत ऐरवत आश्री । पूर्वगत दृष्टि वाद विच्छेदथातां ॥ त्रण थानके देवताना भवनादिकें उद्द्योत थाय । अरिहंतना जन्म दिवसे । अरिहंतनां दीक्षा महोच्छवनें दिवसें । अ रिहंतना ज्ञान उपजवाना दिवसे ॥ त्रण थानके पृथिवीमा देवतानो सन्निपात त समवाय एकठो मिले सर्व देवता एकठा मिले ते कहेछे । अरिहंतनो जन्म थाते सव देवता एकठा मिलें । अरिहंतने दीक्षा लेते । अरिहंतनें केवलज्ञान महोच्छव थातें । एम देव उत्कलिका ते समवाय विशेष । देवतानों कहकह ते देवताना हर्षनों कलकल शब्द ॥ त्रण थानकें सर्व देवेंद्र मनुष्य लोकमां आवें तेकहेछे । अरिहंत तीर्थकरमा जन्म

गोम । भामाबियति । इन्द्रसमानवय । तायत्रिंशति । मइत्तरकल्पा पूज्या लोकपाला सोमादयो दिक्पतिनुतवा अग्रमहिषी प्रधानभार्या परिष त परिवार प्रतीपपत्रका येते तथा अनीकाधिपतया गजादिसैन्यप्रधाना ऐरावतादय आमरथा प्रमरथा राजामेवेति । मानुससोकमभ्यागच्छतीति प्रतिपदंसंबंधनीयं । १२ । मनुष्यलोकागमने देवानां यानि कारणा न्युक्तानि तान्येव देवान्युत्थानादीनां कारणतया सूचयन्नेनाह । तिहीत्यादि । वत्स वयरं । पाडेज्जति । सिंहासना ह्यभुत्तिष्ठेयुरिति भासनानि ग्रहादीनां सिंहासनानि तथसनं सोकानुभावा देवेति सिंहनादवेलोत्क्षेपो प्रमोदवार्ता जनमतोतो चेत्यवृक्षा ये सुधर्मादिसभायां प्रतिद्वार पुरतोमुखमण्डपप्रेक्षामण्डपचैत्यस्तूप चैत्यवृक्षमहाध्वजादि प्रमत गूहन्ते लोकान्तिकानां प्रधानतरत्वे

हतेहिपव्वयमाणेहि अरहताणणाणुप्पयमहिमासु । एव सामाणिया तायत्तीसा लोगपाला देवा अग्गमहि सीउ परिसोयवन्नगा देवा अणियाहिवई देवा आरक्खादेवा माणुसलोग हव्वमागच्छति । तिहिठाणेहि देवा अब्भुठेज्जा तजहा अरहतेहिजायमाणेहि जाव तचेव । एयमासणाइ चलेज्जा सीहणायकरेज्जा चेलु

महोत्सव दिवसें । तीर्थंकरनो दीक्षा महोत्सवमां । तीर्थंकरनो केवलज्ञाननी महिमाना महोत्सवमां । एम सामानिक देवता इन्द्र सरिखी रिद्धि मा धणी । त्रायस्त्रिंशक महत्तर सरिखा । लोकपाल ते सोम यम वरुण कुबेर । अग्रमहिषी ते इन्द्राणी । त्रण पर्षदाना देवता । अनीक कटकना अधिपति देवता । अंग रक्षक देवता एह सव इन्द्रनो परिवार ए पूर्वे कहिया ते त्रण कारणें मनुष्य लोकमा आवे ॥ त्रण थानके देवता सिंहासनथी ऊठे ते कहेंछे । अरिहंतनें जन्मथाते यावत् एमज एह त्रण कारणे आसन चले । एम सिंहनाद करे विमानमां पर्षदमां । तथा

यम्य ग्यामिनहत्यय इतिद्वितीर्य धर्मदाता चार्यो धर्मोचार्य स्तसेति ब्रतीय माक्च दु:प्रतिकारोमाता पितरीसामोगुरुयस्योकेस्मिम् तस्मुत्तरिहामुत्र
मृदुस्वरतरमतीवारदृति ॥ १ ॥ तत्र अत्रक दु:प्रतिकारतामाह ॥ सपाउत्ति ॥ प्रात प्रभात तेनसम संप्रात संप्रातरपित्र प्रमातसमकालसमपित्र सदैवमा
त मध्य तदैवेत्सर्वो ऽनेन चार्वागतराव्यवता दययति समग्र्या तिमयावलावा ऽविप्रभाते प्रतिसन्द्यावत्वात् वाच प्रतिप्रभातमित्वर्थः कयिदिति कुली
नएव मतुमर्वोमि पुरुपो मामया रेवतिरयो रेवविषम्मतिस्वरासमवात् यतं पाकाना मौपधिशालानां पाकेे यस्य भौपधियतेनवा सकपच्चते यत् मतकृत्वो
वा पाकोसम्य मतेनया रुपकानां मूल्यत पच्यते मतत्वतपाकं एवं सहस्रपाकमपि ताम्यां तैलाभ्यां ॥ भर्मिमित्ता ॥ भभ्यंगकृत्वा ॥ गधदृएणंति ॥ गंघाद
केन गन्धद्रव्यचारेन उद्वर्त्योद्वर्त्तनंकृत्वा त्रिभि उदगै गंधोदकोष्णोदकशीतोदकै र्मज्जयित्वा स्नापयित्वा मनोज्ञं कास मोदनादि स्थाली पिठरो तस्यां पाको
यस्य तत्रा भय्यथवा पक्वमपर्थया मतवाविर्भस्यादितोइविमीयपमिति शुद्ध मतदोपवर्जितं स्थालीपाकंचतस्मुद्ध स्थालीपाकेनवा शुद्धमिति विगृह्य मष्टा

यण केइपुरिसे अम्मापियर सयपागसहस्सपागेहिं तिल्लेहिं अब्भंगेत्ता सुरभिणा गंधहएण उव्वहित्ता तिहिं
उदगेहिं मज्जावेत्ता सव्वालंकारविभूसियं करेत्ता मणुन्नं थालीपागसुद्धं अट्ठारसवंजणाउलं भोयणंभोयावे

माता पिताने भोसिगत्त मषाय । प्ररय पोसण करै ते स्वामी तेहमोंं धर्मोचार्य ते धर्मदाता एह तीमने नित्य सदैव प्रभातें कर्ह कुलवत पुरु
प माता पिताने शतत सो भथवा हजार भौपधे पाक्यो एहवे तेलेकरी मर्दनकरी स्नानकरी सुगंघयुक्त घाठ द्रव्यथी उद्वर्तनकरीने तीन प्रकार
मा पाकी सुगम उष्ण शीतल जलथी । पछे मनोहर हाउलीमें पाक्यो शुद्ध मीपनुं दापु नथी एहवी धतार जातिमु सालय तेसे सहित भोजन

दमभि सौबमतोते र्थमने मासमके सूपादिभि र्थाकुस सर्वोर्थ मत तथा मधमा छादयभेदस्त काम्भनाकुसयेति मधभेदपदलोपेन समास' मोजन थीजयि
स्ता एतेषा छादयभेदा सूभो १ दवो २ अमस तिमिसमथार ६ गोरसोमूसो ८। भक्ता ९ गुससावचिया १ मूसपक्ता ११ करियम १२ सागो १३ ॥१॥ चोदरसा
सूतका १४ पानपाचोय १५ पानमचेव १७। मद्यारसमोसागो १८ मिवमदमोसोदमोपिंडो ॥ २ ॥ मांसमर्थ जलजादिसत्व सूमो सुप्रतंदुससौरसमदुमांडादिर
स' मभाविपण्णपाषादोमि गुससावचिका गुलपर्पटिका सोपमसिका गुस्मानावा मूसपसाम्येकमेवपदं करितवं चोरवादि याको मधुसादि भविंका रसा
नू मस्विका तस्मयमिदं सोपमपक्षामइमथ दविस्यमवाठवमिरियसोसा दससस्गुसमवार्थ एसदसासूमिवमोगभि ॥ १ ॥ पानंसुरादि पानीयं जर्थ पान
मं द्राचापानकादि याम स्वाम सिद्दति याव ज्योवो यावज्जीवं यावज्जापधारथं पट्टीसम्मे पवतंसदचावर्तंस' शेखर स्वाप अरपमपतसिका पुष्पवर्तंसिका
तया परिवहेत पृष्ठारोपितमित्यर्थः तेनापि परिवाहकेन परिवहनेनथा यथांवा पितु र्पुंप्रतिकर मयक्म प्रवीकारस्तस्य मनुभूतोपकारतया प्रत्युपकारका
रिता दाहच कयउवमारोजोवो इसज्जपोहोजजोगुपोतस्स उवयारवाविराजे शवविकतिसदराठयवत्ति ॥ १ ॥ पवेजसेपत्ति ॥ प्रवपेत् भनिसिवाक्या व

येक्षा जावज्जीव पिठियकिसिया तेपरिवहेज्जा तेणावि तस्सअम्मापिउस्स दुप्पडियार भवइ । अहेणसे
तम्मापियर केवलिपन्नत्तेधम्मे आघवइत्ता पन्नवइत्ता परूवइत्ता ठावित्ता भवइ तेणामेव तस्सअम्मा

मिमाली जावज्जीव सीवे तिहांसगि वासे उपाडे चाले एतसा वामाकरे तोपणि तेपुत्र माता पितानो ओशिमस नथाय एहवो भगवत कहियो
छे ॥ हिवे जो ते पुत्र माता पिताने कदापि केवलीनो भाख्यो धर्म कहे समझावे समझावीने प्ररूपीने जव नेवांतर कहीने धर्ममा थिरकरे धर्मेक

दारे मपृकप मतमम्मापितर भर्मे स्थापयिता स्थापनयोसो भप त्वमुठानत स्थापयतोस्यर्थ किमुस्सेमाप । पावपत्ता । पममास्याय मप्राप्य मोपयित्वा मरुप्य भेरतारति पथवा प्याप सामाम्यतो मकाचार्यो घम प्रमाप्य त्रिगोपतो यथा सा वहिंसादिलपम प्ररूपभेदतो यथा मौवाद्रसस्वरूपदति गोवा महर्मतानि पैतामोति । तेपामेवत्ति । तत एतेनैव धमस्थापमेनैव म परिवहनेन पथवा तेमैव धमस्थापकपुरुपेप नपरिवाहिना तस्य प्रत्युपकरपोमस्था त्या पिग । सुपडियारति । सुखेन प्रतिक्रियते प्रत्युपक्रियतइति सुप्रतिकार पापसापमोर्य तत्रपति प्रत्युपकार मृतोमपतोस्थं धमस्थापनस्य मचोप कारत्वा दाहप मन्पतरायमार्ण पुपडियारंभवेसमडुपसु सम्मगुपमेसियाडिवि तथयारसत्रमवोमोर्हति । १ । पत्र भर्तु र्दुर्मतिकायतामाह कपित् कापि महतो पेमयसघना ऽपा आवा पूजावायप पथवा मपोपासामयपतितवाचप पूज्यदति महार्घो महार्घोवा मात्स्यमवर्लतयोगायाइयोवा रंगरत्मम दरिद्र मनोभर्त वजनपुरप मतिदुखं समुस्पपसेत् धनदानादिनो स्पृष्टंकुर्यात् तत समुत्पयता मस्तरं सदरिद्र समुत्कृष्टो घमादिभि । समारेति मम । पच्छति । पचायासे । पुरच्चति । पूर्वकाले समुत्कर्षवकासपवेत्यर्थ पथवा पयात् मर्तु रसमप पुरप मगु समघप विपुलया भोमसमित्या भोग

पिउस्स सुप्पाडियारंजयइ समणाउसो केइमहच्चे दरिद्द समुक्कसेज्जा तएण सेदरिद्देसमुक्किठेसमाणे पच्छा पुरचण यिउञ्जोगसमिइसमयागएयावि विहरेज्जा तएणसेमहच्चे अन्नयाकयाइ दरिद्दीज्जाएसमाणे तस्सद

राये तणे करीने ते पुत्र माता पितामों सुप्रतिकार ते मोसिगल थाय ॥ बीजो अधिकार कहेछे । हे श्रमण हे आयुष्यम् कोईक मोटी ऋध्यवंत ते कोइक दरिद्री पुरूपने द्रव्य देइने उत्कृष्टकरे अथात् धनवानकरे पीछे ते दरिद्रीने उत्कृष्ट थया पछी ते पूर्वकाले धन पाम्या पछी घणा भोग स

ममुन्येन ममश्वामतो'युक्तीय स तथा सथापि विहरेत् वर्तते तवो मनार समर्हार्योभर्त्ता । सम्मर्दति । सर्वेष तव् क्षय द्रव्यचेति सव्यसे तदपि भास्ता मन्यमिति । दसमा।मति । एदन् मन्नतमत्युपकारोभवेदितियेय' मत खेनापि सर्वस्वदानेन सर्वसहायकेनापिना दु'मतिकरमेवेति मव धर्माचार्यंदु' प्रतिकारसतामाव । केइत्थादि । पारिखंति । पापकर्मेभ्य मारायातमिति माय मतएवधार्मिक मवएव सुवचनं श्रुत्वा योवेव निशम्य मनसा ऽवधार्य मन्यतरेपु देशमोकेष्व मवरदेशामां मध्येदस्यर्थः देवलेनोत्पतरति दुक्षमा भिक्षा यस्मिन् देशे सदुर्भिक्ष सत्रमा रसहरेत् मवेत् भोतार मरमे निर्गत' वा

रिहस्स ञ्यतिय हव्वमागच्छेज्जा तएण सेदरिद्दे तस्सन्नाहिस्स सव्वस्सवि दलयमाणे तेणावि तस्स दुप्पडि यार नयइ ञ्हहेणसे तन्नाहि केवलिपन्नत्तेधम्मे ञ्यघयइत्ता परूवइत्ता ठायइत्ता नयइ तेणामेव तस्सन्नाहि स्स सुपडियार नयइ । केइ तहारूवस्स समणस्सवा माहणस्सवा ञ्यतियमेगमवि ञ्यारियधम्म सोच्चा नि

मुदायें करीने मंडित विचरें रहे तियार पछी ते भर्ता स्वामी जेसे दरिद्रीनें धन देइने धनवान कीधो ते एकदा समयें दरिद्री थयो धनरहित थयो निर्धनयइ से पोताना करेला धनयामनें पासे भावे तियारे ते दरिद्री ते स्वामीनें सघलोई द्रव्य भापे पोते कांई मराके तोपिण ते दरिद्री से स्वामीनो भोसिंगल नथाय । तो किम भोसिंगल थाय ते कहेंछे । ते दरिद्री ते स्वामीने केवलीनो भाष्यो धर्म कहे कहीने से भागलि मरूपीने मुमभावीन धर्ममां दृढकरे तेहथी धम करावे तथी स स्वामीनों भोसिंगल थाय । एतले धर्म पमाडे तो भोसिंगल थाय ॥ हिवे धमाचायनो दु'प्रतिकायता कहेंछे । कोईक पुरुष तथारूप मोटोश्रमण साधु माहणनें पासे एक भार्य निष्पाप धर्मना सुवचन प्रति सामली

गरा चिरकांतार मां भिक्षामितारंबा रोग काबो विषते यस्य स दीर्घकालिक रोग रोग कासश्वास कुष्टादिरातक आशुजीवितकारी सद्योघाती सर्वं शूलादि रमया रुग्देकस्ये रोगातक तेनेति धमस्थापनेनानुभवति कृतोपकारो यदाह ओजेयजभिठार्थ मिठाविमोईसचेयदरचेना सोततघोपुर्यत मिथेयवाउ भवेनिरित्योत्ति ॥१॥ ग्रंथं सुगमता व सप्टमिति धमस्थापनेन पास्य भवत्वेदलयष प्रत्युपकार: कृत स्यादिति धमस्य स्थान ययावतारयेम

सम्म फालमासे कालंकिच्चा अन्नयरेसुदेवलोएसु देवत्ताए उववन्ने तएण सेदेवे तधम्मायरिय दुभिक्खाउ या देसाउ सुभिक्खदेस साहरेज्जा कताराउ वा णिक्कतारकरेज्जा दीहकालिएण वा रोगातकेण अभिभूय विमोइज्जा तेणावि तस्सधम्मायरियस्स दुप्पडियार भवइ अहेणसे तधम्मायरिय केवलिपण्णत्ताउधम्माउ भट्ठसमाण भुज्जोवि केवलिपण्णत्तेधम्मे आघवइत्ता जाव ठावइत्ता भवइ तेणामेव तस्सधम्मायरियस्स सु

में सम्यक् प्रकारें धमकरी भावसो पूमकरी कालकरीनें अम्यतर कोई एक देव लोकनें विषें देवतापणे उपजे तिवारें ते देवता ते धर्माचार्यने दुभिक्ष दोहली भिक्षाने जिहा जे देशमां एतले दुकाल मायी सुभिक्ष जिहां सुकाल होय ते देशमां मात्र मूके ॥ अथवा अटवीमा पडयाहोय तिहा थी वसतीमां भावी मूके । अथवा घणां कालनो रोगहोय रोगमी पीडायी पराजव्यो होय त रोगथी मूकावे देवशक्ती थी एतले प्रकारें पणि ते धमाधायने धर्मना आपनारनें दुःप्रतिकार ओसिगल नथाय तो किम थाय ते कहेंछे । जो कदापि ते धर्माचार्यने केवली भाषित धर्मथी पडि या प्रति धमथी भ्रष्टथयो सो ते प्रति फरीने केवली भाषित धर्म ते आगलि कही समझावी पाछो धर्मना थापिये आपाठाचार्यने खेम चेले या

तथा अवेतनद्रव्यथर्या अनन्तरसूत्रा ... ात्पुद्गलधर्मा विरूपयन् सूत्राणि अवपतुरय इपकानाम । तिविहेत्यादि । त्रिविध सत्रादिना
सदुदाचाप् ... अविच्छिन्नपुद्गलति । आहारिज्जमाणेति । आहारतया जीवेन गृह्यमाणस्सागा सवति जीवेन कर्षणात एवं
विषमाणोविकिसमरवयवर्तिवदेति स्वाना स्थानान्तर सङ्क्रमणो इत्यादिनेति उपधीयते पोष्यते योगेनेत्युपधि कर्मएवो पधि कर्मो

मज्झिमा जहन्ना । एवं छप्पियसमाउ नाणियव्वाउ जाव दुसमदुसमा। तिविहा उस्सप्पिणी पन्नत्ता तंजहा
उक्कोसा मज्झिमा जहन्ना । एवं छप्पियसमाउनाणियव्वाउ जाव सुसमसुसमा । तिहिंठाणेहिं अच्छिन्ने
पोग्गले चलेज्जा तंजहा आहारिज्जमाणेवापोग्गले चलेज्जा विउव्वमाणेवापोग्गले चलेज्जा ठाणाउठाणसंका
मेज्जमाणेवापोग्गले चलेज्जा । तिविहा उवही पन्नत्ता तंजहा कम्मोवही सरीरोवही बाहिरभंडमत्तोवही ।

मा ते उत्कृष्ट उत्सर्पिणी काल पछे चौथा आरा तांई मध्यम पांचमो छठो ते जघन्य। एम त्रणि प्रकारें उत्सर्पिणी काल कहियो तेमजेवे । उत्कृष्ट
मध्यम जघन्य । एम जघन्य ए छये आरा चढता चढता आववा। एक बे आरो जघन्य त्रीजो चौथो पांचमो आरो ते मध्यम काल । यावत् सुषम
सुषमा छठो आरो ते उत्कृष्टो काल कहिये। काल ते अचेतन कहियो सरखाईपणा माटे पुद्गलधर्म कहेवे। त्रणि स्थानकें खड्गादिक अणछेद्यो पोतानी
मेले समुदायमाथी पुद्गल चले तेकहेवे। जीव आहार पणे ले तेस्वस्थानकथी पुद्गल चले जीव तावो से। देवता मनुष्य वैक्रियने वर्तवतो पुद्गलने
तेमाटे । अथवा एक स्थानकथी बीजे स्थानके संक्रामीने हस्तादिकें करीनें मूके ते पुद्गल चले अथवा त्रीय तेहमाथी पुद्गल ते उपधि मूकवा रूप

भवच्छेदकारणतामाह ॥ तिहीत्यादि । कण्ठ्यं नवरं धनादिक मादिरहित मनवदग्र मनन्तं दीघार्ध दीघमाध्व चत्वारोंता विभागा गत्यङ्गत्वाद यो यस्य तचतुरन्त श्चोर्धलं प्राकृतत्वात् संसारएव कान्तार मरण्य संसारकान्तार तद् व्यतिव्रजेत् व्यतिक्रमेदिति धनादिकत्वादीनि विशेषणानि कां तारपक्षेपि विषयया योजनीयानि तथा धनाद्यनन्तमरण्य मतिमहत्वा चतुरन्त श्चिम्भेदादिति निदानभोगर्द्धिप्रार्थनासमाव मार्त्तध्यान मवि जितता धनिदानता तथा दृष्टिसम्पन्नता सम्यग्दृष्टिता तथा योगवाहिता श्रुतोपधानकारित्वं समाधिस्थायितावा तथेति भविष्यतिप्रक्रमेष कालवि गय प्रस्त्याविति कालविशेषनिरूपणायाह । तिविहेत्यादि । सूत्राणि चतुर्दश कण्ठ्यानि नवर मवसर्पिण्योप्रथमे चरमे उत्कृष्टा चतुर्थे मध्यमा पश्चिमे ज घन्या एव सुषमसुषमादिषु मवेव भवं भवं कालवीयं तथा उत्सर्पिण्यां दुःषमदुःषमादि तदेवामीं घोतविपर्ययेणो त्कृष्टत्व माख्यत् सोन्यमिति वा

पणिदियार नवइ । तिहिंठाणेहिं सपन्नेघ्नणगारे धणाईय घणवदग्ग दीहमद्ध चाउरतसंसारकतार विइवय एज्जा तंजहा घ्निणिदाणयाए दिट्ठिसपन्नयाए जोगवाहियाए । तिविहा उसप्पिणी पन्नत्ता तंजहा उक्कोसा

श्यो दयता प्रथमे तेखे प्रकारें ते धर्माचार्यमें मोक्षिगलयाय धर्मथी संसार तरिये प्रन्यथा नथाय ॥ त्रिये ससार तरवानां भेद कहेंछे । त्रणे स्था नके सहित भणगार साधु जेहनो आदिनथी प्रतनथी जेहनीमोटोमार्गछे चारमनुष्यादिगति संसाररूप भटवीप्रति उलंघें प्रतिक्रमें ते त्रण थाल कहेंछे । धमकरीरिद्विना नियाणों नकरे । समकित सहितहोय। योग उपधानतपकरें श्रुतसमाधि राखें संसारतरवो ते भयथितिकाल पूरोथयें होय तेमाटे काल विशेषनूं स्वरूप कहेंछे । त्रणे प्रकारें उत्सर्पिणी कही। उत्कृष्ट मध्यम जघन्य। एवं प्रकारें छए भारा जांणवा। पहिलो भारो सुसमसुख

पधि एव शरीरोपधि वाह्यशरीरवर्जितो भाण्डानिच भाजनानि खमयानि माचावि मानाशुलानि कांस्यादिभाजनानि भोजनोपकरणमित्यर्थं माण्डमाचावि ताम्येवो पधि मोंपकमाचापधि रखवा माच्च वस्त्रामरणादि तदेव माचा परिच्छेद सेवो पधिरिति ततो माण्डस्य कर्मधारय माचमाचावि तास्येवो पधि मौपक्रमाचापधि रखवा माच्च वस्त्रामरणादि तदेव माचा परिच्छेद

ति चतुर्विंशतिरण्डकचिन्ताया ममुरादीनां चतोपि वाच्या नारकैकेन्द्रियवर्जा खेया सुपकरणाभाभावात होन्द्रियादीना मूपकरण हस्यते एवं कोपा

षिदिति । मतएवाह । एवमित्यादि चतुर्वेत्यादि । सचित्तोपधि सेवा मेत्तमाजन मचित्तोपधि वस्त्रादि मिय परिणतप्राये मैत्तमाजनमिवेति रणत्व

चिन्ता सुगमा नवर सचित्तोपधि नारकाणा शरीर मचेतन उत्पत्तिस्थान मिश्र शरीरमेवो च्छ्वासादिपुद्गलयुक्तं तेषां सचेतनाचेतनत्वेन मिश्रत्वस्य

विवक्षितत्वादिति एवमेकेन्द्रियाणामप्येव सूत्रमिति । तिविहेपरिग्गहेत्यादि । सूत्राणि पचिवत् केवलं नवर स्परिग्रह्यते सोऽभिमतस्तदिति परिग्रहो

एवं असुरकुमाराणं नागियव्वं एवं एगिंदियनेरइयवज्जं जाव वेमाणियाणं । अहवा तिविहा उवही पण्णत्ता तंजहा सच्चित्ते अच्चित्ते मीसए । एवं नेरइयाणं निरंतरं जाव वेमाणियाणं । तिविहे परिग्गहे पण्णत्ते तंज

परिग्रहवे ते उपधिनो स्वरूप त्रणि प्रकारें ते कहेछे । कर्मोपधि ते आठ कर्मनो परिग्रह । शरीर उपधि ते औदारिकादिक पांचमी । बाहिर परिग्रह माटीना कांसाना पात्रादिक अथवा वस्त्राभरणादिक उपधि । एम असुरकुमारादि दसने ए उपधि परिग्रह होय । ते एहनो परें वा च्यो । एम चौवीस दंडकें एकेंद्री नारकी टाळीने कोइक बेइंद्रियादिकने दीसे तीम उपकरण । यावत् वैमानिक देव पर्यंत तीन उपधि कह्यो । अथवा तीन प्रकारें उपधि ते कहेछे । सचित पाषाणादिक भाजन । अचित वस्त्रादिक । मिश्र ते एज खेलादि भाजन कांइक सचित कांइक अचित । एम नारकादि चौवीस दंडके सर्वने होय । नारकीने एम जाव वैमानिक चौवीस दंडक सर्वें । तीन प्रकारें परिग्रह कहियो ते कहे

मूर्च्छाविषयहति इत्येषा मवमिति व्यपदेशभागे मुख्य सघनारकैकेन्द्रियाणां कर्मादिरेव सम्भवति नमावश्यादिरिति पुद्गलधर्माणां चित्तं निरुध्य प्रोतधर्माणां । तिविहेत्यादिभि । सचित्तं सदारा वस्त्रादि चेतानि मवर मवितिति प्रणिधान मेकाग्रता तच मन प्रभृतिसम्बन्धिभेदात् त्रिविधेति तत्र मनस प्रणिधानं मन प्रणिधानं एवमितरे तच चतुर्विंशतिदण्डके सर्वेषां पञ्चेन्द्रियाणं भवति तदन्येषां तु नास्ति योगानां सामस्त्येना भावा दित्यत एवोक्तं

हा कम्मपरिग्गहे सरीरपरिग्गहे बाहिरभंडमत्तपरिग्गहे । एवमसुरकुमाराण एव एगिंदियनेरइयवज्जं जाव वेमाणियाणं । अहवा तिविहे परिग्गहे पण्णत्ते तंजहा सच्चित्ते अच्चित्ते मीसए एवं नेरइयाणं निरंतरं जाव वेमाणियाणं । तिविहे पणिहाणे पण्णत्ते तंजहा मणपणिहाणे वयपणिहाणे कायपणिहाणे । एवं पंचेंदिया

णं । कर्म परिग्रह आठ प्रकारें । शरीर परिग्रह पांच प्रकारें । बाहिर परिग्रह भांड पात्र वस्त्रादिक । एम असुरकुमारादिकने जाणवो । एम चोवीस दण्डक मांहि एकेंद्री नारकी छांडीने एहने भाण्डादि परिग्रह नथी तमाटे यावत् वेमानिक सार्ड्स त्रिविध परिग्रह जाणिवा । अथवा तीन प्रकारें वली परिग्रह कहियो ते कहेछे । सचित्त परिग्रह । अचित्त वस्त्रादि । मिश्र ते सचित्ताचित्त । ए त्रण परिग्रह चोवीस दण्डके अं तरा रहित वेमानिकतांई होय एकेंद्री नारकीने पणि होय । ए प्रथम कहियो वे तिम पुद्गलनूं त्रिविध पणूं कहेछे । त्रण प्रकारें प्रणिधान क हियां मन प्रमुखनूं एकाग्र पणूं करवूं ते प्रणिधान ते कहेछे । मननूं प्रणिधान ते मननूं एकाग्रपणूं । वचननूं एकाग्रपणूं ते वचन प्रणिधान । का यानूं एकाग्रपणूं ते काय प्रणिधान । एणे प्रकारें ए त्रण प्रणिधान पंचेंद्रीनें होय चोवीस दंडक मांही यावत् वेमानिक सार्ड्स । एकेंद्रियादिकनें ए

एवं । पंचिंदियेत्यादीनि । प्रणिधानेति शुभाशुभभेद मयमशुभमाह । तिविहेत्यादि । सामान्यसूत्रं विशेष माश्रित्य चतुर्विंशतिदण्डकचिन्तायां मनुष्या णामेव तथापि सयतानामेवेद भवति चारित्रपरिणामरूपत्वा दस्येति । मतएवाह । सजयेत्यादि । २ दुःप्रणिधान मशुभमन प्रवृत्यादिरूपं सामान्य प्रणिधानवत् व्याख्येयमिति । चोवयवोयादिवारा । तिविहेत्यादिना । गभ वयमतोत्येतस्तेन । ग्रन्थेन योनिस्वरूपमाह तत्र शुकति तेजसकार्मण शरोरवन्त सत्व औदारिकादिशरीरैश्च मिश्रीभवं त्यस्या मिति योनि जीवस्यो त्पत्तिस्थानं शीतादिस्पर्शंवदिति । एवंति । यथा सामान्यत स्नि

ण जाव वेमाणियाण । तिविहे सुप्पणिहाणे पण्णत्ते तंजहा मणसुप्पणिहाणे वयसुप्पणिहाणे कायसुप्प णिहाणे । संजयमणुस्साण तिविहे सुप्पणिहाणे पण्णत्ते तंजहा मणसुप्पणिहाणे वयसुप्पणिहाणे कायसुप्प णिहाणे । तिविहे दुप्पणिहाणे पण्णत्ते तंजहा मणदुप्पणिहाणे वयदुप्पणिहाणे कायदुप्पणिहाणे । एवं पंचें

द्रीय पूरो होय । अशुभ शुभ होय । शुभ कहेछे । त्रण प्रकारें शुभ प्रणिधान कह्यु ते कहेछे । एक मन सुप्रणिधान जे मन भलूं धरमां । वचननुं सुप्रणिधान जे सत्यवचन । कायसुप्रणिधान जेकायायी पाप न करे धर्मकरे ॥ संयमवंत मनुष्यनें एतले साधुनें त्रणि सुप्रणिधान कह्या तेकहेछे । मनसुप्रणिधान । वचनसुप्रणिधान । कायसुप्रणिधान । एह चारित्रियानेंहोय ॥ त्रणि दुःप्रणिधानअशुभकह्या तेकहेछे । मनदुः प्रणिधानमाठुमन । वचनदुःप्रणिधान असत्यवचनबोलें । कायदुःप्रणिधान जेकायायी पापकरवो । ए पंचेंद्रीनें यावत् वैमानिकताईं होय । जीवना उपजवानी योनि तेहना भेद कहेछे । त्रिविधा योनि कही । शीता उष्णा शीतोष्णा ॥ एवं प्रकारें एकेंद्री विगलेन्द्री ते बेंद्री तेंद्री चौरेंद्री एहतीनने

विधा मता चतुर्विंशतिदण्डकवर्त्तिनां मेकेन्द्रियविकलेन्द्रियाणां तेजोवर्ज्जानां तेजसा सुष्णयोनित्वात् पञ्चेन्द्रियतिर्यक्पदे मनुष्यपदे च सम्मूर्च्छनजानां त्रिविधापिपाना त्रयवेति यतमाह सोपोशिचआचोया सम्वेदेवायमभवंतो उशिणासतेउकाए दुविहनिरएतिविहसेमाणंति ॥ १ ॥ अन्यथा योनि श्चैविध्यमाह । तिविहेत्यादि । व्याख्या यथर स्पष्टजविगतानां एकेन्द्रियादीनां सचित्तादि त्रिविधा योनि रग्लेया स्वस्थवा यतउक्तं अचित्तापक्तुजोणी नेरइयाणतहेवदेवाणं मीसायगब्भवसही तिविहाजोणीउसेसाणति ॥ १ ॥ पुन रन्यथातामाह । तिविहेत्यादि । सम्वृत्ता संवृटा घटिकासयवत् विवृता

दियाणं जाव वेमाणियाणं । तिविहा जोणी पण्णत्ता तंजहा सीआ उसिणा सीउसिणा । एवमेगिंदियाणं विगलेंदियाणं तेउकाइयवज्जाणं समुच्छिमपंचेंदियतिरिक्खजोणियाणं समुच्छिममणुस्साणय । तिविहा जो णी पण्णत्ता तंजहा सच्चित्ता अच्चित्ता मीसिया । एवमेगेंदियाणं विगलेंदियाणं समुच्छिमपंचेंदियतिरिक्ख जोणियाणं समुच्छिममणुस्साणय । तिविहा जोणी पण्णत्ता तंजहा संवुडा वियडा संवुडवियडा । तिविहा

पाय । तेउकाय टालीने रहने उष्णयोनि होय । समूर्च्छिम पंचेन्द्री तिर्यंचने देवताने गर्भजने शीतोष्णयोनि होय । अग्निने उष्णा योनि अचित्तयोनि समूर्च्छिम मनुष्यने । पीजोपधि अचित्तयोनि कही ते कहेछे । सचित्तयोनि । अचित्तयोनि । मिश्रयोनि तेसचित्ताचित्तयोनि ॥ एकेन्द्री विगलेंद्रीने संमूर्च्छिमतिर्यंच पंचेंद्री समूर्च्छिममनुष्यमें एतलामें त्रणयोनि होय । देवता नारकीनें एक अचित्तयोनि होय । गर्भजमनुष्य तिर्यंचने मिश्रयोनि होय । संमूर्च्छिम मनुष्यने मिश्रयोनि होय ॥ वली त्रणयोनि कही । तेकहेछे । संवृतसांकडीयोनि घडीमाफकसरिखो । विवृतयोनि

संमुखयोषोवर्ततिदेवाव विगर्हिदिमावपिवसा संमुखविमदायमघयक्ष्यिति ॥ १ ॥
विपरीता सम्भूतविक्षता तदुभयरूपेति एतद्विभागोयं एगिदियनेरइया संमुखयोषोवर्ततिदेवाव विगलिंदियावयिवसा ...
कुमयतेत्यादि । कच्छ मयरं कूर्म कच्छप माङदुमता कूर्मोवता यझलेपा मती यस्याः सा मझामत्तौ यंमा यमनाता पवयमिम सा सा यंशोपविका
। गर्भवकमंतिति । गर्भे वरयाति वलदेववासुदेवानां सकवरालेने कलाविवपयो सममुकयवेविभ्रमिति । वयवेत्यादि । योनिका जीवा पुरुवाव तत्
पववमायोम्या किं पुरुवामगित वरयान्ते ववकामति विनमंति पतदेवम्यास्याति । विउक्कमतिति । वोर्य चयति । वकमतिति । विमुलं भव

जोणी पणता तं० कुम्मुन्नया सखावत्ता वसीवत्तिया । कुम्मुन्नयाणजोणी उत्तमपुरिसमाऊणं । कुम्मुन्नया
ण जोणीए तिविहा उत्तमपुरिसा गब्भं वक्कमंति तंजहा अरहंता चक्कवट्टी बलदेववासुदेवा । सखावत्ता
ण जोणी इत्थियरयणस्स सखावत्ताएणजोणीए वहवे जीवाय पोग्गलाय वक्कमंति विउक्कमंति चयंति

तेमोफलो । सवृतविवृतयोनि तेमोकमीमोकलो । एकेंद्रीने नारकीने सवतयोनि देवताने विगलेंद्रीने विवृतयोनिकही । गर्भजने सवृतयोनिकही ॥
यसो मवयोनिकही तेकहेवे । कूर्मोन्नतायोनि तेकाचवानीपरे ऊंची । सखावर्त्तयोनि तेशंखनीपरे भावर्तहोय । वशीपत्रायोनि वासनापत्तासरि
गी ॥ कूर्मोन्नतायोनि तेउंची पुरुपने उपजिवानो यामक तेकहेवे । कूर्मोन्नतायोमिनेविषे त्रविधप्रकारना उत्तमपुरुष गर्भमांउपजे तेकहेवे । अरि
हंत चक्रवर्ति बलदेववासुदेव साचिउपजे तेभाट एकठाकरिया । सखावर्त्तयोनि चक्रवर्तिनी स्त्रीने होय स्त्रीरत्नने होय । सखावर्त्तयोनिनेविषे
घणा जीव घर्नेपुदगल गृहियानेयोग्य तेजीवपुदगल घराउपजे । घर्नेविकसे । चवे घर्नेउपजे पबिनीपर्नेनपी जन्मनथाय ॥ वंशीपत्रायोनि कीजा

ति उत्पद्यन्तइति । चिइअ वग्मति । पृथगुअनस्य सामान्यवनस्पो त्पत्तिकारणभवतोति मनन्तर मोमितो मनुष्या मरूपिता मधुना मनुष्यसधर्मणो बादरवनस्पतिकायिकाम् मरूपयवाह । तिविहेत्यादि । वणवनस्पतयो बादराइत्यव संख्यातजोविका संख्यातजोवा यथा नालिकाबद्धकुसुमानि चा त्यादोनीत्यव असंख्यातजीविका यथा निम्बाम्रादोनां मूलकन्दस्कन्धत्वक्शाखामवाला अनंतजोविका अनन्ताद्यदति एव प्रज्ञापनासूत्रास्पीदं जेवेर नालियाबद्धा पुप्फा संखेज्जजोविया णिहुयाअणंतजोवा जेयावन्ने तहाविहा । १ । पउमुप्पलनलिणाणं सुभगसोगंधियाणय अरविंदकोकणाण सयवत्तसह स्सवत्ताण । २ । बिंटबाहिरपत्ता यकन्नियावेयएगजोवस्स अभितरगापत्ता पत्तेयंकेसरमिजंति । ३ । तथा णिंबंबजंबुकोसंब सालअंकोल्लपोलुसल्लूया सल्ल मोयइमालुय बउलपलासेकरंजेयेत्यादि । ४ । एएसिणं मूलावि असंखिज्जजोविया कंदावि खंधावि तयावि सालावि पवालावि पत्ता पत्तेयजोविया पु प्फा अणेगजोविया फला एगट्ठियत्ति अनंतरं वनस्पतय उक्ता स्तेच अन्यास्यया बहवो भवंतीति संबंधा द्व्याख्यायाचो तोर्थानामिरूपयाचाह । जंबू

उययज्जति नोचेयण णिप्फज्जति । यसोपहाणजोणी पिहुज्जणस्स यसीवश्चियाएण जोणीए यहवे पिहुज्ज णे गम्भवक्कमंति । तिविहा तणवणस्सइकाइया प० त० संखेज्जजीविया असंखेज्जजीविया अणंतजीवि

सामान्यपुरुष मनुष्यनेहोय । वणोपत्रायोनिमां चणासामान्यपुरुष गर्भेतयाउपजें ॥ एहत्रणयोनि मनुष्यनेंकहो मनुष्यनास्वरूप सरखो बादर तृणवनस्पति कायछे तेकहेछे । त्रणमकारें वनस्पति सख्याता जीवनो एकमाहेनोफूल । असंख्यातजीवनो कमलप्रमुखनोंकंद मूलसंघकासमो अनं स्यातजीवहोय । अनंताजीवनी मोसफूलप्रमुख ॥ वनस्पती असामयें बहुतयाय तेमाटे असाख्यतीर्थ कहेछे । त्रणितीर्थकह्या जंबूद्वीपना भरत

तीर्थेत्यादि । पंचदशसूत्री साधारतिदेशात्मा सुगमाय केवल तीर्थानि चक्रवर्तिनं समुद्रगीतादिमागधवरदामप्रभासानि तत्रामरदेवनिवासभूता नि तत्र भरतैरवतयो स्थानि पूर्वदक्षिणापरसमुद्रेषु क्रमेणेति विजयेषु शीताशीतोदामहानद्यो पूर्वापरक्रमेणेति जंबूद्वीपादौ मनुष्यक्षेत्रे संति तीर्था नि मरूपितानि मधुना तत्रैव संतं कालं विभागोपयोगिनं सूत्रपदस्यभेम साक्षा दतिदेशात्मा निरूपयन्नाह । जंबूद्वीवेत्यादि । सुबोधं किंतु । पत्र तेति । अवसर्पिण्युत्सर्पिण्योरस्य वर्तमानत्वेमा तीतोत्सर्पिण्यादौ भूत । कोऽर्थः नक्षपरेय कार्यो ऽपितु पक्षतेत्ति कार्यं स्याम । जंबूद्वीवेत्यादिना । वासु

या । जंबूद्दीवेद्दीवे भारहेवासे तउ तित्था पन्नत्ता तंजहा मागहे वरदामे पभासे । एव एरवएवि । जंबू द्दीवेद्दीवे महाविदेहेवासे एगमेगे चक्कवहिविजए तउ तित्था पन्नत्ता तंजहा मागहे वरदामे पभासे । एव धायइसंडेदीवे पुरच्छिमद्धेवि पच्चत्थिमद्धेवि । पुक्खरवरदीवड्डपुरच्छिमद्धेवि पच्चत्थिमद्धेवि । जंबूद्दीवेद्दीवे

भरतक्षेत्रे ऽन्तर्मुहूर्ते । मागध वरदाम प्रभास । एम ऐरवतक्षेत्रमापवि त्रणतीर्थकहिवा । जबूना महाविदेहक्षेत्रमा एकेक चक्रवर्तिविजयमां त्रणितीर्थक हिया मागध वरदाम प्रभास । एम धातकीखंडद्वीपमां पूर्वदिशि तीनतीर्थकहिया । एम पश्चिमदिशि पणिजाणवुं । पुष्करार्द्धनेविषे पणिपूर्वा र्द्धमा पश्चिमार्द्धमांपणि तीनतीर्थकहिया । एहतीर्थ मनुष्यक्षेत्रमाहे तीर्थ तेचक्रवर्तिना साधवाना तीर्थसामीन देवताअधिष्ठित ॥ मनुष्यक्षेत्रमां कालमानके तेकहिये । जंबूद्वीपमा भरतक्षेत्रे तथा ऐरवतक्षेत्रे गइउत्सर्पिणीनेविषे सुखमासुषमारो आरो चारकोडाकोडिसागरोपममानर्नु थयो । एमज अ वसर्पिणीकाले पणिएतलो विशेषकहियो आवतीउत्सर्पिणीयेंपासें । एम धातकीखंडमाहि पूर्वार्द्ध तथा पश्चिमार्द्धमांपणि एम पुष्करवरद्वीपमां

न्नरहेरवएसुयासेसु तीच्चाएउस्सप्पिणीए सुसमाएसमाए तिन्निसागरोवमकोडाकोडीउ कालो होत्या । एयह्व सप्पिणीए णयर प० श्चागमेस्साए उस्सप्पिणीए न्नयिस्सइएवघाइयखंडे पुरच्छिमद्धेवि पच्चत्थिमद्धेवि । एय पुरकरवरदीवड्डपुरत्यिमद्धेपच्चच्छिमद्धेयिकालोन्नाणियव्वो । जयूद्दीवे २ न्नरहेरयएसुयासेसुतीयाएउस्सप्पिणीए सुसमसुसमाएसमाए मणुयातिन्निगाउच्चाइ उद्घ उच्चत्तेण तिन्निपलिउंवमाइ परमानु पालइत्ता । एव इमीसे उसप्पिणीए श्चागमेस्साए उस्सप्पिणीए जयूद्दीवेदीवे देयकुरुउत्तरकुरासु मणुया तिन्निगाउच्चाइ उड्ढ उच्चत्तेण पन्नत्ता तिन्निपलिउंवमाइ परमानु पालयति । एव जाव पुरकरयरदीवड्डपच्चत्थिमद्धे । जयूद्दीयेदीवे न्नरहेरयएसुयासेसु एगमेगाए उसप्पिणीउस्सप्पिणीए तउ यसा उप्पाज्जिसुया उप्पाज्जितिया उप्पाज्जिस्सतिया

पूर्वार्द्ध तथा पश्चिमार्द्धमापणि सुखमाभारो भक्षिकोडाकोडि सागरोपमनुंभावबुं ॥ बयूद्वीपना भरतऐरयतक्षेत्रमां गईउरसर्प्पिणीकालें सुखमसुखमा कालें ममुष्य भविगाउना ऊचायपणा थविगाऊनुशरीरयपो ॥ भवपस्योपमनुं उस्कष्टभायुपाले । एम भा वर्त्तमानभवसर्प्पिणी भायती उरसप्पिणीयें पणि सुखमाकाले एहमामभागवुं । भयूद्वीपमां देयकुरु उसरकुरुवर्वे युगलियामनुष्य भविगाउ ऊंचाकहिया भवपस्योपमनु उरकष्टभाउखो सदैवपालेंवे । एम यावत् धातकीखंड पुष्करार्द्ध पश्चिमार्द्धलगिकहियुं । बयूद्वीपमा भरतएरवतक्षेत्रें एकेकी उरसप्पिणी तथा भवसप्पिणीयें अविगयशपमा यसमामकाले उपनेछ भागामिकालें उपजस्यें । एकमरिहतनोंवश बीजो चक्रवर्त्तिंयश । त्रीजोदशारयश तेयसदेयवासुदेववंश ॥ एम यावत्

वेयेत्तेतदगतेन मंत्रेम कालधर्मानेिगाल सुमगयाव विन्तु । मजाउर्वपावर्यतिति । निरपकुमासुकला मध्यमायु पालयति छद्मामाधा रायुष्याधि वेयेत्तेतदगतेन मंत्रेम मदन्त बादर वारा दिर्द सुनव माइ । वादरेत्यादि । साष्टं त्रिलविचारा देवेद मपरमाइ । मवेत्यादि । मवर्मतेत्ति । मथ परमश्राव मन्यतदति मदन्त ददा मम सुमम देतुला त्वमाव सुमवेति भावय मरिकाववसुवलो मालतसवमभतसदोय समदंतोवमायसुवोमवर्वकिवारोमंत्वादि । १ । मयमा

त० श्चरहतयसे चक्कवहृियसे दसारयसे एव जाव पुस्करवरदीयहुपच्चत्यिमद्दे । जबूद्दीवे दीवे ञरहेरवएसुवा सेसु एगमेगाए ठसप्पिणी उस्सप्पिणीए तठ उत्तमपुरिसा उप्पज्जिसुवा उप्पजातिवा उप्पज्जिस्सतिवा त० श्चरहता चक्कवद्दी वलदेववासुदेवा एव जाव पुस्करवरदीवहुपच्चत्यिमद्दे । तठश्चहाउय पालेंति तजहा श्च रहता चक्कवद्दी वलदेववासुदेवा । तठ मज्झिममाउय पालयति तजहा श्चरहता चक्कवद्दी वलदेववासु देवा वायरतेउकाइयाण उक्कोसेण तिन्निराइंदियाइ ठिई पन्नत्ता । वायरवाउकाइयाण उक्कोसेण तिन्निवा

पुष्करवरद्वीपनो पश्चिमार्द्धलगि जाणिवुं ॥ भरत ऐरवतक्षेत्रमा एकेकी उत्सर्प्पिणी अवसर्प्पिणीकाले त्रणउत्तमपुरुष उपनाउपजेछे उपजस्ये तेकहेछे अरिहंत चक्रवर्त्ति बलदेववासुदेव । एम जाव पुष्करार्द्धद्वीपना पश्चिमार्द्धलगे ॥ त्रणियणा आउखोपूरुपाले निरुपक्रम तेकहेछे । अरिहंत चक्रव र्त्ति बलदेववासुदेव । मध्यमआउखोपाले गरढानपाय तेकहेछे । अरिहंत चक्रवर्त्ति बलदेववासुदेव ॥ आउखाना अधिकारमाटे कहेछे । बा दरअग्निकायनी उत्कृष्ट त्रणरात्रिनी थितिकही । बादर वायुकायनी उत्कृष्ट त्रणहजारवरसनी थितिकही ॥ हिवे भगवंतप्रति गौतमपूछे

भजते सेवते भिक्षून् भिक्षिमावेश पक्षवा भज्यते सेव्यते भिक्षाभिभिरिति भक्तं प्राकृत भक्तमाभजसेवाए तस्ममर्थतोत्तिवेषणमका सिवगाद्योसिवम भंभिम्मोवभवोतद्वोर्यात ॥ १ ॥ भवना भाति दोप्यते भाजतेवा दोप्यतेवा भासतपोगुणसेत्तिति भतोभावतोवेति प्राकृत भक्तवाभामाज्जोवा दित्तो एवाजतभमतोति भावतोवायरिपो सोमापतवोगुणगुणेति ॥ १ ॥ भवना भावोपेतो मिथ्यात्वादे स्वभावस्थित इत्यर्थ इति भावत भवना भगवाने भयमुत्तरति प्राकृत भक्तवाभंतावैपो वंभिच्छतादवंभवेजपो भवेसरियादमणो विज्जरसोतेवमभवतो ॥ १ ॥ भवसवा संसारस भवसवा भासमा तई तुला मायवारवस्सा द्यान्तो भयान्तोवेति उक्तं च मेरदमारभवक्षम भंतोभतेवसोभवतोति भवनाभयपमंतो जोदभवतोभवंतोसोत्ति ॥ १ ॥ इदच भद कारोभा गन्दाना सामेभाजनला शामंभवावं भंतेत्तिपदं साधमोवमिति भतोभतेत्ति महावीर मार्मभयगुत्तवान् गोतमादि शार्दीमा कसमादिद्याभामि ति विमिप श्रीपामा श्रोदोषामिति सामार्थ्य यमयया भवविशेषपवे तेषा भभिद्दितलेगप्रख्यावा कोठे कुशूले भागुमानि भवेपवेन संरक्षितानि कोठागु मानि तेषा मेवं सवत मवरं पन्व वंभवढकादिकतो धाम्याधारविशेष भवसूत्राणा सुपरि स्थापितनमकटकादिमयो जनमतीतो मासको धवसोपरितन

ससहस्साइ ठिइ पन्नत्ता । अहन्नते साळीण वीहीण गोघूमाण जवाण जवजवाण एएसिण धन्नाण कोठा उत्ताण पल्लाउत्ताण मचाउत्ताण मालाउत्ताण उलित्ताण लित्ताणलंछियाण मुद्दियाण पिहियाण केवइयकाल

थे मालि व्रीहो जव जवजव तेपवविशेष ए सर्वधान कोठारमां घाम्यायुयें घांसमभुखनोपालो मांचेर एकवेठें एकऊपरि तिहारास्पाशेय । मालो घरमीऊपरसीमूमि तिहारास्माशय । वारदेईखांचे सपसेलिप्पु । रेखामी साठमकोषा तेमांटी ममुखमी मुद्राकोधी । सूथा ढांकाऊपरि

भागो अभिहितव पचुष्योर्योरमेचो मास्रोसघरोवरिंशोहत्ति । योसिसापति । बारदेये पिधानेन सह गोमयादिना अवकिमानो । सिताचंति । सर्वत । संबियाचति । रेखादिभि छतसाम्धमार्मा । मुडियाचंति । मृत्तिका दिमुद्रायता । पिहियाचंति । स्थगितामा । सोचरुसंति । कियतंकाल योनि संस्रामकुर उत्पद्यते तत परयोनि प्रम्लायतिवर्षादिना शोषते प्रतिध्वस्यते विध्वसाभिमुखा भवति विध्वस्यते मोयते एवच तद्वीजमबीज भवति उत्तमपि नाङ्कुरमुत्पादय ति बिसुखभवति तत परयोनिव्यवच्छेद प्रज्ञप्तो मया भन्यैच केवलिभि रिति शेषं सर्व स्चिवधिकारादेवेद मपरं सूत्रद्वयमाह । दोच्चेत्यादि । स्फुट मवर द्वितो यायां पृथिव्यां कि भामिकाया मित्याह शर्करप्रभाया मित्येवं योजनीयं सप्तपृष्योषु चेयं स्थिति सागरमेमतिदसत्त इससत्तरसतेत्थवावीसा तेत्तीसंजावठिई

जोणी सचिठइ जहन्नेण श्रंतोमुहुत्त उक्कोसेण तिन्निसवच्छराइ तेणपर जोणी पमिलायइ तेणपर जोणी पविद्धसइ तेणपर जोणी विद्धसइ तेणपर वीए श्रवीए भवइ तेणपर जोणी वोच्छेदे पन्नत्ते । दोच्चा एण सक्करप्पभाए पुढवीए नेरइयाणं उक्कोसेण तिन्निसागरोवमाइ ठिई पन्नत्ता । तच्चाएणवालुयप्पभाए

केतलाकालसर्वी एहधाननी योमिरहे अकुरोउपर्जे भगवानकहेछे । जघन्य अतरमुहूर्त वेघळीपछे भवितजीवथवे । उत्कृष्ट त्रणिवरसताइरहे वाव्यु उपजे । तिवारपछी योनिम्लानथाय वर्णादिकयोहीनथाय । तिवारपछी योनिविध्वसवाने सन्मुखथाय । तिवारपछी योनिक्षयपामे । तिवार पछी वीजअवीजथाय वाव्यांअकूरोनथाय । योनिविच्छेदथाय ॥ थितिना अधिकारमाटे कहेछे । बीजी सर्करप्रभा पृथ्वीमा उत्कृष्ट नारकीनुत्रण सागरोपमनु आउखू कहिवु । त्रीजी वालुकप्रभा नरकमा जघन्य नारकीनी त्रणसागरोपमनी थितिकही । पाचमी धूमप्रभा नरकमां त्रण

मत्तरा पुढवीमुउग्गोसा ॥ १ ॥ आपढमाएजेहा सावित्याएकविद्धिणामविया तरतमजोगोएसो दससयाससहस्सरयणायति ॥ २ ॥ नरकपृथिव्यधिकारा नारकवियेषवक्तव्यताप्ररूपणाय सूत्रत्रयमाह ॥ पंचमाएइत्यादि ॥ सुगंम चेदं ॥ उसिणवेयणत्ति ॥ तिसृषा पृथ्वीषुसभावस्था तिसषु नारका उष्णवेदना तत्वजा'प यदुच्यते नेरयिका उष्णवेदना मनुभवन्तो विहरन्तीति तत्तवेदनासातत्यमदर्शनाय नरकपृथ्वीना क्षेत्रसमावानां भाव सरूप मुक्त मथ क्षेत्रा धिकारात् क्षेत्रविशेषवक्तव्यस्य विमानवाचरादिषो निरूपणाय सूत्रचतुष्टय माह ॥ तयोइत्यादि ॥ लोकेमि लोके समानि तुल्यानि योजनलक्षप्रमाणत्वात् लक्षप्रमाणत्वात् समत्व मपितु प्रोत्तराधर्म्यव्यवस्थिततया समयेत्योसयापोत्यतथाह ॥ सपक्खिमित्यादि ॥ पक्षाभ्यां दक्षिणवामादिपार्श्वानां सहयता

पुढवीएजहन्नेणणेरइयाण तिन्निसागरोवमाइ ठिई पन्नत्ता । पंचमाएणधूमप्पभाएपुढवीए तिन्निनिरया वाससयसहस्सा पन्नत्ता । तिसुण पुढवीसु णेरइयाण उसिणवेयणा पन्नत्ता तंजहा पढमाए दोच्चाए तच्चाए । तिसुणपुढवीसु णेरइया उसिण वेयण पच्चणुब्भवमाणा विहरंति त० पढमाए दोच्चाए तच्चाए। तओ लोगे समासपक्खिसपडिदिसि पन्नत्ता तंजहा अप्पइट्ठाणेणरए जंबूद्दीवेदीवे सव्वट्ठसिद्धेमहाविमाणे। तओ लोगेस

लाख नरकावासा नारकीना उपजवानाथानक कहिया ॥ पहली प्रथमनरकमा उष्णवेदनाकही। रत्नप्रभा शर्करप्रभा वालुप्रभा ॥ प्रथमनरकना नारकी उष्णवेदना भोगवता रहेछे । पहली बीजी त्रीजी । नरक क्षेत्रछे तेहथी क्षेत्राधिकार कहेछे ॥ प्रसिलोकमा समतुल्य लक्षयोजन प्रमाणथी सरिखा कहिया । अप्रतिष्ठान सातमी नरकमा नरकावासामां विचलो नरकावास । तथा जंबूद्वीपनामाद्वीप । सर्वार्थसिद्धि विमान पाचमु म

ममता मयवमित्यव्ययीभाव तेन समपावतवा समानोत्वयं एवारसु माकतलात् नमाय प्रतिदिशो विदिशो सहयसा सयतिदिक तेन समप्रतिदि
मयेत्यय पयतिष्ठान ममस्वा पशामा मरकावासानो मध्यम फाका मवूकोप सकसकोपमध्यम सर्वार्थसिद्धविमान पथामा मनुष्यराष्ट्री मध्यममि
ति भोमान्तव प्रथमपृथिव्यां प्रथमप्रस्तटे नरकेन्द्रक पञ्चचत्वारिंशयोजनलक्षाधि समय वाच तवत्तोपलक्षित येये समयक्षेत्रं मनुष्यलोकस्तत्वं
देप दृष्यो योजनाटवकादम्पपञ्चचत्वारिंशवयविष्कंभत्वात् मागमाद पुरुषनिषदो यथा सा ईषत्प्राग्भारा ऽष्टमपृथिवी मोपपृथिव्योहि रत्नप्रभाया
मद्यामागभारा पमोत्वात्रिंभवत्त्राधिकवोजनलक्षपपाद्म्यता नवादि पञ्चमासीरसयवा वत्तोसामइयोसवोसाय महारसयोलपहुय सवछयक्खोपरिक्ष
ष्मति ॥ १ ॥ विष्कम्भतु तामावृमेय एकाया समाता रयववति पयवे परमाम्सारा ममागवमतत्वाविति मयूखा स्वभावेनो एकरसेन युताशति
क्रमेण येते द्वितीयवतोयान्तिमा प्रथमद्वितीयान्तिमा समुद्रा मधुजलसवरा पम्मेखमवसपराशति तच्च अवयेउदमरसेद्वय मजोरसामच्छकम्प

मासपरिक्खेवपन्नत्ति पं० तं० सीमंतएणरए समयखेत्ते ईसिपब्भारापुढवी । तओ समुद्दा पगईए उदगरसे
णं पन्नत्ता तंजहा कालोदे पुक्खरोदे सयंभुरमणे । तओ समुद्दा बहुमच्छकच्छभाइन्ना पन्नत्ता तंजहा लवणे

नुसरविमान ॥ माकमां शवि मम तुल्य बरावरि कहिया । सीमातक पहली मरकनो पाथडामा नरकेंद्रक । समयक्षेत्र मनुष्यक्षेत्र । सिद्धिशिला
इषत्प्राग्भारा पैंतालीसमाल योजननो तेहथी सरिखा कहियाछै ॥ पष्योकायैग पाणीहोय तेमीसछैजे । त्रणसमुद्रनां स्वजातमीज पाणीनोरस
कहिया तकोये । कालोदपि समुद्र पुष्करोदपि समुद्र स्वयंभूरमण समुद्र एहतीसमुद्र एम तीमना खारापाणीकहा । अविसमुद्रमां पानामच्छ

हाभविया पप्पासेसेसुभवे भयतेनिम्मरखयाभविया ॥ १ ॥ पप्पय मुवचेकालसमुद्दे सयंभुरमणेयंसुतिमरच्छायो पयसेससमुद्देसु गहुतिमरच्छायमयरा वा ॥ २ ॥ मलितिपउरभार्य पहुपमउसम्ममरखपडिसेहो पप्पासेसेसुभवे भयतेमिम्मरखयाभविया इति ॥ १ ॥ येचाधिकारादेवा मतिष्ठाने नरकवेने य उपपद्यते तानाह ॥ तयोरत्यादि ॥ नि'गोला भिम्मतगुभसमाया दु'मीलादस्वय एतदेव मर्पचयते भिम्रता भविरता' माणातिपातादिभ्यो निगुणा उत्तरगुणाभावात् ॥ निम्मेरत्ति ॥ निम्मर्यादा' मतिपचापरिपालनादिना तथा मत्याख्यानंच नमस्कारसहितादि पौषध' पम्मदिन मष्टम्यादि तमो पवासा अभावकरणं मच तोनियतो येवांते नि'मत्याख्यानपोषधोपवासा' कालमासे मरणमासे कालं मरणमिति ॥ नेरइयत्तायत्ति ॥ पृथिव्यादिस्वप्य च्छेदार्थं तत्र प्रतेन्द्रियतया तद्ग्ये त्पुत्पद्यतइति तवराजान चक्रवर्तिवासुदेवा' माण्डलिका' शेषराजान' येषामो महारंभा' पचेंद्रियादिवधपरोपप

घालोदे सयम्भुरमणे। तठलोगे णिस्सीला णिव्वया णिग्गुणा णिम्मेरा णिपच्चक्खाणपोसहोयवासा कालमासे काल किच्चा अहे सत्तमाएपुढवीए अप्पइठाणेणरए णेरइयत्ताए उयवज्जति तजहा रायाणो मण्डलियाजेय

कच्छप कहिया योजामा योता मच्छवे ते कहवे । लवणसमुद्र । कालोदधिसमुद्र । स्वयम्भूरमणसमुद्र । अप्रतिष्ठान नरकावासामां जे उपजे ते तेकहेछे । ग्रखिलोकमेंविषे शीलरहित पूतरहित उत्तरगुण तथा क्षमादिगुण रहित मर्यादा विमयादिरहित नवकारसी प्रमुख पच्चखाणरहित पोष ध उपवासरहित एहया कालमास कालकरीने हेठें सातमी नरकपृथ्वीमा अप्रतिष्ठान नरकावासामां नारकीपणें उपजें ते कहेछे । राजा चक्रवर्ति वासुदेव । मण्डलीक बीजाराजा । वली मोटा आरम्भना करनार । कुटुंबी कुटुंबनाधणी ॥ अखि लोकमेंविषे शीलवत पूत पापमहापूत सहित

प्रमागममवारिय त्रुटविमहति येवं वाच्य पमतिष्ठामस्य स्थित्यादिभि समाने सर्वार्थेष उत्पद्यते तागाह ॥ तमोत्यादि सुगम केवलं रागान प्रतीता परिवक्तकामभोगा सर्वविरता एतयोत्तरपदयोरपि सम्बन्धनीयं सेनापतय सैन्यनायका प्रशस्तारो लेखाचार्योश्च धर्मशास्त्रपाठका इति क्वचित् भवा नक्तरोक्ससर्वार्थसिद्धविमानसाधर्म्यो द्विमानाकार निरूपणाय ॥ बंभेत्यादि ॥ दृश्च विषदागोलाशोद्वियति ॥ पुस्तकेषु वर्णविध्यं दृश्यते कालान्तरेण लोहितपीतशक्लेनेति यतश्च सौधर्मेषु पञ्चवर्णा एकगव्यूतोच्चासकचार दोदीसम्पातसा तेषपरपदरीवामोहति ॥ १ ॥ अनन्तरं विमाना मुक्तानि तानिष देवशरीराश्रयादति देवशरीरमान निरूपणायाह ॥ पाणयत्यादि ॥ अथ अन्यापि यावत्सार्थमेते भवमादिवगतिसम्बन्ध

महारंज्ञाकोऋवी । तहलोए ससीला सव्वया सगुणा सम्मेरा सपच्चक्खाणपोसहोववासा कालमासे कालं किच्चा सव्वठसिद्धे महाविमाणे देवत्ताए उववत्तारो भवति तंजहा रायाणोपरिचत्तकामभोगा । सेणावई पसत्थारो । वंभलोगलंतएसुणकप्पेसु विमाणा तिवन्ना पन्नत्ता तंजहा किण्हा नीला लोहिया । आणय पाणयारणच्चुएसु णकप्पेसु देवाण भवधारणिज्जसरीरगा उक्कोसेण तिन्निरयणीउ उड्ढउच्चत्तेण प० । तउ पन्न

पुण्यवंत मर्यादावंत पच्चखाण सहित पौषध उपवास सहित मरकावसरे कालकरी सर्वार्थसिद्ध विमानमां देवतापणे उपजे तेकहेछे । राजा चक्रवर्त्ति प्रमुख कामभोगना छांडनार । सेनापति सैन्यनायक । प्रशस्तार धर्मशास्त्रमां भणनार । ब्रह्मदेवलोक लांतक छठोदेवलोक तेहमां विमान त्रणि वर्णनाकह्या तेकहेछे । कालां नीलां रातां ॥ आनत प्राणत आरण अच्युत नवमा दशमां इग्यारमा बारहमां देवलोकमां देवतानुं भवधारणीय

धारयन्तोति धारयोयानि तानिच तानि शरीराणिचेति भवधारणीयशरीराणि उत्तरवैक्रियमवच्छेदार्थमेव तस्य तथमभावत्वात् । उक्कोसेणंति । जन्मैव मनुअपर्याप्तादिना अपर्याप्तेन तस्यो त्पत्तिसमये ह्यसंख्येयभागमात्रत्वादिति शेषमाख्या मिति प्रमन्तरदेवशरीरायवमध्यतो मा तत् प्रति यद्याय मायमयो पत्यादिति तत्स्वरूपाभिधानायाह । तमोरत्यादि । यासेन प्रथमपश्चिमपोरूषयोरूपचेन हेतुभूतेना धोयते व्याख्या प्रज्ञप्ति जम्बूद्वीप प्रज्ञप्ति म विवक्षिता विशेषणकानुरागादिति शेषं स्पष्टं । इति त्रिस्थानकस्य प्रथमउद्देशको विवरणत समाप्त ३ ॥ १ ॥ व्याख्यात प्रथमउद्देशक स्तदनन्तर द्वितीय धारभ्यते पत्त्यास्य मभिसम्बन्ध प्रथमोद्देशके जीवधर्मा माय उक्ता इहापि प्राय त एवेति इत्यं सम्बन्धस्या स्ये द मादिसूत्र । तिविहेत्यादि । पस्तयाम मभिसम्बंधो मनतरसूत्रेण चन्द्रप्रज्ञप्त्यादिस्वरूप मुक्त मिहतु चन्द्रादीना मेवाजीना माधारभूतस्य लोकस्य स्वरूप मभिधीयत इत्येवं सम्बन्धतो स्य सूत्रस्य व्याख्या लोक्यते ऽवलोक्यते जीवलावलोकनेनेति लोको नामस्थापनेन्द्रसूत्रवत् द्रव्यलोकोपि तथैव नवरं ज्ञ शरीरभव्यशरीरव्यतिरिक्तद्रव्यलोको धर्मास्तिकायादीनि जीवाजीवरूपाणि रूप्यरूपीणि सप्रदेशाप्रदेशानि द्रव्याण्येव द्रव्याणि च तानि लोकश्चेति वि

शीर्ष कालेण शहिज्जति चदपन्नत्ती सूरपन्नत्ती दीवसागरपन्नत्ती । तिठाणस्सपढमो उद्देसउ सम्मत्तो ॥

शरीर मूलवैक्रियशरीर उत्कृष्ट अविषयानु ऊचो ऊचपणे कह्यिो ॥ देवता शरीराश्रय पत्तव्यताकही हिव तत्प्रतिपक्ष प्रतिश्रावके तेकहैछे । श्रवि पन्नत्ती प्रथम पश्चिमपोरसी लगवे भणाविये तेकहैछे । चन्द्रपन्नत्ती चंद्रनुविचार सूर्यपन्नत्ती सूर्यनुविचार द्वीपसागर पन्नत्ती अढ़मा द्वीपसा गरनुं विचार ॥ एह त्रीजा ठाणानु पहिलो उदेसो पूरोथयो ३ ॥ १ ॥ हिवे बीजो कहैछे । पिछली चन्द्रपन्नत्ती सूत्रकह्यियो

गत उर्ध्व ओत्रमओपिरूमम रूपीसवपरसमप्पएसेय आयादिदव्वलोयं विवमविवमनंदमति ॥ १ ॥ भावलोयं निवाह ॥ तिविहेत्यादि ॥ भावलोको वि
विध भागमतो नोआगमतश्च तथा गमतो लोकपर्यालोचनोपयोग स्तदुपयोगानन्यत्वात् पुरुषोवा नोआगमतस्तु सूत्रोक्तो भावादि नोगम्दस्य मिश्र
वचनत्वात् इउंति यदं प्रसंग मिवरेतरसंयपेर्द नामसव बेवला नाम्नतामसप्रति तत्र प्रावं नामो लोकयेति भावलोक भावलोको। यावत् या
भिधायागममिश्रभावरूपत्वात् यात्विमादिभावानाम भावलोकत्वे नाभिहितत्वा सुताय चदईएउवसमिए खाएयखयोवसमिएय परिणामसंनिवाए
बमिश्रोभावलोकोऽभिधीयते ॥ १ ॥ एव धर्मगणादितलोकायपीति यथ क्षेत्रलोकं निवाह । तिविहेत्यादि । इह बहुसमभूमिभागे रत्नप्रभाभागे मेरुमध्ये इह
प्रदेशो रुचको भवति तस्मो परितनप्रतरस्योपरिता यवलोकमग्रवानि यावत ज्योतिश्चक्रमो परितश्च यावतिर्यग्लोक स्तत परतश्चोर्ध्वभागस्थितत्वा सूर्ध्व
भावो देयोननसमरज्जुप्रमाणो स्थलसा यस्तनप्रतरस्था यो नवयोजनमताभि यावत् ताव तिर्यग्लोक स्तत परतो योभागस्थितत्वा दधोलोक सातिरेक
सप्तरज्जुप्रमाणी स्योलोको रेलोकयो मध्ये भष्टादशयोजनप्रतप्रमाण स्थितमाग्रस्थितत्वा तिर्यग्लोकइति प्रकारान्तरेण चार्थं गाथाभि व्याख्यायते यथयथ

तिविहेलोगे पन्नत्ते तंजहा णामलोगे ठवणलोगे दव्वलोगे। तिविहेलोगे पन्नत्ते तंजहा णाणलोगे दंसण

इहां यद्यादिक लोकमांहे तेहयो लोकनो स्वरूपकहेले । भविलोक कहिया तेकहेले । नामलोक नींदे राजलोक । यावनालोक नींदेराजलोकनी
यापना । द्रव्यलोक त धर्मास्तिकायादि जीवाजीवरूप ॥ वली भविप्रकारेंलोक भावलोक कहियो । नाणलोक केवलनाणादि । दर्शनलोक स
म्यक्त्वादि । चारित्रलोक सामायिकादि पांचप्रकारें कहिया ॥ वली भविप्रकारें लोक उर्ध्वलोक तेदेवलोक सातराज प्रमाण । अधोलोक देशोन सा

दोवरियामो खेत्तप्रभावेनचेत्रपोक्षय प्रमुषोभयोभिमविधो दृश्यार्थतिषगोमोमो ॥ १ ॥ ऊर्ध्वउमरिजंठिय सुभखेत्तखेत्तपोयदव्वगुणा ॥ उप्पज्जंति मभावा तेभत्तपोग्गुलागात्ति ॥ २ ॥ मम्मणुभावंखेत्तं जंततिरियतिमयवपज्जवमो ममदतिरियविसालं मपोयततिरियलोगोत्ति ॥ ३ ॥ लोकस्वरूपनि रूपणानन्तर मदाधिपानां चमरादीनां ॥ चमरस्सेत्यादिना ॥ प्रभुयलोगपासायमित्येतदन्तेन ॥ पठेम पयंदो निरूपयति सुगमयाय ममरं ॥ मसुरिंद ग्गेसावी ॥ इन्द्र ईश्वययोगात् राजात् राजनादिति परियत् परिवार साच त्रिधा प्रत्यासत्तिभेदेन तत्र ये परिवारभूता देवा देव्यया ममतगौरव्यलात् मयाजने प्यामता एवा गच्छन्ति साम्यतरा परियत् देवा इता यनाहूताय पागच्छन्ति सामध्यमा देवमाइता मप्यागच्छन्ति सायाश्रेति तथा यथा सप्त मयाजन म्मर्यांगीचयति साय्या ययात् तदेव पयालोचितं सम्पयमति साहितोया सभ्यासु तमयचयति सात्येति भनन्तर स्मपदुपपमदेवा प्ररूपिता

लोगे चरित्तलोगे। तिविहेलोगे पन्नत्ते तंजहा उड्डलोगे अहोलोगे तिरियलोगे। चमरस्सणं असुरिंदस्स असुरकुमाररन्नो तओपरिसाओ पन्नत्ताओ तंजहा समिया चंडा जाया। अब्भितरिया समिया मज्झिमिया चंडा बाहिरयाजाया। चमरस्सणं असुरिंदस्स असुरकुमाररन्नो सामाणियाणं देवाणं तओ परिसाओ पन्नत्ताओ तं०

सराजप्रमाण । तिरछोलोक अठारेसेयोजन प्रमाण ॥ लोकने असुरादिकनों आधारवे तेकहेछे । चमरेंद्र असुरनोंईद्र असुरकुमारसुंराजा तेहनी त्रणि पषदाकही तेकहेछे । समिता चंडा जाया । अभ्यन्तरपर्षदा समिता अेकामें तेडावी आवे । मध्यम पषदा चंडा कार्यथी तेडायो आवे । बाहिरली जाया अणतेडीपणि आव ॥ चमरेंद्र असुरेंद्र असुरना राजानां सामानिक देवताने त्रणि पषदाकही तेकहेछे । समिता एम जिम असुर

समिया जहेयचमरस्स। एव तायत्तीसगाणविलोगपालाण तुया तुडिया पव्वा। एवग्गमहिसीणवि। यलस्स वि। एवंचेव जाव अग्गमहिसीण। धरणस्सय सामाणियतायत्तीसगाणच्च समिया चडा जाया। लोग पालाण अग्गमहिसीण ईसा तुडिया दढरहा। जहा धरणस्स तहा सेसाण भवणवासीण। कालस्सण पिसाइदस्स पिसायरन्नो तउ परिसाउ पन्नत्ताउ तजहा ईसा तुडिया दढरहा। एव सामाणिय अग्गमहि सीणवि। एयजाव गीयरइ गीयजसाण। चदस्सण जोइसिदस्स जोइसरन्नो तउ परिसाउ पन्नत्ताउ तजहा तुया तुडिया पव्वा। एव सामाणियअग्गमहिसीण। एवसूरस्सवि। सक्कस्सण देविंदस्स देवरन्नो तउ परि

[कु]मारनो राजाचमरेंद्रनेंकही तिम जाणवी। एम त्रायस्त्रिंश देवतानेंपणि त्रणिपर्षदा कहिवी॥ एम लोकपालनी अभ्यंतर पर्षदा तुंबा। मध्यम [ब्र]पत्रा तुडिमा। बाह्यपर्षदा परपा॥ एम अग्रमहिषीने त्रणिपर्षदा कहिवी॥ एम बलेंद्रनेंपणि त्रणिपर्षदा कहवो यावत् अगूमहिषी लगि॥ [ध]रणेंद्र तथा सामानिक त्रायस्त्रिंश देवतानें त्रणिपर्षदा अभ्यतर पर्षदा समिता मध्यमपर्षदा चडा बाह्यपर्षदा जाता॥ लोकपालने अगूमहिषी [इ]णोनें त्रणिपर्षदा अनुक्रमथी ईशा त्रुटिता दृढरथा जाणवी॥ जिम धरणेंद्रनें तिमज बीजा भवनपतीनें कहिवो॥ कालनामा पिशाचनोइंद्र [व्य]तर पिशाचना राजान त्रणि पर्षदाकही तेकहेछे। ईशा त्रुटिता दृढरथा अनुक्रमथी जाणवी॥ एमज एहना सामानिक अगूमहिषीनें एम याव [गी]तरती गीतजस व्यतरेंद्रलगे त्रणपर्षदा कहिवी॥ चद्रमा जोतिषीनो राजा जोतिषीना इंद्रनें त्रणपर्षदाकही ते कहेछे। तुंबा त्रुटिता पर्वा। एम एहना सामानिक अगूमहिषीनें पणि त्रणिपर्षदा कहियो॥ एम सूर्यनें पणि कहवो॥ शक्रदेवेंद्र देवताना राजा पहिला देवलोकना इंद्रनें

देवलंच कृतोपि धम्मा तत्प्रतिपत्तिय यास्वविशेषे भवतीति कालविशेषनिरूपणमूत्रतवेन धर्मविशेषाणां प्रतिपत्तीराह ॥ तमोजामेत्यादि ॥ स्पष्टं केवलं यामो रात्रे दिनस्य च चतुर्थभागो यद्यपि प्रसिद्ध स्तथापोह त्रिभागएव विवक्षित पूर्वरात्रमध्यरात्रापररात्रलक्षणो य माश्रित्य रात्रि स्त्रियामे त्युच्यते एवं दिनस्यापि अथवा चतुर्भागएवस' किंचित् चतुर्थो नविवक्षित स्त्रियामकानुरोधा द्दिवसमपि त्रयोयामा इत्यभिहित मेव यावत्करणा दिदं दृश्यं केवलं बोहिंबुज्झेज्जा मडेभवित्ता आगाराओ अणगारियं पव्वएज्जा केवल बंभचेरवास मावसेज्जा एवं संजमेणं संजमेज्जा संवरेणं संवरेज्जा आभिणि बोहियनाणं उप्पाडेज्जा इत्यादि यथाकालविशेषे धर्मप्रतिपत्ति रेवं वयोविशेषेपीति तन्निरूपणत्तमाह धर्मविशेषप्रतिपत्तीराह ॥ तमोवएत्यादि ॥ स्फुटं

साउ पन्नत्ताउ तजहा समिया चंडा जाया । जहा चमरस्स एव जाव अग्गमहिसीण । एवजाव अच्चुयस्स लोगपालाण । तउ जामा पन्नत्ता तजहा पढमेजामे मज्झिमेजामे पच्छिमेजामे । तिहिजामेहि आया के वलि पन्नत्त धम्म लभेज्ज सवणयाए तजहा पढमेजामे मज्झिमेजामे पच्छिमेजामे । एवजावकेवलनाण

त्रणि पर्षदाकही तेकहेछे । समिता चंडा जाया ॥ एम जिमचमरेंद्रनें तिम यावत् अग्रमहिषीलगि त्रणपर्षदा कहिवी ॥ एम यावत् अच्युतेंद्र बारमा देवलोकना इंद्रना लोकपाल लगि त्रणपर्षदा कहवी ॥ एह दयता कहिया तेधर्मथी पामछे तेधर्म कालविशेषमां होय तेमाटे कालविशेष कहेछे । त्रणियाम तेमहर कहिया तेकहेछे । पहिलो पहर । बीजो पहर मध्यम प्रहर । छेहलो प्रहर । इहां यद्यपि दिन तथा रात्रिना चोथाभागने यामकहेछे । तथापि इहा त्रणनीज विवक्षाछे ॥ त्रणपामथी आत्मा केवलिज्ञापितधर्म पामें सुणवाथी तेकहेछे । पहलयामें मध्यम

किन्तु प्राणिनां बाल्यकुमारतावस्थावय उच्यते तत् त्रिधा बालमध्यमवृद्धत्वभेदादिति यथोत्तरमं चेदं पायोऽप्याद्यवेलातो यावत्पौरायमसंक मध्यम ससति यावत् परतोऽवत्पश्चतदिति ॥ १ ॥ येव प्राप्यत् तत्रामेव धर्मविशेषां त्रिधा बोधिशब्दाभिधेयान् बोधिमतो २ बोधिविपक्षभूत मोहं ३ तद्वन्तय ४ सूत्रचतुष्टये नाह । तिविहेत्यादि । सुबोधं किन्तु बोधि सम्यग्बोध रूप चारित्रं बोधिफलत्वात् बोधि रुच्यते बोधोपयोगरूपत्वाद्वा बोधिविशिष्टा पुरुषा त्रिधा ज्ञान

उप्पाडेज्जा पढमेजामे मज्झिमेजामे पच्छिमेजामे । तउ वया पन्नत्ता तजहा पढमेवए मज्झिमेवए पच्छिमेवए । तिहिंवएहिं आया केवलि पन्नत्त धम्म लभेज्जासवणयाए तजहा पढमेवए मज्झिमेवए पच्छिमेवए एसोचेव गमो णेयव्वो । जायकेवलनाण । तिविहायोही पन्नत्ता । तजहा णाणबोही दसणबोही चरित्तबोही । तिविहा बुद्धा पन्नत्ता तजहा नाणबुद्धा दसणबुद्धा चरित्तबुद्धा । एवमोहेमूढा । तिविहापव्वज्जा प०

पामें छेहलेपामें ॥ एम बाय केवलनाण उपाडे पहलेपामें मध्यमपामें छेहलेयामें ॥ त्रणि अवस्थाकही तेकहेछे । प्रथमवय बाल्यावस्था । मध्यमवय यौवनावस्था । छेहलीवय वृद्धावस्था । एह त्रणवयनेंविषे आत्मा केवलिप्रज्ञापितधर्म पामें सांभलवापी तेकहेछे । पहली वयनेविषे मध्यमवय मांयिषें छेहली वयमेविषे ॥ एहज वयमां अहरनीपरें केवलनाण पणि उपजें ॥ त्रणि प्रकारे बोधि धर्मनी प्राप्तिकही तेकहेछे । नाणबोधी । दर्शन बोधी । चारित्र बोधी ॥ चारित्र पामिये । त्रण बुद्धपुरुष कहिया तेकहेछे । बोधिसहित पुरुष तेबुद्ध कहिए । नाणबुद्ध । दर्शनबुद्ध समकित बुद्ध । चारित्रबुद्ध । एम तीन बोधिमोहे मूढपुरुष कहिया । अज्ञानेंदें मध्युत्पादीया चारित्र पुरुष ॥ एह लोक प्रतिबद्ध तहरा रिद्धयादिक वांछै ।

मुत्तादयरति एवं । मोवे मूठति । योधिक दुवय मोक्षेमूढाय त्रिविधा वाच्या स्तयादि । तिविहेमोवेयवत्ते तजहा मायमोवेत्यादि तिविहामूठा पव तातजवानामूठेत्यादि । चारित्रयुक्ता प्रामभिविषा स्रोय प्रमज्याया सत्वा मतस्तां भेदतो निरूपयवाह । तिविहेत्यादि । सूत्रचतुष्टयं सुगमं केवलं प्रमस नं गमनं पापा परमपापारेभ्यिति प्रयस्या पतय परचयोर्मसनं मोपगमनमेव कारचे कार्योपचारात् तम्दुक्ता व्ययंति पजम्म इत्यादिवदिति उभय पमय गंपस्या पाशापामृत्वरचजागेमु इयमोर्क्सपरगमच कारचकओपचारामोति ॥ १ ॥ इह लोकप्रतिबद्धा ऐहलौकिकभोजनादिकार्यार्थिनां परलोक प्रतिबद्धा जन्मान्तरकामार्थिनां द्विधा प्रतिबद्धा इहलोकपरलोकप्रतिबद्धा साधो भयार्थिनामिति पुरतो ऽग्रतः प्रतिबद्धा प्रमज्यापर्यायभाविषु गि ष्यादि पार्यसमत प्रतिबद्धत्वात् मार्गतः पृष्टत स्वजनादिषु स्नेहाच्छेदात् ढतीया द्विधापीति । तुयावइत्तत्ति । तुदस्थवनेरितिवचनात् तोदयित्वा तो र्द कृत्वा यथा मुत्वाय या प्रमज्यारोपते मुनिचन्द्रपुत्रस्य सागरचन्द्रेणेव सा तदोच्यते । पुयावइत्तत्ति । मुश्शताविति वचनात् प्रावयित्वा स्थम

तजहा इहलोगपडिबद्धा परलोगपडिबद्धा दुहउपडिबद्धा। तिविहा पव्वज्जा पण्णत्ता तजहा पुरउपडिबद्धा मग्गउपडिबद्धा दुहउपडिबद्धा। तिविहापव्वज्जा पण्णत्ता तजहा तुयावइत्ता पुयावइत्ता बुयावइत्ता। तिवि

परलोक प्रतिबद्ध ते देवजोगादि वांछिये दीक्षापाले । इहलोक परलोक प्रतिबद्ध ते ये वांछे ॥ वली त्रवि प्रव्रज्याकही तेकहेछे । आगलि प्रतिबद्ध ते शायचारित्रियो दीक्षाले । मागथी प्रतिबद्ध ते पाछलि स्वजनेविषे स्नेह छेदकरवो । ये प्रकारें ते उजय प्रतिबद्ध ॥ वली त्रय प्रकारें प्रव्रज्या कही तेकहेछे ॥ पीडा उपजावीने दीक्षावीजे जिम मेतार्यने देवताये पीडा उपजावी दीक्षा लेरावी ॥ पूजा महत्व दराविने ॥ धमकावी धमसमकावी

मीला संरचितवत् या दीयते सावचेति । दुयावत्ता । संमाप्य मौतमेन कर्पंकपदिति ममपात सेवा सद्गुरूभांतती या सा ममपातप्रमज्या तथा पासातममा प्रमज्ये क्षमिक्षितस्य गुरुभि र्यो सा ज्ञातप्रमज्या परगुरचितस्य वेति । संमारत्ति । सकेव स्पथा या सा सगारप्रमज्या मेतार्यादीना मिपेति ययमा यदि सं प्रमक्षि तदा मया प्रव्रजितव्य मित्येवं या सा तथा उक्तं प्रमण्यापंतो निर्यंवा मवन्तीति निपंमसरूपं सूचयमेमाह । तयो इ स्वादि । नियता पमात् सधाप्राम्यतरादिवितिमिर्ग्रैया संयता मोनैव संज्ञाया माया रायभिक्षावरूपायां मूर्लोंक्षमूतसरथानागतचिंताबारेयो पयु मा ये ते मोसंप्रोपयुता स्वभ पुलाकोसव्युपजीवमादिना संयमासारताकारको पत्रमाचवचपनिर्भव्य उपयाम्यमोह मीवमोयोषेति मातको मा तिसर्मेमवचावनामासमवस्यागमसरूप स्वया ययाए संमोपयुता मोसमोपयुताचेति संमोर्पसरूपा स्वभावसरूपता पमापाह । सवनोसमोवउत्ति ।

हापव्वज्जा पव्वत्ता तंजहा उयायपव्वज्जा ब्बुस्कायपव्वज्जा सगारपव्वज्जा । तओणियठा णोसच्चोवउत्ता प० तंजहा पुलाए णियठे सिणाए । तओणियठा सच्चोसच्चोवउत्ता पण्णत्ता तंजहा यउसे पडिसेवणाकुसीले क

विमगौतमैं हासीर्में धर्मसममावी दीक्षासेरावी ॥ वसी मवमपूज्याकरी तेकहेवे । गुरुमीसेवा मवूण्या । धर्मदेशनावेई दीक्षादेवी परगुरविते विमपुत्रवर्मे धर्मदेशनाकरी दीक्षादीधी । संकेतमवृण्या विवारें सूर्यीक्षासेइस तिवार हूंपनि दीक्षासेइस । दीक्षापी निग्रंयथाय तेकहेवे । वलि निग्रंथ मोसव्यावहित करिया तेकहेवे । पुलाक खेतवि मपीरवे । पुलाक ते पुलाकतलविचवत । नियम वेवें मोहसमान्मोयोय । नमयो वय वीयोहोय । स्नातक वेपातिकर्मेंमा मयपी कर्मेंमल बोवायी शुद्धनाकपाम्यो ॥ वलिनिगून्य सन्नावहित सन्नारहित वेरीतनाहोय तेकहेवे ।

संभाषा शारादिविषया मोसंग्राव तस्माग्रमथवा संभागोसम्रे तयो रूपयुवा इतिविषय पूर्वक्रमता प्राजवत्सादिति तत्र यकुम यरीरोपकरव विभूषादिना मवशवारित्रपट मतिषेवषया मूलगुणादिविषयया कुत्सितं गोलं यस्य सतथा एवं कषायकुमोलदति नियंथा यारोपितव्रता केपि वक्तव्यी ति व्रतारोपणे वालविशेषा नाह । तघोसेहेत्यादि । सुगमं किन्तु । सेहत्ति । पिधुसराजार्विविवधमात सेध्यते निष्पाद्यते य ससेध शिखांचा धीत इति शेष तस्य भूमवो महाव्रतारोपणकालमथवा भवस्था पदस्य इति सेधभूमय शेषमूमबोवेति पयमभिप्राय उत्कर्षेत पडिर्मासे वरघाप्यते न ता गतिक्रम्यते मध्यमतव चतभिर्मासैं वरघाप्यते जघन्यत सप्तभिरेवरात्रिंदिवे यंवोतथिवत्सादिति उत्कष सेहप्रतिविभूमी अवयतश्मज्झिमायत यामा राइंदिसत्तवउमा सगायसन्यासिवाचेवत्ति । १ । पासुपायं मववारो सो विभाम पुण्णोवइपुराणे करणंचयडाणविसामूमी तवोसाउपेवं पवुम पक्षइवार्येव । १ । एमेवयमज्झिममा पववाइवंतेपसहइतेय भाविषमेवाविसवि करणजयडाइमज्झिमगत्ति । २ । मेधया य विपर्यस्त स्थविरो भ वतीति तद्भूमिनिरूपणावाह । तघोवेरेत्यादि । वस्था गवर्रं स्थविरो इव तस्य भूमय पदस्य स्थविरभूमय इति जाति वंश श्रुत मागम पर्या

सायकुसीले। तउसेहभूमीउ पण्णत्ताउ तजहा उक्कोसा मज्झिमा जहण्णा। उक्कोसाछम्मासा मज्झिमाचउमासा

यकुश तेशरीर उपकरणनी शोभाकरवाथी चारित्रने मेलोकरे मूलगुणमा दोषलगाडे कुत्सितशील कषायेंकरी कुत्सितशील आचार एह ग्रोतो कषा यकुशील ॥ निग्रंथ व्रतसहितवोय तेहमी व्रतआपवानोंकाल कहेछे । त्रणि सेहभूमिकही तेकहेछे । उत्कृष्टा मध्यमा जघन्या । वडी दीक्षादी धां पछी समहीने थोठामणकरवी । मध्यम चारमहीने थोठामण करवी पंचमहाव्रत आरोपवा ॥ जघन्य सातरात्रीयें ॥ व्रतलीधापछी स्थवि

प० प्रव्रज्या ते स्थविरा इहा येते सयाला इति इत्य भूमिकाभूमिकावतोरभेदा ऐव मुपन्यास अन्यथा भूमिका यहिन्टाइति ता एव वाच्या ध्रुरिति एतेषां यथार्थ क्रमेणा गवम्यापूजावस्त्रानि त्रिषेयानि यतउक्त व्यवहारे भावारेउवबोसिव्या संधारेसेत्तसंयमे किरर्च्छंदाणुवत्तीयं अणुकंपरवेरग ११ महा गामणरायाई ओगाइरणममथा मीयवेस्याइभिरेम वतिएपूयएसुयं १२ ॥ एउायंवहवपेव गरवर्ड्डगणय अगुरूवोविवनिवेसे ताइयाएप वत्तयाति १२ ॥ स्थविराइति पुरुषप्रकारा उक्ता मादृधिकारात् पुरुषप्रकारानेवाह ॥ तओपुरिसेइत्यादि ॥ पुरुषजातानि पुरुषप्रकारा सुदु मनो

जहन्नासत्तराइदिया । तउथेरन्नूमीउ पणत्ताउ तजहा जाइथेरे सुयथेरे परियायथेरे । सट्ठिवासजाएसमणे निग्गथे जाइथेरे ठाणसमवायधरेण निग्गथेसुयथेरे वीसयासपरियाएण समणेनिग्गथे परियायथेरे । तउ पुरिसजाया पणत्ता तजहा सुमणे दुम्मणे णोसुमणेनोदुम्मणे । तउ पुरिसजाया प० तजहा गताणामेगेसु

रफइयाने त्रणस्थविर भूमिकहेछे भूमि तेअवस्था । जातिस्थविर । श्रुतस्थविर । पर्यायस्थविर । साठिवरसनो जनमथ साधुथयो तेजातिस्थविर ठाणाग समवायांग सिद्धांतनो धरनार तेश्रुतस्थविर । वीसवरस दीक्षादीधापाय तेश्रमण पर्यायस्थविर । जातिस्थविरने उपधि शय्या संथारो पडानुवृत्ति प्रमुखें प्रतिकरयो । श्रुतस्थविरने उठवुं आसनदेवुं आहारदेवुं मर्यामामसुखें पूजवु । पर्यायस्थविरने उठवु वांदेघालवुं । दाओलेवु वंदणाकरयो ॥ स्थविर तेपुरुष तेहथी पुरुषनो अधिकार कहेछ । अमयथयो पुरुष अनेक प्रकारनांछे । एकसुमन जसुखे मनजेहनु । एक दुमन माठोछे मनजेहनुं । एक सुमनपक्षिमयी दुमनपक्षिमयी मध्यस्थपणायें समपरिणामीछे । वली अवप्रकारें पुरुषकहिया कोईकपुरुष कोइकयामके ज

यथासौ सुमना भवन् एतावता एवं दुर्मना देयादिमान् विहरत्येव नोसुमना नोदुर्मना मध्यस्थ सामाविकशान्तित्वेन सामान्यत पुरुषप्रकारा उक्ता एतानेव विशेषतो गत्यादिक्रियापेक्षया । तओइत्यादिभि । सूत्रे राह तत्र गत्वा कचित् विहारक्षेत्रादौ गामेति सम्भावनाया मेव क्वचित् सुमना भवति प्रभवति तवेशा ग्यो दुर्मना मोषति मध्य सामायिकवान् भवत्यतीतकालसूत्रमिव वर्तमानभविष्यत्कालसूत्रे भवर । जामीएगेइत्यादिषु । इति

मणेज्जयइ गताणामेगेदुम्मणेज्जवइ गताणामेगे णोसुमणे णोदुम्मणे जयइ । तओपुरिसजाया पन्नत्ता तंजहा जामीएगे सुमणेज्जयइ जामीएगे दुम्मणेज्जयइ जामीएगे णोसुमणे णोदुम्मणेज्जवइ । एवजाइस्सामीएगेसुम णेज्जयइ ॥ ३ ॥ तओपुरिसजाया पण्णत्ता तंजहा अणागताणा मेगे सुमणेज्जयइ ॥ ३ ॥ तओपुरिसजाया पण्णत्ता तंजहा णजामि एगेसुमणेज्जयइ ३। तओपुरिसजाया पण्णत्ता तंजहा णजाइस्सामि एगेसुमणेज्जयइ ३।

इने इपवतपाय जेजसुंमयो दुंदशामाव्यो । कोईकपुरुष कोइयानके अईने दुर्मनपाय दुरुपामें । कोईकपुरुष अहमे दुर्मनपणि मयाय सुमनपणि न थाय ॥ यसी ग्रण प्रकारें पुरुष कोई मानके जाता सुमन होय । तथा जाता दुर्मन थाय । तथा जाता सुमन पणि नथी दुमम पणि नथी थाय ॥ मम पानके जुंआइस ममवितयतो सुमन थाय । एम पविष्योस जाणिवा ॥ यसी ग्रहपुरुष कहिया तेकहेछे । एह यानके नथीजावुं एम विचारी सुमनहोय । एम ग्रवयोस जाणिया । यसी ग्रणप्रकारें पुरुष तेकहेछे । एह पानकें नथीजातो एमचितवतो सुमनथाय । एम ग्रवि योस जाणिया । यसो ग्रणपुरुष तेकहेछे । एह पानके नहीजावं एम एकपुरुष सुमनहोय एम ग्रवयोस कहिवा । एम एहयानके माव्यापी

गम्हो वेलव एवममत्वेत्यादि प्रतिपेधसूत्राणि प्रागमनसूत्राणिव सुगमानि एव मनेगा मगतरोत्तेना भिणापेण ग्रेपसूत्राण्यपि गतव्यानि मयो लाम्य सुता जिव सूत्राणि सङ्गृहम् गाथायवक्तमाह । गंतारत्यादि । गंता अमता भागतिव्वुवं । मचागंतत्ति । मचागंताणा मेगे सुमणे भवइ मचागतागामेगेदुम्म णे भवई मचामतागा मेगे गोसुमणे गोदुम्मणे भवइ एवं गामच्छामीति १ एवं गभामगमिच्छामीति । विहितत्ति । त्रिस्थाकस्थानेनसुमनादुर्मनाअनुभयाय भवति । एवंचिह्नामीति । विट्ठिस्सामीति । अचिट्ठित्ता । इत्यादि आवत सूत्रसमेवं सर्वत्र भवरं णिसय उपविश्य । गोचेवत्ति । चनिषधानुमयिम इत्या विमाय विवित् १ भवत्या परिमाय त्रिला विधाकला भचित्याभतीते १ । दुहत्ति । हत्या भविता पढ्याभ्यादिय । भमुइत्ति । भगुत्वा भगुभाव्या दिवं । माभितत्ति । भाविता सभाव संयम सभायचोर्त १ । गोचेवत्ति । अभासित्ता अत्याय संयन १ । इत्ति । हत्या भहत्या मुक्त्वा अमुक्त्वा १

एवचागताणामेगे सुमणेजयई ३ । एमीएगे सुमणेजवइ । एस्सामी एगे सुमणेजयइ ॥ ३ ॥ एवएएण छन्नि लावेण गतायश्चगताय ऋागताखलुतहाश्चणागता । चिठित्तमचिठित्ता णिसिद्दसाधेवनोचेव ॥ १ ॥ ह तायश्चहताय छिदित्ताखलुतहाच्छिदित्ता । बुत्तिताश्चबुत्तिषा जासित्ताचेयणोचेय ॥ २ ॥ दच्चायश्चद

चकसुमनहोय । इहां पवि ग्रथयोस कहिवा । भावुडु एम एकसुमन होय एम ग्रथ बोलकहिवा । भागस्युं एम सुमनथाय एम भवबोल कहि वा । एम इत्यनुक्रमें एहरीतें पांचगाथामो अविलाप आवको । एह पांचवुं एकभर्यदे । गंता आवु भगता गआवनु आगता आवनुं तिसज भचागंता भवआवनु उजोरहिवो उजोभरहिवु । एम प्रककालना सूत्रपले कहिवा वेगनु गवेवनु ॥ इतीमे भवहवीने वोदीने भवबेवीने गवीने पढमनमादि

नभा १ चमनभा २ पोशा १ ॥ मोचेंशति ॥ चपोखा १ मुप्ता चमुप्या १ पुच्चा १ चमुच्या ॥ जयित्तत्ति ॥ जिला पर १ चजिला परमेव १ ॥ पराजिणि
त्ता भगजिला १ परिभंगवा माप्य सुमना भवति वचनकमाजिमशनितम्यपविनिमुक्तला स्पराजिताम् प्रतिपादिन' सभाविता नयविमसुक्लाचा ॥ मो
चेशति ॥ चपराजिस्य १ ॥ सदेत्यादि ॥ गाथा सूत्रतएव बोध्या प्रपंचितत्वा त्तचेशाखा इति ॥ एवमेवेत्यादि ॥ एवमिति यसादिसूत्रोक्तमेव एवेक
गिन् गम्पारो विपये विधिप्रतिषेधाभ्यां प्रत्येक चय चय भालापका सूत्राणि कालत्रियेपाश्रया' सुमना दुमना' भोसुमनागोदुर्मना इत्येतत् पद

ग्राय जुजिझास्खलुतहाच्चजुजिझा । ठजिझायच्चठजिझा पियइत्ताचेयनोचेय ॥ ३ ॥ जुइत्ताच्चजुइत्ता जु
ज्झित्तास्खलुतहाच्चजुज्झिझा जयित्ताच्चजयित्ता पराजिणिझाचेयनोचेय ॥ ४ ॥ सद्दारूयागंधा रसायफासा
तहेयठाणाय । निस्सीलस्सगरहिया पसत्थापुणसीलवतस्स ॥ ५ ॥ एवमेक्केक्के तिन्निन्नि आलावगा
भाणियद्वा । सद्दसुणेत्ताणामेगेसुमणेभवइ ३ । एयसुणेमीति ३ । सुणेस्सामीति ३ । एवअसुणेत्ताणामेगेसु

अयजमीनें कोइने चोलायीमें अणचोलायीनें देइनें अणदेइमें भोगवीमें तिमज अणभोगवीमे कांइकवस्तु पामीनें अणपामीमें रसादि पीइने अणपी
इन सुइमे अणसुइमे मूंमीने संग्रामक्लेश करीने अणजूंमीमें जीतीने अणजीतीमें पराजय करीने अणपराजयकरी शब्द रूप रस गंध स्पर्श तिमज
गइ मानक शील आचारवंतमे प्रशस्त भलायाय । एवंप्रकारें एकके योसें । पवि चालावा कालथी अतीत अनागत वर्त्तमान भेदें । सुमना दु
मना एयणि पदसहित आलावा तेज दिखाडेछे ॥ शब्द सांभलीने एकसुमन थाय हरपवंत थाय अथ बोलसेया । हमसांभलसुं तेसुमनथाय अथ योस

भवता भवितव्या एतदेव दर्शयन्नाह । सद्देस्त्यादि । भावितात्मा एवं । रूपाण्गंधादित्यादि । यथाशब्दे विधिनिषेधाभ्यां राग द्वेष भासावका भ
वितव्यं एवं रूपाण्यासित्येत्यादय राग द्वेषयव दर्शनीया एवच यत्रयति तदाह । एकैकेत्यादि । एकैकस्मिन् विषये पञ्चालापका भवितव्या
भवति तत्र शब्दे दर्शिता एवं रूपादिषु पुनरेव रूपाणि दृष्ट्वा सुमना दुर्मना अशुभर्व पश्यामीति १ एव द्रक्ष्यामीति १ एवमदृष्ट्वा नपश्यामीति
नद्रक्ष्यामीति १ पट एवं गंधान् घ्रात्वा १ रसा नास्वाद्य १ स्पर्शान् स्पृष्टेति १ । तदेवंठाणावत्ति । यत्संग्रहगाथाया सुगम तद्भावयन्नाह । तथो
ठाणादित्यादि । योविस्थानानि भिन्नोसत्र सामान्येन प्रभक्तभावपर्जितस्य विधियत पुनर्निमतस्य प्राणातिपाताद्यनिवृत्तस्या निमुक्तो तरगुणापेक्षया
निमयादस्य प्रावक्रमाद्यपेक्षया निष्प्रत्याख्यानपोषधोपवासस्य गर्हितानि जुगुप्सितानि भवति तथथा । भक्तिति । विभक्तिपरिणामा दृयलोक

मणेत्तवइ ३ । नसुणेमीएगे । नसुणेस्सामीति ३ । एयरूयाइ गधाइ रसाइ फासाइ एक्केक्के छछआलावगा
भाणियव्वा । तओठाणाणिस्सीलस्स णिव्वयस्स णिग्गुणस्स णिम्मेरस्स णिप्पच्चक्खाणपोसहोववासस्स गरहि
यात्तवति तजहा अस्सिलोगे गरहिएत्तयइ उववाएगरहिएत्तवइ आयाइगरहियात्तवइ। तओठाणा ससील

स्य गर्हितोस दृश्यज्ञो सुमनयाय । स्य प्रवाजनो सुमनयाय लेतसोप्यु स्यजाजत्सु स्यमुमनयाय एवं तीन योस । मयीसांजलतो स्यनत्रवो
स । मपोसांजतु स्यमत्रवोस । स्यदशोमे गपसेर्दनें स्यस्पशोमे परस परसीने एकैकेयोसे अव्यासावाचकिवा । एवमां श्रीजेयोसे व्यविकासवा
सै भेसमैतावें तनायो । तेनाववारिवापेवे । शिलिपानक्षे नि शीलतेशुजनावरहित प्राणातिपातादिरहित । मूलवत्तरगुणरहित । कुलादिकमी म

एवं च मर्हितोभवति पापप्रभया मिच्छगजुगुप्सितत्वात् तथा उपपातो ऽकामनिर्जरादिजनित किल्बिषादिदेवभवो नारकभवोवा उपपातो वे यनारकाणामितिवचनात् समर्हितो भवति किल्बिषाभियोग्यादिरूपतयेति भावाति स्वभात् सुवस्थोऽवस्थ वा कुमानुपत्वतिर्यक्त्वरूपागर्हितंवा कुमानुषादिस्वारेवेति वचनविपर्ययमाह । तथोऽत्वारि । मिगदसिद्धं एतानिच मर्हितप्रशस्तानामि ससारिणामेव भवन्तोति संसारिजीवनिरूपणाया

स्स सव्वयस्स सगुणस्स समेरस्स सपच्चक्खाणपोसहोववासस्स पसत्था जवति तजहा ऽसिंसलोगेपसत्थे जयइ उववाएपसत्थेजवइ आयाएपसत्थेजवई । तिविहा ससारसमावन्नगा जीवा पन्नत्ता तजहा इत्थी पुरिसा णपुसगा । तिविहा सव्वजीवा पन्नत्ता तजहा सम्मदिठी मिच्छदिठी सम्मामिच्छदिठी । अहवा

पोसहोपवासरहित । पोरसीप्रमुख तथा पर्वदिवसे उपवासादिरहित । एहवामनुष्यने गर्हितजुगुप्सित होय तेकहेछे । इहलोकें आजन्मनिंदनीक होय पापआचारणी । पछित मांठोकर्ई उपजवु तेमांठेठामेहोय । नारकीपाय देवतापाय तीकिल्बिषीयाय । अकामनिर्जराथी देवतायाय तो तिहाथी नीसरी चवी अल्पायु तीर्यंच काम मनुष्यपाय एह त्रण जय मांठा । श्रावकनेपणे शील सहित गुणसहित उत्तरगुण पचखाणसहितनें पोप धोपवाससहित मनुष्यने प्रशस्त वखाणवायोग्यहोय तेकहेछे । आजन्मप्रशस्तहोय पापना अणकरणथी । मरित तेहनेवखाणें । परभवे देवता मो टोरिद्धिशुभवोपाय । तिहाथी चवी मनुष्यमोटीरिद्धिनोधणीपाय । एतला संसारीजीवने पाय तमाटे ससारी जीवनो निरूपणाकरेछे । त्रण प्रकारे संसारी जीवकहिया तेकहेछे । स्त्री पुरुष नपुंसक । त्रणप्रकारें सर्वजीव कहिया तेकहेछे । समकितदृष्टी । मिथ्यादृष्टी सम्यग्मिथ्यादृष्टी ।

व । तिविहेत्यादि । सूत्रसिद्धं जीवाधिकारात् सर्वजीवान् त्रिस्थानकावतारेण षड्भिः सूत्रैराह । तिविहेत्यादि । सुगम नवरं । नोपज्जत्तगत्ति । नोपर्याप्तका नोअपर्याप्तकाः सिद्धाः एवमिति । पूर्ववदेव । सम्मदिट्ठीत्यादि । भावार्थ सुज्ञानश्च सूत्रसम्बन्धश्च मिति । तिविहासव्वजीवा पन्नत्ता तंजहा परित्ता अपरित्ता नोपरित्तानोअपरित्ता तत्र परीत्ताः प्रत्येकशरीरा अपरीत्ताः साधारणशरीराः परीत्तापरीत्तनिषेधे सिद्धा इति । सुहु मति । तिविहासव्वजीवा प त सुहुमा बायरा नोसुहुमानोबायरा एवं सन्निनो भव्याश्च भावनीयाः सर्वत्र तृतीयपदे सिद्धावाच्या इति सर्वएव चैते लोके व्यवस्थिता इति लोकस्थितिनिरूपणायाह । तिविहेत्यादि । अस्य किन्तु लोकस्थिति र्लोकव्यवस्था आकाश व्योम तत्प्रतिष्ठितो व्यव स्थित आकाशप्रतिष्ठितो वातो घनवाततनुवातलक्षणः सर्वद्रव्याणा माकाशप्रतिष्ठितत्वात् उदधि र्घनोदधिः पृथिवी तमस्तमप्रभादिकेति तत्रस्थि

तियिहा सव्वजीवा प० तं० पज्जत्तगा अपज्जत्तगा नोपज्जत्तगानोअपज्जत्तगा । एव सम्मद्दिट्ठिपरित्ता पज्जत्तगसुहुमसन्निभवियकाय । तिविहा लोगठिई प० तजहा आगासपइट्ठिए वाए वायपयट्ठिया उदही

अथवा एण प्रकारें सर्वजीवकहिया तेकहेछे । पर्याप्ता अपर्याप्ता नोपर्याप्ता नोअपर्याप्ता तेसिद्ध । एमसमकितदृष्टीनीपरें परित प्रत्येक अपरित तमाधारण नोपरितनोअपरित तेसिद्ध सूक्ष्म बादर । नोसूक्ष्मबादर । एमसन्नी । असन्नी नोसन्नीनोअसन्नी भव्य अभव्य नोभव्यनोअभव्य सघलें त्रीजे पदे सिद्धजाणिवा । एसर्वलोकमांहे तेमाटे लोकस्थितिकहेछे । त्रणप्रकारें लोकस्थितिकहीतेकहेछे । आकाशप्रतिष्ठितवात आकाशें वायुरह्येछे । वा युन आधारें समुद्रछे घनोदधि तनोदधि । समुद्रने आधारें पृथ्वीछे । सातें तमतमादि । त्रसादिपिकनी जीवने जीवभावस्थानी कर्तुं अपी तिष्यम् । अकदि

तिविध जोवे जीवानां दियोधिकस्य गत्यादिभवतोति दिक्निरूपणपूर्वकं तासु गत्यादिनिरूपयन् । तमोदिसेत्यादि । सूत्राभिषतदंग्राव सुगमानिच नवर दिग्यते व्यपदिश्यते पूर्वादितया वस्तुनयेति दिक सा च नामादिभेदेन सप्तधा यात्र्य नामं १ ठवणा २ दविए ३ खेत्तदिसा ४ तावखेत्त ५ पन्नवए ६ सत्तमियाभावदिसा साबाद्धारसविहाओ । १ । तत्र दृष्यस्य पुद्गलस्कन्धारे दिग् द्रव्यदिक । १ । येनसाकाशस्य दिक् चैवदिक सापेव अहपएसाइयगो तिरियंलोगस्समज्झयारमि एसपभवोदिसाणं एसेवभवेपवहदिसाण । २ । तत्र पूर्वाद्या महादिग यतस्तोपि विमसेणादिका पुनरन्य मनुदिग्रस्तु एकप्रदेशा प्रमुसरा जाताद्दिभोनु चतुरादोमुत्तरे यतोवापि । दुपएसादिदुत्तरा ४ एगपएसाअणुत्तराचेव चउरोचउरोयदिसा चउ रादमणुत्तरासोवि । १ । सगडुद्धिसंठियाओ महादिसाओहवंतिचत्तारि मुत्तावलोवचउरो दोचेवयहोंतिरुयगनिभा । २ । नामानिचासां इंद १ अ ग्गे २ जम्मा य ३ नेरई ४ वारुणी ५ वायव्वा ६ सोमा ७ ईसाणाविय ८ विमलाय ९ तमाय १० बोधव्वा । १ । ताप सविता तदुपलक्षिता येव दिक् तापचेत्रदिक साचानियता यतउक्तं जेसिंजत्तोसूरो उदेइतेसिंतईहवइपुव्वा तावक्खेत्तदिसाओ पयाहिणंसेसयाओसेत्ति । १ । तथा प्रज्ञापकस्य या पार्श्वादि दिक प्रज्ञापकदिक साचैव पयत्रपोप्रोपभिमुहो साप्रुव्वासेसियापयाहिणओ तस्सेवसरगंतव्वा अन्नेयाईदिसानियमा । १ । भावदिग् चाष्टादशवि धा पुढवि १ जल २ जलण ३ वाया ४ मूलो ५ खंध ६ ग्ग ७ पोरबीयाय ८ । वि ८ ति १ चउ ११ पंचिंदियतिरि । १२ यनारया १३ देवसंघाया १४

उद्दाहिपट्ठठिया पुढवी । तत्र दिसाद प० त० उड्ढा ग्रहो तिरिया । तिहिंदिसाहिं जीवाण गई पवत्तइ त

त्रिभीयने गतिप्रवर्त्तवे उर्ध्वदिशि अधोदिशि तिरश्चीदिशि ॥ एवमागई उपज्जइ । आहारलेई । वुड्ढी सरीरत्तुंवडुई । शरीरत्तुं चवत्तुं । गतिपर्याय सेषा

२ । संमुच्छिम ११ कया १६ व अभूमगनरा १७ तदंतरदोवा १८ । भावदिसाविवक्खए ससारोनियधमेसोवि ति । २ । इहच चेवतापक्षापक्षादिभि रेवाभिधार कथच तियभूतयेन भूशया यतस्तएव द्विर्गो यद्यन्ते विदिस् जोवामा मनुष्येषिगामितया चलमागत्वा मतिष्मुत्मात्मीमा मनुष्यमानसा स्वेपपरेषुच विद्विया मविवचितत्वा यतोपेत वक्ष्ति । तिविहदिसाहिंजीवाचमईपवत्तईत्यादि । तथा गृन्थान्तरेप्याहारमाश्रित्योक्त मिव्याघाएणनियमा छद्दिमिति तत्र तिविहदिमाहिति समम्तो वतीया पंचमी वा मवासोमं व्याख्येयेतिगति' मज्ञापकस्थानापेक्षया घल्व्य उन्मप्रमसमेव मिति पूर्वोक्ताभिधाय मूलनाथः यागति' प्रज्ञापकसथानमसाने पागमनमिति व्युत्क्रान्ति उत्पत्ति राहार' प्रतोत' वृद्धि' शरीरस्यवर्द्धन हानि' शरीरस्यैवहानि" मतिपर्याय य मर्न जीवतएव मसुदघातो वेदनादिजमच' कालसंयोगो वर्त्तनादिकालसमयानुभूति मरणयोगोवा दर्शनेनावधादिना प्रत्यचममाणभूतेना भिगमो बोधो दर्शनाभिगम एवमानाभिगम' जीवानोबेयानां मवध्यादिभेवा भिगमो जीवाभिगम इति तिविहदिसाहिजीवाणंपञ्जोवाभिगमेपवत्ते तं जहा २ एवंसर्व याभिलापनोय मितिदृयमार्थं परिपूर्णांसूत्राभिधान मिति एतान्यजीवाभिगमान्तानिसामान्यजीवसूत्राणि पहवियंति इस्त्रवविस्तायान्तु नारकादिषु

जहा उड्ढाए अहोए तिरियाए । एवं आगई वक्कंती आहारे वुड्ढी णियुड्ढी गइपरियाए समुग्घाए कालसं जोगे दंसणाभिगमे णाणाभिगमे जीवाभिगमे । तिहिं ठाणेहिं जीयाणं अजीवाभिगमे प० तं० उड्ढाए अ

सर्तु । समुद्घात वेदनामयण । मरणकालयोग । दर्शन अवधिदर्शनादिकमुपाभिषु । नाणसु मतिमस आवधारूप । जीवसु आवसु । एएसबदिसिमियेहोय । मथदिगिपे जीवने पजीवसु आणपुशेय । तेआईवे । ऊर्ध्वदिशि अधोदिशि तिरश्चीदिशि । एव प्रकारे पर्वेन्द्रीतियेचने एवबोल आवमा जीवविचारखी

येषु दिकत्रये गत्यादीनामप्योरमानामपि पदानां सामस्त्येनासम्भवात् पंचेन्द्रियतिर्यक् मनुष्येषु च तत्सम्भवा तदतिदेशमाह । एवमित्यादि । यथा सामान्य सूत्रेषु गत्यादीनि चयोदशपदानि दिकत्रये चभिहिता न्येवं पंचेन्द्रियतिर्यग्मनुष्येषु इतिभाव एवमेतानि पर्यंगतिसूत्राणि भवन्तीति चयेषा नारकादि षु च च ममभव इत्यते नारकादीनां नाविंमते जीवविमेषाणा नारकदेवेषूत्पादाभावा त्पूर्वोक्तद्विषो विवचया गत्यागतो रमाव रूपया दयमयामयोवा जीवाभिगमागृणमत्यया मवम्यादिप्रस्थमरूपा दिकत्रये नसम्भेव भवमस्थयावधिपचेतु नारकज्योतिष्कास्तिर्यमवचको भवनपतिव्यन्तरा चबीवधयोवैमानि का चधायध एकेन्द्रियविकलेन्द्रियाणां त्ववधिमास्मेवेति यथाकाणिच गत्यादिपदानि चसागामेव सम्भवन्तीति सम्बन्धा मसा निरूपयमाह । तिविहे त्यादि । स्पष्टं किन्तु चप्रन्तोति चमा सचसमचर्मोच स्राच तेजोवायवोगतियोमा चसा उदारा सूक्षा चसाइति चसनामकर्मोदयवर्तित्वात् प्राचाइति मनोज्ञामादिप्रापयोगा होन्द्रियादयस्तेपि मतिमागात् चसाइति उक्ता रचमा स्थविपर्ययमाह । तिविहेत्यादि । स्यानमोलत्वा त्स्यावरनामकर्मोदया वा स्थावरा मेवं स्वमिमेवेति इत्यच पविव्यादय प्रायोऽसामस्येयभागसाभावगाहित्वात् चक्षेप्यादिसभावा चवहारतो भवन्तीति तत्प्रकाशा चियमा च्वे

होए तिरियाए। एव पञ्चिंदियतिरिक्खजोणियाण एवमणुस्साणवि। तिविहा तसा पन्नत्ता तजहा तेउकाइया वाउकाइया उरालातसापाणा। तिविहा थावरा प० त० पुढविकाइया आउकाइया वणस्सइकाइया।

मनुष्यने गत्यादि बोलबे पणि इत्यादि प्रथ बोल तोर्यंचन मनुष्यनेज के सेमाट तिर्यंचमनुष्य एह ये कहिया। त्रणप्रकारें त्रसकहिया तेकहेंछे। तेउ काय वाउकाय औदारिकादिक बेइन्द्रियादि त्रसप्राण। त्रणथावर कहिया तेकहेंछे। पृथ्वीकाय थावर अप्काय पाणीथावर वनस्पतिकाय थावर।

याहो मरभिम्भे राह । तथापच्चोत्रेत्यादि । छेत्तुमसक्का बुद्धासुरित्यादिगरस्नेषवे त्वच्छेया च्छेयत्वे समयादित्वायोगा दितिसमय कालविशेष मदे
गा धम्माधम्माकामजीवपुद्गलानां निरवयवींग परमाणुस्कन्ध पुद्गल इति उक्तंच सत्वेवसुतिक्खेणवि च्छेत्तुंभेत्तुजंकिरनसक्कं तपरमाणुंसिद्धा वयतिभादं
पमाणापति । १ । एवंमिति पूर्वसूत्राभिलापसूत्रमार्थ इति भभेद्या सूत्रादिना भदाह्ना भग्निधारादिना भघाह्ना हस्तादिना भविघ्नते भर्द्धेया मित्थ
महाविभागद्वयाभावात् भमध्या विभागत्रयाभावात् भतएवाद भप्रदेशा निरवयवा भतएवाविभाज्या विभक्तुमशक्या भथवा विभागेन निर्वृत्ता विभाविमा
न्नविधेधाद्विभाविमा एतेच पूर्वतरसूत्राभ्यां समस्वायरास्या भाषिता दुःखमीरच इत्येत स्त्रविधानवकारेणाह । भण्णोइत्यादि । सुगमं केवलं भण्णोति
त्ति भारात् पापकर्मभ्यो याता भार्या स्वदामेव देयार्या इति एव मभिलापेनाम्येतिसम्बन्ध यमयो भगवान् महावीरो गौतमादीन् श्रमणा निर्ग्रन्था

तत्र अच्छेज्जा प० तंजहा समए पएसे परमाणु। एव मभेज्जा अडज्झा अगिज्झा अणड्ढा अमज्झा अपएसा। स
ठे अविभाइमा पणत्ता तंजहा समए पएसे परमाणु । अज्जोत्ति समणेभगवं महावीरे गोयमाई समणेनिग्गंथे

ग्रंथ भच्छेद्य कहिया तेकहेछे । बुद्धीयो तथा शस्त्रादिकें छेदीनसके । समयतेकालविशेष । प्रदेश धर्माधर्म आकाश जीव पुद्गलनु परमाणुयो
पर्म नाहरो दृष्टिनाये पुद्गलरावनु । यसेनयो भग्निथी । हस्तादिकथी गहीनसके । बे भागभयाय । मध्यमयी प्रविभाग भयाय तेमाटे । अवमव
मयी तेमाटे अप्रदेश ॥ भविभागरहित कहिया ते कहेछे । समय प्रदेश परमाणु । एह पूर्वे त्रस पावरकहिया तेमनथी बोहेछे ॥ हेमा
यो भायो श्रमणभगवंत महावीर गौतमादिकने निमन्त्रीने एम कहिया साम्भा तेस्यु भायो जीवनेस्याथी भयछे हेममहापुरुष ए भगवंत पूछो

भेनं पत्तमानम्मायेना यान्तीत्रिति कम्माद्यं एपामते विम्यया कुतोविस्मतीत्ययं माणा प्राणिन ॥ समणाउसोत्ति। हेयमवा हेमायुसन्सदति मोतमादीना मेशमवप भिति पर्यंत भगवत प्रणं गियाणां म्युत्पादनाय पवा मेगापृच्छतोपि मिथ्यस्य हिताय तस्य मास्त्वेवमिति प्रापयति उच्चतेच वत्सपुष्पदसो मा पडिपपुग्रावयतिपायरिया मोसाणतु विवक्षा विउप्रतरार्मतुपुष्पायपत्ति ॥ १ ॥ ततय उवक्कमतित्ति ॥ उपसंक्रामति उपगच्छन्ति तस्य समोपवर्त्तिनो भवन्ति इत्य तत्वामापेनयाविवायायत्तमागत्व मिति पत्तमानमिदंगो मधुर उपसंक्रम्य बन्दन्ते स्तुत्वा नमस्यन्ति प्रणामत एव मनेन प्रकारेण ॥ यथा मिति ॥ छान्दसत्वा इत्तरवगार्वे एवमयवमिति भणादिषु वक्ष्यन्तो मोक्षामोमो पिग्रेपतो गोपक्राम सामान्यतो वामण्डो विवक्षावों तद्दिति तथा

श्रामतित्ता एवयवासी किनयापाणा समणाउसो गोयमाई समणाणिग्गथा समणनगयमहावीर उवसकमति उयसकमित्ता यदति नमसति यदित्ता नमसित्ता एववयासी णोखलु वय देवाणुप्पिया एयमठ जाणामोया पासामोया तजहा जइण देयाणुप्पिया एयमठ नोगिळायति परिकहेत्तए तमिच्छामोण देवाणुप्पियाण छ

तिवारे गौतमादिकश्रमणनिग्रंथ श्रमणभगवत महावीर प्रति उपसंक्रमे आवें आवीनें वादे नमस्कारकरे मनयीवादी नमस्कारकरी इमकहे हेदे वानुप्रिय हेभगवत नयी निश्चयथी ए अर्थ विशेषथी जाणतानथी देखता जे मायीस्यायीअयपामेछे । तेमांटे जोहेदेवानुप्रिय ए अर्थ तुमनेकहता ग्लानपणुं खिलामना नहोय तो अम्ह पासेकां हेदेयानुप्रिय सुमारेपासे ए अयजाणवानें तिवारें भगवानकहेछे हेआयों इमकही गौतमादिश्रमण

देत मय दिप्पया' मापा इत्येवं मणप । मोगिसार्यतिसि । न म्यायन्ति न यात्मभि परिकमभित म्यरिकमनेन । तति । ततो । दुक्खभवति । दुःक्षा भरणादिरूपा उप मेशामिति दुःखभया' । सेयति । तदःखं । जीवेनकडेत्ति । दुःखकारणकथकरणा जीवेन कृत मिस्तुभते कम मित्यार्थ । पमा पमति । प्रमादेना प्रामादिना बन्धहेतुना कारणभूतेनेति उक्तप पमाभोवसुभिदीप भभिभोपदमेयपो पयाथसंसभोपेव मिस्सानापंतहेवम । १ । रागाभामामदम्मेमो धम्ममियपमायरो जोगायंदुप्पणीयायं महाणपजियमयोत्ति । २ । तम वेद्यते विप्यते पमप्रमादेन बन्धहेतुमतिपन्नभूतत्वादिति पप्पन गृहस्य दुःखभयापाना । १ जीवेनकडेदुकोपमापय २ पपमापणवेदना इत्येवंरूपप्रश्नोत्तरकयोपेततया जिज्ञानकावतारो द्रव्यमरति जीवेन कृतं दुःख नित्यन मधुना परमतं निरस्य तदेवसमर्थय बाह । पमउत्थोत्यादि । माय स्पष्ट वि अन्यतीर्थिका इत्यापसा विभज्यमानस्य एवं मक्खमाप

तिए एयमठ जाणित्तए । अउत्थि समणेनगवमहावी रे गोयमाई समणे निग्गथे आमतित्ता एव वयासो दुरकभयापाणा समणाउसो सेण भते दुरके केण कडे जीवेणकडे पमाएण सेणभते दुरके कह वेइजाति अप्प माएण । अण्णउत्थियाणभंते एयमाइरकई एय भासेई एव परूवेई कहस्स समणाण निग्गथाण किरिया क

निर्गपने पामयो तदोमे इमकडे हे मरणादि दुःखयो जप हे मायीमे हेममपायुष्मन् तें दुख किमकीयो जगवान कहेछे जीवेकोधु प्रमादपी दुख मारारन कमकोया । ते जगवंत दुःख केम मटे कमविमतपपाप पप्रमादपी पोच प्रमाद ठानकायो । हवां जेमहावीरस्वामीयें गौतमादिने साथ मुं प्रत्यकीयो त गिरयहिताय मासियो ते कहियोछे करमपुन्नदमीमो कहविपुन्नावमंतिमायरिया इत्यादि ॥ हिवे परमतने जीतो एकमनें

प्रकार मास्थागित सामान्यतो भावस्ते विशेषत प्रमेथे तदेव प्रज्ञापयन्ति प्ररूपयन्तीति पर्यायरूपपदद्वयेनो क्तमिति प्रथवा स्वामी पज्ञापयन्ते व्याख्या यथा प्रज्ञापयन्ति उपपत्तिभि र्बोधयन्ति प्ररूपयन्ति प्रभेदादिकथनतइति कि एतदित्याह कय इति प्रकारेण यमयानां निर्ग्रन्थानां मतइतिशेष क्रिय तइति क्रिया कर्म सा क्रियते भवति दुःखायेति विवचेति प्रथा इह चत्वारो भङ्गा यथवा कृता क्रियते किंचित् सुखादुःखाय भवतीत्यर्थ १ एवं कृता नक्रियते २ अकृता क्रियते ३ अकृता नक्रियतइति ४ एतेष्व मेन प्रश्नेन यो भङ्ग प्रष्टु मिष्ट स्त शेषभङ्गनिराकरणपूर्वक मभिधातु माह । तत्यत्ति । तेषु चतुषु भङ्गकेषुमध्ये प्रथमं द्वितीयं चतुर्थं च पृच्छन्ति एत त्रयस्या स्वगतत्वे रविषयतया तथ्यत्वात्प्या व्यप्रवृत्तेरिति तथाहि यासौ कृता क्रियते यत्त त्साम कृतं नभवति नोतत् पृच्छन्ति ग्रस्वत्तविरोधेना सम्भवा तथाहि कृतत्वे कर्म क्षयमभवतो मुच्यते नभवतिचे व्ययकृत एतदिति कृतस्य कथमो स्मय नाभावा तथतेषु या सा प्रकृता यत्त दकृतं कर्म नोक्रियते नभवति नोतां पृच्छन्ति प्रकृत वासत्व कमव खरविषाणकल्पत्वादिति पशुमेवच मङ्गमय विमेष माश्रित्या चतुर्थस्य विज्ञानकावतारइति सम्भाव्यते ग्रतोऽसंभवत्तु तव्यमवइति तंपृच्छन्ति प्रतएवाह तत्र या सा प्रकृता क्रियते यत्त दकृतं पूर्वं

ज्ञाति तत्य जासा कज्ञा कज्जइ णोतपुच्छति । तत्य जासा कज्ञा नोकज्जइ णोत पुच्छति । तत्य जासा

थापेछे । सत्यपणे अन्यतीर्थी तापसादि अनार्यो हेजगवत इमकहेछे । सामान्यतया । तथा विशेषपणे कहेछे । एणअनुक्रमें जणावेछे । एम भेदेकरी कहेछे । पेणेप्रकारे श्रमणनिग्रथने क्रियाकरिये एतले कीधुंकर्म केमदुखमे थायछे । इहांचार भांगाछे । तेकहेछे । तिहां जेकर्मकीधो तेदुखनेथाय तेमपूर्वे एतले मताने । पूर्वकीधुं ते अमरयकपणामाटे एहपहसो भांगोनलेवो ॥ तिहां जेकमकीधुं पणि नथीकरे एहबीजोभांगो

मविचित्तं कर्मभवति दुःखाय सम्पद्यते तो प्रच्छन्ति पूर्वकालकृतलक्षणा प्रत्ययतया इत्सेन तु साम्प्रतेष प्रत्ययतया सर्वेना कृतकर्मभवनपक्षस्य सम्भव त्वादिति पक्षता चायमभिप्रायो यदि भिन्नंकालपि पकृतमेव कर्म दुःखाय देहिना भवतीति प्रतिपद्यते तत सुष्ठु योभर्म पक्षसमागवोपत्वादिति येषा पपप्वत्व छतीकमेव पृच्छतोतिभाव । सेत्ति । पत्र तेषा मकृतकर्माभ्युपगमयता मेवं मक्षमारमप्रकारं वाक्य सुभाप स्यात् तएवया एवमाख्याति परान् प्रति मयुत पमेवं भवन्ध मरूपवीर्य ततयादिना या प्रोत् पकृते सति कर्मणि दुःखाभावात् पक्षत्व मवरणीय मवन्वनीय ममासस्य मनागते काले जीवाना मिश्रं कि दुःख दुःखहेतुला कर्म । पपुसंति । पसम्यं कर्मा कृतत्वादेव यथा भिन्नमार्यंच मसंमानकाले बध्यमान कृतवा तीतकाले यद किच माये चकेचसं कर्मधारयोया मक्रियमाणकृत मक्रियमाणकृतं चिन्तत् दुःख । पविचितदुःखमित्याहि । पदृष्य तत्वमासाभकृतकृत्यर तंपच्छतो त्यक्तो चिंमयावितं नाचकाळमन भाचित्त विचारकामचारो प्रदृष्ट्य विधुतभवतोत्याह पकृता पकृता कर्म प्राचा डोन्द्रियादयो भूता सत्वो जीवा प

स्यकडा कडाइ तपुच्छंति । तत्थ जासा स्यकडा नोकडाइ णोतपुच्छति । ४ । सेएववत्तव्वासियास्यांकिच्च दुक्क छफुसदुक्क स्यकज्जमाणकडदुक्क स्यकट्टु स्यकट्टु पाणाभूया जीवा सत्तावेयण वेयति वत्तव्व जेतेएवमाहंसु

भांसवो बीमु तेभ्रत्यस मोगवेदे । तेनपूछि ॥ तिहा वेनयीकोपु वेनयीकरतो महोम मरविपाकमीपरें भभावमी ते एनयीपूर्वे मीओज्ञागी ॥ तिहाजे भस्त भवकोपु कर्मकरे तकहैवे पूरुषु रतसे तेजीगवेदे । इमकहैवे तिमन्यमती केनयीकोपुंकर्म नथी करस्युकर्म भक्रियमाण कृत दुःख नपीकरीने नपीकरीने माव भूत जीव सत्व वेदना मनुभवैदे । इमकहैवे ॥ हिवे भगवंत कहैवे मेभस्तकर्म भोगवेदे इमकहैवे तेनेवे ...

न्द्रिया मत्वा पृथिव्यादयो यथोक्तम् मायादिमिथत मोक्ता भूताश्रुतरव स्मता जीवा पञ्चेन्द्रियाश्रेया ज्ञेया सत्वास्तीरिता ॥ १ ॥ वेदनां भोक्तां वेदय तीति वक्तव्य मित्थयं तथा मुखाय एतश्च ते पापानोपवतुवयो मापन्ते पराम् प्रति प्रद्गुत एवं यतश्चमतादिति प्रश्नम एव मन्यतोर्विक मत सुपदस्मं निरा कृष्णवाद । जेतदत्यादि । यपते भग्यतीविशा एव मुक्तमवारमाह । सूत्ति । उत्तवन्तो मिथ्या प्रसम्मन्त ते ज्यतोविश्वा एव मुक्तवतो ऽकृतायां क्रियाया उपपत्त क्रियतइति क्रिया यत्मात् कचनापि करच नास्ति सा कर्तव्येति पचृतकभागुभवनेहि बहमुक्तसुखितदु खितादिनियतव्यवहाराभावप्रसंग इति भ्रमतमा विप्रायवाद । पञ्चमित्यादि । पञ्चमित्यमेव माग्यतोर्विका पुन गम्दो विशेषणार्थ सच पूर्ववाक्यार्थो इतरवाक्यार्थस्य विलक्षणतामाह । एव मारक्यामोत्यादि । पूर्ववत् कृत्यं वरणीय मनागतकाले दुख तद्धेतुत्वात् कम सदर्म सदसदपवन्नामतमायोप्यं क्रियमाण वर्तमानकाले कृतमतीते पच एवं नास्ति कर्मेव कदाचनापोतिभाव समतसवप्रमाह कृत्वा कृत्वा कर्मेति मन्यते प्राणादयो वेदनां वमकृतप्रभाशुभानुभूतिं वेदय स्वयुभवन्तोति पञ्च णं मा सम्यगादिशां । इति निस्तानकस्य द्वितीयउद्देशको विवरणत समाप्त ॥ २ ॥ उक्तोद्वितीयोद्देशक सामतं तृतीय आरम्यते अस्याय

तेमिच्छा । श्रहपुणएवमाइक्खामि एवन्नासामि एवपन्नवेमि एवपरूवेमि किच्चदुक्ख किज्जमाण कडदुक्ख फुहुफुहु पाणाजूयाजीया सत्तावेयणवेयतिति यवत्तसिया ॥ तइयठाणस्सबीउउद्देसउसम्मत्तो ॥ २ ॥

मैं इमफडुउं सहवो जागुंदु एममममावुंदु एम मरूपुदु जेदयी जे अनागतकाले करसो जेकर्म करसुंकर्म यथावस्यायोग्य वर्तमानकाले क्रियमाण जेकम अतीतकालेकीधुं जेदुखरूपकम करीने करीने प्राण भूत सत्व वेदना सुभाशुभानुभूतिरूप तेप्रतिजोगवे । एहयो कहियो थाय ॥ इति श्रीजा

मभिमय्यस्वस्या नकारोऽत्रैव विविधा बोधधर्मा प्रकंपिता इत्यपि तत्र प्रकम्पत इत्यनेन सम्बन्धेना मातया सोऽभिमस्या दिव्यपर्यं । तिहिंठाणे हिंत्यादि । अस्य पूर्वसूत्रेण सहायसबन्ध पूर्वसूत्रे मिथ्यादर्शनवता ससमधस्तोऽभा इस्त अपायवता ता माविलेन सम्बन्धा च व्यास्या मायी मा यावान् मायो मायाविषयं मोपमीयं प्रच्छन्न मकार्यं कृत्वा नोभासोचयेत् । मायामेवेति । शेषं सुगमं नवर मालोचनं गुरुनिवेदनं प्रतिक्रमणं मि थ्याटुष्कृतदानं निन्दात्मसाक्षिका गर्हा गुरुसाक्षिका विशेटनं तदध्यवसायविच्छेदनं भावन सातिचारता तिकारसवाचालन अपारयता अभ्युत्थानं पुन नैत त्करिष्यामीत्यभ्युपगम । यथार्हं । यथोचित । पायच्छित्तति । पापच्छेदकं मायश्चित्तविशोधकत्वा तपःकर्म निर्विकृतिकादि प्रतिपद्येत तद्यथा अकार्यमह

तिहिं ठाणेहिं मायीमायंकट्टु णोआलोएज्जा णोपडिक्कमेज्जा णोणिंदेज्जा णोगरहेज्जा णोविउट्टेज्जा णोविसो हेज्जा णोअकरणयाए अब्भुट्ठेज्जा णोअहारिहं पायच्छित्तं तवोकम्मं पडिवज्जेज्जा तं० अकरिंसुवाहं करेमि

ठाणांगे त्रीजु उद्देशो पूरोथयो ॥ १ ॥ हिवे त्रीजो कहेचे पाछले उद्देशे जीवधर्म कह्या तीजे उद्देशेपणि तेहज कहेछे । पूर्वसूत्रे मिथ्यात्वीनी मूरतापणी इहां कषायवंतने तेकहेछे । त्रणिपामक मायावंत मायाकरी खोटां कार्यकरी आलोवेनथी आलोचिवु गुरुसमवे कहि वु पडिकमवुं जमिथ्यादुष्कृतदेवु तथा निंदेनथी आत्मसाखीयें निंदाकरे गर्हणाकरे गुरुनीसाखीयें त्रोडेनथी ते अध्यवसायनु छेदवु । चारित्र ना अतीचारने विशोधेनथी वली एहवो पापनकरुं एम मोक्षमास नथाय । वली एहवो पापनकरुं एम अंगीकार नकरे । यथायोग्य प्रायश्चित विशोधयाने पापछेदवाने तप कर्म पडिवजेनथी । तेत्रणबोल कहेचे । में एहवीपोकमे तेकिम आलोवुं माहरी महिमाजाय एम अवकारे । वली

भिदमत क बनिन्दामित्यालोचयिष्यामि स्वयमाचारमचारमि प्रासेरिस्येवमभिमानात् ॥ १ ॥ तथा करोमि चाह मिदानीं मेव कमसाध्विति भवामि क रिष्यामीतिचा क्मेत एकत्व ममागतकामेपीति चर्च भावयित्त प्रतिपद्यतइति कोत्ति रेचादिष्यामिनो प्रसिद्धि सर्वदिष्यामिनी सेव वर्षो यश पर्यायस्वा दस्य चथवा दानपुस्यकमाकोत्ति पराक्रमकृतंयश । तयवर्णंइति तयो प्रतिषेधो ऽकोत्ति रयर्णयेति भविनय साधुवृत्तो मे स्यादिति इदंच सूत्रमप्राप्त प्रमितिपुरुषापेच । मायंकइति । मायां कृत्वा मायो पुरस्तस्य मायवेत्स्य परिजात्यति हीना भविष्यति पूजा पुष्पादिभि सत्कारो वस्त्रादिभि रिह मेव मेव विवचित मेवरूपत्वा दिति इदंतु प्राप्तप्रमितिपुरुषापेच मीयं सुगमं उक्तविपर्ययमाह । तिहिमित्यादि । सूत्रय स्फुट किन्तु मायो । मायंकडुमाओ

याह करिस्सामियाह । तिहिंठाणेहिं मायीमायं कट्टु णोआलोएज्जा णोपडिक्कमेज्जा जावणोपडिवज्जेज्जा तजहा अकित्तीवामेसिया अवन्नेयामेसिया अविणयेवामेसिया । तिहिंठाणेहिं मायीमायं कट्टु णोआलो एज्जा जावणोपडिवज्जेज्जा तजहा कित्तीयामेपरिहाइस्सइ जसोवामेपरिहाइस्सइ पूयासक्कारेवामेपरिहा

पापपुंककडुं सोकिम निदुं माठोकोपुंकिम । यली करीस हुं तो किमप्रायश्चित्तलेयु एवप्रथयोल आलोवेनयी ॥ यली अथ यानके मायी कपट यंत मायाकपटकरी मयी आलोयें यावत् पडिक्कमेंनयी । तप पडियजेनयी । अकीर्ति अपयश मोहरोयास्यें हमजावी । अवणयाद निंदा मा हरीयामे । माहरो अविनयता मूढतायासे । एह प्रथमकारें आलोयेनयी ॥ यली अथयानके मायावत मायाकरोमे आलोये नयी जाव तपकम मयो पडिवजे तेकहेछे । माहरो कीर्ति हामिपासे । पराक्रमयी रूपनो जेमाहरो यश तेहानि पामसे । माहरी पूजा सत्कार वस्त्रादिकयी

एवमिति । इह मायी पश्चात्करणकालएव आलोचनादि करोति मायेवा लोकनायस्यवानुपपत्तेरिति । पश्चिमेति । अयं मती मायिनइहलोकाद्या गर्हि
ता भवन्ति यतया मायिन इहलोकाद्या प्रशस्ता भवन्ति यतवा मायिन आलोचनादिना निरतिचारो भूतस्य ज्ञानादीनि समभाव समन्ते घतोऽह समा

इस्सइ । तिहिं ठाणेहिं मायीमाय कट्टु आलोएज्जा पडिक्कमेज्जा निंदेज्जा जावपडिवज्जेज्जा तजहा मायिस्सण अस्सिंलोगे गरहिए भवइ उववाए गरहिए भवइ आयाइ गरहिया भवइ । तिहिं ठाणेहिं मायीमाय कट्टु आलोएज्जा जावपडिवज्जेज्जा तजहा अमायिस्सण अस्सिं लोगे पसत्थे भवइ उववाएपसत्थे भवइ आयाईपसत्थे भवइ । तिहिं ठाणेहिं मायीमाय कट्टु आलोएज्जा जाव पडियज्जेज्जा त० णाणट्ठयाए

पापवे हीनयासे लोक कहस्यें वेएइ एहवा पापकर्म करेछे एह अर्थबोली आलोवेमयी ॥ अर्थपानवे मायावत मायाकरीने आलोवे पडिकमें निंदे यावत् तपकर्म पडिवजे तेकहेछे । मायावत थाना पापकरनारनी एहलोकनें विषें निंदापायछे । मायाकरवाथी उपपात उपजिवो तेनारकी ति र्यचमां उपजवाथी निंदनीक थायछे । आजातिकासे पवि तेहनी निंदापायछे माठेठामें उपजें तेहथी एह तीनबोल मायी पापमतें आलोवे ॥ वली अर्थपानवे मायी मायाकरीनें आलोय यावत् तपकर्म पडिवजे तेकहेछे । मायारहितनें इहलोकादिक प्रशस्त प्रसाथाय । उपपात उपजिवु देवतादिकमां तिहां पणि रिद्धियंनतो कहयायें । वली तिहांथी चवीने रूडें प्रशस्तठामें अवतरें एमथाकी आलोयवालेवे ॥ वली अर्थठामें मायी मायाकरीने आलोवे यावत् तप पडिवजे तेकहेछे । ज्ञानने अर्थ आलोयवासेतो ज्ञानपर्मि । समकितनें अर्थलेतो समकितपामें । चारित्रने अर्थे

मीमूया पाशाकमादि करामोविभाव पमनतरं शुजि वज्रा इदानीं तथारिना ऽम्मत्तरसम्मई विधा कुर्वंवाह । तमीपुरोत्यादि । सुगोधं नवर मेतेयको तर प्रधानारति तेपामेव याम्नां सम्मई सूचयेनाह । कप्पात्यादि । कप्पते सुज्यते युश्मित्वयं । धारित्तयत्ति । धर्तुं परिग्रहपरिहर्तुं परिभोक्तुमिति पापना धारणाठनभागा परिहारणावोइपरिभागासि । जनियं । जा मसमोविकादि । भंगियं । पतसोमय । खोमिये । कार्पासिकमिति पलाडुपाव तदङ्ग राकपार्थ जारमवं भतिवापाव सम्ब्रयं गरानवाचटिकादि मेप सुगम वयपप्पत्कारकारयाह । तिशोत्यादि । ब्रोसव्वा सयमोवा मत्थयो मिमित्त बध्य धारणम ततबा शुशुषा प्रवधगविधा विज्ञताहृदयमेन माभूदिम्बेवं प्रमया बच ततमा एव परिवहा' सीतोष्णर्दसमशकादय' प्रत्य

टसणठयाए घरित्तठयाए । तओपुरिसजाया पन्नत्ता तजहा सुत्तधरे अत्थधरे तदुभयधरे । कप्पइनिग्गथा णया निग्गथीणया तओवत्थाइ धारित्तएवा परिहरित्तएवा तजहा जंगिए भंगिए खोमिए कप्पइनिग्गथाण या निग्गथीणया तओपायाइ धारित्तएवा परिहरित्तएवा तजहा लाउयपाएवा दारुपाएवा मट्टियापाएवा तिहिठाणेहि वत्थधरेज्जा तजहा हिरियत्तिइ दुगछावत्तिय परीसहवत्तिय । तओ आयरक्खा पन्नत्ता त०

मतो पारिम शुश्रुषाप । प्रथमकारें पुरुप कहिया तेकहेचे । सूत्रनां धरनार । अर्थनां धरनार । सूत्र अने अर्थ बेना धरनार एह त्रीण उत्तरोत्तर प्रधिकाजाणिवा । कल्पे सूझे साधुने तथा साध्वीने त्रणवस्त्र धारवुं राखवुं परिभोगवु तेकहेचे । जगम ते त्रसामय ऊननों धावल प्रमुख । भंगिक ते रेसमनुं सणनु अतसीरायनुं वस्त्र । खोम ते कपासनु वस्त्र । कल्पे सूझे साधुने तथा साध्वीने त्रण जातिना पात्र धारवु

यो वन ततया पावव वेगविपाउवेशा दएयवीवयपवविवेव एसिंपणगावशा सिंगुदयष्ठायपहोव ॥ १ ॥ वेउवित्ति ॥ विकृते तवा घमावते वचा मावेमति मातिवेव छप्फूनवभाजने क्रियां सत्वां पवे ववममावप्रवनने मेवने ॥ सिंगोदयइत्ति ॥ पोदयंमेविंमोदयरचावं मिलयं तवा तपगव पामनमेवा निमारवाधमसुवभावशा दिवपपपवार्व गिवावमरवायावेवत्ति ॥ १ ॥ ववमव मवपवारपप्रसवात् पावपापि ता स्यास्वायन्ते म ततवामगुजा मेवादेमागुरूपसवपमो सावारवोम्यवास विवारवापायगवर्यंतु ॥ १ ॥ पतरतत्ति ॥ स्वागादेया मापूर्यंवा ॥ पवइत्ति ॥ सुक्रमा रो राजपुत्रादि प्रवजित सावारवावपवात् सामाग्योपर्टभार्य पवविवाव वेति नियम प्रस्तावा विपत्वानेवागुठागत समसूप्पाव ॥ तपोभाए स्यादि ॥ मुमम मवर पामामं रामवेयावे रक्षयोव्रपमूपावा रवन्ती स्वामरवा ॥ पविपाएपविपोयपाएत्ति ॥ पामना एव धार्मिकोपदेशेन मेदं भगाइगां विधातु मुचितमित्यादिना प्रेरयिता उपदेष्टा भवतीति पगुकूलेतरोपसग्गकारिष स्वतो सा वुपसग्गवरचा पिवर्तते ततो छव्या सेवा नभवतो स्यत पावा रचितो भवतीति १ वृपोवो वा वावंयम उपेवपइत्यव स्यादिति प्रेरवावा पविपये उपेवपासामर्थ्येन तत स्या

धम्मियाए पडिचोयणाए पडिचोएत्ता नवइ सुसिणीएवासिया उट्ठित्तुया ह्यायाएगतमवक्कमेज्जा । णिग्गय

परिभोगवुं भनमनादि कार्यो तेकरेवे । तुंबीपात्र काष्ठनुपात्र माटीनुपात्र॥ त्रवि पामवे सापु वलरावे तेकरेवे । लावने पर्थे । तथा प्रवचननी निंदा मपाय तेमाट । शीतोष्णदशमशकादि परीसह टालवाने पर्थे ॥ साधुमा पधिकारमाटे तेज पधिकार करेवे । मव मारमरवक बोल कहिमा तेकरेवे। धमने उपदेशों भागस्याजीवमें भकार्यपोवारे तेतुम सरिखाने एव मारनकरवो नघटे एमकहिवो । मपवा वहनो नमामे तेहनी

गा दुत्ताय ॥ भायति॥ भामना एकांतं विजनं यंतं भूमिभाग मवक्रामेत् गच्छेत् निर्ग्रन्थस्य ग्लायतो मनुवत स्वच्छंदमया भभिभूयमानस्येत्वयं भाकारगुह्णंदि वेद्माद्रिभि रेत कारणे रागुभातं ॥ तमोत्ति ॥ तिस्र ॥ वियकति ॥ भागच्छाकार स्यस्य दत्तय एकमभेपमसासरूपा मतिमवोत्तु माय्य वित्तं वेद्मोपगमायेति उच्चय मभय प्रयोगा पुत्रया उच्चयतोतियो मार्या उत्कृष्टेत्वयं मधुरपानकवचषा मया दिनमपि यापयति मध्यमा ततो यो गा अघन्या यथा मकृदय वितृष्णो भवति मापगामार्गवा समतं भयवा पानक विशेषा पुत्कृष्टाधा माधा तवादि कसमकाचिकावचामखासे प्राधा पानजादेषा प्रथमा १ पटिकादिकाचिकादेर्वा मध्यमा २ वयधाग्यकाच्छिकादे रुष्णोदकमथा अघन्येति ३ देयकालसरुचिविशेषाद्वो त्वर्यादिने स मिति ॥ साहम्मियंति ॥ समानेन धर्मेण चरतीति साधर्मिक स्तं समेकम भोगो भोजनं सम्भोग साधूनां समानसामाचारीतया परस्परं मुपध्यादिदान

रसणगिळायमाणस्स कप्पति तठवियरुदत्तीठ पडिगाहित्तए तजहा उक्कोसा मज्झिमा जहन्ना । तिहिठाणे हि समणेनिग्गथे साहम्मिय सम्भोइय विसम्भोइय करेमाणे णाइक्कमइ तजहा सद्वयादठु सहियस्सया नि

उपेक्षाकरयो उपेक्षी थोते मौनपणेंरहे । भयवा वारवानें समयनयी तमाटे पायना करनारमे पासयी कठी पोतेज एकांते मसगो जाय एह त्रयमका भारमरक्षाकही भगवते ॥ रोगथी पराजय्योहोय एहवा निग्रय सापुनें कल्पें त्रय वियड तेपांयी सेहनी दातोजे एकवारेंज प्रक्षेप माप्युं पात्रमां तेयाहरें तेतले तृष्णासमाये तेकहेंवे॥ उत्कृष्टीदाति तेघणु यांवी । मध्यमदाती ते थोडुं । अघन्यदाती ते एकवार पिए सव्वासमावे ॥ त्रण पानकें श्रमण निग्रय साधु साधर्मीने जेहमो सरिसो धर्मछे तेहनेसाथे सजोग आहारोपधिनु देवुलेवुं विसम्भोग तेलेवु पडिमयी देवु पडिनयी

गृहनमंभ्रवशारमेघन' मविष्यते यस्य ससभोगिक स्तं निसभोगी दानादिभि रसव्यवहार' स यथास्ति सविसभोगिक स्त कुर्व्व मातिक्रामति नसस्स यास्त्रा मामाविकंश विहितकारिता हिति स्वयमात्मना साध्वात् तदा सभोगिकेन क्रियमाणा मसभोगिकदानगृहणादिका मसमाचारी तथा। सद्धि यमति। यथा यद्वान यस्मि यस्मि भयाव' यथैवपचम कोप्यन्य साधु स्वस्य मचनमिति गम्यते निमम्बा यथार्थे तथा। तर्पति। एव मितीयं यावत् यतोय। नामति। मयानाम' यन्मन्यगृहणपानस्यदानादिना सावद्यविपयमतिप्रामश्चचय माम्रित्येति गम्यते भावतते निवर्तते त माल्लोचयतोत्यर्थ' य माभागत स्वस्य भावात् प्रायश्चित्तंवा कोषित दीयते पतुपत्वान्यिस्नमायो गोपावर्तते त नासोचयति तस्य दर्प्यत एव मायादिवि मालोचनेपि माय चित्तस्य दानमस्वेति यत यतुर्मासंभोगव्यारप्यारिय विसम्भोगिकं कुर्व्व मातिक्रामतीतिप्रकृतं उक्तंच एगव्वदोवितितिमिय माउट्टंतस्सवोरपच्छित्तं मा उत्तेरितपो परेणतिव्वविसंभोगोत्ति॥ १॥ एत सूर्षि सभोइपोष्मपुवंगिवसंपोवोइभोमचइ संवायपविवोवय मिच्छामिदुक्कडं मपुवएवंकरिस्सामी ए यमाउट्टेजमाणस्स तपायच्छित्त दाउसोभोगो एवंचीसवाराए वि एवंतइयपारापो परमो पवत्तवाराए तमेपाइयारंसेविऊण भाउट्ट तस्सवि। विसंभो गाति। रत्नानां स्थानत्रयं गुरुतरदोषाश्रयं यत स्वय प्रातमापेद्युतमाचेव विसम्भोग' क्रियते वतीयं सम्मतरदोषाश्रयं तत्रापि चतुर्थवेलायां सम्भिवीय

सम्भतम्भोस श्राउट्टइ चउत्य नोश्राउट्टइ। तिविहा श्रणुन्ना पन्नत्ता तंजहा श्रायरियत्ताए उवज्झायत्ताए

ते प्रतिकरतो भगवंतनी भाग्यामतें यतिक्रमेंगथी भगकरे मयी। समोगियेकरी असभोगिकनूं देवूं सेवूं एहवी असमाचारीने आप पोतें कोइने पर्नो एक ये यावत् त्रवि मृषावाद आमीमें निवर्ते तइन भालोयवादे। वसी चौथी मृषावाद भामीने जे न निवर्ते तेहने भालोयवा न दे।

मडति । पणुपति । पणुभात मनुमा धिकारदाने भाषयते मर्यादाहत्तितया सेव्यत इत्याचाय भाचारेण पञ्चप्रकारे साधु रित्याचाय भाइच पंच अिचपायारं भायरमाणातशपयामेता भायारंईमित्ता भायरियातेचपुत्तंति ॥ १ ॥ तथा सुत्तत्थविजसक्षण शुत्तोगरक्षमैकिमूषोव गणततिविप्प मुश्रा परवपाएरपायरिषा ॥ १ ॥ तत्राय माता तया छतरन सपाचायमृहणा एनुयोगाचायतयेत्यव तथा उपेत्वा धीयते स्मादि त्युपाध्याय भाह च समत्तनामदमण शुत्तामुत्तत्वादुभयजिइप् भायरियठाचजोगो गुत्तवाएउवभाषोत्ति ॥ १ ॥ तत्राय उपाध्यायता तथा तथा गण साधुसमुदा या सम्यास्ति सत्वामिमम्यधेमा सागणो गणाचाय स्तद्भाव माता तया गणनायकतयेतिभाव तथा समितो सगता भौत्सर्गिकगुणयुतत्वेनो चिता भा चार्यादितया भनुमा समनुमा तथा भनुयोगाचार्यत्तो सगिकगुणा तत्रावयसपत्ता भाशोचियगश्रियसवससुत्तत्था पव्ययोगायवाए भोगामयिया त्रिचिदेर्शि ॥ १ ॥ इतराचमुखाचाभो पववनविसायहोइलोयत्थि सेसायज्ञिगुणहाबो तिरक्ष्पेसमावेय ॥ २ ॥ मवाचार्योप्यो सर्गिक एवं मुत्तत्थे निभाभो पियदढधम्मोषवत्ताकुसतो जाईकुलसंपन्नो गभीरोलद्धिमंतोय ॥ १ ॥ सगहुवग्गहनिरभो कयकरणोपवयणाणुरागीव एवंविहोयभणिभो गणसामोजिणवरिंदेर्हि ॥ १ ॥ पवेव विधगुणाभावे भनुमाया भव्यभावात् भत्र मत्या समनुमा भविष्यतो त्यवोच्यते तत्समुपानां सधा दृव्यतर

गणिताए तिविहा समणुन्ना पण्णत्ता तजहा आयरियत्ताए उवज्झायत्ताए गणित्ताए । एवउवसपयत्ता ।

त्रणप्रकारें साधुने मनुज्याकही तेभधिकार पदवीनु देवुं सामान्यथी भाचार सहितने भाचाय पदवीदेवी उत्तरगुणसहित ते भनुयोगाचाय । उपा ध्याय जेपास भाविये सूत्रायनोजाय तेहने उपाध्याय पदवीदेवी । गण ते साधुसमुदाय तेहनुंस्वामी तेगणि गणाचार्य गणाचार्यतादेवी ॥ प्रथम

गणाभावेपि आरतमिनीया अभवत्येवासो यव मन्यमा भिधीयते । वेवाविमसेसिगुवंविरत्ता उवरेसमेमप्पसुपत्तितधा । ,वोवेतिमिधंपडिवज्जमाणा वरतिपामायपतेमुरूनति । १ । मत वैयोवित् गुणाना ममावे प्पनुमासमग्यगुणमावेसु समनुवेति क्रित मथवा पस्स मनोज्ञा समान समा चारोवतया पभिरुचिता पममीग्राम इयामनोवे घांनादिभि समनोज्ञा एकसंभोगिका साधव कथचिदिधारक्षात पाचार्यतसेव्यादि भिसुप सेयादिभेदा मतापि नविरविता विस्तामकाविकारादिति एवं । उवसंपयत्ति । एव भिक्षापावद्मादिभि क्रिया समनुमावत् । उपसंपत्ति । उप संपत् प्रामाचव भवदोपोव मित्यम्युपगम तथादि कवि स्वाचायादिसंदिष्ठ सम्यक श्रुतपन्यानां दर्शनप्रभावकमाप्रायांवा सूत्रार्थसो पंचर्व मिरोधरणपरिमतमंधानायं तथा चारित्रविमेषभूताय वैयावृत्त्याय ममचायवा संदिष्ट माचार्यान्तरं व मुपसम्पद्यते उक्तंच उवसंपयायतिविहा ना चतदसणेचरित्तेय दसणनाणेतिविहा दुविहायचरित्तमहाएत्ति । १ । सेम माचार्योपसपदेव मुपाध्यायगणिमोरपीति । पवंविजवमत्ति । एवमिति पाणायवाादिभेदेन विविधेन विकाजपरिम्राण माव माचार्यादे सकोसस प्रमाददोष माश्रित्य वैयावृत्त्यपपावं माचार्यान्तरोपसम्पत्या भवतीति भावव नियगच्छाइयमि उसोवनदोसायपासीदत्ति पपवा माचार्योप्रामाणयं मुपसम्पनं सति गच मव ममुतिष्ठंत सिधप्रवोजनंवा परित्यजवि वत्

फारे ममनुग्या विशेषयो पनुग्या पन्वी पापवी । तेकहेछे । उत्कृष्ट मूलगुण सहितने माचार्य पदवीदेवु । एम उपाध्याय पदवी । तथाग वि पद्वी मपमऊटी तेहयो विशाप गुणयिना पद्वी मदेवी ॥ एम उपसंपन्ना पद्वी तेहमें ज्ञानादिकनें मर्थे सेविये पोतामा माचायनी माज्ञायी पभिज्ञयानी बीजा माचायने ज्ञानादिक मर्थे ते उपसंपन्ना पद्वी तेहने देयी ॥ एम माचार्यादि बकनें ठांवसु प्रमादादि दोषदकीनें एम चमा

मानायनिहाभि स्तंच उवसंपवोजंता स्पंतुतकारणंमपूरिंती भव्वासमाश्रियंसि सारवयावाविसम्मोउन्ति ॥ १ ॥ एव मुपाध्यायगषिमो स्पीति स्य ममन्तर विभिडा माधुब्रायचेटा भिस्रानके मतारिता भंवुमात् वपनममसो तत्पयुदासोष तमा मतारसवाह ॥ तिविहेत्यादि ॥ सूत्रचतुष्टय मन्य गमनिका तस्य विवचितायम्य घटादे वचनं भपनं तवचन पटार्थापेचया घटवचनवत तस्मा विवचितघटादे स्न्य पटादि स्नस्य वचन तदग्यवचन घटापेचया पटवचनवत नो भवचन ममचनमित्रसि वचनमात्रं डित्यादिवदिति भथवा स प्रवृत्तिनिमित्तधमविशिष्टोर्थस्तेनोच्यत इति तद्वचन यथायनामेवच ज्वलनतपनादिव तथा तस्मादन्यप्रवृत्तिनिमित्तधर्मविशिष्टा एम्य मन्दप्रवृत्तिनिमित्तधर्मविशिष्टो र्थ उच्यते म नेनेति तदग्य वचन मयमाच मिलम भक्तपादिवत् उभयव्यतिरिक्तं मोवचनं निरर्थक मित्यर्थोडित्यादिवत् भथवा तस्मा चार्थादे वचनं त दवचनं तद्वयतिरिक्तवचन तदग्यवचनं चविवचितप्रवेदविशेषं नोवचन वचनमाचमित्यर्थं त्रिविधवचनप्रतिषेध स्ववचन तथाचि मोवचन घटा

एयर्यिजहण्णा । तिविहे वयणे पन्नत्ते तज्जहा तव्वयणे तदन्नवयणे णोऽव्वयणे । तिविहेऽव्वयणे पन्नत्ते

बारीमो थीओ भाषार्यादि भादरयु ॥ भवचन कहिया तेकहेछे । घटने घटकहवो तेसद्वचन । घठपी भन्यपठ कहयो ते भन्यवचन घटनी भपेचाये पट ते भन्यवचन पटनी भपेचाये घट ते भन्यवचन । नो भवचन तेनिरर्थक वचन डित्यादिनीपरें प्रवृत्तिनिमित्तशून्य ॥ भथ प्रकारें भवचन कहियो तेकहेछे । निरर्थक वचन ते भवचन कामयिना भयोसे । भोतद्वचन जे घटमें घट मकहे पटकहे । नो तदन्य वचन जे घटने घटकहे यथास्थित नकहे । केवल वचनमात्र निरर्थक ॥ भथ प्रकारें मनकहियो तेकहेछे । तेह देवदत्तादिनुं भेघठादिक वस्तुमेंविषे मन से

पेवया पटरयमरात मोतद्ग्ययनम घटे घठयचनमत् ममचने वचनमिह्नत्तिनाचमिति एवं ध्यास्यागतरापेचयापि मेय तस्य देवदत्तादे रुक्षिन्वा घ टाश मन स्तमन मता देवदत्ता दग्यम यभ्रदत्तादे घटापेचया पटाद्दो घामम स्वदम्यमन भविर्जवितसंवधिविशेषस्तु मनोमार्ग नोघममद्दति एतदनुसारेणा मनो प्यूपमिति भमम्नर संवतमन याद्दिध्यापारा चमा इहार्गी प्रायोदेवव्यापारान् ॥ तिविंहस्यादिभि ॥ रम्ठाभि सूने राद सुम माभि चेतामि किन्तु ॥ मपयुड्ढिमाएति ॥ मम स्योको ऽश्विमानोवा वर्षव वृष्टि रच पतमे वृष्टिमधान वायो औपमिकायो ध्योमनिपत दम्मायरमर्थ वपरभमुनवो दर्श वृष्टि मसमा वायो रायि वृष्टिकाय मक्षयासो वृष्टिकायवा मवृष्टिकाय सम्मा भवेत् तर्मि स्तव मगधादो यमन्तो म्यवृष्टिकारयागतरममवयार्थः नभित्यमद्दारे देशे जनपदे मदेये तस्तैव एकदेयरूपे वा यम्नोधिकस्यार्थो उदकस्य योनय परिणामकारणम्

तजहा णोतम्भुयणे णोतउन्नवयणे भुवयणे । तिविहेमणे पन्नत्ते तजहा तमणे तयन्नमणे णोश्चमणे । ति यिहे श्चमणे पन्नत्ते तजहा णोतमणे णोतयन्नमणे श्चमणे । ति हिठाणेहि श्रप्पवुठीकाए सिया तजहा

तम्मत । देयदत्तयो मम्पजे यग्यदत्तादिकनु पटनी मपेक्षायें पटमा जे मन तेसदम्यमम । कोई वस्तुनेविषें ममममयो ते ममन ॥ मव मकारें धमन सरूहेहे । तम्मन मयो । तदग्य मन मयो । ममममें सहित पचि शून्य ॥ भव धामकी मस्म योवु मपवा नयी वृष्टि कायद्दोय एतले परगा नवरमें तेकहेवे । तेदेगमेंविषें मिहो वर्षा योमीद्दोय ते मामीलेपु मपवा ते दद्दामा मदेशमेंविषें पवा पांकीमा योनिया जीव तथा पुदगम मप्कायपणें उपजतामयो चवतामयो उपजतानपी येम स्वभावयी । देवता वैमानिक जोतिषी नागकुमार प्रवमपती मच भूम व्यंतर

ता उदकयोनय स्तदकाद्ययोनिका उदकजननस्वभावा सुक्ष्ममपि उत्पद्यते व्यपक्रामन्ति च्यवन्ते एतदेव यथायोगं पर्यायतयाचष्टे च्यवंते उत्पद्यंते विपन्नभावा विध्वंसं तथा देवा वैमानिका ज्योतिष्का नागा नागकुमारा भवनपत्युपलक्षणमेतत् यथा भूतादयि व्यंतरोपलक्षणं अथवा देवा इति सामान्य नामाद्युपगम् विशेषं एतत्क्रमेण माय एषा मेघविशेषमपि महति रितिज्ञापनाय विविधस्याया सूचयतेरिति नोसम्यगाराधिता भग अित पविनयकरणा व्यामपरे रितिगम्यते गतय तत्र ममवादी देगे प्रदेशेषा तथैव समुत्थितमुत्पन्नं उदकप्रधान पोद्गलं पुद्गलसमूहो मेघहत्यर्थं उदकपोद्गलं तथापरिणतं उदकदायकापकं भावं भतएव विद्युदादिकरणात् पर्यंतुकामं स दव्वं देग ममपादिवं संहरंति मयन्तोवि वितीर्य प्रभावि मेघा सो संहरन्तं इति नं प्रमपरंवं ॥ वाल्यएति ॥ यावुनाव' प्रभावनावो विद्युतादि विध्वंसयतीतिवितीर्य ॥ इच्चे इत्यादि ॥ सिममग

तेसिंचणदेससिया पएससिया णोवहद्वेउदगजोणियाजीवाय पोग्गलाय उदगत्ताए वक्कमति विउक्कमति चय ति उवयज्जति देया नागा जक्का णोसम्ममाराहिया न्नयति । तत्यसमुट्ठिय उदगपोग्गल परिणय वासिउ कामं अन्नदेस साहरति अब्भवद्दलग चण समुट्ठिय परिणय वासिउकाम वाउकाएविहुणेइ इच्चे एहिं ति

एह देयतानें सम्यक् प्रकारें आराध्या नहोय अविनय कीघो होय तिवारे दक्षने विषें उपनो मेघ पाणीना पुदगल परिणमपणी देयानी भव रूपा पाम्या विजली प्रमुख कारणें वरसवा मांडनायपा थीजा देशमा सहरें सेजाय ए थीजूं कारण । मेहमां पादस ऊपना परिणम पया वरसवा मांडनायका पायरो विनमाडें विसयकरें । ए त्रिण पामकै कारणें मस्प वरसात मेघनो भजाय माय । त्रय मानकै पची महावृष्टि

मिति एतद्विपर्यासा इनन्तर सूत्रं पञ्चमो पपयो देव' ब्रिलाव देवलोकेष्विति इवप बहुवचन एकको वरा पनेकेपू त्यासासम्भवा देवार्थं इर्थं वचनमस्य मादेवसोवानेनकसौपदममाग्वंया देवलोकेपु मध्ये कवि देवलोकरति इच्छे इभिलषेत् पूर्वसंमतिकदयंगायर्थं मानुपाणा मयं मानुष स्त । इम्मति ।

हिठाणेहिं अप्पवुठिगएसिया । तिहिं ठाणेहिं महावुठिकाए सिया तंजहा तंसिंचणं देससिवा पएससिवा बहवे उदगजोणिया जीवाय पोग्गलाय उदगत्ताए वक्कमंति विउक्कमंति चयंति उववज्जंति देवा नागा जया जरका सम्ममाराहिया जवंति अन्नत्थसमुठियं उदगपोग्गलं परिणयं वासिउकामं तंदेसं साहरंति २ अब्भवद्दलगंचणं समुठियं परिणयं वासिउकामं णोवाउआ्रादं विज्झणंति ३ इच्चे एहिं तिहिं ठाणेहिं महावुठिकाए सिया। तिहिं ठाणेहिं अहुणोववन्ने देवे देवलोगेसुइच्छेज्जामाणुसलोगं हव्वं मागच्छित्तए णोचेवणं

पाय । तेकहेले । तदेशनेविषें पवा पाणीना यीनीना जीव पुद्गल उदकपणें उपनाहोय व्यतिक्रमें चवे उपजे तिवारें पणी वर्षाथाय । तिम देवता नाग यक्ष भूत ए देवता सम्यक् प्रकारें आराध्या होय तिवारें बीजे देशे उदय पाम्यो पाणीना पुद्गल परिणत थई वरसवा मांड्या तिहांथी ले ते देशमां वरसावे । तिम वली मेहनो वादलो उदय पाम्या परिणत थया वरसवामांड्या तेप्रतें वायरो विध्वंसनकरें । ए त्रिविध पामवे कारखे मोटी वृष्टिथाय ॥ हिवे देवताना अधिकार माटे कहेले त्रिण थानके इमबातर उपनो देवता देवलोकने विषें वांछे जे मनुष्य लोकमां तुआउं आशु वांछें पूर्व संगति मनुष्यने मिलवो पणि नही शक्ति सामर्थ्य नथाय इहां आववाने । नवो तुरत उपनो देवता देवलो

मोर्च । संचायति । मनोति रिवि देवलोवे मया दिव्या स्त्रेपु कामी च मन्दरूपसम्पी भोगाय मन्मरसस्पर्शा कामभोगा स्त्रेपु मया कामगतरति
कामा मनोघा स्त्रेवरति भुज्यंतरति भोगा मन्मास्य स्त्रेव कामभोगा स्त्रेपु मूर्च्छितश्च मूर्च्छितो मूढ स्तत्स्वरूपस्य मित्रत्वादे विमोचायमत्वात्
मम मत्सागोचावा मवतस्थव पमितश्च पमित स्तादिपये येहरभुभि सन्दभितश्चव पच्युपपम पाधिक्तेना सतो ऽस्यपतस्यना दस्वयं मोपाधि
यते गते घारस्थान् भवति मोपरिकामाति एतेपिच पशुमूता दवेव ममम्पते तथा तेष्विति गम्पते मो मर्वं वभाति पते रिदं मयोजनमिति म
मिवर्व कराति तथा तेषु नामिराम मकरोति पते मे मूषासु रिक्तेवमिति तथा तेषेव मोक्षितिमकथ मवस्थानं विकल्पनमेतेषच गितहेयमिति
एतेषा मम तिष्ठन्तु सिरोमर्व सिद्धेर्व रूपं सिल्पावा मर्बाएमा विभिष्टमकथ पापार पालेवेमव पो मकरोति कर्तुमारमते ममन्दपादिकर्मा

सचाएइ हव्वमागच्छित्तए त० अज्झणोववन्नेदेवे देवलोगेसु दिव्वेसुकामभोगेसुमुच्छिए गिद्धेगढिए अज्झोव
वन्ने सेण माणुस्सए कामभोगे णोआढाइ नोपरियाणाइ णोअट्ठं बंधइ णोणियाणपगरेइ णोठिइपकप्पे
पकरेइ अज्झणोववन्ने देवे देवलोगेसु दिव्वेसु कामभोगेसु मुच्छिए गिद्धे गढिए अज्झोववन्ने तस्सण माणुस्सए

के तदिव्यदेवता संबंधी काम भोगमें विषें मूर्छापाम्यो मूर्छावो गृधू पतृप्त विषयस्नेह दोरडीयें बांध्यो ते गठित तेहमां अत्यंत आसक्त थको
तेदयता मनुष्यना कामभोगप्रतें आदरमकरें । वस्तुकरी भलिभजार्थे ये ए कामभोगछे । अर्थमर्यादे एपणि प्रयोजनछे इम मजाबे । एवनूं नियाणूं
पखिमकरें जे एभोग हूंपाम्यो । स्थितिनोप्रकरप विचारमकरें एभोग मोहरें घणाकाल रहियो । इमधामयो उपनो देवता देवलोकनें विषें दिव्यका

मत्वादिति एवं दिव्यविषयप्रसक्तिरित्येवं भारर्थ-तथा यतो सावधुनोपपन्नो देवो दिव्येषु कामभोगेषु मूर्छितादिविशेषणो भवति यत स्तस्य मानुष्य के मनपविषयं प्रेम वोद्रो येन मनुष्यलोके भागच्छते तद्व्यच्छिन्नं दिविभवं दिव्य सगंमतमस्तुविषय संक्रांत तत्र देवे प्रविष्टं भवतीति दिव्यप्रेमसं प्रीति रितिद्वितीयं २ तथा इतो देवो यतो दिव्यकामभोगेषु मूर्छितादि विशेषणो भवति तत स्वमतिबन्धात् । तस्मर्वति । तत्र देवस्य । एवति । ए वं प्रकारं चित्त भवति यथा । इयच्चिंति । इदानीं गच्छामि । मुहूर्तति । मुहूर्तेन गच्छामि तत्समाप्ता वित्यर्थ । तेषुकालेष्वपि । येन तत कृत्यं समाप्यते स च कृतकृत्यता दागमन प्रभो भवति तेन कालेन गतेष्वेतिशेष एवमिच्छा काले गते चयन्तो यावत्प्रकारे, इमामुप समाचारेव मनुष्यमा तादृशो दर्शनाय मागिगमिषति तेन कालमवेव मरणेन संयुक्ताभवंति कथा सोऽस्यभावे भामच्छति भसमाप्यकालत्ववाशाम कतोत्सुमिति । इवे

पेमे वोच्छिन्ने विच्छिन्ने दिव्वे संकते भवइ २ ग्रहुणोववन्ने देवे देवलोएसु दिव्वेसु कामभोगेसु मुच्छिए जाव अज्झोववन्ने तस्सण मेव भवइ इयाणिं गच्छ मुहुत्त गच्छ तेण कालेण मप्पाउया माणुस्सा काल

मनोगमेवियें मूर्छाओ गृध्रुपणो गठित स्नेहे बंधाणोपको घरत्यासक्त ममपणो तेदेवतामें मनुष्यलोकनो प्रेमविच्छेद पाम्यो तूट्यो ग्रमें दिव्यदेवता संबंधोप्रेम संक्रम्यो तेवे नावे एवोजूकारय ॥ नवो उपनो देवता देवलोकनेविर्षे दिव्यकामभोगमा मूर्छाईं यावत् भासक्त ममपणो तेदेवतानो इसो एमहोय जे हुं हवणाजाउं मुहूर्त बेपही रहीनेंजाउं एमचितवतां नाटकजोतां वेहवारवरत्ता पहीजाय तेहवें थोडा आउखानाधणी मनुष्य तेहा कालधर्मपामें मरणपामें वेमनाये नवपानकेवरी इमका उपनो नवोदेवलोकमां तेवारें मनुष्यलोकमां भावनु पवित्रमघे मथाय इहूर्कं भाषि

स्यादि । निममर्न २ देन कामेषु वयि एमूर्छितादिविशेषणो भवति तस्य भगवति मन्यते एवंमूर्त भवति मायायप्रतिबोधकममात्मकादि रनुयोगाचा
र्योपा इति एवंप्रकाराचार्यो भायन्तोविकल्पार्थं प्रयोमस्येव मनुष्यभवे य ममा चार्यो श्लोतिवा उपाध्याय सूत्रदाता सोस्तीतिवा एवं सर्वत्र नवरं प्र
वर्त्तयति माधूना चार्योपदिष्टेषु वैयावृत्यादिविति प्रवर्त्तो उक्तंच तवसंयमजोगेसु जोजोगोतस्यतपवहेर असहंचनियत्तेह गणतत्तिओपवत्तोयोत्ति ॥ १ ॥
प्रवर्त्तितभाषारितान् माधून् संयमयोगेषु सोदत स्थिरीकरोतीति स्थविर उक्तंच थिरकरणापुणथेरो पवत्तिवावारियसुपत्थेसु जोजत्थसीयइजर
संतयलोतंथिरंकुणइत्ति ॥ १ ॥ गणं स्वामीतीति गणी गणाचार्य गणधरो जिनशिष्यविशेष आर्यिका प्रतिजागरकोवा साधुविशेष उक्तंच पियधम्मेद

धम्मुणा संजुता भवइ । इच्चे एहितिहिं ठाणेहिं अहुणोववन्ने देवे देवलोगेसु इच्छेज्जा माणुस्स लोगं हव्व
मागच्छित्तए नोचेवणं संचाएइ हव्वमागच्छित्तए अहुणोववन्ने देवे देवलोगेसु दिव्वेसु कामभोगेसु अमु
च्छिए अगिद्धे अगढिए अणज्झोववन्ने तस्सणमेवं भवइ अत्थिणं ममंमाणुस्सए भवे आयरिएइवा उव
ज्झाएइवा पवत्तेइवा थेरेइवा गणीइवा गणहरेइवा गणावच्छेएइवा जेसिं पभावेणं मएइमा एयारूवा

यामें भायोसमर्थ ॥ अथपामके नवोदेवलोकमां उपनो जेदेवता तेमनुष्यलोकमा आविवानी इच्छाकरै पणि तेहवो आविवाने समर्थ नहोय । देव
लोकमां नवो उपनो देवता दिव्यकाम भोगमां मूर्छितमथी अनित्यजाणी अगृद्ध गढितनथी प्रतिबासक्तनथी तेहनु एहवु मनहोयछे जेमाहरे
————— आचार्य उपाध्याय धर्मप्रवर्त्तनार प्रवर्त्तक स्थविर गणीगच्छनास्वामी गणधर जमयतनाशिष्य विशेष गच्छावच्छेदक ते

उभयो संविम्बोऽप्यभोयतेर्वसो संगमम्मरकुशो सुतमविक्रमवाश्विवर ॥ १ ॥ मवमा वच्छेदो विमामीं मो माप्नोति सोपि गर्वामें मशेला गच्छोप हमायैसो पथिमार्गवादिभिभित विहरति स गवावच्छेदिय माचप मोक्षावचापशावच सेतोमविमम्मवासुमविसार्ड सुतमतगुमवविच्च मवचस्मोएरि मोशेरति ॥ १ ॥ इमति ॥ एवं मत्वमोसमा एतदेव रूपं यथा मवावान्तरे रूपान्तरमाक सापतद्रूपा दिव्या समसमवा मघागावा सेवामा सुराणा मदि यो विमानरत्नादिसंप देवर्दिदेवं सवम भवरं युति दीप्ति शरीराभरणादिसभवा युतिर्वा युक्ति रिहपरिवारादिसंयोगलक्षणा शुभावो उचिता वैक्रियकरणादिका मति यम उपार्जितो भवान्तरे प्राप्त इदानी सुपगत अभिसमन्वागतो भोग्यतां गत तदिति तस्मा तान् भगवत पूज्यान् वन्दे स्तु तिभि नमस्यामि प्रणामेन सत्करो मत्वाहरणवस्त्रेन वस्त्रादिनावा सम्मानया स्तुतिमतिमया यथार्थं मङ्गल दैवतं चैत्यमिति पुजा पर्युपासे सेवे इत्ये वं ॥ एसर्वंति ॥ एषो यथादिमत्वमोक्षत मानुषत्वे भवे वर्तमान इतिगम मनुष्यत्वमं भाणीविवा ज्ञाना तपसोतिवा ज्ञाना किमिति पुष्कराणा सि

दिव्वा देवड्ढी दिव्वादेवजुई दिव्वेदेवाणुभावे लद्धे पत्ते अभिसमन्नागए तगच्छामिण तन्नगव वदामि णम सामि सक्कारेमि सम्माणेमि कल्लाणमंगलदेवयचेइय पज्जुवासेमि ॥ १ ॥ अज्झणोयवलेदेवे देवलोगेसु दिव्वे

गच्चनुभाव केतलोएक समुदायसेर्ड विषरे केहना प्रभावथी माहरे था प्रत्यक्ष एहवोरूप देवतानीरिद्धि दिव्यकांति दिव्यदेवप्रभाव मेंलीयो पाम्यो सम्यक्प्रभावें पाम्यो तेहथी हुआउं तेउपकारी भगवंतने वांदुं नमस्कारकरु सत्कार आदरदेउं वस्त्रादिकदेई सम्मानदेउं कल्याणमंगलीकनु करनार देवचैत्य अरिहंतनी प्रतिमानें जिमसेविये तिम सेवु एमआवी भावे एमपभणेल ॥ देवलोकमां नवो उपनो देवता दिव्यकामभोगमां अमूर्छित

रुगुरा वायोत्तमं अरयाहोनां मध्ये दुष्कर मधुरत्नपूर्वीपमृतमावनापरत्वत्वोमन्दिरवावामकपत्रप्रयवर्षानुपाख्यनादिक करोतीति मतिदुष्कर २ कारक सूक्ष्मप्रवत् तस्मात् । गच्छामिति । पूर्वमेवचवनमिर्देशे मोह पूर्व्वविवचया वचवचनमिति तान् दुष्कर २ कारकान् भगवतो वंदे इति द्वितीय यथा मायाहकाधिमाहवाभ्यारवाभदवोहमापुत्ताहवाधुयाहवाहति । यावच्चमा चैप' सुवा पुत्रभार्या तदिति तस्मा तेषा मध्विवे समीपे प्रादुर्भवामि मचट

सुरुामज्जोगेसु श्रमुच्छिए जाव श्रणज्झोयवन्ने तस्सण एयजयइ एसणमाणुस्सएज्जवे णाणीइवा तवस्सीइवा श्रइदुक्करदुक्करकारगे तगच्छामिणन्तगयते वंदामि णमसामि आव पज्जुवासामि ॥ २ ॥ श्रज्झणोयवन्नेदेवे देवलोगेसु जाव श्रणज्झोयवन्ने तस्सणमेवजयइ श्रत्थिण ममभाणुस्सएज्जवे मायाइवा जायसुएहाइवा तगच्छामिण तेसिमतिय पाउब्भयामि पासतुतामे इम एयारुव दिव्वदेविंड्ढि विव्वदेवजुइ दिव्वदेवाणुभाव लद्ध पत्त श्रभि

जाव श्राजसनमी तदेवताना ममभा एहमूं भावे जे एहमनुष्य भवमां मोटोमासोबे अथवा तपस्वीबे अतिदोष्हित्ती करणीनो करनारबे सिइगुका मपयितें काउसगकरबे दुष्कर पूर्वचयपातेबे स्थूलजनूमीपर्रे तेमाट जुमाउं तेजगवतने यांदु नमस्कारकरं यावत् सेवाजनिकरं एह बीजुं कारच देवलोकमा मवोरूपमो देवता ते कामजोगमा आशाकनयी तेहमूं एहवो ममयायबे माहरे मनुष्यना भवनेविर्षे माता पिता स्त्री पुत्र भगिनी पुत्री यावत् स्नुषा प्रवबे तेमाटे जुजाउं तेहनेंपासें मगठयाउं तेहनें दिखाडुं आ एहवा स्वरूपनी दिव्य माटी देवरिद्धि विव्यशरीरनी कांति विव्यदेवानु भाव मजावें में सोपोपाम्यों विशेषथी पाम्योबे । एहवें प्रनपानबे प्रकारबें मयोदेवलोकमां रूपनो श्रेयव तेमनमा याबे मनुष्य लोकमा श्रावि

रुतादि । तामेति । तारन् मेरयेति ततोदं । पोचेमति । मइये दक्षिणी सुवर्णच मर्दमहयउविंमतिजनपदाना मध्यतर मगधादि सुकुले इत्याकाद रेणाकान् प्रतिनिवृत्तम्या जाति नमपायातिना मामति गुकुमसम्याजाति सुकुमप्रसायायातिर्या तामिति । परितप्पेज्जति । पयाशापं करोति भगो ञ्मये मति विषमाने जने मारीरे धीर्वे ओशानिते पुरुषकारेभिमानविशेषे पराक्रमे अभिमानएवच निष्पादितस्वविषयत्वयं चेमे उपद्रवाभावे सति मुभिक्षे सुकाले सति कप्पमपरेरेव भोरोमसेदेनेति मामग्गोमबादेपि गोवइमुत मधीत मिलेत्रं । विसमतिसिएर्यति । विपयवधितत्वा विद्दयोक्मति

समणागय । इच्चेएहिं तिहिं ठाणेहिं अणोयवन्ने देवे देवलोगेसु इच्छेज्जा माणुसलोग हव्वमागच्छित्तए स चाएत्तए हव्वमागच्छित्तए ॥ ३ ॥ तओ ठाणाइ देवे पीहेज्जा त० माणुस्सगत्तय आरिएखेत्ते जम्म सुकुलपच्चाया‌इ । तिहिं ठाणेहिं देवे परितप्पेज्जा तजहा अहोण मए सतेबले सतेवीरिए संतेपुरिसक्कारपरक्कमे खेमंसि सुभिक्खंसि आयरियउवज्झाएहिं विज्जमाणेहिं कल्लसरीरेण णो बहुएसुए अहीए ॥ १ ॥ अहोणमए इहलोगप

पाने गमपयाय घतम थाये ॥ पणपानके देवलोकमा रहलो देवता पांच्छाकरे तेकहेछे । मनुष्यना प्रवमा भाविवानी । पाय मानयधीस क्षेत्र मां चनमानलो । देवलोकथी चवी सुकुल उत्तम कुलमा जन्म एव मनयाम यांछे ॥ चवमानके देवता पश्चातापकरे तेकहेछे अहो इति खेदे मोहर शरीर मपयां मवटते । ओयायित वीप छते । पुरुषाकार अभिमान ते यो रूपनो जेपराक्रम तेछते खेम उपद्रव रहितपणे सुकाल छतें भाषा य उपाध्याय मणायनारनो मामग्रीछतें शरीर नीरागछतें मे मनुष्यनां प्रवमां घणुंमुत भण्योनथी एम पश्चातापकरे ॥ अहो मे इहलोक विषयारिक

कन्यादिना शेषवामब्वपर्वावापासनमितिवतोयं तथा च विराधावस्वाशे नरेन्द्रादिपूजा रसा मधुरादयो मनोज्ञा सातं सुखं एतानि गुरूका दरवियया बन्ध मोह मूर्छितसमानगुरुक श्लेन मवना एभि गुवक श्रोपा माता वभिमानतो मातोष मार्थनातो शुभभावोपात्तबम्भारतया चत्तु श्लेन भोगेषु कामेषु भार्गमाता मासमावर्ग गृबच माता तृप्ति मस्त न भोगाथमाम्ध रमना गुम्मारसोपश्चस्ले प्राकृततयेति पाठान्तरेच भोगाभिमगृद्धेनेति नोविशुद्धमनति चार चरित्रं स्वप्नमिति तृतीय इत्येते रित्यादि निगमनं विमानामरत्वानां निष्पमत्त मोत्पातिकं मायच्छविभ्रमकर्पना ॥ कप्पकसगंति ॥ चेत्यवृषं ॥ तेष मेमुति ॥ शरीरहोर्मि सुगाविचाचा ॥ इत्येवहित्यादि ॥ निगमनं भवन्ति चैवं विधानि चिह्नानि देवानां च्यवनकाले उक्तंच माज्यम्लानिः कल्पवृक्षप्रकंपः शोभानाशोवाससमांचोपरागः ॥ दैन्यंतन्द्राकामरागाङ्गभङ्गो । दृष्टेर्भ्रान्तिर्वेपथुश्चारतिश्चेति ॥ १ ॥ उप्पेमति ॥ उद्वेगं गोत्रं मयेत स्वयमोयं भविष्यतोत्रैवं तथा

फियद्धेण परलोगपरमुहेण विसयतिसिएण णोदीहेसामन्नपरियाए अणुपालिए ॥ २ ॥ अहोणमए इह्विर ससाय गुरुएण भोगासंसगिद्धेण णोविसुद्धेचरित्ते फासिए ॥ ३ ॥ इच्चेएहिं तिहिं ठाणेहिं देवे चइस्सामीति जाणइ विमाणाभरणाइं णिप्पभाइं पासित्ता कप्परुक्खगमिलायमाणपासित्ता अप्पणोतेयलेस्सं परिहायमा

नें प्रतिबंधे अतृप्तपणे परलोकथी पराङ्मुख उपरांठियपणे विषयतृष्णायेंकरी घणेकालसमि चारित्रनो पर्यायमपाळ्यो नीळोदीक्षालीधी ॥ अहो वली में रिद्धिने रसनें सातामें गारवेंकरी भोगनीआसामां गधूपणें शुद्धचारित्र फरस्युंनही एतीनयानकें पश्चात्तापकरें ॥ त्रिणकारणें देवता इमजाणे जे हुं इहां थी चवस्युं तकहवे पोताना विमान आभरण ते प्रभा कांतिरहित देखीनेजाणे । कल्पवृक्षनें म्लानकरमातो देखीने । पोतानी तेजोलें

मातृरोज पात्तंच पितु' मय ममत्वाविध विमपिविवोमाना मविविद्वीन त्तवो रोज' पमयी वमर्य वय गतुमयं तपपव् संघट्टसंघिष्टविचेषा परस्पर मेकोभूतमित्ययं' तदुभयसंसृष्ट तदुभयसंश्लिष्टया एव पमवो म पाशार च्यम ममंपामकाठम प्रथमता तथ्यथमता तथा मथमपमपात्मर्क सभाषतंम्यो ऽम्यवहार्योभविष्यतीति वितीय गतवा कवमवोपठएप्पमपूर' सएम भवाम' चहंमो ममांसा तवा तथा मतएवा शुपिमायां छहेजनीयायां छवेगकारि मा भोमाया ममानिकायां मर्मएव भपति सत्वा पत्तव्य मितिवतीयं भवमावेभवत देषाविदेवलोए दिव्यामरवान्तरमियषरीरा मपरिवतिततो

गजाणिया। इच्चेएहिं तिहिं ठाणेहिं देवे उव्वेगमागच्छेज्जा तंजहा अहोणं मए इमाओ एयारूवाओ दिव्वाओ देवड्ढीओ दिव्वाओ देवजुईओ दिव्वाओ देवाणुभावाओ पत्ताओ लद्धाओ अभिसमन्नागयाओ चइयव्वं भविस्सइ ॥ १ ॥ अहोणमए माउओयं पिउसुक्कं तंतदुभयसंसट्ठं तप्पढमयाए आहारो आहारेयव्वो भविस्सइ ॥ २ ॥ अहोणमए कलमलजंबालाए असुईए उव्वेयणियाए भीमाए गब्भवसहीए वसियव्वं भविस्सइ ॥ ३ ॥ इच्चेएहिं तिहिं ठाणेहिं

एपाचीन पामती चावीने एतीम कारबोकरीने ॥ विचयामवी देवतर देवलोकमां उद्वेगशोकपामें तेकहेछे। अहोमें आमस्यच यहवी मोटी दिव्य देवतानी रिद्धि दिव्यदेवतानीद्युति तेज दिव्यदेवतानो प्रभावसामर्थ्य पाम्योछे विशेषथी पाम्योछु तेमूकीने चववुंपास्य इमथाकी उद्वेगपामे ॥ अहोमें मातानु रुधिर पितानुं शुक्रवीर्य ते बे एकठामथया तेमथम उपजती वेलामाहार खावोपास्यें अशुचि आहारपास्यें इमउद्वेगपामें वली अहो मांहरें कलमल तेवीजरूप समास तकर्दमने मिश्र अशुचि अपवित्र उद्वेगकारी भीमबीहामणो एहवी गर्भनीवसती मांहि वसवुपास्ये एतीम पामवे

तदृक्तं द्वारवर्णतेसिं ॥ १ ॥ तंमुरविमाणविहनं चिंतिमवयवपरेवलोगाभी भवंतितियविंयखंगवि पहहसयसबारंभिवसं ॥ २ ॥ इचेएइत्यादि ॥ निगमनं भय देववत्यव्यतामनतरं तद्गाश्रयविमानवक्तव्यमाह ॥ तिसठिएत्यादि ॥ सूनमयं स्फुटमेव केवलंमोचि संखितानि संस्थानानि येपातानि विभिर्याप्रकारैस्संस्थिता निभिसंस्थिताभि ॥ तत्यवति ॥ तेषु मध्ये ॥ पुक्खरकन्निकत्ति ॥ पुष्करकर्णिका पद्ममध्यभाग साचि इत्ता समोपरिभागाच भवति समतद्दति दिक्षु समंता दिति विदिक्षु ॥ संपाडयति ॥ भिकाभो जलजफलविशेष एकत एकस्यां दिशि यस्यां वृत्तविमानमित्यर्थ ॥ भक्खाडमी ॥ चतुरस्र मतोतएव वेदिका मंडमावारसचना एताभिर्वेव क्रमात्येयावलिकाप्रविष्टानि भवंति पुष्पावकीर्णानि त्वन्यथापीति भवन्तिपावमाया सक्षेसुपत्थडेसु मज्झेवट्टंघयतरंतसं

तिसठिया विमाणा प० त० वट्टा तसा चउरसा । तत्थणजेते वट्टयिमाणा तेणपुक्खरकण्णियासठाणसठिया सव्वतसमतापागारपरिक्खित्ता एगदुवारा पन्नत्ता । तत्थणजेते तस यिमाणा ते सिंघाडगसठाणसठिया दुहतपागारपरिक्खित्ता एगतवेइयापरिक्खित्ता तिदुवारा प० । तत्थण जेते चउरसयिमाणा तेणक्खाडग

देवता उद्योतपामें ॥ तीनसंस्थानना प्राकारना विमानकह्या तेकहेछे । याटला कमलनी कर्णिकाने आकारें त्रिकोणा सघाडाने आकारें चोखूणा । तेहमां जे याटला विमानछे तेपुष्करकर्णिका तेकमलनो मध्यभाग तेसंस्थितरहियाछे तेविमान सगला चोफेर प्राकारकोट सहितछे एकद्वार बारणाना कहि या । तिहां जे त्रिकोणिया विमानछे तेविमान सघाडानें संस्थाने संस्थितछे बपासें प्राकार कोटसहितछे एकपासें वेदिकायें सहित छे तीनद्वार तेहनें कहिया । तिहां जेचउरंस विमानछे तेसर्वं अखाडो चउरसहोय तेहनें संस्थाने संस्थितछे सर्वदिसें सघले वेदिकाये परिक्षिप्त च्यार बारणा

पर्यंतरपउरंमं पुणोविमदंपुणोतर्स ॥ १ ॥ वहंबहमुवरिं तर्सतसग्वठपरिछोद्र पउरंसेपउरंसं वर्द्वुतविमाणसेठीभो ॥ २ ॥ वट्टंवरमंथिव तंसंसिंघाडयंविव पिमार्य पउरसविमाणंपिय पक्खाडगसंठियंमपियं ॥ ३ ॥ सव्वेवट्टविमाणा एगदुवारावर्यतिविमेसा तिविमतंसविमाणा घत्तारियदौतिपउरंसे ॥ ४ ॥ पागारपरिक्खिता वट्टविमाणावलतिसव्वेवि पउरसविमाणाणं पउदिसिंवेइयाहोर ॥ ५ ॥ जत्तोवट्टविमाणे तत्तोतसस्सवेइयाहोर पागारोबोधव्वो पवसेसे विंतपासेषि ॥ ६ ॥ मावलियासुविमाणा वट्टातंसातहेवपउरंसा पुप्फावगिण्णयापुण ववीमविडरूवसंठाणंमि ॥ ७ ॥ प्रतिष्ठान सूत्रमेयं विमणमा धवत ह्विपरााणा सुरमवणाहोतिदोसुकप्पेसु तिसुवाउपट्टाणा तदुभयसुपट्टिमातोसु तेणपरंउवरिमया प्रागासंतरपट्टियासव्वेति ॥ ८ ॥ पवकिताणि मारतानिवेकियाणि भोगार्थं निष्पादितानि यतो मिविस भगवन्तो पाहेव भंते सव्वे देविंदे देवराया दिव्वाइं भोगभोगाइं मुंजिउकामे भवइ से कथ मियाणिं पकरेइ गोयमा ताहेवणं से सव्वे देविंदे देवराया एग मह नेमिपडिरूवगं विउव्वइ [नेमिरिति चक्रधारा तद्वत्तं विमानमित्यर्थः] एगं जोयण

गसठाणसंठिया सव्वंसमंतावेइयापरिक्खित्ता चउदुवारापन्नत्ता । तिपइठियाविमाणा पन्नत्ता तंजहा घणो दहिपइठिया घणवायपइठिया उवासंतरपइठिया । तिविहाविमाणा पन्नत्ता तंजहा अवठिया वेउव्विया

तेहने कहिया ॥ त्रिणने आधारें विमाण प्रतिष्ठित रहियाछे तेकहेछे । पहिला बे देवलोकना विमान घनोदधिनें आधारेंछे तीजा चोथा देवलो कना विमान घनवातने आधारेंछे पांचमा छठा सातमा आठमा देवलोकना विमाण घनोदधि घनवात ए बेन आधारें छे । नोमांथी उपरनां वि मान आकाशने आधारछे ॥ त्रिण प्रकारें विमान कहिया तेकहेछे । अवस्थित शाश्वता । वैक्रिय ते देवागमांतु भोगकरवानें अर्थे नवोन उपजावे । जसी

प्रथमकस्य पायामविकंभेण मित्यादि यावत् पासावडिसए सपरिवारे तत्वर्थ से सवे देविंदे देवराया महडिं भममविसीदिं सपरिवाराविं दीहियमपि
विहंसारोपचय मंचमाचोपचय सर्धि महयाचतनावदिसाईभोगभोगाई भुंजमाणेविहरइत्ति परियासतियम्बोचावतरवादि तत्प्रयोजनं सेपान्तानि
परियाविस्रानि मासकपुष्पकारोभि पचमामागोति पूर्वतरसूत्रेषु देवा उक्ता पधमावैक्रियादिसाधर्म्योगारका विरूपमवाद । तिमिवेत्वादि । सार्द्ध मार
का दगगता निरूपिता मैवामपि जीवा एवंविधा एवेत्यतिदेशमत गोवामाव । एवमित्यादि । गवार्थं नवर । विगलिंदियवर्ज्जेति । नारकवत् दंडक चि
धा वाच विकलेन्द्रियाम् वर्जयित्वा यत इविम्यादीनां मिथ्यात्वमेव विविधतरिम्रियावात्तु न मियमिति विविधदर्शना च दुर्गतिसुगतिभोगात् दुर्गता
सुगता च भवन्तीति दुर्गत्यादिसूत्रलाव सूत्रचतुष्टयमाव । तयोरत्वादि । सर्वं परं दुष्टागतिर्दुर्गतिः मनुष्याणांदुर्गति विवचयेव तत् सुगतिं रूपमिधाय्यमा

परिजाणिया। तिविहा णेरइया पन्नत्ता तंजहा सम्मादिठी मिच्छादिठी सम्मामिच्छादिठी एवंविगलिंदिय
वज्जा जाववेमाणियाण। तउ दुग्गईउ पन्नत्ताउ तंजहा णेरइयदुग्गई तिरिक्खजोणियदुग्गई मणुस्सदुग्गई।

प्रयोजन ते जाणवायाने अर्थे पासक विमान मनुरायपादे ॥ त्रिणप्रकारें नारकी कहिया तेकहेछे । मैत्रियादिके सरीखाव माटे नारकी कहिया
एक समकितदृष्टी बीजो मिथ्यादृष्टी त्रीजा सम्यग् मिथ्यादृष्टी कांइक समकित कांइक मिथ्यात्व एम विकलेन्द्री सांच वर्जीने यावत् वैमानिकतांई
चोवीस दंडके ए तीन बोलजाणवा ॥ त्रिण दुर्गति मांठीगति कही तेकहेछे । नरकनी दुर्गति एक तिर्यंचयोनिनी दुर्गति बे मनुष्यनी दुर्गति चण्डाल
नी चय ॥ त्रिण सुगतिकही तेकहेछे । मुक्ति तेसुगति एक देवतानीसति तेसुगति बे मनुष्यनी सुगति उत्तम कुलादिक त्रय॥ त्रिण दुर्गतिगया कहिया

गत्वात् दुर्गता दु:स्था सुस्था सुगता सिद्धादिसुगताश्च वपथिन सती भवन्तीति तत्स्वरूपपरिवर्तनविशेषमाह । चउत्थेत्यादि । सूत्राणि चतुर्थं यावता
नि येनरं एकं पूर्वदिने द्वे उपवासदिने चतुर्थं पारणकदिने भक्त भोजन परिहरती यत्र तपसि त चतुर्थभक्तं तपयाप्ति स चतुर्थभक्तिक स्तस्य एवमन्य
त्रापि मभक्तपतिमाप मेतत् प्रवृत्तिसु चतुर्थभक्तादि मन्त्राणा मेवाप्युपवासादिष्विति भिक्षयमोक्षं यम स्तस्यानुकारितायाथस्य सभिक्षु भिंगत्तिया च
धमिति भिक्षु पान पानकानि पानाधारा उत्स्वेदेन भिक्षत सुस्वेदिमं येन मोवादि पिष्ट सुरायर्थं उत्स्वेदते तथा ससेकेन भिर्वृत्तमिति संसेकिमं भर
पिकादिपत्रयाव मुल्याम येन शीतलजलेन संसिच्यते तदिति तंदुलधावनं मतोवमेव विशोरकादि तत्तमपावनपयं मवर दुधोदयं मौसुरमं २ भाया

तऊं सुग्गइऊ पण्णत्ताऊ तजहा सिद्धिसोग्गई देवसोग्गई मणुस्ससोग्गई । तऊंदुग्गया पण्णत्ता तजहा णेरइ
यदुग्गया तिरिक्खजोणियदुग्गया मणुस्सदुग्गया । तऊंसुग्गया पण्णत्ता तजहा सिद्धसुग्गया देवसुग्गया मणु
स्ससुग्गया । चउत्थभत्तियस्सण भिक्खुस्स कप्पति तऊंपाणगाइं पडिगाहित्तए तजहा उस्सेइमे संसेइमे

तेकहेछे । नरकमा गयो ते दुर्गतिमयो एक तिर्यंचनी योनिमागयो दुर्गतेमयो बे मनुष्य चांडाल प्रमुखमांगयो तेदुर्गतिगयो त्रण ॥ अथवा सुखीया
कहिये ॥ त्रिण सुखीया कहिया तेकहेछे । सिद्ध मुक्तसदैव सुखीया एक देवता सुखीया बे पुण्यवंत मनुष्य सुखीया त्रण ॥ चतुर्थ भक्त एक उत्तरपा
रणे एक पारणे भक्तमुके बेउत्त उपवासमा एव चतुर्थ भक्तना करवहार साधुने त्रिण जातिना पाणी लेवा ते कहेछे । उत्स्वेदिम ते लोटी प्रमुखनो
पिष्ट लोट मदिरार्थे । पत्र शाक पापीने शीतलजलपी सींचिये तेसस्वदिम । चोखानु घोवण ॥ पत्रभक्तना करवहारने सूजे कल्पे त्रणि पाणी

मथ मवशावर्ष मोवीरच काञ्जिकं गुड विवट सुष्णोदक २ उपहृत सुपहितं भोजनस्थाने ढौकित भक्तमितिमाव फलिकं प्रवेचकादि १ तथ तदुपहृतं चेतिपनिक्षापहृतं भवच्छोताभिधानपंचमपिंडेषणाविषयभूतमिति यदाह व्यवहारभाष्ये फलिकंपहेयमाद वंजणभक्खेहिंवाविरहियंतु मोगुमवखावहियं पंचमपिंडेसणाएसति ॥ १ ॥ तथा मुत्र ममेपहृतं गुडोदनच तदुपहृतचेति गृहीपहृतं एतचा समेपाभिधानषतत्वेयणाविषयभूतमिति तथा संसृष्टंनाम भोसु वामेन गृहीतं पूरादौ चिमेकस्य विमोन तावमुखे चिपति तथ सेपासेपवारचसभावमिति यदेवंभूत सुपहृत ससृष्टोपहृत मिए चतुर्थपणालेन भवनीयं नेपानेपकतादिरूपत्ता दर्भेति भवगाथा मृदंचमसेरवर्कं भवचनसहोदकाभवेसवं ससंडपाउत्त [भोक्तमारब्धमित्यर्थः] सेवाकमसेवदंपाविति ॥ १ ॥ इवच षय एकादिविसंयोगे समाभिपडवंत साधवो भवन्तोति भवच्छोतनामयेनकेमपि प्रकारेणदायकेना त्त भक्तादि यदिति भत्त पकारा समुच्चयार्थो

घाउलधोयणे । छठ्ठभत्तियस्सण भिक्खुस्स कप्पति तओ पाणगाइं पडिगाहित्तए तंजहा तिलोदए तुसोदए जवोदए । अठ्ठमभत्तियस्सण भिक्खुस्स कप्पति तओपाणगाइं पडिगाहित्तए तं० आयामए सोवीरए सुद्ध वियडे । तिविहे उवहडे पण्णत्ते तंजहा फलिहउवहडे सुद्धोवहडे संसठ्ठोवहडे । तिविहे उग्गहिए पण्णत्ते

सेया तेकहेछे । तिलनुं धोवण । थूहीनुं पाणी । जवनु धोवण ॥ अठ्ठमभक्तना करनार साधुने सूझे त्रण पाणीसेया तेकहेछे । ओसामण कांजीनुंपाणी शुद्ध वियड गरमपाणी ॥ त्रणप्रकारे उपहृतकहियें तेकहेछे । पीसयामे काढ्यो तेहवे साधुआव्यो थके आपे से भोजनने थर्फे भास्या भाहारने । शुद्धओदन हायनहरभाये तेहयु भाप्युं तेभजिगृहवतसाधुने कल्पे । जिमवारें मूहियोमांहि हायघाल्यो तेससृष्ट ॥ त्रणप्रकारें भवग्

पत्रप्रक्षाति भादत्ते कर्मेन गलक प्रश्नावशेत मेनच यच्छोपितेमीति एवंच प्रश्नाख्यापरिवेषन पिटकाया भूरं प्रशोला समै सातुकामस्तजात मे येमु मुपस्थित क्षेत्रेण भवितं मासेहि यथावसरे मासेन साधुना यमयाभितं तत परिवेषको भवति प्रसारम सापोपार्थ तत साधुना प्रसारिते पा न चित्र मोदनं इत्य संयतस्यवोमने यत्क्षेत्रेण इत्याप परिकर्मितो भाव्य यमगादि प्रवमिति यवन्म माञ्जतं पावमिति इत्य प्रपवारभाप्यशोक मुक्षमापत्रक्षितं पठिविवंचतेचपो अवयोपमर्जतं प्रश्नपरिवर्तर्वेचि ॥ १ ॥ तथा यच परिवेषक आत्मा इविवसनु संचरति भवमाजना शोजम भाजनेषु विपति तथा यच्छोतमिति मन्नम प्रोक्तोच पवसाचारमार्थनु भहंतो [परिवेषकमित्यर्थ] योजदायपो दवेन्यावविपीतत्तो क्षाएसंवि दसवति ॥ १ ॥ तथा यच मज्ज भाजने पिठरादिमुखे विपति तथा यच्छोतमिति एवंचाच प्रश्नाख्या भूर मवक्षाहनमिमित्त कांचिकादि भाजने विचारो तानदये चिरं ततो भक्तिकेभ्यो इत ततो मुखार्थ यत् भूय पिठरको प्रकाशमुखे विपति इत्यात् परिवेषयतीतिया प्रकाममुखे भाजने तते क्षतोप मत्यच्छेत योजोप भुत्तसेसंतुजभूपो मुर्भतोपिठरोदये संबाईतोपयवश्च भासुर्मसिपएसपत्ति ॥ १ ॥ ननु भाजेमुखे यत् प्रमिपतीति मुखोंसं स ति किं पिठरादिमुखे इतिप्राख्या यतत्पत्ते एव प्रवेपम्याख्यान मयुक्तमिति कुमुम्माभावादिति भाष्य पक्षेत्रएदुमुक्खा पाएसोकुक्खमुहाईसुति

तजहा जयहंगिएहइ जयसाहरइ जयध्यासगंसि पक्खिवइ ।

इति कोइक्कारखे सावके भाववों पर्वासत्तमोथी जाव । उदेशारहायें करी थाये । जेकूरादिक मीशकामीमा भास्तुं थाये । जे एकपिंड मुख मां चाख्यो एवव साधुभावो धर्मसामग्रीपो तेभाये योजीचार हाथपाख्यानधी ॥ भाहारना अधिकारमांठे अमोहरीतु कहेये । अमाप्रकारें भ

पवम मून मदरं यस्य मोऽपमादरः पवमं चोदर मवमोदरं तद्भावो ऽवमोदरता माऊतत्वात् ॥ मोमोदरियत्ति। भवमोदरमवा मरच मवमोदरिका गुल्प तिरैवेघ मम्व प्रछति मूलतामाचे तन प्रवमा जिनकल्पिकादोमा मेश म पमरम्वेपां मास्रोयापभ्रभावेति समपर्यवमाभावादिति यतिरिक्ता गच्छवता पा मोदरते सूत्रप चंसहरठवमारे उवगरनंतसिवोरठवमरर्थ मररयमविमरचं भवभोयअयंपरिहरतोघ ॥ १ ॥ मतव यवमूलामो भवतीत्यर्थ भत्त पामावमादरता पुन रामोवात्मोवाहारमामपरित्यागतो वेधितव्या इत्युक्तंच यत्तोसुकिरववसा भाहारोकुच्छिपूरभोभविमो पुरिसस्समहिसियाए भट्ठावोसंभवेकवला ॥ १ ॥ कवलाणमपरिमाचं कुक्कुडिमंडगपमाचमेत्तंतु जोवाभविगिमवचो भमर्चमिकुइम्मयोसत्माति ॥ २ ॥ २ इयंपाट १ हादस २ पोडम १ चतुर्विमत्वेकविंमदते भवठे वमेचा स्याहारादिसंबिता पवविधा भवति उक्तंच भप्पाहार १ मवड्ढा २ दुभाम ३ पत्ता ४ तहेवकिंचूणा ५ भट्ठदुवा लस १ सोलस चउवोस ३ तहेक्कतोसायत्ति ५ ॥ १ ॥ एवमनेना नुसारेच पानेपि वाच्या भमवमा मप्युक्तं यत्तोसकुक्कुडिभंडमपमाचमित्ते कवठे माहारमा हारिमाचे पमाचपत्तेतिवत्तर्व्वसिया एत्तोएगेणाविकसवेच ऊचग भाहारेमाचे समचेनिम्मवे नोपागामरसभोइतिवत्तव्वंसियंति भावेमोदरता पुन' क्रोधा

तिविहाउ मोयरियाउ पण्णत्ताउ तजहा उवकरणोमोयरिया भत्तपाणोमोयरिया भावोमोयरिया । उवग रणोमोयरिया तिविहा पण्णत्ता तजहा एगेवत्थे एगेपाये चियत्तोयहिसाइज्जणया । तछठाणा णिग्गथाणवा

पोदरी तेकहेवे। उपकरणनी भवोदरी जिनकल्पीमेयाय बीजानेनथी । भात पाणीनी भवोदरी बतीसकवलमांथी थोडो आहार लेवो । भावनी भवोदरी क्रोधादिकनो त्याग ॥ उपकरणनी भवोदरी त्रणमकारेकही तेकहेवे ॥ एक वस्त्रराखे । एक पात्रराखे । थियत ते संयमी तेहनी उप

द्विमाग उतंच कोशार्द्रवमदद्विषं वामोजिवमयबमावबाधोय भावेबोनोइरिया पवत्तावोमरागेहिंति ॥ ६ ॥ उपमरणावमोइरियाया भेदानाह । उ
पमरणेत्यादि । एव वर्स जिनकल्पिकादे रेवैव पावमपि एवं पायजिपवप्पिमाणमितिवचनाद्दिति वर्त्ता चिवत्तेवर्सवमोपमारमोयमिति मौत्मा मसिमा
शावमोमवरणेन वापि म तमवा समसिमो समतम उपधी रजोहरणादिवस । पारम्बवसत्ति । सेवा मिवत्तोवत्तिसारम्भववत्तिविवत्तेसेत्ति । प्रागुक्तमेव
विपययभेदान् सकलानाह । तपोरत्यादि । सर्वविन्तु पत्तिवाय मपम्वाय पसुवाय दुम्वाय पममाय पमुक्तवाय पमिम्बेयसावा मोचावा नागुगामि
कलाव म यभागुर्यवासेवि सूभनवा पात्तसरवरवे ववरवता गम्योपम्वाद्दिदोपोत्रावनयमप्रवपम पपम्यानता पात्तरौद्रध्याविलमिति ८ उक्कवि

णिग्गथीणवा ग्रहियाए ग्रसुहाए ग्रक्कमाए ग्रणिस्सेयसाए ग्रणाणुगामियत्ताए नवइ तजहा कूग्रणया
कक्करणया ग्रवज्झाणया । तउठाणा णिम्गथाणवा णिग्गंथीणया हियाए सुहाए स्कमाए णिस्सेयसाए ग्र
णुगामियत्ताए नयइ तजहा ग्रकूयणया ग्रकक्करणया ग्रणवज्झाणया । तउसल्ला पन्नत्ता तजहा मायासल्ले

पि रजोहरण मुहपत्तीनुं राखवु ॥ ए पूर्वे कहिया तेहीज विपरीत कहेछे । त्रण पामल साधुने तथा साध्वीने यहित मांठा प्रसुखने कारे
होय पचमाने कावेहोय पमोचनें कावैहोय ससारमां पारपामिवानें नयाय तेकहेछे । मातेस्वरें रोवूं । करकरवूं सम्यामांठी उपधिमांठी एम
बोप काढीमे । खोटुं ध्यान ध्यावचुं ॥ त्रण पामल साधु तथा साध्वीने हितना कारण सुखना कारण समामा कारण मोक्षनो कारण संसार
ना पारने पामवहार थाय तेकहेछे । दुःख पाम्यो थातेस्वरें रोवैनथी । मगजा उपधिमां दोषकाढी गर्हेनथी । भातरौद्रध्यान करैनथी ॥

पयपसूर्ने स्याम ८ निर्पेभागा मेज परिहतव्यं चयमाह । तपोरम्यादि । मखते बाध्यते घनेनेति मख्य द्रप्यत स्तोमरादि भौयवस्तु दर्द विविधं माया मिज्ञति मेवमय्यं मायायय्यं एवं सवच ममर निरतरी दायते भूयते मोचयख मनिंयमप्रमपर्यादिसाध्वं कृमयमर्भमखमतवचम मनेन देवर्ग्रादिमाव मपरिचाम निमित्तममेनेति निदानं मिथ्याविपरीत दमनं मिथ्यादयममिति । १ । निर्पन्यागामेव चरिविशेषस्य कारणचममाह । तिशोत्यादि । सं भिमामभूतुता विपुलापि विस्तोर्णापिसतो भव्ययादिर्वामख्यत् पुरम च्चादिति तैजोलेश्या तपोजिमूर्तिर्व तेजखित तेजसमरोरपरिचतिरूपं मयाव्या सावय्य येन ससंनिमविपुलतेजोलेश्य मातापनाना मोतादिभि शरीरस्य संतापनाना भाव मातापनता मीतातपादे सवनमिमर्थं तवा चांता क्रोध निपदेव चमा मर्षय मलमतलयेति चांति चमा तया भायामवेन पारवनवाता दम्मच तप कर्मचा पहादिनेति चमिचोयतेच भमयलां वेबंमोसासो

एगाएसमहाएबुमासपिंडियाएएगेयवियडासएवं चाउंचेयं पविपिसितेपंतवोकम्मेयंउड्ढंबाहाचोपगिज्झियपगिज्झियसूराभिमुहेपायावपभूमीएपायावेमा

येविचरद सेषघतोवखहमासावसखित्तविपुलतेसलेसेभवदत्ति ११ । तेमासियमित्यादि । भिक्षुप्रतिमा साधो रभिग्रहविशेषा स्थाय चाइय तन्नं कमा

णियाणसहे मिच्छादसणसहे । तिहिठाणेहि समणेणिग्गथे सखित्तविउलतेउलेस्से जयइ तजहा श्रायाव

वली साधुने त्रच वाहया तेकहेछे । त्रच शल्य कहिया तेकहेछे । माया शल्य कपट तेहीजशल्य । देवरिद्धि पामिवाने नियाणु करिवु । मि थ्यात्वशल्य एह त्रच वांछिया । त्रच थानके साधु श्रमण संक्षेपे लघुकरें मोटी परि तेजोलेश्या थाय तेकहेछे । आतापना शीत तापादि स हवाने तेजोलेश्यापामे आतापना मथाय । चमा करवाने शक्तिकर्ते तेषमा । पारवाना कासधी अम्यकाल वेलो तेलो इत्यादि तपस्या तेजोलेश्या

सिमादवो मासोत्तरा सत्ततिया पत्तरामिंदियममाया प्रवेर्ध एकासीरामिको एका एकरामिकी उत्तय मासाईसततता ७ पठमा १ वितईय २ सत्तरादरिया १ पवरात ११ पमराई १२ भिक्खुपडिमावयारसमेति ॥ १ ॥ भव मन भाषाव पडिवज्जइएयामो सववचविईसुमोमजासत्तो पडिमा मोमाविमपासपंगुरवामपयामो ॥ १ ॥ गच्छोविससिग्यामो यापुब्बादसमवेपसंपुमा नवमस्सतइयवत्थू बोरपयबोहुवाभिगमो ॥ २ ॥ मोसट्टपत्तदे हो उवसम्मसहोजवेवजिपवप्पो एसयमाभिम्मपिया भत्तपपतेपवत्तस ॥ ३ ॥ मच्छाविविवित्तमित्ता पडिवज्जइमासियंमहापडिमं दत्तेगभोयणस्स पाव पविएमजामास ॥ ४ ॥ पच्छागच्छमुवेई एवदुमासीतिमासिवासत्त मवरदत्तिविवड्ढी बासत्तउसत्तमासीए ॥ ५ ॥ तत्तोमपढमोयहु इयराइदपठमस तराईहो तोएपउत्थवउत्थेर्ण भपाणएवंपवमिसेसो ॥ ६ ॥ तवासामम पठमसत्तराइंदिया भिक्खुपडिमं पडिवमस्स मवमारस्स कप्पइ से चउत्थे णं भत्तेणं अपाणएणं वहियागामस्स सेवारि उत्ताणमपासगी नेसज्जीवाभिठाणठाइत्ता इमउपसग्गेघोरे दिव्वाइसवइसपविकंपो ॥ १ ॥ दोचाविएरिसचिय वहियागामाईयासमवरहु उमउवमंडयाइ संठाणतिउवठाइत्ता ॥ २ ॥ तचाएविएवं नवरठाणंतुतस्सगोदोहो वीरासणमहवावी ठाएज्जवअंबखु ज्जपो ॥ ३ ॥ एमेवपसोराइ छट्ठमत्तंमपाणमंनवरं गामनयराणवहिया वग्घारियपाणिपठाणं ॥ ४ ॥ एमेवएगराईभट्ठमभत्तेणठाणवाहिरमो ईसिंपभारगए अपभिसनयपेगदिट्ठीए ॥ ५ ॥ साहहोविपाए वग्घारियपाणिठाणंठाणं वग्घारि यंमिवसुभो देवमणुसुजहामविवति ॥ ६ ॥ तव पिमासियो व

णयाए खतिखमाए स्थपाणगेणतवोकम्मेण । तेमासियखान्तिस्कुपड्मिम पडियन्तस्स ग्रणगारस्स कप्पति

नवरं ॥ अब मातनी भिखुप्रतिमा अभिगृहमति पडिवज्यो बेवखमार तेहनें कल्पे मूंके भवदाती भोजननी सेवानें नवदात पाणीनी कल्पे मूके ॥

तीवा तो प्रतिपक्षमा त्रिताम्य इति' वक्त् प्रयेपक्षवेति ११ एकरात्रिकी हादमी तो छम प्रतुपालमत' उकार चित्तविभ्रमो रोग' कुष्टादि रातंक' गृहविषूचिकादि' घपीवाली वच सवेति रोमातंक । पालवेत्यादि । प्राप्नुमा घर्षा भुववारिकवधवात् माले समयसापि प्राप्नोति उदाहरोम घर्षम्म

तएणंएगराइयंभिक्खुपडिमं सम्मंअणुपालेमाणस्स अणगारस्स इमे तउठाणा अहियाए असुभाए अखमाए अणिस्सेयसाए अणाणुगामियत्ताए भवति तंजहा उम्मा यंवालभेज्जा दीहकालियंवा रोयातंकंपाउणेज्जा केवलिपन्नत्ताओधम्माओभंसेज्जा । एगराइयंभिक्खुपडिमं सम्मंअणुपालेमाणस्स अणगारस्स तउ ठाणाहियाए सुभाए खमाए णिस्सेयसाए अणुगामियत्ताए भवति तंजहा ओहिणाणेवासेसमुप्पज्जेज्जा मणपज्जवनाणेवासेसमुप्पज्जेज्जा केवलनाणेवासेसमुप्पज्जेज्जा जंबुद्दीवेदीवे

एकरात्रिकी भिक्षुप्रतिमाने सम्यक् पालता साधुने एह त्रणस्थानक अहितनेअर्थे थाय असुखने अर्थे अक्षमाने अर्थे अनिश्रेयसने अमोक्षने असारना पारने अर्थे ते कहेछे । उन्मादने पामे चित्तविभ्रमपाम । घणाकालसमो कुष्टादि रोमातंकपाय । केवलि भाषित धर्मथी पडि भ्रष्टथाय पडे । एह पडसो पडिमा पालते देवादि उपसर्ग उपजे तिवारे अपमोक्षयाय धर्मथीरहोय तहीय भालीसखे ॥ वली तिम एकरात्रिकी प्रतिमा भलीरीते पाले तेसाधुने त्रणस्थानक हितार्थयाय सुखार्थयाय क्षमार्थयाय मोक्षार्थयाय संसारनुं पारपामे तकहेछे । अवधिज्ञान उपजे । मनपर्यवज्ञान उप जे प्रभुना ममतो भावमाके । पांचमु केवलज्ञान उपजे को धीरपणे पाले तो ॥ ए साधुनी क्रियाकही तेकहे भूमिमाकहोय । तेमतीजाने भूमिनु

मा' मतिमाया' सम्यगनशुपालनजन्या' पश्चिमार्धो पुष्कार्धो भवन्तीति द्वयं ११ विपर्ययरूपं एतदनुसारतो पोडशमिति १४ एकरूपाश्चि साम्प्रतमा मानि कर्मभूमिष्वेव भवन्तीति तन्निरूपणायाह । जंबूदीवेत्यादि । सूत्राणि साक्षादतिदेशाभ्यां पञ्च सुगमानि चेति उक्ता' कर्मभूमयो अथ तद्यत्नगधर्म नि रूपणायाह । तिविहेत्यादि । सूत्राणि कानिचित् व्याख्यास्यामः त्रिविधं दर्शनं मदनकोद्रवमिश्रपुञ्जरूपं मिथ्यात्वमोहनीयं तथाविधरूपमनहेतुत्वादिति । १ । रुचिस्तु तत्त्वश्रद्धानं तत्कार्या श्रद्धान २ प्रयोग' सम्यक्त्वादिपूर्वो मनःप्रवृत्तिव्यापारादति प्रकार सम्यगादिप्रयोग उचितानुचितोभयात्मक औषधादिव्या

तओकम्मभूमीओ पन्नत्ताओ तंजहा भरहे एरवए महाविदेहे । एवंधायइसंडेदीवे पुरच्छिमद्धे जावपुक्खरवर दीवड्ढपच्छिमद्धे । तिविहेदंसणे पन्नत्ते सम्मदंसणे मिच्छदंसणे सम्मामिच्छदंसणे । तिविहारुई पन्नत्ता तंजहा सम्मरुई मिच्छरुई सम्मामिच्छरुई । तिविहे पओगे पन्नत्ते तंजहा सम्मपओगे मिच्छपओगे सम्मामिच्छपओगे

स्वरूप कहेछे । जम्बूद्वीपमांहें द्वीपमां त्रिणकर्मभूमिकही तेकहेछे । भरतक्षेत्र । ऐरवतक्षेत्र । महाविदेहक्षेत्र । एमधातकीखंड द्वीपें पूर्वार्द्धमें विषें । यावत् पुष्करार्द्ध द्वीपें पश्चिमार्द्धे एवीज तीनकर्म भूमिनां क्षेत्रछे । एवं पनरेकर्मभूमिक्षेत्र थया ॥ त्रिणप्रकारें दर्शनकहियो तेकहेछे । सम्यग्दर्शन ते शुद्ध तत्त्वनुं सद्दहवुं । मिथ्यादर्शन तेखोटा तत्त्वनुं सरदहवुं । सम्यग्मिथ्यादर्शन तेशुद्धाशुद्ध मिश्र ॥ त्रिण रुचिमननों स्वभाव विशेष तेकहेछे । सम्यक्रुची । मिथ्यारुची । सम्यग्मिथ्यारुची ॥ त्रिणप्रकारें प्रयोग कहिया ते कहेछे । सम्यक्त्वादि सहित मननो व्यापार तेप्रयोग कहिये । समीचीन प्रयोग । मिथ्या प्रयोग । मिश्रप्रयोग ते कांइक सांदु कांइक खाटुं ॥ त्रणप्रकारें व्यापार कहियो तेकहेछे । कार्य

पारवत व्यवसायो वस्तुनिश्चयइति पुरुषार्थसिद्धायमनुष्ठानंवा सच व्यवसायिनो धार्मिकाधार्मिकधार्मिकाधार्मिकायो २ संयतासंयतदेश संयतसचपानो मम्मभिला ह्मभेदेनो व्यमान त्रिधा भवतीति संयमार्सयमदेशसंयमलक्षणविषयभेदा वा व्यवसायो निश्चय सच प्रत्यक्ष वधिमनःपर्यायकेवलाख्य प्रत्यया दिन्द्रियानिन्द्रियलक्षणा विनित्ता व्यात मात्ययिक साध्य मसाधनमस्मारिक मनुगच्छति साध्याभावे न भवति यो धूमादिहेतु सोनुगामी ततो जात मानुगामिक ममनार्न तद्रूपो व्यवसाय मानुगामिकएवेति पचवाप्रत्यय सर्वज्ञमनसच प्रात्ययिकमासवचनप्रभवस्तृतीयस्त्वेवेति इहलोके भव ऐहलौकि का य इहभवे वर्तमानस्य निश्चयो मुष्ठानंवा स ऐहलौकिको व्यवसायइतिभाव मयुपरलोकेभविष्यति स पारलौकिक मस्मिन्परत्र स ऐहलौकिकपार

तिविहेववसाये पण्णत्ते तजहा धम्मिएववसाये अहम्मिएववसाये धम्मियाधम्मिएववसाये। अहवा तिविहे ववसाये पण्णत्ते तजहा पच्चक्खे पच्चइए अणुगामिए। अहवा तिविहे ववसाये पण्णत्ते तजहा इहलोइए परलोइए इहलोयपरलोइए। इहलोइए ववसाये तिविहे पण्णत्ते तजहा लोइए वेइए सामइए। लोइएव

निश्चिने अर्थ क्रियाकरवी तेव्यापार उद्यमरूप । धर्म व्यापार साधुनों आचार । अधर्मनु व्यापार असयती आरंभीनें । धर्माधर्म व्यापार तेदे शविरति श्रावकनों ॥ वली त्रण प्रकारें व्यापार कह्यिो ते कहेंछे । प्रत्यक्ष ते अवधि मनःपर्यव केवलरूप । प्रत्यय व्यापार इंद्रिय मानरूप । अनुगामिक व्यापार ते अनुमान व्यवसाय धूमानुसारें अग्नि जाणवो ॥ अथवा वली त्रणप्रकारें व्यापार कह्यिो ते कहेंछे । इहलोकनों व्यापार वर्तमानभवें परों भावे । परलोक व्यापार जेपरलोकें भोगवे । इहलोक परलोक व्यापार बेभवें भोगवे । इहलोक व्यापार त्रणप्रकारें कह्यिो

लौकिकाइति लौकिक सामान्यलोकाश्रयो निश्चयो मुठामेवा वेदाश्रितोवैदिक समय सांख्यादीनां सिद्धांत स्वाश्रितस्तु सामायिक लौकिकादयो व्यव
साया प्रत्येक त्रिविधा स्तेच प्रतीतएव नवरं धर्मार्थकामविषयो निश्चयो यथा धर्मार्थमूलमिवति धमाय । धर्मश्चशास्त्रादयादमय । कामश्चवित्तंवपुरं
मय । मोक्षमार्गोपरम क्रियासु ॥१॥ इत्यादिरूप स्तवर्ग मनुष्ठानेभ्यो धर्मादिरेव व्यवसाय उच्यतइति ऋग्वेदाद्याश्रितो निश्चयो व्यापारोवाऋग्वेदादिरेवेति
ज्ञानादीनि सामायिको व्यवसाय एव ज्ञानं व्यवसायएव पर्यायमस्मात् इत्यनमपि यथावस्थवस्तु व्यवसायो व्यवसायात्मत्वात् तस्येति प्रतिपादितमेव चारित्र
मपि सम्यग्व्यवसायो व्यवसायएव बोधसमावस्था व्यन परिणतिविशेषत्वात् यथोच्यते धर्मार्थमवाप्तिं विशिष्टविशेषात्मतस्वति तद्धाप्यवारिणायेव म
र्थतत्वमिति धनधान्यादौ निश्चये बोध्यवसायो योबो गुहामम्या घ विषयभेदा त्रिविधइति सामायिकता चास्य सम्यक्त्वत्वाम्यगाश्रितस्य ज्ञानादिषय
प्यवसमवेष्वपि भावादिति धर्मस्य राजकार्यादे यौगिरुपायो वैवोमि साम प्रियवचनादि संपत्तोवधादिरूप परनिग्रह भेदो विनोषितयमुप्रमंप व्येश

...वसाये तिविहे पन्नत्ते तजहा अत्थे धम्मे कामे । वेइएववसाए तिविहे पन्नत्ते तजहा रिउव्वेए जजुव्वेए सामवेए । सामइए ववसाये तिविहे पन्नत्ते तजहा णाणे दंसणे चरित्ते । तिविहा अत्थजोणी पन्नत्ता तजहा

तेकहेछे । लौकिक व्यवहार त्रणवुं । वेदाश्रित तेवैदिक । सामायिक ते सिद्धांताश्रित धर्मक्रिया ॥ लौकिक व्यवसाय वस्तुनो निर्णय तेत्रण
प्रकारें कहिये तेकहेछे । धर्म व्यवसाय पुण्य कमावु । धर्म करिवुं । कर्म व्यापार ते विषय व्यापार ॥ वैदिक व्यापार त्रण प्रकारें त्र
त्रिपी तेकहेछे । रिग्वेदमा ठेकहियो । यजुर्वेदमा ठेकहियो । सामवेदमां ठेकहियो ॥ सामायिक सिद्धांत व्यापार त्रणप्रकारें । ज्ञान ते तत्व
नुं जाणवु । दर्शन तेश्रद्धा । चारित्र संयम ॥ त्रणप्रकारें धर्म राजलक्ष्मीनी जोनि उत्पत्तीकही । तेकहेछे । साम ते प्रियवचनादि ।

पनयमादि वचित दण्डपदस्यागेन प्रदानेन सह तिस्रोर्ऽयोमम पर्यंते भवन्ति पापयोजा परस्परोपकारात्वा द्यर्थं गुणकोतनसम्बन्धस्य समास्थान मायत्या सम्यकामनं ॥ १ ॥ [पञ्चिवेपह्नते दद मापवो भविष्यतीत्याया याजन मायतिसम्यपामन मिति] पापापेमसयासाद्य तथात्वमितिवाप्यवं इति म मययागमे मामपत्रनिर्धरमतं ॥ २ ॥ मधयेदपरिलेयो धनपहरणवा इतिश्वश्रियागमे संक्षोपिविविध स्पत सेवरागापनयनं सर्वपौत्यादमत वा मतञ्जनषभेदस्ये मेदसुनिविध रसत ॥ ४ ॥ संहर्षं पदार्थेतजन वाम्वा पमिमविमृहस पचिोपं मनोमभिष्यतीत्यादिरूपमिति प्रधानतपपमिदं म सम्भासापनाङ्ग उत्तमाधममध्यमं प्रतिदानेतयातस्य मदीवसागुमोदन ॥ ५ ॥ द्रव्यदानमपूर्वच स्वयंमुाहमवसनं देयमप्रतिमोषयादानपवविधंरमतं ॥ ६ ॥ धर्मोऽसर्वो धनसम्पत सर्वमुाहमवत्तनं परस्मैपुदेयं प्रतिमोच मत्यमोषदति प्रयोगपासामेवं उत्तमंप्रपिपातेन सुरभेदेमयोपयेत् मोपमंसमप्रदानं म समतुल्पपराक्रमैरिति ॥ १ ॥ पमन्तरंजोपधर्मो निरूपिता मधुनापुद्रलो स्वभेन प्ररूपयपाह ॥ तिविहापुग्गलेत्यादि ॥ प्रयोग परिणता जीवव्यापारे पतमाविधपरिणति मुपनीता यथा पटादिपु कर्मादिपुवा ॥ मोसत्ति ॥ प्रयोगविस्रसाभ्यां परिणता यथापटप्रयाएव प्रयोगेणपटतया विस्रसापरिणा मेनपा भोगेपि पुराणतयेति विस्रसाभावत स्यात् परिणता पभ्रेंद्रधनुरादिवदिति पुद्गलप्रस्तावा विस्रसापरिणतपुद्गलरूपाणां भरकावासानां प्रतिज्ञान

सामे दंडे जेए । तिविहा पोग्गला पन्नत्ता तजहा पओगपरिणया मीसापरिणया वीससापरिणया । तिप

दंड तेहणुं । भेदपाडी धमसेपु ॥ त्रिवे पुदगलधर्मे कहेछे । त्रणप्रकारे पुदगल तेकहेछे । प्रयोग पुदगल तेजीव व्यापारथी जिमपटवस्त्रादिक । मि श्रपरिणत ते कांइंक प्रयोगथी कांइक स्वभावथी मीपनो । विस्रसा परिणत जेस्वभावथीज परिणाममाप्त जिमवादलमां इंद्रधनुष ॥ पुदगलनां

निरूपणाह । तिपइट्ठियेत्यादि । स्फुटं नवरं नरका नारकावासा आत्मप्रतिष्ठिता आरूपप्रतिष्ठिता तत्प्रतिष्ठानं नभो राह । णेगमेत्यादिनैगम । सा मान्यविशेषग्राहकत्वात् तथानेकेन मानेन मिनोति परिच्छिनत्तीतिनैगम अथवा निगमा निश्चितार्थबोधा स्तेषु कुशलो भवोवा नैगम अथवा नैको गमो ऽर्थमार्गो यस्य स प्राकृतत्वेन नैगम १ संगृह्णन्ति भेदानां संग्रहाति वा तान् संगृह्यते वा ति येन स संग्रह सामान्यमात्राभ्युपगमपरइति । १ । व्य वहरणं व्यवह्रियते वा तेन विशेषेण्वा सामान्य मवह्रियते निराक्रियते नेनेति लोकव्यवहारपरो व्यवहारो विशेषमात्राभ्युपगमपर ३ एतेषां नया नां मतेनेति गम्यं ऋजु अवक्र मभिमुखं श्रुतं श्रुतज्ञानं यस्येति ऋजुश्रुत ऋजुवा तीतानागतवक्रपरित्यागा वर्त्तमानं वस्तु सूत्रयति गमयतीति ऋजु सूत्र स्वकीयं साम्प्रतं च वस्तु नान्यदित्य भ्युपगमपर शप्यते अभिधीयते ऽभिधेय मनेनेति शब्दो वाचको ध्वनि नयति परिच्छिनत्ति अनेकधर्मात्मकं स द्वस्तु सावधारणतये येन वर्त्तेनेति नया शब्दप्रधाना नया स्तेष च शब्दसमभिरूढैवंभूताख्या स्तत्र शपन मभिधान शप्यते वा येन वस्तु सशब्द स्तद भिधेयविमर्शनपरो नयोपि शब्दस्तेति स च भावनिक्षेपरूपं वर्त्तमान मभिन्नलिङ्गवाचकं बहुपर्यायमपिच वस्त्वभ्युपगच्छतीति वाचकं वाचक मतिपाद्य भेदं समभिरोहन्वा भवति ब स समभिरूढ स च नानारोतविशेषेचापि वस्तुन मभिपुरन्दरादिवाचकभेदेन भेद मभ्युपगच्छति घटपटादिवदिति यथा

इठिया णरगा पन्नत्ता तंजहा पुढवीपइठिया णरगा आगासपइठिया आयपइठिया । णेगमसंगहववहा

अधिकारमांटे कहेछे त्रण प्रतिष्ठित नरकछे तेविस्तरा पुद्गलनें आधार नरकछे तेकहेछे । पृथवीनें आधारें नरकावासाछे । आकाशनें आधारें नरकावासा छे । आत्मप्रतिष्ठित नरकावासाछे ॥ नैगम नयते निश्चय अर्थनें सत्तासामान्य विशेष संग्राहक । संग्रहनय तेह सामान्यथोक नेहगु

मन्तार्थो घटते चेष्टत इति घट इत्यादिलक्षण । एवमिति । तथाभूत शब्दो घटादि रथी भाष्यवेव्वेव मभ्युपगमपर एवंभूतो नयो ज्ञेयः भावनिक्षेपा दिविशेषणोपेत व्युत्पत्त्यर्थाभिधानेन सर्वभिन्नति जलाहरणादिचेष्टावंत घटमेवेति तथा सप्तमता मुख्यात् मायो लोकव्यवहारपरत्वाच्च पृथिवीप्रतिष्ठित स नारकावासमिति तत्वं चतुर्थेन मुख्यात् मायामस्तव गच्छतां तिष्ठतांवा सर्वभावानामेवान्तिमाधारत्वात् सुमो नैकान्तिकता भावात्मप्रतिष्ठित्स मिति यथावस्तु मुख्यत्वात् सवभावानां स्वभावस्यवाधिकरणत्वा तदतत्वादव्यभिचारित्वाच्च भावप्रतिष्ठितत्वमिति नहि स्वभावे विहाय परस्वभा वाधिकरणभावा कदाचनापि भवतीति वतयाच वस्तुस्वरूपस्वभावे सत्तापोवेचप्रयोपभि नयिकस्वरूपतयापो मिथे [प्रम्यव] व्याघातवेचेवमि । १ । नरकेषु मिथ्यात्वा इति कस्मूनां भवतीति यथवा नया मिथ्याद्यपरति कस्मा मिथ्यात्वस्वरूपमाह । तिविहेमिच्छत्तेपरणतेइत्यादि । सूत्रादि सम सुगमा नि नवरं मिथ्यात्वं विपर्ययरूपज्ञान मिह नविवक्षितं प्रयोगमिव्यासोनां यथामावववेदना मसद्भावमानत्वात् ततोभमिथ्याभ्रियाद्दोना मसम्यग्रूप

राणपुढयिपइठिया उज्जुसुयस्सआगासपइठिया तिरकसद्दणयाण आयपइठिया । तिविहे मिच्छत्ते पराणत्ते

गूविषु । व्यवहारनय ते लोकव्यवहार सहित सामान्यविना विशेषनु गृहवु । एह व्यवहारनयनें मतें पृथिवी प्रतिष्ठित नरकावे । ऋजुसूत्र तेपन्नगपी भुतनें सम्मुख अतीतानागतविना वर्तमान वस्तु कथाय तेनयने मतें आकाश प्रतिष्ठितवे । शब्दनय ते शब्दलिंग वाचक शब्द नपुंसक स्त्री पुरुष वाची एकशब्दे आवतु । ते शब्दनयनें मतें आत्मप्रतिष्ठित नरकवे । पोतानें स्वभावें रहियावे । जेमाटे सवपदार्थ सवआत्मस्वभावें रहियाछे परस्वभावें गृहतानथी एशब्दनय नरकनविषें मिथ्यात्वभोपति विशेषे थाय ॥ त्रणप्रकारें मिथ्यात्व अक्रियारूप तेकहेवें । अकिरिया तेमिथ्या

तामिथ्यादर्शनाभोवादिवनितो विपर्यासो दुष्ट मयोभगर्लमितिमाव । भविरियत्ति । नभिइ दुःमन्दार्थौ यवा मयोवा दुर्योवत्यव तवा क्रिया दुष्टक्रिया मिथ्यात्वायुपहतत्वा मोक्षसाधक मनुष्ठान यवा मिथ्याइष्टे र्ज्ञानमप्यज्ञानमिति एव मविनयोपि मज्ञान मसम्यग्ज्ञानमिति मक्रियाश्च म योभनाक्रियेवा ता इक्रिया चिविधे अभिधयापि मयोमेत्यादिना क्रियेवोक्तेति तत्र वीर्यान्तरायक्षयोपशमाविर्भूतवीर्येण मना मयुज्यते व्यापायतइति मयो गो मनोवाक्कायलक्षणस्तस्य क्रिया करण व्यापृतिरिति मयोगक्रिया मथवा मयोगे मनःप्रभृतिभिः क्रियते बध्यतइति मयोगक्रियाकर्मेत्यर्थः सा च दुष्ट त्वा इक्रिया भक्रियाच मिथ्यात्वमिति सच मक्रम । समुदाचति । मयोगक्रियैकरूपतया मयोतानां कर्मवर्गणानां । समिति । सम्यक्प्रकृतिबन्धादि भेदेन देशसर्वोपघातिरूपतयाच पादाने स्वीकरणं समुदानं निपातना तदेवक्रिया कर्मेति समुदानक्रियेति मज्ञाना या चेष्टा कर्मेषा सा ज्ञानक्रियेति

तजहा ऋकिरिया ऋयिणए ऋन्नाणे । ऋकिरिया तिविहा पन्नत्ता तजहा पत्तगकिरिया समुदाणकिरिया ऋन्नाणकिरिया । पत्तगकिरिया तिविहा प० तजहा मणपत्तगकिरिया वयपत्तगकिरिया कायपत्तगकिरिया

रवीनी क्रिया । अविनय ते मिथ्यात्वीनु विनय । अनाण तेमिथ्यात्वीनु नाण ॥ अकिरिया त्रणप्रकारें कही मिथ्यात्वीनी मोक्षसाधन क्रिया तेमक्रिया । तेकहेछे । मन वचन कायाने मयोगेकरी कर्मकरिय तेप्रयोग क्रिया । मनप्रमुख मयोगेकरी कोणाकर्म प्रत्तीरीते मगीकार करवा तेस मुदायकी क्रिया प्रकृति बंधे बांधे ते । मज्ञानकवी कर्मबांधे ते मनाण क्रिया ॥ मयोगक्रिया त्रणप्रकारेंकही तेकहेछे । मनप्रयोग क्रिया । वचन प्रयोग क्रिया । कायप्रयोग क्रिया ॥ समुदाय क्रिया त्रणप्रकारें ते कहेछे । प्रथम समयनी क्रिया ते प्रनतर समयक्रिया बेहमें मातरु नथी ।

प्रयोगक्रिया त्रिविधा व्याख्याता अर्थात् सान्तर स्त्रधाने सचार सा अन्तरा साचाणो समुदानक्रियाचेते विषद प्रथमसमयवर्त्तिनीत्यर्थं द्वितीया द्विसमयवर्तिनीतु परम्परसमुदानक्रियेतिभवमावमसमयापेक्षयातु तदुभयसमुदानक्रियेति । मरुभनाणकिरियत्ति । भविसेसियामरथिय सम्यग्दृष्टि मामरणार्थ मरुभनाणंमिच्छा दिट्टिस्सुयंपिएमेवत्ति । १ । मत्यज्ञानात क्रिया मतुहाम मत्यज्ञानक्रिया एवमितरेपि नवर विभङ्गो मिथ्यादृष्टेरव धि मपवा नाने विभङ्गज्ञानमिति व्याख्यात मधिक्रममिथ्यात्वे भविनयमिथ्यात्व व्याख्यानायाव । भविनवेश्चादि । विशिष्टोनयो विनय प्रतिपत्तिवि शेष मानतिपीधो ऽविनय । देमयत्र नमनेपादि स्वागा देमत्वाय समपि मविनयो प्रभुमात्योप्रदानाद्वा वद्धि सदेगत्वायो निर्गत भावप्रमा दाम्यवीयात् गच्छकुटम्ववारेरिति निरालम्बन सम्भावो निरालम्बमता भाग्यवीयानपेक्षत्वमितिभाव पुष्ठासंवना भावेन चोचितप्रतिपत्तिप्रेय प्रेमच देवच प्रेम द्वेषं मानायभ्यात्म्येमदेव मानामिमद्वेष मविनय दृश्यमवमावना भाराध्यविषय माराध्यसंमतविषयं वा प्रेम तथा राध्यसम्मतविषयो द्वेष द्वेष

समुदाणकिरिया तिविहा पण्णत्ता तंजहा अणंतरसमुदाणकिरिया परंपरसमुदाणकिरिया तदुभयसमुदाणकि रिया । अण्णाणकिरिया तिविहा पण्णत्ता तंजहा मइअन्नाणकिरिया सुयअन्नाणकिरिया विभंगअन्नाणकि

परंपर समुदाय ते बीजा त्रीजा समयमां आरंजनी क्रिया । अनंतर अनें परंपर समयनी वेक्रिया ॥ अनाण क्रिया प्रथमकारेंकही ते कहेछे । मिथ्यादृष्टीमां भाव तेअनाण । मति अनाण क्रिया । श्रुत अनाण क्रिया । विभंग अनाण क्रिया मिथ्यात्वीनु अवधि ते विभंग नाण ॥ अविन य तमिथ्यात्व ते प्रथमकारें तेकहेछे । दृशत्यागी ते देशत्यागकरें घणी मातोदे तेहनेंविषें । निरालवता जेहथी कुटमनो आलयमनु अनाव छे ।

विवक्षा चेतो विनय एवा दुक्तश्च सर्वविनतिस्तुतिवचनं तदभिमतेभ्योऽमतविधिविधेय दानमुपकारकीर्तनं ममैवमूर्धमधोकरणमिति ॥१॥ नानाप्रकारो
वा तावाराभ्यतमद्वयेतेतरस्यापचमिश्रेषागपेयस्तेना नियतविषया अविनयइति अज्ञानं मिथ्यात्वमिति उच्यते ॥ अन्नाणेत्यादि ॥ ज्ञानंहि द्रव्यपर्यायविष
याबोध स्तन्निषेधो ज्ञानं तत्र विवक्षितद्रव्य देशतो यदा नजानाति तदा देशाज्ञान मकारप्रश्लेषात अदाच सपत यदा सर्वाज्ञानं यदाविवक्षितपर्या
यतो न जानाति तदा भावाज्ञानमिति अथवा देशादिज्ञानमपि मिथ्यात्वविशिष्ट मज्ञानमेवेति अकारप्रश्लेषं विनापि नदोषइति उक्तं मिथ्यात्वं तथा
धर्मइति तद्विपर्ययं सम्यग्धर्ममाह ॥ तिविहेधम्मेत्यादि ॥ श्रुतमेव धर्म श्रुतधर्म स्वाध्याय एवचारित्रधर्मः मोक्षादिरूपमपधर्मः अयच त्रिविधोपि
द्रव्यभावभेदे धर्मो भावधर्म उक्त यदाह दुविहोउभावधम्मो सुयधम्मोखलुचरित्तधम्मोय सुयधम्मेसज्झाओ चरित्तधम्मोसमणधम्मोत्ति ॥१॥ अस्तिशब्दे
न प्रदेशा उच्यन्ते तेषां कायो राशि रस्तिकाय सचासौ संग्रहा धर्म चेत्यस्तिकायधर्मो गत्युपष्टंभलक्षणोधर्मास्तिकायलक्षणं अयंच द्रव्यधर्मइति धर्म

रिया । अविणये तिविहे पन्नत्ते तंजहा देसच्चाई णिरालंबणया णाणपेज्जदोसे । अन्नाणे तिविहे पन्नत्ते तंजहा देसन्नाणे सव्वन्नाणे भावन्नाणे । तिविहे धम्मे पन्नत्ते तंजहा सुयधम्मे चरित्तधम्मे अत्थिका

अनेक प्रकारे प्रेम अने द्वेष तेविहुं अविनय ॥ अनाण त्रणप्रकारे कह्यो ते कहेछे । जेद्रव्य देशथी नजाणे तेदेश अनाण । जेसर्वथा नजाणे ते
सर्व अनाण । जेद्रव्यथी जाणे पणि पर्यायथी नजाणे ते भावअनाण ॥ त्रिविध धर्म त्रणप्रकारे तेकहेछे । सिद्धांतनो सिज्झाय । चारित्र पंचमहा
व्रत दशविध यतिधर्म । धर्मास्तिकाय धर्म गतिलक्षण एह द्रव्यधर्म ॥ त्रणप्रकारे उपक्रम उद्यम आरंभ तेकहेछे । धर्मनुं उपक्रम श्रुतचरणनुं आ

मतं श्रुतधर्मचारित्रधर्मानुष्ठा वधमा तदियेनमाह । तिविहेत्यादि । सूत्र सुगमानि पर मुपक्रमश्च मुपक्रम उपायपूर्वक आरम्भो धर्म
श्रुतचारित्रात्मके भव स्वा प्रयोजन मस्येति धार्मिक श्रुतचारित्राय आरम्भस्तस्य तथा अधार्मिको ऽधार्मिको संयमाय स्तथा धार्मिक चासौ देशत सं
यमरूपत्वा दधार्मिकश्च तथैवा संयमरूपत्वा धार्मिका धार्मिको देशविरत्यारम्भस्तस्य अथवा नामस्थापना द्रव्यक्षेत्रकालभावभेदात् षड्विध उपक्रम
स्तत्रनामस्थापने सुगते द्रव्योपक्रमस्तु ज्ञशरीरभव्यशरीरव्यतिरिक्त स्त्रिधा सचित्ताचित्तमिश्रद्रव्यभेदात् तत्र सचित्तद्रव्योपक्रमो द्विपदचतुष्पदापदभेदभिन्न
पुन रेकैकोद्विविध परिकर्मणि वस्तुविनाशेच तत्र परिकर्मे द्रव्यस्य गुणविशेषकरणं तच्चि स्मृति तथथा घृताद्युपयोगेन पुरुषस्य वर्णादिकरणं एवं चतुष्पदा
दिकादीनां शिक्षागुणविशेषकरणं तथा चतुष्पदानां हस्त्यादीनां अपदानाञ्च वृक्षादीनां तथाच वृक्षदोहदेन फलादिगुणापादनमिति तथा वस्तुविना
शेच पुरुषादीनां खड्गादिभि विनाशएवो पक्रम इति एव मचित्तद्रव्योपक्रम पद्मरागादि मणे क्षारमृत्पुटपाकादिना वैमल्यापादन विनाशयेति मिश्रद्रव्यो
पक्रमस्तु कटकादिविभूषितपुरुषादिद्रव्यस्येति तथा क्षेत्रस्य शालिक्षत्रादे परिकर्मविनाशौवा क्षेत्रोपक्रम स्तथा कालस्य चन्द्रोपरागादिलक्षणो पक्रम
उपायेनपरिज्ञानं कालोपक्रमस्तथा भावस्य प्रशस्ताप्रशस्तरूपस्यो पायेन परिज्ञानमेव भावोपक्रम यथा प्रशस्तो बोधिमोक्षविद्यामाहात्म्यदृष्टान्ता इत्यैव

यधम्मे । तिविहे उवक्कमे पण्णत्ते तंजहा धम्मिएउवक्कमे अहम्मिएउवक्कमे धम्मियाधम्मिएउवक्कमे । अह

रिय पालवु । अथवा उपक्रम पापारम्भ करवु । धर्मोधर्म उपक्रम ते देशविरति श्रावकनों उपक्रम देशविरति श्रावकर्मे देशविरति संयमथे ते
मठि ॥ अथवा वली त्रण प्रकारें उपक्रम कहिया ते कहै छे । आत्मानें अनुकूल उपसर्गादि भए छते शील रखाने अर्थे जे उपक्रम वेहासवादि

मयमाग् गुताद्रिभिनित्तमाचार्यादिभावोपक्रम एवं धार्मिकस्य संयतस्य च धारिमायर्थं मम्यपेचचासमावागा मुपक्रम तत्स्वरूप स धार्मिकएवो पक्रम तथा पधाम्मिकस्या संयतस्य संयमावं य सो धार्मिकएव तथा धार्मिकाधार्मिकस्य देशविरतस्य य स धार्मिकाधार्मिकरति मथ सामान्यारभेद्रमो पक्रम मेव विभाव तथा भगो गुमूलोपसर्पोदो मोवरमचनिमित्त मुपक्रमो वेचागसादिना विनाम परिचर्मवा भामाबेचा उपक्रमो स्वयम मस्तुन था आपमरति यथा परस्य परार्थेचो पक्रम परोपक्रमरति तदुभयस्य आत्मपरस्वरूपस्य तदुभयार्थेचो पक्रम स्तदुभयोपक्रमरति । एवमिति । उपक्रमसूत्र वत् आत्मपरोभयभेदेन वेयावृत्यादया याथा आतत्तस्य भाव कर्मवा वेयावृत्यं मतादिभि रुपहम्य स्वथा मवेयावृत्यं गच्छमिर्मतस्यैव परवैयावृत्यं स्वामा दिमतिग्रामरकस्य तदुभयवैयावृत्यं गच्छवासिनरति मनुग्रहो भामाद्युपकार स्तत्र आत्मानुग्रहो भवनादिमवृत्तस्य परानुग्रहो वाचनादिप्रवृत्तस्य तदुभया नुग्रह आत्मव्याख्यानमिचरूपचादिप्रवृत्तस्येति अनुशिष्टि रनुशासन तथा मनोज्ञा वाथाशीसेसपसं कर्मभिगधंचमिवीवचाहचसिमो दविहंकर्यापहुच निम्मनि भुंजतीरागदोसेविरति । १ । तथाविधेयमिति ग्रेपदति परानुशिष्टि यथा तातसिमायबेक्खो भवदुक्खनिपीडियाशुपरते हदिसरएपवमा मो

या तिविहे उवक्कमे प० तजहा आयोवक्कमे परोवक्कमे तदुभयोवक्कमे । एव वेयावच्चे अणुग्गहे अणुसि

यिमाग मरण । परनें अर्थे उपक्रम । आत्मानें परने अर्थे उपक्रम ॥ एम त्रण उपक्रम वेयावचमा जाणवा । आत्मानें अर्थे आहार मेयाजाय ते आत्मवेयावच । परगलानने अर्थं । आत्माने गच्छवासीने अथ ते तदुभय वेयावच ॥ अनुग्रह भाचादि उपकारमां पणि त्रण कहि वा । आत्मपन प्रवचना प्रवृत पुरुषने । वाचना दापकने । आतलनुं व्याख्यान शिष्य संपूछादिकमा प्रवृतने ॥ अनुसृष्टी धर्मेभी सिखादेवी मा

एवम्पापयतेर्वति ॥ १ ॥ तदुभयानुमिद्धि यथा कवकविमासता इयावियंपरमपवरस्यपेक्ष ताभीःत्वपमाभो वह्यामिनगुञ्जएपमति ॥ १ ॥ उपा लम्भ इयमेशा मौपिम्ममूर्तिमतिपादनममा सवाम्नो यथा योजगदिश्तेष गुरुवंशज्जमाप्सजन्यं जनकुमसिज्जिवमन्यं मध्याविवेरिपोतुम्भति ॥ १ ॥ परोपालभो यथा उत्तमकुलसंभूपो उत्तमगुरुदिक्षितोतुर्मजय उत्तममापगुणडोषहसवस्यावसिभोपवति ॥ १ ॥ तदुभयोपालम्भो यथा एमसुकव नियतो विवाम्नवृमावजोववोशेपो दुक्खेउवतिजेके वितावविसासवंभोयति ॥ १ ॥ एवमित्यादिना पूर्वोक्तातिदेशो व्याख्यात एवंपाशा परघटना यथेपो पद्मे पाम्पपरतदुभयेरयय भालापका उमा एव मेकैकस्मिन् वैयावृत्यादिसूत्रे तेषम सशी पापाइति मव मुतधम्मेवा उचन्तो मर्वस सभरा' यथा उपा यमतिपादनपरो वाम्यमवश्योवकवा उक्तंच सामादिषातुवादादि कथादिमतिपादिका मर्वोपादानपरमा बुधार्थसमकीर्तिता ॥ १ ॥ तथा धर्मास्य पु रुषार्थोयं प्रधान मतिभासते वधादयिसपुनावे विगवरक्तितंनरमिति ॥ १ ॥ इयंच मामन्दवादिमासममतिरूपा एवंधर्मोपायकथा उक्तंच सुवादानधमार्येषु धमाङ्गेषुमतिष्ठिता धर्मोपादेयतागर्भा बुधैधमकथोच्यते ॥ १ ॥ तथा धर्मास्य पुरुषार्थोयं मधानइतिमीयते पापसक्तपयोस्तस्य धिम्मसरक्तितंनरम् ॥ १ ॥ इयंचो तराध्ययनादिरूपावसेयेति एवंवामकथापि यदाह कामोपादानगर्भाच वयोदामिप्यसूचिका महुरायैमितापुष्याकथाकामस्यवर्णिता ॥ १ ॥ यथा स्मितंमव

ठी उयालजे एवमिक्किक्के तिन्नितिन्नि श्रालायगा जहेव उवक्कमे । तिविहा कहा प० तजहा श्रत्यकहा

स्मामें परनें उजयमें ॥ मोक्षजोदेवो जेमनुष्य जन्मपामी धमनथी करतो इत्यादि भारमामें परने उजयने ॥ एव एकक भालावामां तीनतीन भा लमा पर उजय एह भालाया करिया ॥ प्रथमकारें कथाकही तेकहेछे । अर्थकथा जेद्रव्यविना मनुष्य तय जेहवोछे । धर्मकथा दान शील तप भा

घेवयोनकोटिभि मंकोटिसमे समिघासमोभितं । यवाभ्यतेभ्यैश्रंस्वोपगूहनं मकोटिकोंव्यापितदृश्चिवाभिनामिति ॥ १ ॥ इयमपि वास्तावनादिरूपा यसेयेति प्रवोर्षावा तपस्वी ववमपदर्पवति कथा चरितधर्मनरूपावा मर्वादिविनिश्चया मर्वादिस्वरूपपरिमाणानि तानिव मर्वानामर्जनेषु च मर्जिता नांचरयवि भावेषु चमवेषु च धिमवं दुःखकारव ॥ १ ॥ तवा यमदोषनाविनाधम कामद सवकामिना धर्मएवापवर्गस्य पारम्पर्येणसाधक ॥ २ ॥ तवा मर्धवामाविर्व कामा कामापामीविषोपमा कामानभिलषन्तोपि निष्कामायान्तिदुर्गतिमित्यादीनि मनन्तर मर्वादिविनिश्चय उत्तदति तस्मारचपरप एम्परां निस्तानकामवतारिणीमपि प्रसक्तो भगवपत्रकारेव निरूपमवाह ॥ तथारूपेत्यादि ॥ पाठसिद्धं केवलं पर्युपासना सेवा श्रवणं फलं यस्याः सा

धम्मकहा कामकहा । तिविहे विणिच्छिए प० त० श्रत्थविणिच्छिए धम्मविणिच्छिए कामविणिच्छिए । तहारूवाणन्नंते समणवा माहणवा पज्जुवासेमाणस्स किंफला पज्जुवासणया सवणफला । सेणन्नंते सवणेकिं

वनादि करवी । कामकथा ते कामशास्त्र कोकशास्त्रनी कथा ॥ त्रणप्रकारें विनिश्चय कहियो तेकहेछे । अर्थ विनिश्चय तेअर्थना उपार्जनमां दुख राखतां व्ययमां पवि दुख अर्थ दुखनुंज कारणछे । धर्म विनिश्चय ते धर्मथी वांछितपामे स्वर्गमोक्षनुं साधकछे । काम विनिश्चय तेकामथी वांछित नपामें दुर्गतिमां नाखनारछे ॥ एह निश्चयनुं फल पूछेछे । तथारूप श्रमण माहन ठ कायामां रक्षकनी सेवाकीधानुं स्युं फलछे सेवाकरनारने तेमनी तम श्रवणफलछे साधु धर्मकथादिक स्वाध्यायकरे तेहनो श्रवणथाय तेहीज फलछे । हेभदंत श्रवणनुं सुणवानुं स्युं फलछे ज्ञान फलछे सुणवाथी श्रुत ज्ञान थायछे । हेभदंत ज्ञाननुं स्युं फलछे ज्ञानथी विज्ञान थायछे जे एपदार्थ हेयछे एपदार्थ उपादेयछे इत्यादिनुं जाणवुं थायछे एम एवं चवि

तथा माधवोहि धमकथादिभं स्वाध्यायं कुर्वंतीति श्रवणं तस्यैवार्थां भवतीति ज्ञानं श्रुतज्ञानं विज्ञानं सर्वोदोर्णां हेयोपादेयत्वविनिश्चय ॥ एवमिति ॥ पूर्वोक्ताभिप्रायेण सेवं भंते त्तिवाचे विंफले गोयमा पच्चक्खाणफले इत्यादिना श्यगाकाथदुर्मतथा मनुष्यरचीवा एतदाबोलानि उक्तानुक्तानि पदान्यत्वे तस्मान्नोत्थय । सवचेत्यादि । भावितार्थां नवरं प्रत्याख्यानं निहनिवारेणमतिश्रावरणं संयम प्राणातिपातायवरणं उक्तंच पचाश्रवाविरमण पचेन्द्रि यनिग्रह कषायजय दण्डत्रयविरतिश्चेतिसंयम सप्तदशभेद इति ॥ १ ॥ अनाश्रवोनवकर्मानुपादानमनाश्रवात्लघुकर्मत्वेनतपोनशनादिभिर्भवति व्यवदान पूर्वकृतकर्मजनकत्व दाहनमतिवचनात् कर्मकचवरशोधनमेवा देपृशोधनकतिवचनादिति अक्रियायोगनिरोधो निर्वाण कर्मकृतविकारविरहितत्व सिद्धान्ति कृतार्था भवन्तियस्यां सा सिद्धिलोकाग्रं सेव पर्यवसानप्रति प्रत्यासमनं तदेवपर्यवसानफल सर्वान्तिममफलं यस्यनिर्वाणस्य तत्सिद्धिममपर्यवसानफल

फले णाणफले । सेणन्नंते णाणेकिंफले विन्नाणफले । एवमेएणं अभिलावेण इमा गाहा अणुगतव्वा सवणे णाणेयविन्नाणे पच्चक्खाणेयसंजमे । अणण्हवेतवेचेव वोदाणेअकिरियाणिव्वाणे ॥ १ ॥ जाव साणन्नंते अ

सांभळ्युं ते सेवा थकी एवाथानुं भाव आवतु साधुनी सेवानु फल श्रवण सांभळवुं सांभळवानु फल ज्ञान आवखुं आणवानु फल विज्ञान हेयोपादेयादिकनु आवतुं तेहनुं फल पचखाण पचखाणथी सतर भेदे सयमयाय संयमथी आश्रव नवीन कर्मबंध तेहनुं अनाश्रवथाय अनाश्रवथी लघुकर्मी थयांथी तप अनशनादिक थाय तपथी पूर्वकृत कर्मनु निर्जरावु निर्जराथी मन वचन कायामा योगनुं निरोधिवु योगनिरोधथी कर्मकृत विकारथी रहित थाय यावत् देहर्दत मन वचन कायामां योगनिरोध रूप अक्रियानुं एतुं फलछे निर्वाण मोक्ष फलछे निर्वाणनु देहरत एतुं फलछे सिद्धि लोकाग्र ते

कामाधर्ततीति कालविधाव चतियमेनस्तो मतोऽतीत विधानवत्कारसोपे तीतोवत्तमानस्मतिक्रांतस्वर्य साम्प्रतंत्पन्न प्रत्युत्पन्नोवर्तमानस्त्व ध नपामतोऽमागतो वर्तमानस्ममतो भविष्यमित्यर्थः तत्र भवतिसमामातीत मासोवोवसमानत्व एवमनामसमपति दमात्मतिवत्तमानत्वमिति ॥ १ ॥ कामामामार्ग्यविभाविभज्य तविमेपोत्रिधाविभजवाइ ॥ तिविहेसमयेत्यादि ॥ वासमूचापि समयादयो विभागवायुवेयवत् व्याख्येया नवर ॥ पाम्ममपरियहेति ॥ पुद्गलानाकृविद्रव्याणां आहारकवर्जितानां मौदारिकादिप्रकारेण ममव एकजीवापेक्षया परिवर्तनं सामस्त्येनग्रहणं पुद्गलपरि वर्त्त मववायतानानन्तेनभवति सचातोपिपुद्गलपरिवर्त्तं सचानन्तोत्सर्पिण्यवसर्पिणीरूपइति सचेदं भगवत्यामुक्तं कतिविहेणं भंते पोग्गलपरियट्टे पन्न ते गोयमा सत्तविहे पन्नत्ते तं ओरालियपोग्गलपरियट्टे वेउव्वियपोग्गलपरियट्टे एवंतेयाकम्मामणवइपाणापाणुपोग्गलपरियट्टे तथा से केणट्ठेण भंते एवंवुच्चइओ रालियपोग्गलपरियट्टे २ गोयमा जण्णं जीवेण ओरालियसरीरेवट्टमाणेणं ओरालियसरीरपाओग्गाइं दव्वाइं ओरालियसरीरत्ताए गहियाइं जावनिसट्ठा

तीते पडुप्पन्ने अणागए । तिविहे समए पण्णत्ते तंजहा तीते पडुप्पन्ने अणागए । एवमावलिया आणा पाणू थोवे लवे मुहुत्ते अहोरत्ते जाव वाससयसहस्से पुव्वंगे पुव्वे जाव ओसप्पिणी । तिविहे पोग्गलपरियट्टे

मतिमा कालथायी बोय तेमांहे कालनु स्वरूप कहेछे । त्रणप्रकारे काल कहियो अतीतकाल वर्त्तमानकाल अनागतकाल ते मावर्ते ॥ त्रणप्रकारे समय कहियो तेकहेछे। अतीत वर्तमान अनागत ॥ एम आवलिका आनप्राण थोव लव मुहूर्त अहोरात्रि यावत् सो वरस हजार वरस पूर्वांग पूर्व यावत् उत्सर्पिणी अवसर्पिणी लगि जाणवा ॥ त्रण प्रकारे पुद्गल परावर्त्त ... जो औदारिकादि शरीरे एक जीव रूपीपुद्गल

६ भवंति सेतेणट्ठेणंगोयमा एववुचइ योराखियपोग्गलपरियट्टे २ एवं मेयावयविकाया' तथा योराखियपोग्गलपरियट्टेपर्मते वैषइ कालखमिम्मत्तिब्बइ गो
यमा अणंताहिं उमप्पिणी योसप्पिणीहिंति एवंमेयाणयोति भगवत्लेवमुच्यते योराले १ वेउव्वे २ तेय ३ कम्म ४ माणा ५ पणाण ६ सवणेहिंपासेविसय्य
पोग्गलमुमा पवणावरपरहो इमेसु इमपरहोआहेपगेपणपहसरीरेषे लोगंमि सव्वपोग्गलपरिणामे भवतोमुकत्ति २ द्रव्यपुद्गलपरिवर्तनसहया येग्येनैषका
भभावपरियत्तो भोम्मतोवसेयाइति एतेष समवायस्य पुद्गलपरिवर्तोता सर्वैवत्वोपि तच्छामान्यसमयमयं मेकमावित्वेकवचनान्ततयोतामवगम्य
चेवादिष्वयेवेवचनादिग्यैकवचनादिमुपययाइ । तिविहेत्यादि । एकोषउच्यते ऽनेनोतितिवचन मेकवाचमवचनमेकवचन मेवमितरेपि भथकमेषो
दाहरणानि देव देवौदेवा वचनाधिकारे । भइवेत्यादि । सूत्रवं सुवोधं उदाहरणानित् योवचमाद्दौना मद्दीनद'कद मतोतादीनां त्वतवान्करोतिकारि
यति ववर्भार्ड योवचनीय मादधिकारात्त् पर्यायान्तराणि विज्ञानकोऽवतारयमाइ । तिविहेत्यादि । सूणाषा मेकोमवियवि सष्टाचेय परमयापनामे

पणत्ते तंजहा तीते पडुप्पन्ने अणागए । तिविहे वयणे प० त० एगवयणे दुवयणे बहुवयणे । अहवा तिविहे वयणे प० तंजहा इत्थिवयणे पुम्मवयणे णपुसगवयणे । अहवा तिविहे वयणे प० त० तीतवयणे

समुपता करसें तेपुद्गल परावर्त कहिये तकहेवे । अतीतकालें कीधो वर्तमानकालें करेवे अनागतकालें करस्यें ॥ त्रयमकारें वचन कहियो तेम
वेवे । एकवचन द्विवचन बहुवचन ॥ अथवा त्रयमकारें वचन तेकहेवे । स्त्री वचन नदी नारी इत्यादि । पुरुष वचन घांव घट इत्यादि ।
नपुंसक वचन पुस्त कुंड भाम्य इत्यादि ॥ अथवा त्रयमकारें वचन कहिया तेकहेवे । अतीतकाल वचन करतो हुवो । वर्तमानकालवचन ते करे

शाधभिधानं तत्प्रधानप्रज्ञापना आभिनिबोधिकादिपञ्चधा ज्ञानं एवं दर्शनं चायिकादिविधा चारित्रं सामायिकादिपञ्चधेति समन्वतीतिसम्य गवि परीतं मोचं सिद्धिमतोत्यागुणमित्यर्थ तच्चज्ञानादीनि उपहननंउपघात पिण्डपन्यादेरकल्पतेत्यर्थं तस्यउद्गमनमद्गम पिण्डादेप्रभवस्तस्य तत्सम्बाधा कर्मादय षोडशदोषा उक्तंच तस्यउग्गमोपसूई पभवीपभादिशौतिएगट्ठा सोपिण्डस्सिहपगओ तस्सदोसाइमेहोंति ॥१॥ आहाकम्मुद्देसिय २ पूईक म्मेय ३ मीसजाएय ४ ठवणा ५ पाहुडियाए ६ पाओयर ७ कीय ८ पामिच्चे ९ ॥२॥ परियट्टए १० अभिहडे ११ उब्भिन्ने १२ मालोहडेय १३ अ च्छिज्जे १४ अणिसट्ठे १५ अज्झोयरए १६ सोलसमेति ॥२॥ इत्याभेदविषयया उद्गमदोष एवोद्गमो ऽतस्तेनोद्गमेनोपघात पिण्डादेरकल्पनीयता क

पडुप्पन्नवयणे श्रणागयवयणे। तिविहा पन्नवणा पन्नत्ता तजहा णाणपन्नवणा दंसणपन्नवणा चरित्तपन्न वणा। तिविहे सम्मे प० त० णाणसम्मे दंसणसम्मे चरित्तसम्मे तिविहेउवघाए प० त० उग्गमोवघाए

वे। अनागतकाल वचन तेकरस्ये कायादि आमी ॥ त्रणप्रकारें पन्नवणा कही ते कहेछे। ज्ञान पन्नवणा ते मत्यादि पांचभेदें। दर्शन पन्न वणा ते क्षायिकादि पांचभेदें समकित। चारित्र पन्नवणा सामायिकादि पांचभेदें ॥ त्रणप्रकारें सम्यग् ते अविपरीत मोक्षनु साधवो। तेकहे छे। ज्ञान सम्यक् जीवादि तत्व। दर्शन सम्यक् ते क्षायिकादि समकित। चारित्र सम्यक् पचमहाव्रत एह मोक्ष साधकछे ॥ त्रणप्रकारें उप घात कहियो पिंडशय्यादि अकल्प ते पूर्वे तेकहेछे। उद्गमोपघात ते आधाकर्मादि चितवी साधुनिमित्त कीधो तेदोष। उत्पादनोपघात विद्या मंत्र चूर्ण चिकित्सादिके करी उपजाव्यो। एषणोपघात ते अशुद्धमान शंकितादि आहार ॥ एम विशुद्धि आहारनी शुद्धि पणि ए कहिया ते

रयंचरचम्मरायपसोमरचमुद्दमोपघातउद्गमसमायिच्छादिमसूतेवपघात पाधाकम्मंत्वादिभि र्दुष्टतोद्गमोपघात एवमितरावपि केवलमुत्पादनं सम्पादन यवस्त्वाभिदारेवपाशनमित्यर्थं तदीपाधायोत्पादय पोडय सदाद उप्पायणनिम्मत्त संपायणमायर्वीतिएगहा धाइदारखिवपगयातीएहीसाइमेवौति ॥ १ ॥ धाई १ दूद २ निमित्त ३ भाजीव ४ वणीमगे ५ तिगिच्छाय ६ कोहे ७ माणे ८ माया लोभेय १ हवंतिदसएए ॥ १ ॥ पुव्विंपच्छासंथव ११ वि ज्जामंतेय १२ चुन्न १३ जोगेय १४ उप्पायणाइदोसा सोलसमेमूलकम्मेयत्ति ॥ २ ॥ तथाएषणायाम्हिताद्दोषमानर्पिंडसेषणं तदोषा' महिताद्योद्ये स्यादय एसणमेसणे सणावगहणेसणीतिएगहा धाहारव्विडपमया तीयणदोसाइमेवौति ॥ १ ॥ संकिय १ मक्खिय २ निक्खित्त ३ पिहिय ४ साहरि य ५ दायगुम्मीसे ६ अपरिणय ७ लित्त ८ छड्डिय १ एसणदोसादसहवंति ॥ २ ॥ इत्य सोलसउम्ममदोसा गिहियाउसमुट्ठिएवियाणाहि उप्पायण दोसासाहुउसमुट्ठिएजाणत्ति ॥ १ ॥ एषणादोषास्तू भयसमुत्था इति एवमुद्गमादिदोषे रविद्यमानतया याविशुद्धि पिंडपरपादोषो निर्दोषता माउद्गमादिविशुद्धि उद्गमादोषोभावा विशुद्धियोमा तथैतामेवातिदिष्यनाव । एवविसोही ॥ भागमस्तृतस्य राधना काशाध्ययनादिष्पदस् भाचारेषु मत्स्य निरतिचारपरिपालना ज्ञानाराधना एवंदर्शनस्य निःशङ्कितादिषु चारित्रस्य समितिगुप्तिषु सायोरष्टादिभेदा भावभेदा व्याख्मेयाविति ज्ञाना

उप्पायणोयघाए एसणोवघाए। एवंविसोही। तिविहा आराहणा पन्नत्ता तजहा णाणाराहणा दंसणाराहणा

यपालीस दोष रहित ॥ त्रण प्रकारे आराधना कही ते कहे छे । अतीचार रहित चारित्र पालवुं ते आराधना । ज्ञान आराधना ते काले विणये ए आठ अतीचार टालवा । दर्शनाराधना ते निरशंकियनिकंखिय आठ अतीचार टालवा । चारित्राराधना ते पांच सुमति त्रणगुप्ति

द्विमतिपततमद्यप सक्लिश्यमानपरिणामनिबन्धनो ज्ञानादिसंक्लेशो ज्ञानादिमुविशदो विशुध्यमानपरिणामहेतुक स्वसंक्लेश एवमिति ज्ञानादिविष या एवातिक्रमादय चत्वार एतानाचकर्मोपिच्य चतुर्थमपिमिथ्यत्वं प्राप्तकमार्मतव पडिक्कमामिपरक्कमोवीर पत्रभेयाएवदक्म २ गडिएतदयो ३ म रोमिमिप्पति ॥ ३ ॥ इत्यमेदो तरगुणरूपचारित्रस चत्वारोपि एतदुद्देशेन ज्ञानदर्शनयो सपुण्यचारित्राचारस्य पुस्तकचैत्यादीना मुपघातादि भि प्याहन्या मुपहननायवा निर्मथवमतिवचनादिभि र्भोगदर्शनातिक्रमादयो प्यायोज्याइति ॥ तिस्रईमरक्रमापति ॥ पञ्चा द्वितीयावस्थात् भीनतिक्रमाना मोचयेत् गुरवेनिवेदयेदित्यादिमाव्य मवर यावत्करणात् विसाहेज्जा विउट्टेज्जा अकरणयाए अब्भुट्ठेज्जा अहारिहं तवोकम्मं पायच्छित्तं मित्यभेतव्यमिति पाप

चारित्ताराहणा । णाणाराहणातिविहा पण्णत्ता तजहा उक्कोसा मज्झिमा जहन्ना । एव दसणाराहणावि चरि त्ताराहणावि । तिविहे सकिलेसे प० तजहा णाणसकिलेसे दसणसकिलेसे चारित्तसकिलेसे । एवमसकिले सेवि एयमइक्कमेवि वइक्कमेवि अइयारेवि अणायारेवि । तिण्हमइक्कमाण आलोएज्जा पडिक्कमेज्जा णि

पातवी ॥ ज्ञाननी आराधना त्रणप्रकारें कही तेकहेछे । उत्कृष्टी मध्यमा जघन्या ॥ एम दर्शनाराधना त्रणप्रकारें चारित्राराधना पणि त्रणप्र कारें ॥ त्रणप्रकारे संक्लेश तेकहेछे । ज्ञान संक्लेश ज्ञान भणतो कलेश उद्वेग पामें । दर्शन संक्लेश समकितमा मूंझाये सरदहणा पामेंनथी । चारित्र संक्लेश चारित्र पामतो दुःखपामें ॥ एम असंक्लेश पणि त्रणप्रकारें क्लेशनपामें शुद्ध मनपरिणामें । एम अतिक्रम त्रणप्रकारें । एम व्यतिक्रम त्रणप्रकारें । अतीचार त्रणप्रकारें । अनाचार त्रणप्रकारें ॥ ज्ञानादिकनो अतिक्रम पाप आसीने गुरु आगलि कही पडिकमें निन्दाकरि

च्छेदकत्वात् प्रायश्चित्तविशोधकत्वाद्वा प्राकृते पायच्छित्तमिति युच्यते तदिपत्र शोधनीयातिचारोपि प्रायश्चित्तमिति तत्रविधा दशविधत्वेपि तस्य विस्तारकानुरोधाद्विति तथालोचनमालोचनागुरवेनिवेदन तावद्विमूलतामवतितवैव शुद्ध्यति यदतिचारजातंमिथ्यादुष्कृतदालोचनार्हमिति एवं प्रतिक्रमण मिथ्यादुष्कृतं तदर्हंमवसायमसमितत्वममसत्वेति उभय मालोचनाप्रतिक्रमणलक्षणमर्हतीति सततता मनसोरागद्वेषममनादिसावंमावेव भि क्षाचरियाएसुम्मर परघारोकोविविषयावाएय शौभाघमसमिमोमि तिवाोसवइसायमुत्तोवा सहादएसुराग दोसंचमग्गोमपोतदयर्गमिति ॥ १ ॥ एतेष प्रायश्चित्तस्या धर्मा मायोमनुष्यक्षेत्रएवभवन्तिरिति तदत्वप्यतामाह । जम्बूदीवेत्यादि ॥ इदंच प्रकरणं विस्तारकानुसारेण जंबूद्वीपपदानुसारेणावसेयमि

देज्जा गरहिज्जा जाय पडिवज्जेज्जा तंजहा णाणाइक्कमस्स दंसणाइक्कमस्स चरित्ताइक्कमस्स एवं वइक्क‌माणं अइयाराणं अणायाराणं । तिविहे पायच्छित्ते प० तंजहा आलोयणारिहे पडिक्कमणारिहे तदुभयारिहे । जंबूद्दीवेदीवे मंदरस्सपव्वयस्स दाहिणेणं तओ अकम्मभूमीओ प० तंजहा हेमवए हरिवासे देवकुरा जंबूद्दीवेदीवे मंदरस्स उत्तरेणं तओ अकम्मभूमीओ प० तं० उत्तरकुरा रम्मगवासे एरन्नवए । जंबूमंदरस्स

एतला देये भात्मसाक्षियो निंदें भात्मसाक्षीयें गर्हाकरे परनी साक्षीपी यावत् तप अंगिकरी तेकहेंछे । मायातिक्रमपपो होय ते भालावे निंदे । दर्शनातिक्रम यपो होय चारित्रातिक्रम यपोहोय । एम व्यतिक्रम अतीचार लागो ते भनाचारपणि भालोवे निंदे ॥ त्रणप्रकारें प्रायश्चित्त कहि यो तेकहेंछे । भालोयणनें योग्य । प्रतिक्रमण योग्य । भालोयण प्रतिक्रम येनें योग्य ॥ ए सर्व धर्म मनुष्यक्षेत्रमां छे तेहनुं स्वरूप कहेंछे । ज

पव्वयस्स दाहिणेण तओ वासा पन्नत्ता तंजहा भरहे हेमवए हरिवासे जंबूमंदरस्स उत्तरेण तओ वासा पन्नत्ता तं० रम्मगवासे हेरन्नवए एरवए । जंबूमंदरस्स दाहिणेण तओ वासहरपव्वया पन्नत्ता तंजहा चुल्लहिमवंते महाहिमवंते णिसढे । जंबूमंदरस्स उत्तरेण तओ वासहरपव्वया पन्नत्ता तंजहा णीलवंते रूप्पी सिहरी जंबूमंद रस्सदाहिणेण तओ महादहा प० तं० पउमद्दहे महापउमद्दहे तिगिच्छिद्दहे । तत्थण तओ देवयाओ महिड्ढिया ओ जाव पलिओवमट्ठिईयाओ परिवसंति तंजहा सिरी हिरी धीई । एवं उत्तरेणवि णवरं केसरिद्दहे महा

जंबूद्वीपनामा द्वीपनेंविषे मेरुपर्वतथी दक्षिणदिशि त्रण अकर्मभूमि कही तेकहेछे । हेमवत युगलक्षेत्र हरिवर्ष युगलक्षेत्र देवकुरु युगलक्षेत्र ॥ जंबूद्वीपने विषे मेरुथी उत्तरदिशि त्रण अकर्मभूमि कही उत्तरकुरु रम्यकवर्ष ऐरण्यवतक्षेत्र ॥ जंबूद्वीपें मेरुथी दक्षिणदिशि त्रण वर्षक्षेत्र कह्यिा भरत हेमवत हरिवर्ष ॥ जंबूद्वीपमां मेरुथी उत्तरदिशि त्रण वर्षकह्यिा रम्यकवर्ष हैरण्यवत ऐरवत ॥ जंबूद्वीपमा मेरुथी दक्षिणदिशि त्रण वर्षधर पर्वत कह्यिा ॥ लघुहिमवत पर्वत महाहिमवंत पर्वत निषध पर्वत ॥ जंबूद्वीपमां मेरुथी उत्तरदिशि त्रण वर्षधर पर्वत कह्यिा ते कहेछे । नील वंत पर्वत रूपीपर्वत शिखरी पर्वत ॥ जंबूद्वीपमां मेरुथी दक्षिणदिशि त्रण मोटाद्रह पांणी भरया कहया ॥ पदमद्रह महापदमद्रह तिगिच्छिद्रह तिहां त्रणि देवता मोटी रिद्धिनाधणी यावत् पल्योपमनो स्थितिनाधणी रहेछे तेकहेछे । श्री ह्री धृति ॥ एवं प्रकारें उत्तरदिशि पणि एतलो विशेष जे केसरीद्रह पुंडरीकद्रह महापुंडरीकद्रह ॥ तिहां तोन देवाङ्गना वसेछे । कीर्त्ति बुद्धि लक्ष्मी ॥ जंबूद्वीपमां मेरुथी दक्षिणदिशि लघु

ति मवरमतमदोमांविम्वम पंचविंयत्वधिकबोवनमतमिति पमनरं मनुष्यमेवतयपचितिवयवत्तम्यतोमे तथुमानंमव्तरेवसामागसपविवोदेमयवाम

पोंडरीयद्दहे पोंडरीयद्दहे देवयाठ किती बुद्धी लच्छी । जयूमदरस्स दाहिण चुल्लहिमवताठ वासहरपव्व याठ पउमदहाठ महादहाठ तठ महाणदीठ पवहति तजहा गगा सिधु रोहियसा । जयूमदरस्स उत्तरेण सिहरीठ वासहरपव्वयाठ पोंडरीयद्दहाठ महादहाठ तठ महाणदीठ पवहति तजहा सुवन्नकूला रत्ता रत्तायती । जयूमदरस्स पुरच्छिमेण सीयाए महाणईए उत्तरेण तठ अतरणईठ पन्नत्ता तजहा गाहावई दहवई पकवई । जयूमदरपुरत्थिमेण सीयाए महाणईए दाहिणेण तठ अतरणईठ पन्नत्ता तजहा तत्तजला मत्तजला उम्मत्तजला जयूमदरपच्चत्थिमेण सीठदाठ महाणईएदाहिणेण तठ अतरणईठ पन्नत्ता तजहा

हिमवत वर्षधर पर्वतथी पद्मद्रहनाम महाद्रहथी त्रण मोटीनदी निकसीछे । गंगा सिधु रोहितासा ॥ जम्बूद्वीपमा मेरुथी उत्तरदिशि शिखरी नाम वर्षधर पर्वतथी पुंडरीकनाम महाद्रहथी त्रण मोटीनदी वहेछे । सुवर्णकूला रक्ता रक्तवती ॥ जम्बूद्वीपमां मेरुथी पूर्वदिशि सीतामहानदी थी उत्तरदिशि त्रण अंतर नदीकही तेकहेछे । गाहवती द्रहवती पंकवती ॥ जंबूद्वीपमां मेरुथी पूर्वदिशि सीता महानदी थी दक्षिणदिशि त्रण अतरनदी कही तेकहेछे । तप्तजला मत्तजला उन्मत्तजला ॥ जम्बूद्वीपमा मेरुथी पश्चिमदिशि सीतोदा महानदीथी दक्षिणदिशि त्रण अंतर नदी कही ते कहेछे । क्षीरोदा सिंहस्रोता अंतोवाहिनी ॥ जम्बूद्वीपमा मेरुथी पश्चिमदिशि सीतोदा महानदीथी उत्तरदिशि त्रण अतरनदी कही

तामाव । तिहीत्यादि । अर्द्ध येवच देयरतिभाग पविभ्यारवमभाभिघानामारति । चवेति । मध । भोराखित्ति । छएारा वादरानिपतेंबु विंचसा परिणामा सतीविचरंदेयु रय्यतीयामत्व तबसगेवु यें वमुत्मवोपसमत् । तएचति । ततस्तेनिपतन्तो देयपविव्याचलवेबुरिति पविबोदेय्यवलेदिति म हारमोघ्यतरविशेय । महिड्डिए । परिवारादिना यावत्करवात् । मइच्चुए । मरीरादिदीप्सा । महायचे । माघती महानुमागे वैक्रियादिकरवती । म

खीरोदा सीहसोया अतोवाहिणी । जम्बूमदरपच्चत्थिमेण सीतोदाए महाणईए उत्तरेण तत्थ्रतरणईओ पण्णत्ता तजहा उम्मिमालिणी फेणमालिणी गम्भीरमालिणी । एव धायइखडदीवपुरच्छिमद्धेयि अकम्मभूमीओ आढवेत्ता जाव अतरणदीओत्ति णिरवसेस भाणियव्व जाव पुक्खरवरदीवड्ढपच्चत्थिमद्धे तहेव णिरव सेस भाणियव्व । तिहिठाणेहि देसेहिपुढवीचलेज्जा तजहा अहेणमिमीसे रयणप्पभाए पुढवीए उरालापोग्गलाणिचलेज्जा तएण ते उरालापोग्गलाणिवत्तमाणा देसपुढवीए चलेज्जा महोरएवामहिड्डिए जाव महे

तेऊरेवे । ऊमिमालिनी फेनमालिनी गम्भीरमालिनी ॥ एम धातकीखंडद्वीपें पूर्वार्द्धमां अकर्मभूमियी मांडीनें अंतरनदी लगें विशेष रहित मणवु कहिवु यावत् पुष्करवर द्वीपार्द्धमां पश्चिमार्द्धमां पणि तिमज विशेष रहित जाणवु ॥ त्रणप्रकारें देशथी पृथ्वी चलें हालें ते कहेंछे । हेठें आ रत्नप्रभा पृथ्वीनेंविषें औदारिक पुद्‍गल विस्रसा परिणत बीजलोथी आवीनें पडे जिम ऊंचाथी मोटो पाषाण हेठे पडे तिम आवी पडे ति वारें औदारिक पुद्‍गल पडतांथका देशथी पृथ्वी चले हालें ॥ महोरग ते व्यंतर विशेष मोटी रिद्धिनो धणी यावत् मोटा सुखनु धणी का

हेमको। महेमरत्यान्सायमेति उपम्मनिमम्मिका मुत्पतमिपर्वा कुतोपि दर्प्पादि कारणात् इम्मेंनदेशंदविस्मायवयेत् सचचवेदिति । २ । नागकुमाराणां सुपर्णकुमाराणांच भवनपतिविशेषाणां म्परम्पर संग्रामेवत्तमाने वावमानेसति । देसति । देशयवेदिति । इचेएहिंइत्यादि । निगमनमिति । पुढविस्पादेशम्यचममनुत्त मधुना समस्तावाम्हराव । तिचोत्यादि । सर्व विस्तुवेणचेनवेनवचसा ईयदूनतापेच्नविवचते मत परिपूर्णत्वर्ढ परिपूर्णमायावेति पढिवीभू । पदेति । घनो मनवात समाविधपरिणामो वातविशेषोगुप्येत व्याकुलोभवेत्पूर्व्येदित्यर्थ वत सगुत सन् घनोदधिं तथाविधपरिणामजलमूइनपव मेजयेत्कम्पयेत् । तएचति । ततोनन्तरं सघनोदधि रेजित कम्पित सन् केवलकल्पां पृथिवीं चलयेत् साचचवेदिति देवोवा महि म्परि

सरके इमीसेरयणप्पभाए पुढवीए अहेउम्मजाणिमाजिय करेमाणे देसपुढवीए चलेज्जा णागसुवण्णाणवा संगामंसिवट्टमाणंसि देसपुढवीएचलेज्जा इच्चेएहिंठाणेहिं केवलकप्पा पुढवीचलेज्जा तंजहा अहेण इमीसेरयण प्पभाए पुढवीए घणवाए गुप्पेज्जा तएणसे घणवाए गुविएसमाणे घणोदहिं मेएज्जा सेघणोदहीए एहए

रत्नप्रभा पृथ्वीमां हेठे सपधी उत्पततो ऊंचोपातो निपतनकरतो नीचोपातो तिवारे देशथी पृथ्वी चाले । नागकुमार सुपर्णकुमार भवनपति देवतामें मांहोमांहि संग्रामयुद्ध यातां देशथी पृथ्वी चाले । ए त्रण थानके केवल कल्पा चालो पृथ्वी चाले ते कहेछे । हेठे आ रत्नप्रभा पृथ्वीयें घनवातगुंजे व्याकुलथाय तिवारें ते ऊपर घनवात क्षोभपामें व्याकुलथाय घनोदधिवांपते समस्त रत्नप्रभा पृथ्वी चाले । अथवा को इक महर्द्धिक देवता यावत् महासुखनुं धणी तथारूप श्रमण माहणनें पोतानीरिद्धि परिवार द्युति तेज यश बलशरीरनुं वीर्यजीवनुं पुरुषा

मारादिरूपा पुतिंमरोराद्दे यंय पराक्रमकृतास्माति मर्थपारोर मोयंधोवभमवं पुरुषकारसाभिमानव्यवसायनिष्पन्नक्त ममैवपराक्रममिति बलवीर्येषु
परयमंदि धविम्यादिवमनविमा गमयतीति तदयंव मायकवेदिति देवायवैमानिकादति मसुरामबनपतय स्तेषा मवमत्वसंवैरभवति मभिधीयतेषभगव
मो किवनियण भंते पसुरकुमारा देवा सोहम्मं कप्प गमाय गमिस्सतिय मोयमर तेसिव देवाचं भवपवदए वेराणुमचेत्ति ततव समाम मातनपवत्तंभाने
दमोवये तयतेषां मवाम्यामामत उत्पातनिपातसम्भवादिति । दयेरहोत्यादि । निगममनमिति देवा सुरा संपामकारितया मन्तरभुता सोपदयविया
दन्द्रमामानिकवायस्तिय स्तामयामरयकलोकपालामोवमकोपंका मियोम्यकिल्बिषिकायेवयदतिवचना तम्मध्यवर्तिन स्थियामकायतारित्वा किल्बिषि
कामभिधातुमाव । तिविद्देत्यादि । स्पष्टं चेवर्त । किम्बिसियत्ति । नावस्सयेवसोव भम्मामरियवसंयसाक्रयं । मारंपवमवाई किम्बिसियंभावयंकुव

समाणे केयळकप्प पुढवि चालेज्जा । देवेवामहिड्डिए जावमहेसक्के तहारूवस्स समणस्समाहणस्सवा इड्डिं
जुति जस बल वीरिय पुरिसक्कारपरक्कम उवदंसेमाणे केवळकप्प पुढविंचालेज्जा । देवासुरसंगामंसिवा
वट्टमाणंसि केवळकप्पा पुढवीचलेज्जा इच्चेएहितीहिं । तिविहादेवाकिब्बिसिया पन्नत्ता तजहा तिपलिओवम

दकार बलिमान पराक्रम तेपोतव धी कपमु ते देवादवामें समस्त पृथवीमें चलावे बलवीर्येंपु देवादु पृथवीना चलनविना मथाय । देव वै
मानिक पसुर भवनपति तेहनें भवमरयय वैरपी मांहोमांहि संग्राम मवर्तता समस्त पृथवी चले एह त्रणसी पृथवी चालै । त्रणप्रकारें कि
ल्बिष देवता कहिया किल्बिष ते चांडाल सरिखा । तेकहेवे । एक पल्योपमना आउखाना । एक सागरोपमना आउखाना । तेरै सागर

रति । १ । एवंविधमावमोपात्त किल्विषपाप मुदयेविद्यते येषान्तेकिल्विषिका देवानाम्मध्ये किल्विषिका पापा मथवा देवास्ते किल्विषिकाश्चेति दे वकिल्विषिका मनुष्येपुचण्डालवत्ता स्पर्शा । उप्पिं । उपरि । हिट्ठिं । मधस्तात् । साहम्मीसाणेसुत्ति । मध्ययेसप्तमी देवाधिकारायातं । सनेत्यादि ।

ठिइया तिसागरोयमठिईया तेरससागरोयमठिइया । कहिणन्नते तिपलिउंयमठिईया देया किब्बिसिया परियसंति उप्पिंजोइसियाण हिट्ठि सोहम्मीसाणेसुकप्पेसु एत्थण तिपलिउंयमठिईयादेया किब्बिसिया परिव संति । कहिणं न्नते तिसागरोवमठिईयादेवाकिब्बिसिया परिवसंति उप्पिंसोहम्मीसाणाणकप्पाणं हेट्ठिस णकुमारमाहिंदकप्पेसु एत्थणं तिसायरोयमठिईया देया किब्बिसिया परियसंति । कहिणंन्नते तेरससागरो यमठिईयादेयकिब्बिसिया परियसंति उप्पिं यंन्नलोयस्सकप्पस्स हिट्ठिं लंतगेकप्पे एत्थण तेरससागरोयमठि इया देयकिब्बिसिया परियसंति । सक्कस्सण देविंदस्स देवरणो याहिरपरिसाए देयाण तिन्निपलिउंवमाइ

रोपमना आऊखाना ॥ शिष्य पूछेछे हेभगवन् किहां ते त्रण पल्योपमना आऊखाना किल्विष देवता वसेछे । ऊंचा ज्योतिसीथी सौधम ई शान देवलोकथी हेठें ए ठिकाणे त्रण पल्योपमना आऊखाना किल्विष देवता वसेछे ॥ हेभगवन् किहां त्रण सागरोपमना आऊखाना किल्वि प देवता वसेछे । ऊंचा सौधर्म ईशान देवलोकथी हेठा सनत्कुमार माहेंद्र देवलोकथी एहयानके त्रण सागरोपमनी स्थितिना देवता वसेछे ॥ किहां भगवन तेर सागरोपमनी थितिना देवता वसेछे ऊंचा पांचमा ब्रह्म देवलोकथी हेठा छठा लांतक देवलोकथी एहयानके तेरे सागरोपम

मूलस्य गुणमभिति ऐवोना ममकारं क्षितिदक्षा देवोलव पूर्वभवे समायचितागुष्ठानाद्भवतीति भावविस्तस्य तदताव प्रकपणायाइ ॥ तिविहेत्यादि ॥
मूलस्यगुरुयं मुगमं बेषम् ॥ नाणेत्यादि ॥ ज्ञानायतिचारगुरुयं मकालोपमादिज्ञानादीनां योतिचार स्वकज्ञानमायश्चित्तादि तथाकालाविनयाध्ययना
दयो दातविचारा ज्ञानस्य शंकितादयो दर्शनस्य मूलगुणोत्तरगुणविराधनारूपा त्रिविधा चारित्रस्येति ॥ भवणगवाइमत्ति ॥ तदाती भागमात स्तेन
निशम मुणातिमं ममिश्रयं यतउक्तं पवैनविमसेस पुष्फदेयतुसंस्तुवकाषी दिव्वारसइयदाषं गुणदाणतत्तिमंचेमन्ति ॥ १ ॥ भावमा मासाक्षेम छिमो
मासानि पञ्चदशदिनानि ततामासायेषया मूलतप पञ्चमिमतितम तदत्र साद्धंरादशव ग्तेनसंयुत मासार्द्धं भवानि ससविंशतिदिनानि साद्धानीत्येव

ठिइ पणत्ता । सक्कस्सण देविंदस्स देवरण्णो अभिंतरपरिसाए देवीण तिण्णि पलिठवमाइ ठिई पणत्ता ।
इसाणस्सण देविंदस्स देवरणो बाहिरए परिसाए देवीण तिण्णिपलिठवमाइ ठिई पणत्ता । तिविहे पाय
च्छित्ते पणत्ते तजहा णाणपायच्छित्ते दसणपायच्छित्ते चरित्तपायच्छित्ते । तत्र अणुग्घाइमा पन्नत्ता त०

वो स्थितिना कहिया देवता यमेद्वे ॥ शक्र देवेंद्र देवताना राजानी भ्यतरी पर्षदाना देवतानी त्रण पल्योपमनु भाउखो कहियो ॥ शक्र देवेंद्र
देवतानां राजानी भ्यंतर पर्षदानी देवीनो त्रण पल्योपमनुं भाउखो कहियो ॥ ईशान देवेंद्र देवतानां राजानी बाहिरली पर्षदानां देवतानुं
त्रण पल्योपमनुं भाउखो कहियो ॥ त्रणप्रकारें प्रायश्चित्त कहियो ते कहेछे । ज्ञान प्रायश्चित्त काले विनय बहुमाने इत्यादि । दर्शन प्रायश्चित्त
शंकादि आठ प्रकारें । चारित्र प्रायश्चित्त ते मूलगुण उत्तरगुणनी विराधना करे ॥ त्रण अनुघातिम साधु कहिया ते कहेछे । जेहने

प्रत्ता यद्दोयते तत्प्रगुमामद्दाम सैवमन्यान्यपि एतमियेषा दनुज्ञातिमतपोगुर्विस्मर्य तवोगाम्बाप्रवोषिवा तवोषन्तें हस्तकर्मप्रागममसिद तत्कुम्भत' ससमी चेयमन्प्रवा तेम्कुमतहतिम्याम्मेय मेतेषांच हस्तकर्मादीनां यवविषेषिमोऽनुज्ञातिमविषेयो दोवते स कस्मादितोपसेय। ॥ पारंचिवत्ति ॥ पारत्तीर तपसाप पराभम्वां वति मपहति तताद्दोषतेय' सपारांचो सएवपारांचिकस्तसमदनुज्ञान तत्पारांचिकमिति एमर्मप्रायश्चित्त विहर्षेनकालतपोभि मंथि'करव मितिभाव ह्हमपूबे कम्पभांबे इदमभिधीयते षामायषपडिसेवो दुविहोपारंचियोसमासेव एमेंदमिवमयषा सपरित्तेवेमवरित्ते ॥ १ ॥ सम्मवरित भगमद वेषविपडिसेविमणउएएर्ग कलरविहरसोसापरिणामकशारमासम्म ॥ २ ॥ तुमंमिविमवरात्ते परिणामसवैषकोरलाबत्तं कलारपरिणामंमिवितुकेम वराकनापत्तं ॥ १ ॥ तमघासातजपारांचिम' तित्यवरपवयमपमुए भायरिएगणहरीमहड्डीए एतेमासायते पच्छितेमग्गणाचोरत्ति ॥ १ ॥ तवसरवेषा मायतिपापरपारंचिवंझायति ॥ हृव्वसूत्रे प्रतिसेवकपारांचिकएव विविधस्त खलु पडिसेवपपारंचिम तिविहोसोघोदभावनुम्नोए दुठेय १ पमत्तेय २ नेयम्मोपवमवेय ॥ १ ॥ तवदुप्टोद्दोयवान् कषायवोविषयतय पुनरेकैकोद्विषा स्वपक्षपरपक्षभेदात् उक्तंच दुविहोसवोदुठोर कसायदुठोयविसयदुठोय दु विहोकपायदुठो सपक्खपरपक्खचतुभंगो ॥ १ ॥ तवसपक्षे कषायदुष्टोयथा सर्षपनालिकाभिधामग्रावमलिकामवषयुपिवो सताचार्यदत्तभयकसाध'

हत्य कम्म करेमाणे मेहुणसेवमाणे राईभोयणभुंजमाणे । तओ पारंचिया पन्नत्ता तजहा दुठेपारंचिए पम

प्रायश्चित्त तप मपामें भयोग्य । हस्तकर्म करतो हस्तें कदर्पनी कुचेष्टा करतो । मैथुन स्त्रीसेवा करतो स्त्रीसुं भोग करतो । रात्रि भोजन कर तो रात्रियें जीमतो ॥ त्रण पारंचिक तपेंकरी भपराधनुं पारपामें ते पारंचिक दशमु प्रायश्चित तेकहेंछे । दुष्ट पारंचिक तेक्रोध दुष्ट पारंचिक

शिवदुष्टदुग्नाघोशमुन स्वयान लिंगेवलिंगिवोए सपत्तिवोनिमच्छयामो सम्मजिपावंजाम सधोवाशाहमोतेव ॥ १ ॥ पामावपावकरोहिह्मिासी
शिमामवयतिदु श्रोजिवपमवमुई ममिऊपत्तमेनभरिसेइति ॥ २ ॥ ससारमवममम्म जाइजरामरवबेमबापउर पावमलपडलवमा भमंतिमुवाधरिसम्मे
वति ॥ १ ॥ परपववनपावगुप्टस् राजवधको शितोयोरामागृमधिपधिगतेवि जवच वोयसलिंगेदुशे बयाववविसपत्तिरायवहगोव रायम्ममविसिय
हिमे वपायवगुमापयामोय ॥ १ ॥ प्रमत्त पचमनिद्राप्रमादवान् मांसाप्रिमवलितसाभुवहिति मर्यच समुयोपिस्वाम्पइति भावच पमिसेवसुप्वाहि
वव शिमेहेरपवहमेसोसे वेयवपरसपंचा गेवहमविच्छेपसामति ॥ १ ॥ तथा पम्मोम्पपरकार मुक्कपामुमयोगतो मेवुनंकुर्म्म गपुरुपमुममितियेव उच्चते
पासपपामपमेशो कोविमयच्चमाउवेयगावीति तेसिसिंगविवेगोत्ति ॥ १ ॥ भाशेवितातिवारविधेय सवगावरिवतपो विशेष तद्योमोपरतोपिमवामतेदु गा
बम्याम्यते माधिक्रिमगइति पमवलाम्य तदतिचारवात तप्पुविरपिवा नववाप्पसुम्मतइति मवमंप्रायवित्तमिति तवसाधर्मिका साधव स्वेषां सवासो
रसण्टोपधिमिप्पादेवाँ वाझ्योवा मविस्टचित्तोवा ।तेवति। स्तेयपोर्यं कुर्वन् तथा पम्पधार्मिका माक्कादयोम्पदवायातेषां सवायोपप्रादे स्तेयकृवमिति

तेपारंचिए अक्खमक्खकरेमाणेपारंचिए। तर्ठ अणवठ्या पन्नत्ता तजहा साहम्मियाणंतेणकरेमाणे अक्खधम्मि

बीजो विगय दुष्ट पारंचिक गुरुर्य भाजो साचो तेमाटे मूलो पद्दे वेसे दात पाडता विपयदुष्ट ते साध्वीनां जोगर्नें वांदे एव बेनें पारंचिक प्राय
चित पावे पारंचिक ते देस वनकाल तप प्रमुखें गच्छथी बाहिर करवो ॥ प्रमाद प्रायश्चित पांचमी थीणद्धी निद्रावंत प्रमादीने मोवोमांहि बे
पुरुष मैथुन करे मुखदुबनादि तेहने पारंचिक प्रायश्चित आवे ॥ नवमें अनवस्थाप्य नवमं प्रायश्चित ते दोष वहितनें आवे तेकहेछे साधर्मी ।

तथा हस्तेनताडन हस्तताल म्हन्दसमाचोदयन् यष्टिमुष्टिलकुठादिभि मरणादिनिरपेक्षपाक्ष्मन परस्यवा प्रहरचितिमाव छताच सवोसवहुसोया पदुः वितावर्तेविपंकुषर पवरदयोयसपक्षे गिरवेक्षोथोरपरिचामोति ॥१॥ भयवा । मत्वासार्थदसमाचोति । पाठ तथार्थोद्राम द्रव्योपादानकरणं भष्टांग निमित्त गदद्समयंजामदवाम भथवा । हस्तालंबदसमाचेति । पाठश्चम हस्तालंबरव हस्तावंबरहस्तालंबदस्न् भभिवपुरोधारो वत्प्रथममनार्थं मभि चारकमनविद्यादिप्रयुक्तागदत्वर्थं पूर्वोक्तप्रायश्चित्तं ममाजमारिहुत्तस भवति तानिपायोऽभिनिरासेन योग्यागाविधेयाभोति तदयोग्याविरूपवम् सूत्रपटच माह । वधोल्यादि । चयव किन्तु पत्तम मपुंसकं तथसमपारिमाविभाषपरिवर्तव्यं लमचानिपास मविषासदायोसरवमभेषो मेठमवंतमठव आया ससदर्गमुत्तममेघगंप एयाविवपंडगसक्षपावि ॥ १ ॥ तथा वातोपासोतिवाविय मदा मनिमित्ततोऽभ्यवावा मेहमवायासितंभवति तदागमन्नो

याण तेणकरेमाणे हत्यतालदलयमाणे । तह्न णोकप्पति पव्वावेत्तए तजहा पंडए वाइए कीवे । एव मुंडावे

साधु तेहनी सरखी उपधि तथा शिष्यादि तेहनी चोरीना करनारनें भनवस्थाप्य प्रायश्चित आवे । अन्यमती शाक्यादि दर्शनी तेहनी जे उप धि प्रमुख वस्तु तेहनी चोरीकरे तेहनें । तथा हस्ततास देतानें मुठें मुठें साकळीयें मारमानें प्रहार करतानें परनें पवि मरणनी अपेक्षा नकरे तेने भवांनें नकावे प्रभृज्या दिक्षादेवी तेकरेवे । पंडक ते नपुंसक जन्मथी । व्याधियोरोगी भथवा वातिक नपुसक असमर्थ एह सर्व नपुसकना भेदवे तथा एक कृत्रिमपुंसक वस्तराहित स्त्रीयादिकने देखी पुरुषचिह्न गर्ले । एक भाय्यनपुंसक सुरतनो शब्द सांभली गले । एक निमन्त्रका नपुंसक एकांते स्त्रियादिकें तेहनोयको मूतरालो नसके ॥ एहनें कदाचित दीक्षादीधी तो मुंडवो लोचकरवुं नकल्पें । एम भाचारादि सीखावबु

ति कारेदपारयितं पावयतिपेगाजता मयातिबाइति पयव निरवयेदो मपुंसकतयापरिपमति कपितु। वाहिषत्ति। पाठ समस्याधितोरोमोत्वयं
तथा ओगठममय मवचगेश इष्टिमोरगम्रोपादिग्धमोवनिमवपमोपमेराम् तयवपागुरामतो विवमायवमविपवं पम्पतोमेवनंगसति सहष्टि
पोर पप्ण मुरमादिगम भगत महितोष यमु त्रिपचेनानगूठो निमचितोशा मतरचित ममत्रोति सपादिम्धमोवो निर्मचितमोवयेति पतुर्मिधोप्ययं
नित्तेम मपपकमयापरिणमतोति पातिममोवयाम् परिमान तयोस्तम्भिपादीनांवा कपमादेरिति विस्तरयाम कम्मादेरवसेय पतेपो त्साठवेदवधा
ममरामनामहिप्यरइति मनम्पन्ते ममाजयितु मन्नाजकता प्यापार्मयेन दोपममगादिस्तुर्णव जिववयपेपडिजुई चोपप्यावेइणोमदोसेव परपड्रिपोतवस्यो
मागरतमेरजरबरितति॥ १॥ दरचयो मवाम्याठमा मिम्यानवानुरोधा दम्यथाम्पेपि तेसतियदाइ वासेगुडुनपुंसेय चवेयोमेययाहिए तेनेरायावगारोय
गम्लेयपद्मसे॥ १॥ हामेदुडेपमूढेप पम्पणोगुमिएरय छमइएसभसए सेवनिप्फेडियाइय॥ २॥ गुम्मिणीवासवच्छाय पम्पावेपोनवापईत्ति॥ १॥
परमपोयंप पम्मणोत्तपपोजित तुंगिपोजामगकोन उमरूपो त्रिपादायवादिमतिवागरय सेवनिप्फेडिपो मपक्ततइति एवमित्यादि सपेते ममा
यवितु मवचमो एवमेतएव कर्दपित् प्रसितेम मवाभितापपिसतो मुकपितु मिरोसोपेम मवस्पते उक्तंच पम्पाविपोसियत्ति [मम्पादिव्वम] मुंका
वेउच्चावयणओमो पवनामंकाचित्ते दोमापविमारियापुरिमति॥ १॥ एवगिपयितुं मम्पेयवादिमामायारीं पायपितु तथा उपस्थापयितुं मवाम

तए मिस्कावेत्तए उयठायेत्तए सनुजित्तए सवासित्तए।

मकप्पे। पव मरागून वापमा मकप्पे। उपधि वाहारतु संभोग जामकरके वायवे मकप्पे। पावें सेवनु एवतु कोर्दकपी भूमि सैनाके सेनी

तेषु अवग्ध्यापयितुं तथा सत्रोक्तमुपधानादिनाऽप्य नवाभोगात् संभुताः सम्यगसयितुं चास्मत्समीपे चासयितुं नवसपतइति प्रक्रमतइति वर्दंषि रसवासि तापपि वाचनाया अयोग्या अवाचनीया तामाह । तपोऽस्मादि । सुमर्म नदर अवाचनीया सूत्रपाठतोया अतएवार्थमध्यथावपोया सूत्रार्थमस्य गपत्वात् अविनीत सूत्रावदातुर्वन्दनादिविनयरहित तथासमेविसीया अतएवं इहरइविनाचबमर भविपोषोपभिषोक्तिमुसुपन्ने मायडेनासिविर प एवप्रारावमेमापो ॥ १ ॥ गोजू इम्सपदामा सर्वपदायस्मवपुयइवेगं शोसादएयसमत्र अवाइनमिधापहुवंप ॥ १ ॥ मिहामनुत्रमेवभवतीत्यय विषवाबोधा विख्या ऐश्वर्मइत्परेयन्नामेमि नयसव पविषममविया सत्प्राविवतोवहोवाइवि ॥ १ ॥ तथाविकृतिप्रतिबद्धो घृतादिरसविशेषप्रवृत्तो ऽनुपधानकारोपि भाव इत्यापिवापएव यदाव पववोमशोइयोगो नयपक्रमपरिक्षिप्तिर्यपदविया पविफमविपिउसमगुत साइवबीषाम्यवाग्निव्यति ॥ १ ॥ अव्यवसित म नुपगतं माभृतमिवमाभतं मरवपाहवोमभिषपरमकोधी अव्यमोव्यवसितमाभृत उक्तंच अप्येविपारमाचि भवराहेवयरखामियतच बहुसोउदोरयतो भविपामिवपाइभासप्रवृत्ति ॥ १ ॥ पारमाषि परमप्राधससुवात मवतीतिभाव एतच वाचने इवसोवत स्वागो ऽव्यमेरपाया मवइमात् प्रांतदेव

तउ अवायणिज्जा पण्णत्ता तंजहा अविणीए विगइपडिबद्धे अविउसियपाहुडे ।

मगासियो चारित्र मयामे ॥ अथ अवाचनीय एतलें वाचना देयानें अयोग्य कहिया तेकहेछे । अविनीत वंदनादि विनय रहितनें सूत्र भणाववू नथी । विनय पतादिकरस प्रतिबद्ध तेहमां गृद्ध ते उपधानादि तप नकरिसके तेमांटे एचारित्र पालवा अयोग्य । अव्यवसित प्राभृत ते महा क्रोधी पञी रोसघटे तेपवि अवाचनीय नवायानें अयोग्य एह त्रणनें दीप् सुत निष्फल थाय ऊपर खेतमां खिम वीज ॥ अथ वाचना देवानें

तावदनाव परलोकतोपिस्याम' तत्र न्नुतस्य दत्तस्य निष्पसला मूपरचिसवीजवदिवाशय दुविनीतपरिणामो दरपीतमतस्य १ देववाददस्य २ प रलोगमियपयत्ते खितंपिपत्रसरेवोसति ॥ १ ॥ एतद्विपर्ययस्तु सुगमं न्नुतदानया योग्यास्ता रतानींसमस्तसमाप्यवोप्यागाव ॥ तमोदत्यादि ॥ कष्टं किन्तु दुःखेनकृष्छेण संप्राप्यते प्रज्ञापमस्य बोधतइति दुःसंप्राप्या स्तनदुष्टा विष्टखलंमनापन्नंवाप्रति सचामप्रापनोषो देववापदेशाप्रतिपत्ते एवमूढो गुणदापानभिज्ञ' ब्युद्ग्राहित' कुप्रापकदृढीकृतविपर्यास' सोप्युपदेशं नप्रतिपद्यते उक्तंच पुव्वक्कमाविद्यावोर बालापडिममाविसो वेस्सतिग्गारर्वसोउ दोषवाएलदागरेति ॥ १ ॥ एतेषांचसरूपं वचपान्यया योग्या वाचसेयमिति एतद्विपर्ययस्तान् सुसंप्राप्यतयाह ॥ तमोदत्यादि ॥ स्फुटमिति ॥ उक्ता' प्रज्ञा

तउ कप्पातिवाइत्तए तजहा विणीए ष्ठाविगइपाक्षियद्धे विज्ज सियपाझक्षे । तउ दुसस्पप्पा पस्तस्ता तजहा दुठे मूढे वुग्गा हिए । तउ सुसन्नप्पा पस्पक्ता तजहा ष्वदुठे ष्वमूढे ष्ववुग्गाहि

मुत भणाववानें करवे सूभे तेकहेवे । विनीत विनयवंत । विगयमां गृहनपी रसनु सीलुपनपी तप उपधान करवाने समर्थ । व्यवसित प्रामत क्रोधरहित क्षमावंत ते भणाववा योग्य गाढ भापवा योग्य ॥ ट्विवे सम्यक्त योग्य कहेवे । मव दुखपी समझावा योग्यछे कहुपी समझावा योग्य उपरांठा द्वेषघरे तकहेवे । दुष्ट द्वेषी तत्वना कहनारनें । मूढ ते गुणदोषनुं मजाण । व्युदग्राहित अन्यमतीयें पोतानुमत समझावी दृढ कीधुं परनें समझावुं कहपी पाय समझावी सकवे ॥ सबनें सुखपी वसे समझावी सकवे तेकहेवे । द्वेष रहितने । तत्व अतत्वना जांणनें । म

पमार्णे पुवया भणुमा तम्मापमीवयणूनि विमामकायवारोच्याय । तमीमडविपत्यादि । मणुवसप्रयाय मदस्तियेमाते माणुसिया मायारयव यवयम्मिता मानुसेम्यो मानुसपेणाबोत्तरत परतोवर्त्ती मानुसोत्तरइति तस्यकपमेदं पुक्खरवरदीवद्धं परिक्खिवइमाणुसुत्तरोसेलो पायारसरिसरूवो विभयन्तोमाणुसंलोयं ॥ १ ॥ सत्तरसएमवीसाइ जोयणसयाइंसोससुच्चिओ चत्तारियतीसाइ मूलेवोच्छंभोगाढो ॥ २ ॥ दसवीसाइमहेवि च्छिन्नोवोर जोयणसमाइं सत्तवतेवीसाइं विच्छिन्नोडाइमज्झंमि ॥ ३ ॥ चत्तारियचउवीसे वित्थारोबोइउवरिसेलस्स मणुयाणदीवे दोसमसुवेमणुपरोइत्ति ॥ ४ ॥ त था जंबुदीवो १ धायइ २ पुक्खरदीवोय ३ वारुणिवरोय ४ खीरवरोवियदीवो ५ घयवरदोवोय ६ खोयवरो ७ ॥ १ ॥ नंदीसरोय ८ अरुणो ९ अरुणो वायोय १० कुंडवरोय ११ । तहसंख १२ रुयग १३ भुयवर १४ कुसकुंचवरो १५ तवोदीवो ॥ १ ॥ इति क्रमापेक्षया एकादशेकुण्डलवराख्ये दीपे प्राका रकुण्डलाकृति कुण्डलवरइति तद्रूपमिदं कुण्डलवरस्समज्झे बहुमभोवोइकुंडलोसेलो पागारसरिसरूवो विभयंतोकुंडलंदोवं ॥ १ ॥ बायालीससहस्से उ व्विद्धोकुंडलोमइसेलो एगमेवसहस्स धरणियलमहेसमोगाडो ॥ २ ॥ दसचेवजोयणसए बावीसेवित्थडोयमूलंमि सत्तेवजोयणसए बावीसेवित्थडोमज्झे ॥ ३ ॥ चत्तारिजोयणसए चउवीसेवित्थडोउसिहरतलेत्ति । तथा चयोदशे रुचकाख्ये दीपे कुण्डलाकृती रुचकइति एतस्सविदंसरूवं रुयगवरस्सउमज्झे मणु

ए । तउ मंमलियपव्वया पण्णत्ता तजहा माणुसुत्तरे कुमलवरे रुयगवरे । तउ महइमहालया पण्णत्ता तजहा

म्यमतीये नरमाध्योमयी तेहमेपर्म सुराणी समझावीसवें ॥ त्रण पर्वत मंडलीक कोटनीपरें चक्रयाल वलय सरिखा कह्या तेकहेछे । मानुषोत्तर पर्वत पुष्करार्द्धमें फरतोछे । कुंडल पर्वत मंडलाकारें कुंडलद्वीपमांहे । रुचक पर्वत तेरमा रुचकवर द्वीपमांहे एह त्रण मोटा पर्वत कह्या ॥

तमोद्योतप्रभोद्भवगो पायारम्भरिसकचो दुष्यंदोषविभ्रममायो ॥ १ ॥ प्रथमप्रथमतरसेवो चतुरासीतिमवेशपश्चात् पर्यवसानस्य वरविषसमहेसमोगाठो २ ॥ एवमेवसंख्यानेषु मानेसाओवचावचोचा मूर्धमियविभक्तनो सोपोपोदुवमसेवस्य ॥ ३ ॥ तथा मध्यविस्तारोऽस्य समसहस्राणि चत्वारिंशमधिकानि गिरेविस्तारस्तु चत्वारिंशत्सहस्राणि चतुर्विंशत्यधिकानीति मानुषोत्तरादयो महान्तस्तानिति महदधिकारा इतिमहत्तमाः ॥ तयोमहत्त्वादि ॥ अत्र केवल मतिमहत्त्ववते भावयावान्यथापतिमहत्त्वया महान्तवते मतिमहत्त्वयावेति महतिमहत्त्वया यथा सर्वस्मिंस्तस्य सार्वत्वात् महातिमहात् इत्यर्थं त्रिभुवनस्य मध्यवर्तित्व मन्दराद्रोर्नां सर्वगुरुत्वस्थापनार्थं पर्युत्पन्नोत्तममिति महत्वेनवर्ततइति ॥ मन्दरेषुति ॥ मेरुत्वाभ्यां जम्बूद्वीपकस्य सा तिरेकनवयोजनप्रमाणत्वा चैषाणां चतुर्णां सातिरेकपञ्चाशीतियोजनसहस्रप्रमाणत्वा तेषां तस्य क्रमेण त्रिविधभूगाधिकरज्जुपादप्रमाणत्वादिति ब्रह्मलोकस्तु महान् तत्प्रदेशे पञ्चरज्जुप्रमाणत्वा लोकविस्तारस्य तत्प्रमाणतयापविवक्षितत्वात् ब्रह्मलोकयेति पञ्चमं ब्रह्मलोकस्य कल्पकत्वादिति कल्पमध्यसाव र्णात् चत्वारिंशतिमिभावः ॥ तिविहेत्यादि ॥ सूत्रद्वयं कल्प केवलं समानि प्रागार्दीनि तेषां मायोसामं समाम सप्तसामायिक संयमविशेष स्थाप्य तद्

जंबूद्दीवएमंदरे मंदरेसु सयंभुरमणेसमुद्देसमुद्देसु बंभलोएकप्पेकप्पेसु । तिविहा कप्पठिइ पन्नत्ता तंजहा

वली एम महामोटा मानव कहिया तेकहेछे । जम्बूद्वीपमां मेरुछे ते सघला मेरुथी मोटो बीजा चार मेरु पच्चासी हजार योजनमानछे पर्ने जंबूद्वीपनो मेरु लाख योजन प्रमाणछे तेमांहे मोटो । असंख्याता समुद्रमां छेहलो स्वयंभूरमण समुद्र मोटो जेपाखें चौमेरें सर्वेराजमांछे । बारे देवलोकमां ब्रह्म पांचमुं देवलोक तेमांहे पांचराज पिहुलोछे तेमांटे ५ एमप्रकारें कल्पक्षमणा सूक्ष्म रुचिपी कल्पस्थिति कही ते कहेछे । कल्प

यथाद्यन्त' चरमभागारो यथोक्त सामर्थ्यं मर्यं गायाच चरमेवेदनेनतथा मोपम्येनाधिवासेय कल्पमर्थ्यंजिदुर्मुधारति ॥ १ ॥ सामायिककस्य सर्वमध्यमचरमतो
यथो' साधूना मध्यकाल च्छेदोपस्थापनीयसद्भावात् मध्यमतीर्थेषु महाविदेहेषुच यावज्जीव' छेदोपस्थापनीयाभावा तदेव तस्यावस्थिति मर्यादा सामा
यिकवन्धस्थिति' साच मध्यातरपिण्डपरिहारे चतुर्यामपालने पुरुषज्येष्ठत्वे वृहत्पर्यायस्ये तरेच वन्दनकदानेच नियमतस्तथा यथाक्रममारोपितव्रतापेक्षया
यदथिमत्वं तथा धार्मिकभक्ताद्यकल्पे १ राजपिण्डाग्रहणे २ प्रतिक्रमणकरणे ४ मासकल्पकरणे ५ पर्युषणाकल्पकरणेषा नियमतश्चचारेति उक्तंच सि
आचरियकेमा १ चाउज्जामेय २ पुरिसज्जेय ३ किरकम्मस्सयकरणे चत्तारिअवट्ठिआकप्पा ॥ १ ॥ अचेलकु १ उद्देसिय २ सपडिक्कमणे य ३ रायपिंडे य ४ मास
५ पज्जोसवणा ६ छप्पेअणवट्ठियाकप्पा ॥ १ ॥ तथा येनकल्पमेव दुर्विज्ञोजारमवेसी मर्तस्वेद्योयसतवेसोय तत्वपसंतेरिंद्रियवा संतावेषामवेसेषा ॥ १ ॥
मोघावेढियपोसे नरउत्तरणमिमगायवोंति सुत्ते छिमस्मियम्मि तुरसाक्षियंदेहिमेपोत्ति ॥ १ ॥ सुत्ते छिंदछिपहिं पसम्पतत्पाणरहिंनयनिव सतेहिंविनि
प्पंता पये मयावींतिपेचेहिं इत्यादि तथाच' पूर्वपर्यायच्छेदेनोपस्थापनीय मारोपणीयं छेदोपस्थापनीयं व्रतितो महाव्रतारोपणमित्यर्थ' तच प्रथमपश्चि
मतीर्थकरयोरेवेति येषामुत्पत्ति मांतसतृस्थितियोतस्यपरेषेव पथमसुसारणेच पश्वपालनमसम्वेति तथाहि एसठाणठिओकप्पो पुरिमस्सयपच्छिमस्सयजिव
म एसोपुवरमकप्पो एसठाणपरहिओहोइत्ति ॥ १ ॥ अचेलगुद्देसिय २ सेज्जायर ३ रायपिंड ४ किइकम्मे ५ वय ६ जेट्ठ ७ पडिक्कमणे ८ मासं ९ पज्जोसवणकप्पो

सामाइयकप्पठिइ छेदोवठावणियकप्पठिई णिव्विसमाणकप्पठिई । अहवा तिविहा कप्पठिई पण्णत्ता

ते आचार कहिये । सामायिक चारित्रनी स्थिति आचार प्रथमचारित्र समभाव । प्रथम पर्यायनुं छेदकरी पंचमहाव्रत आरोपवा ते छेदोपस्थाप

ति १०॥ १॥ निर्विशमाना ये परिहारविशुद्धितपो कुर्वन्ति परिहारिकाश्चत्वारः तेषां कल्पे स्थिति र्यथा ग्रीष्मशीतवर्षाकालेषु क्रमेणतपो जघन्य चतु र्थषष्ठाष्टमादि मध्यमं षष्ठाष्टमं दशमं उत्कृष्टं अष्टमादशमौ द्वादशमेति पारणेषा याम एवं पिण्डैषणासप्तकेषा ग्रहणपञ्चकेषा पञ्चसु पुनरेकयाभक्तं मेकयापानकं मि त्येवं द्वयोरभिग्रहइति उक्तंच एगम्भाइसठ्ठं पढमतइयतरोय उक्कोसमज्झिमजहन्न वसाउवासासिसिरगिम्हे ॥ १ ॥ पारणगेभायामं पंचसुगहोदोसुभि ग्गहोभिक्खेत्ति ॥ १ ॥ निविष्टा ग्रासेवितविवक्षितचारित्रा अनुपरिहारिकाश्चत्वारः तत्कल्पस्थितिश्चया प्रतिदिनं आयामभक्तं तपोभिक्षा तवैवेति उक्तंच कप्पट्ठियावियपइदिण करतिएमेवचायामंति ॥ एतेच निर्विशमानका निर्विष्टाश्च परिहारविशुद्धिका उच्यन्ते तेषांच नवकोगणोभवति तेच एवंविधा सव्वे चरित्तवंतोउ दंसणेपरिनिठ्ठिया नवपुव्वियाजहन्नेणं उक्कोसादसपुव्विया ॥ १ ॥ पंचविहेववहारे कप्पंमिदुविहंमिय दसविहेयपच्छित्ते सव्वेतेपरिनि ट्ठिया ॥ २ ॥ इत्यादि जिना गच्छनिर्गतसाधुविशेषा स्तेषां साधुविशेषाणां कल्पस्थिति जिनकल्पस्थिति स्थविरकल्पस्थिति साचैव जिनकल्पं प्रतिपद्यते जघन्येनापि नवमपूर्वस्य तृतीयवस्तुनिस्सति उत्कृष्टतस्तु दशसु भिन्नेषु प्रथमसंहनने दिव्याद्युपसर्गरोगवेदना सहते एकाकीवभवति दशगुणोपेतस्थण्डिलएवो

तंजहा णिव्विठकप्पठिई जिणकप्पठिई थेरकप्पठिई । णेरइयाणं तउ सरीरगा पण्णत्ता तंजहा वेउव्विए

मोय चारित्र कल्पस्थिति बीजुचारित्र प्रथम चरम तीर्थंकरने वारेहोय बावीसने वारे नहोय । निर्विशमान कल्पस्थिति तेपरिहार विशुद्धि चा रित्र जे नवजणा गच्छमाथी नीकली तपकरे ॥ अथवा वली जघ कल्पस्थिति करी तेकहेछे । निर्विष्ट कल्पस्थिति तेपणि परिहार विशुद्धि चारि त्र । जिनकल्पस्थिति जिनकल्पी परिहार विशुद्धि पछे जिनकल्पीथाय । अथवा थविर कल्पीमा आवे त्रीजी थविर कल्पस्थिति ॥ कल्पस्थिति

मारादिजोवंचम्बाश्रित्य तत्रापि सर्वोपधिविशुद्धा पभिधायकौ तृतीयपोरुष्यां पिच्छेपचोत्तरा सार्पपानां मेकतरेव विचारोमासवक्ष्येन तथामेवयोग्या म हरिनेभिपाठनमिति एवं प्रचारात्वेव सुपसंचववेसादिभाव् मायासमूहात् चरपोता इवगतमेति मचितंच नच्छचिपनिम्पामाधोरायोवेयमचियपरमत्वा पप्पहजोगपभिम्पाह उवेतिजिनमप्पियचरित्तति ॥ १ ॥ पमचे मापयो रभिमचे पचानां पिच्छेपचानां दयो वोमि दयोमध्ये एकतरच्चा यद्योतपरमा वा धिरवचिवातवमूरा मितोमव्याउतेपुरिससोवा पचमौरियसंघवचा उपसम्पपरीसचापभोरुयत्ति ॥ १ ॥ स्थविरा मापार्थादयो गच्छमतिचडा स्तेषां वमपञ्चिति स्थविरकल्पस्थिति साच पच्चासिक्सावय मतम्मचचपमिवभोवासो निप्पत्तीयविचारो सामाचारीठिईचेव ॥ १ ॥ इत्यादिकेति इत्थ मामाविचेपविशेदोपस्थापनीयं तथच परिचारविशुद्धिकमेस्च्य भिर्विममानयं तदनन्तर निर्विष्टचामिवं तदनन्तर जिनकल्प स्थविरकल्पोवा भवतोति सामायिककल्पस्थित्यादिवसूषयो प्रमोपस्वासइति षडावरपस्थितिम्पतिक्रामिचोपि नारकादिमरीरविचीभवन्तोति वक्षरीरमिरूपचामाह ॥ नेरइयाचमि त्यादि ॥ इत्थच मत्थ किन्तु ॥ एवसम्मदेवार्थति ॥ यथा पसुरायां चोचि मरीराचि एवंनागकुमारादिभवनपतिव्यंतरज्योतिष्कवैमानिकानां एवं ॥ पाण्याइवमध्यार्थति ॥ वायूनांचि माहारकवर्जानि चत्वारिमरोराचीति तचसमेवपचेन्द्रियतिरश्चामपि चत्वारि मनुष्याणान्तु पचापीवि तत्रइमद्धितां

तेयए कम्मए। असुरकुमाराण तउ सरीरगाधेव एव सब्धेसिदेयाण। पुढयिकाइयाण तउ सरीरगा पन्नत्ता

जे चतिक्रमें तेमारकीनुं मरीरपामें तेकहेछे । त्रण शरीर नारकीनें कहिया तेकहेछे । वैक्रिय तेजस कामणशरीर ॥ एम असुरकुमार प्रमुखनें त्रण शरीर कहिया तेकहेछे । एम सर्व देवतानें व्यंतर ज्योतिषी वैमानिकनें । पृथवी कायना जीवनें शरीर कहिया तेकहेछे । औदारिक ते

यथाचिंतितभविताभिधान प्रत्यनीकानामपि भवन्तीतिगाथार्थः ॥ गुरुमित्यादि । सूत्राणि षट् प्रतीतानि किन्तु यथा स्वभिधत्ते तत्त्वमिति गुरु स्वं प्रतीत्याश्रि
त्यप्रत्यनीका' प्रतिकूला स्थविरो जात्यादिभि रेतत्प्रत्यनीकतादेवं जात्यादिभिरवर्णविभवत्वहलनत्वादिलक्षणाः प्रतिलोमच्छिद्रप्रेक्षी प्रमादस्थानोपदर्शनलोको
॥ १ ॥ प्रत्यासत्तिप्रत्येकं उपरसंपरस्वहेतिवर्णतु दशविधवेयावच्चे कारणमसंभवेन्मतितिति ॥ २ ॥ गतिमाश्रित्याह इह लोकस्य प्रत्यक्षमानुषलक्षणपर्या
यस्य प्रत्यनीक इन्द्रियार्थप्रतिकूलकारित्वात् पञ्चाग्नितपस्विवत् द्विधालोकप्रत्यनीकः परलोको जन्मान्तरं तत्प्रत्यनीक इन्द्रियार्थतत्परो द्विधालोकप्रत्यनीक
श्चौर्यादिभि रिन्द्रियार्थसाधनपरः यथा इहलोकप्रत्यनीक इहलोकोपकारित्वा भोगसाधनादीनां सुपहरकारी इहलोकप्रत्यनीक एवं भावादीनां सुपहरका
री परलोकप्रत्यनीक उभयेषामुभिषा लोकप्रत्यनीक इति प्रथमे इहलोको मनुष्यलोकः परलोको नारकादिः उभय मेतदेव वितर्थ प्रत्यनीकवाहुलितमवगत

तंजहा ठरालिए तेयए कम्मए । एव वाउकाइयवज्जाण जावचउरिंदियाण । गुरुपडुच्च तहं पडिणीया प०
तं० आयरियपडिणीए उवज्झायपडिणीए थेरपडिणीए। गइपडुच्च तहं पडिणीया प० तं० इहलोयपडिणीए

मस कार्मण ॥ एम वायु काय वर्जीने बेमांडे वायुकायनें च्यार शरीरहोय यावत् चउरेंद्रीलगें सर्वमें त्रण शरीर होय ॥ थविर करपरियति गुरु
नें थाश्रें ते प्रतिक्रमें ते प्रत्यनीकपणें होय तेकहेछे । त्रण प्रत्यनीक कहिया तेकहेछे । आचार्यनु प्रत्यनीक ते अवर्णवाद बोलें । उपाध्यायनुं प्र
त्यनीक ते उपाध्यायनु अवर्णवाद बोलें । थविर त्रण प्रकारें तेहना अवर्णवाद बोले छिद्र पेखे ॥ मनुष्य गतिमी आश्री त्रण प्रत्यनीक कहिया
तेकहेछे । आचार्यनुं प्रत्यनीक । उपाध्यायनु प्रत्यनीक । थविरनो प्रत्यनीक ॥ मनुष्यगति आश्रीनें त्रण प्रत्यनीक कहिया ते कहेछे । इहलोक

पचति कृतवान्मारिर्व तत्वमूत्तेमव काठियादि रत्वमूक सहरति प्रत्यनीकता चैतेयां पवचंवादादिभिरिति कुमारिलमय चेदं एत्वकुर्वविवेयं एगाय रियप्रमंतर्रजापो तिवकुवाचमिदोपुच सावेक्षावंमचोशोर ॥ १ ॥ सम्मोविमावदंसच परचगुचविमूसियावसमवाय समुदायोपुवसवो गुवसमुदायो तिवाज्ञवं ॥ २ ॥ पगुबंपा सुपहंभं प्रतोम्मा त्रिल्य तपस्तोपपक स्वानो रोगादिभि रसमयः मेषो ऽभिनवप्रवजित एतेष्ठ गुवम्पनोयाभवन्ति तदचरचा वरपाम्मांच प्रत्यनोकतेति भाव पर्याय सच कोवाजोवगत स्नवजीवस्व प्रमयस्तोऽप्रमयस्तय तच प्रमयस्त पावियादि प्रमयस्तोविमयवोस्विक पाविका दिय प्रामादिरूप तवाभावं प्रामादिर्वं प्रत्यनीक स्तोयां वितयमरूपपातो दूपवतोया यथा पाययमुत्तमिमहं कोवाजायेदपदोसवदेयं किंपावरवेपंत

परलोयपडिणीए दुहउलोगपडिणीए । समूहपडुच तउपडिणीया पन्नत्ता तजहा कुलपडिणीए गणपडि णीए सघपडिणीए । अणुकंपपडुच तउ पडिणीया पन्नत्ता तजहा तवस्सिपडिणीए गिलाणपडिणीए

तेमनुष्य प्रयनुं प्रत्यनीक भग्यानपवे शरीरमें कष्टमार्पे पचाग्निसाधे । परलोक ते जन्मांतर तेहनु प्रत्यनीक इंद्रियार्थे विषय सेवे । तेहथी दु गतिमां जाय । इहलोक परलोक बेर्मु प्रत्यनीक तेचोरी प्रमुखनुं करनार ॥ समुदाय आश्री त्रय प्रत्यनीक कहिया ते कहेके । कुलनु प्रत्यनीक ते एक कुलना एक आचार्यनी परपराना यती । गच्छ प्रत्यनीक प्रयकुल एक समाचारीमां तेहनु समुदाय ते गच्छ । चतुर्विध सघनु प्रत्यनीक ॥ अथवा माणादि गुणसहित सर्वसाधु समूह तेसघ ॥ अनुकंपा भक्ति आश्री त्रय प्रत्यनीक कहिया ते कहेके । तपस्वीनु प्रत्यनीक तपस्वीनां अप गुण बोले । ग्लान रोगीनु प्रत्यनीक रोगीनें संतापे । शिष्य नवो दीक्षित तेहनुं प्रत्यनीक भक्ति नकरे वेलामी भक्तिनुं साज. के ७ आव ते म

शरीरविपाकविषयत्वादिति ॥ १ ॥ सूत्रव्याख्येयं पर्यायप्रत्यनीकानां निर्देशः तथाप्युक्तं वितथमिति तथा गमोवतार आश्रयमाश्रित्यैव तेचियपमायअप्पमाया
य मोक्खाहिगारियाणं जोतिसजोणीहिं किंकज्जमित्यादि ॥ १ ॥ सूत्रयोरागमनमिति अत्राप्यस्थिति मेभयमनुष्याणामेव तच्छरीरस्य मातापितृहेतुकमिति
तयोस्तदंगेषु हेतुत्वविभागमाह । तओपियंगेत्यादि ॥ सूत्रत्रयं कण्ठ्यं केवलं पितुरङ्गानि मातुरपि पितृशुक्रपरिणतिरूपाणीत्यर्थः अस्थि
तोतं १ अस्थिमिञ्जा अस्थिमध्यरसः २ केशाः शिरोजाः श्मश्रु कूर्चरोमाणि कक्षादिजातानि नखाः प्रतीता केशश्मश्रुरोमनखमित्येकमेव प्रायः समानत्वा
दिति मात्रङ्गानि मातुरार्तवपरिणतिरूपाणीत्यर्थः मांसं प्रतीतं शोणितं रक्तं मस्तुलिङ्गं भेजः मेदः फिप्फिसादि इत्यन्ये तत्समभ्यवर्तित्वात् पूर्वोक्तस्य विवक्षा

सेहपडिणीए । भावपडुच्च तओ पडिणीया पन्नत्ता तंजहा नाणपडिणीए दंसणपडिणीए चरित्तपडिणीए । सुयपडुच्च तओ पडिणीया पन्नत्ता तंजहा सुत्तपडिणीए अत्थपडिणीए तदुभयपडिणीए । तओ पितियंगा पन्नत्ता तंजहा अट्ठी अट्ठिमिजा केसमंसरोमनहे । तओ माउयंगा पन्नत्ता तंजहा मंसे सोणिए मत्थुलिंगे ।

भर्ता गुणाशुन पर्याय भावीनें त्रण प्रत्यनीक कहिया तेकहेंछे । ज्ञान प्रत्यनीक ते उत्सूत्र प्ररूपे । दर्शन प्रत्यनीक धर्मे करतो छता भाखें
मिथ्या भावे । चारित्र प्रत्यनीक चारित्र पालवाथी स्युं थायछे ॥ सूत्र सिद्धांत भावीने त्रण प्रत्यनीक ते कहेछे । सूत्र प्रत्यनीक जेकां पढवा
थी स्युं थायछे । अर्थ प्रत्यनीक कोंई अर्थ करे । सूत्र अने अर्थ बेहु प्रत्यनीक ॥ पूर्वे कर्मपरिणति कही तेमज मनुष्यनेहोय तेमनुष्य शरीर
मां त्रण पितानां अंग कहिया तेकहेछे । अस्थि तेहाड । हाडनु मध्यरस । वाल दाढी मूछ रोम नख ॥ त्रण मातानां अंग कहिया । मांस

स्थितिप्रतिपत्त्य शिथिलनिर्जरा कारणान्यभिधातुमाह ॥ तिहीत्यादि ॥ सुगमं नवरं महती निर्जरा कर्मक्षपणं यस्य सतथा मह महत्पर्यवसानं मस्येति भावि... पर्यवसानं समाधिमरणतया पुनर्मरणतोवा जीवितस्य यस्य सतया भवन्ति प्रशस्तत्वादिति एवं ॥ समनसत्ति ॥ एवं मुक्तमनसं मनं सहति साधु मनमत्ति ॥ मनसा प्रशस्तं प्राकृतत्वा देवं ॥ सवयसत्ति ॥ वयसा ॥ सकायसत्ति ॥ कायेनैतस्य सकारागम प्राकृतत्वादेव त्रिभिरपि कारणैरित्यर्थं भव

तिहिं ठाणेहिं समणे णिग्गथे महानिज्जरे महापज्जवसाणे भवइ तंजहा कयाणं अहं अप्पं वा बहुयं वा सुयं अहिज्जिस्सामि । कयाणं अहमेकल्लविहारपडिमं उवसंपज्जित्ताणं विहरिस्सामि । कयाणं अहमपच्छिममारणंतियसंलेहणाझूसणाझूसिए भत्तपाणपडियाइक्खिए पाओवगए कालमणवकंखमाणे विहरिस्सामि । एवंसमणसा सवयसा सकायसा पागडेमाणे णिग्गथे महाणिज्जरे महापज्जवसाणे भवइ । तिहिं ठाणेहिं

सोही । मस्तु लिग तेमेदकाल थुजेयो कहेछे ॥ कल्पस्थितिरहे तेहमे निर्जराहोय तेमाटे निर्जरानुं स्वरूप कहेछे । त्रण थानके श्रमणसाधु महानिर्जरा कर्मक्षय मोटो पर्यवसान तेसमाधि मरणादि सुमति साधनते होय तेकहेछे । कियारे हुं थोडुं अथवा घणुं सुत ज्ञानसु एहवु मनमां चितवतो महानिर्जरा करे । कियारे हुं एकल विहारीनी प्रतिमा द्रव्यथी एकलो भावथी पणि एकलापणुं राग द्वेष रहितपणु एकपणु अंगी कारकरी विचरसुं एम चितवतो महानिर्जरा करे । कियारे हुं अपश्चिम मारणातिक संलेखना सेवना सेवीस भातपाणीमु निषेधकरी पा दपोपगमन अणसणकरी कालमरण अणवांछतो रहवो मर्ण विपरीत रहीस एम चितवतो महानिर्जरा करे ॥ एहवु वचनसहित मनसहित

वा । ममनमेत्यादि । मधारयन् तत्पर्यालोचयन् क्वचित् । पामकेमावेत्ति । पाठ स्वभमकटयम् भ्यालोकुर्वन्निलयं यथाम्यमयमतया भमणोपासकस्यापि भावितिर्मंगकारणानीति स्पष्टवाव । तिहोत्यादि । कम्बम् भमन्तर कर्मनिर्जरोक्ता साच पुद्गलपरिणामविशेषरूपेति पुद्गलपरिणामविशेष मभिधा

समणोयासए महानिज्जरे महापज्जवसाणे भवइ तंजहा कयाणमहमप्पवा बहुंश्रवा परिग्गह परिचइस्सामि कयाण श्रहं मुंडे भवित्ता श्रगाराओश्रणगारियं पव्वयिस्सामि । कयाण श्रपच्छिममारणंतियसंलेहणाझूसणा झूसिए भत्तपाणपडियाइक्खिए पाओवगए कालमणवकंखमाणेयिहरिस्सामि । एवं समणसा सवयसा सकायसा जागरमाणे समणोयासए महाणिज्जरे महापज्जवसाणे भवइ । तिविहे पोग्गलपडिघाए प० तंजहा

कायामहित मधारयन् मगट करतो चिंतवतो निग्रंथ साधु मोटीनिर्जरानु पर्योयाय मोटु पर्यवसान समाधिपावे ॥ त्रण प्रकारें भमणगु उपासक तयायक मोटी निर्जरा महापयवसाननुं पर्योयाय तकहेवे । किवारें हुं थोडो अथवा घणु परिग्रह छाडस्युं एहवु चितवे । किवारे हुं दीक्षासहस द्रव्यभावथी मुंडथइस गृहस्थावासमुकी भणगारपणुलेइ मव्रज्या लेइस एम चितवे । किवारें हुं अपथिम छेहली मरणनी संलेखना भणसणमी भयनामहित थको भात पाणीनु पचक्खाणकरी पादपोपगमनें कालप्रति भणवांछतो एहवोपर्व विचरिस एहवु चितवतो महानिर्जरा करे ॥ मनमहित वचनमहित कायासहित एहवु मगट करतो एहवी भावना भावतो भमणोपासक भावक मोटीनिर्जरा मोटापर्यवसाननुं पामो पाप ॥ त्रणप्रकारें पुद्गल परमाणु प्रमुखनुं प्रतिघात तेस्खलन कहियो तेकहेवे । परमाणु पुद्गल बीजा परमाणु पुद्गल प्रतिघातीमें त्रणकार्ये

तुमाव । तिविहेत्यादि । पुद्गलाना मध्यादीनां प्रतिघात स्वकर्म पुद्गलप्रतिघात परमाणुनामो पुद्गलप परमाणुपुद्गल ससदन्तरमाय प्रतिहन्येत गते प्रतिघातमापद्येत रूक्षतया तथाविधपरिणामान्तरावतित प्रतिहन्येत लोकान्तेमा परतो धर्मास्तिकाया भावादिति पुद्गलप्रतिघातश्च सचक्षुरेव आना तीति तद्विकल्पवाचाव । तिविहेत्यादि । प्राय चक्षुम् चक्षुर्लोचनं तस्य द्रष्टतोपि भावतो प्रानं तद्यथाक्षीति मतयोगा चक्षुरेव चक्षुषानित्व सप चि विध चक्षु मध्याभेदा सर्वेषं चक्षुरस्येत्वचक्षु देव मितरावपि छादयतीति प्राग्भागावरणादि तथतिष्ठतीति मभव सप मध्यमगुणमकेवलज्ञान सर्व एवोच्यते तथापीशावियमवत् मुतप्राणादिविवर्जितो विषमितरापि एकचक्षुरिन्द्रियापेक्षया देवो विचक्षु मचक्षुरिन्द्रियावधिभ्यां समयमावरणक्षयोपशमेन प्रागव मुतावधिरूपं समनवावधिदर्शनरूपं बोधारमति वर्तति सतथा एवमुक्त स विचक्षु चक्षुरिन्द्रियपरमज्ञानमभिभिरिति समभावात् सहि साक्षाद्

परमाणुपोग्गले परमाणुपोग्गलपप्पपडिहमेज्जा लुक्खत्ताएवापडिहमेज्जा लोगंतेवापडिहमेज्जा । तिविहे चक्खू पण्णत्ते तजहा एगचक्खू विचक्खू तिचक्खू । छउमत्थेणमणुस्से एगचक्खू देवे बिचक्खू तहारूवे समणे

गतिनु प्रतिघात थाय एकमी योजो इकावें । सुगणपक्षी इकावे सुगणपक्षी भागोवाली समेलपणे । लोकांतनें विषें हकावें परमाणु चालवी लोकातेभाय मागो अलोकमा धर्मास्तिकायना अभावथी । नयप्रकारें चक्षुकहियो तेकहेछे । द्रव्यथोचक्षु लोचन भावथी चक्षु नाम एकचक्षु येचक्षु प्रवचन् । छद्मस्थ मनुष्य ते मुत मावादि रहित तेएकचक्षु । द्रव्य नेत्रसहित । देवतानें नेचक्षु एक द्रव्यचक्षु बीजो मुत मवधि रूपचक्षु । तथारूप समयसाधु उत्पन्नमयी जेनाव और दर्शन तेहनु धरवहार तेहनें प्रवचनु कहिये एक द्रव्यनेत्र बीजो परमश्रुतनाव परमाव

यास्मीजयति देवोपादेयानि समस्तवस्तूनि केवलीति गम्यास्यात' केवलज्ञानदर्शनसमयसमुच्चयक्रमासम्भवेपि चक्षुरिन्द्रियसमवचक्षुष' उपयोगाभा वेनासत्वप्रसंगात् तस्य चक्षुष्यत्वं नवियत इति व्युत्सेति इन्द्रियापेक्षत्वात् सोपि नविवक्षित इति चक्षुमानमनन्तरसूत्र स्वरूपाभिसमागमोभवतीति तम्दि गमेदेनविभजन्नाह । तिविहेत्यादि। अभीत्सर्वाभिमुख्येन नतु विपर्यासरूपतया समितिसम्यक् नसंशयतया तथा आमर्यादया गमनमभिसमागमो वस्तुप रिच्छेद इत्येवमागमभेदमाह । जयाणमित्यादि। परसेसत्ति । येषापि छद्मस्थज्ञानाभ्यतिक्रान्त मतिमेघं ज्ञानन्दर्शन त्तय परमावधिरूपमिति सम्भाव्यते केवलस्य नक्रमेणोपयोगो येन तत्प्रथमतयेत्यादि स्पष्टमनवद्यं स्यादिति तत्प्रथमतादे रुत्पादस्य प्रथमता तत्प्रथमता तया । उड्डुति । उर्ध्वलोकमभिसमेति समभिगच्छति जानाति ततस्तियमिति तिर्यग्लोक मत स्तृतीयेस्थाने अध इत्यधोलोक मभिसमेति एवंच सामर्थ्या त्माससमधोलोको दुरभिगम' क्रमेण पर्य

वा माहणेवा उप्पन्नणाणदंसणधरे सेणंतिचक्खुंसि अभसूसिया । तिविहे अभिसमागमे पन्नत्ते तंजहा उड्ढं अहं तिरियं । जयाणं तहारूवस्स समणस्सवा माहणस्सवा अइसेसे णाणदंसणे समुप्पज्जइ सेणं तप्पढ

भिनाय एव प्रत्यक्षु केवलीनो इहां विवक्षानथी जेमाटे केवली समस्त पदार्थ साक्षात देखेछे ॥ त्रणप्रकारें अभिसमागम कहियो सम्यक्त्वं वस्तु नु जाणवु ते अभिसमागम तेकहेछे । उर्द्ध ऊंचो अधोहेठो तिर्यग् तिरछो ॥ जिवारे तथारूप शुद्धचारित्र युक्त श्रमण माहन तेहनें उत्कृष्टु ज्ञानदर्शन उपजे इहां परमावधि ज्ञानदर्शन जाणवा केवलनाणनी विवक्षानुं संभवनथी केवलज्ञानमुं क्रमथी उपयोगनथी तेमाटे तेपरमावधि प्रथ म उपजता उर्द्धलोकेंजाय एतले उर्द्धलोकनें जाणें देखें । तिवारपछी तिरछोलोक देखें जाणें । तिवार पछी अधोलोक तेदुरभिगमछे अधोलोक

त्वाभिगम्यत्वादिति हे श्रमणायुष्मन्निति गौतमामन्त्रणमिति प्रज्ञप्तमभिसमागमएणा सच प्राप्त एव ऋद्धिरित्येवं समानत्वादिति ऋद्धिसाधर्म्याद्देवाना ॥ तिविहाइड्ढीत्यादि । सूत्राणि सप्त सुगमानि नवरं देवर्द्धेर्ग्रहादेः ऋद्धिरेवं देवर्द्धिः देवराजत्वं वा स्यादिति यथा गणिनो गणाधिपतेराचार्यस्येति विमानानां विमानप्रभवानां ऋद्धिः समृद्धिः द्वात्रिंशल्लक्षादिकं बाहुल्यं महत्त्वं रत्नादिरमणीयत्वं चेति विमानर्द्धिर्भवति च दानिप्रभृतादिष्व सौधर्मादिषु विमानानां बत्तीसा अट्ठावीसा बारसअट्ठचउरोसयसहस्सा आरेणबंभलोगे विमाणसंखा भवे एसा ॥ १ ॥ पन्नासचत्तछच्चेव सहस्सा लंतसुक्कसहस्सारे सय चउरो आणयपाणएसु तिन्नारणच्चुयए ॥ २ ॥ एक्कारसुत्तरं हेट्ठिमेसु सत्तुत्तरं च मज्झिमए सयमेगं उवरिमए पंचेव अणुत्तरविमाणत्ति ॥ ३ ॥ उपलक्षणं चैतत् भवननगराणामिति वैक्रियकरणलक्षणा ऋद्धिः वैक्रियर्द्धिः वैक्रियशरीरैर्हि जम्बूद्वीपस्य असंख्यातानां द्वीपसमुद्राणां पूरणसमर्थो भगवत्या चमरेन्द्रमते

मयाए उहुमन्तिसमेङ्ग तहतिरिय तहपच्छा श्रहे अहोलोगेण दुरन्तिगमे पन्नत्ते समणाउसो। तिविहा इड्ढी पन्नत्ता तजहा देविड्ढी राइड्ढी गणिड्ढी । देविड्ढी तिविहा पन्नत्ता तजहा विमाणिड्ढी विगुव्विणिड्ढी परि

पदार्थ दोहिलो जाणिये तेमाटे अनुक्रमें केहवे जाणवु कहियो । हे श्रमणायुष्मन् । नाथ तेरिद्धिवे तेमाटे रिद्धिकहेवे त्रणप्रकारे रिद्धि कही । देवरिद्धि इंद्रादिकनी रिद्धि । राजरिद्धि तेचक्रवर्त्यादिकनी । गणि तेआचार्य गच्छाधीश तेहनी रिद्धि ॥ त्रणप्रकारें देवरिद्धिकही ते कहेवे । विमानरिद्धि तेत्रत्रीससाए विमाननुं आधिपत्य । बीजी विकुर्वणारिद्धि जे वैक्रियरूप करवा इंद्र वैक्रियरूप करे तो जंबूद्वीप भर्ने अथवा असंख्याता द्वीप समुद्रजरे एतला वैक्रियरूपकरे एतली शक्तिछे पणि कीधानथी करेंनथी करस्येनथी । परिवाररिद्धि तेदेवांगनायी भोगकरवु वैक्रियरूप

चेमरिड्ढिए जाव वेउव्वित्तए पभूविउव्वित्तए गोयमा चमरेणंजाव पभूणं केवलकप्पं जंबुद्दीवदीवं बहूहिं असुरकुमारेहिंदेवेहिं देवीहिय आइन्न जाव करेत्तए अदुत्तरंच णं पभू गोयमा जाव तिरियमसंखेज्जदीवसमुद्दे बहूहिं असुर कुमारेहि देवेहि देवीहिय आइन्नं जाव करेत्तए एसणं गोयमा चमरस्स २ अयमेयारूवे विसयमेत्ते बुइए नोचेवणं संपत्तीए विउव्विंसु २ एवं सव्वे दीविकेवलकप्पे जंबुद्दीवेदीवे आवभावेवरेव्वत्ति । परिचारणा कामसेवात इदि अप्सरोभिः सह दीयन्ते यया सा परिचारणा दिव्या कामसेवा सा च देवी देवीरभिमुख्या आगम्य विकृत्य परिचारयतोत्थेव सुबन्धमवेति १ सचित्ता स्वशरीराग्रमहिष्यादिविषया सचेतनत्व शुभंपण् अचेतना वस्त्राभरणादिविषया मिश्रा अलङ्कृतदेव्यादिरूपा १ अतियान नगरप्रवेश एतस्मिन् तोरणहट्टशोभाजनसंमर्दादिलक्षणा निर्यास समरादिगम आव ऋदि हस्तिकरणसामन्तपरिवारादिका २ बलचतुरङ्गवाहनानि वेसराहीनि कोशोभाण्डागारं कोष्ठाधान्यभाजनानि तेषामसार

यारणिड्ढी । अहवादेविड्ढी तिविहा पन्नत्ता तजहा सचित्ता अचित्ता मीसिया । राइड्ढी तिविहा पन्नत्ता तजहा रणोअइयाणिड्ढी रणोणिज्जाणिड्ढी रणोबलवाहणकोसकोठागारिड्ढी । अहवा राइड्ढी तिविहा प०

करे भोगवे अर्थ ॥ अथवा देवतानीरिद्धि त्रणप्रकारें कही तेकहेछे । सचित्तरिद्धि पोतानुं शरीर । अचित्तरिद्धि वस्त्राभरणादि । मिश्ररिद्धि अ मरुतदेवी प्रमुखअनुरूप ॥ राजरिद्धि त्रणप्रकारें कही तेकहेछे । राजाने नगरप्रवेशनी रिद्धि तोरण हट्ट सोभा लोकनो संमर्द ओवासिले तेमति यानरिद्धि । राजाने नगरथी नीकलतां हाथी घोडा पालादि परिवाररिद्धि तेनियाणरिद्धि । राजानो बलचतुरंग हाथी घोडा रथ पायक वा हन पालखी प्रमुख कोश भंडार कोठागारनी रिद्धि ॥ अथवा त्रणप्रकारें राजानीरिद्धि तेकहेछे । सचित्त स्वशरीर हाथी राणी प्रमुख । अचि

द्धर्मचैत्यकोटागारधान्यधनमित्यर्थं तेषामाभ्यंतरबाह्यविपर्यासतया ॥ सचित्तादिद्रव्यपूर्वकत्वात्सर्वमेवेति ५ प्रागपि विशिष्टश्रुतसम्पत् दर्शनर्द्धिः प्रवचनेनिश्शङ्कितादित्वे प्रवचनप्रभावकयाऽऽप्तसम्पदा चारित्रर्द्धि निरतिचारता ६ सचित्ताचित्तादिका चचित्तावस्त्रादिका मिश्रा तथैवेति इत्थं विकुर्वणादिरूपयोर्न्ये पामपि भवन्ति केवलस्येवानेनालौकिकपरस्परसम्बन्ध इति तेषामेवोत्कृति सद्विसद्रावेण गौरवमभवतीति तद्वेदनाय ॥ तपोगारवेत्यादि ॥ अत्र परं गुरोर्भावः कर्म्मवेतिगौरवं तच्चेधाद्रव्यतोवज्रादे र्भावतो ऽभिमानलोभसचणा शुभभावतयाऽऽत्मन एव भावगौरवं त्रिधा तत्रर्द्धया नरेन्द्रादिपूजाचर्यया आचार्यत्वादिलक्षणया चाभिमानादिद्वारेण गौरवं ऋद्धिगौरवं ऋद्धिप्राप्त्यऽभिमानप्राप्तिप्रार्थनाद्वारेण अशोभनोभावो भावगौरवमित्यर्थः एवमन्यत्रापि नवर रसारसनेन्द्रियार्थो मधुरादि सातं सुखमिति अथवा ऋद्ध्यादिषु गौरवं मादरइति अनन्तर चारित्रर्द्धिरुक्ता चारित्रं च करणमिति तद्वेदनाय ॥ तिविहे

सचित्ता अचित्ता मीसिया । गणिड्ढी तिविहा पन्नत्ता तजहा णाणिड्ढी दसणिड्ढी चरित्तिड्ढी । अहवा गणिड्ढी तिविहा प० त० सचित्ता अचित्ता मीसिया । तउ गारवा पन्नत्ता तजहा इड्ढीगारवे रसगारवे

स रत्नसुवर्णादि आभरण वस्त्रादि । मिश्र अलंकृत राणी प्रमुखनी ॥ गणी आचार्यनी रिद्धि त्रणप्रकारें ते कहेंछे । ज्ञान संपदा । दर्शन ते सम कितनी रिद्धि जिनवचनमां शंकानथी । चारित्ररिद्धि तेपंचमहाव्रत ॥ अथवा त्रणप्रकारें गणीनी रिद्धि तेकहेछे । सचित्त शिष्यादिकनी रिद्धि अचित्त वस्त्र पात्रादिकनी । मिश्र तेवस्त्रादि सहित शिष्य ॥ रिद्धि गारवेंपामें गारवजार कहिये तेद्रव्यथी वज्रादि भावथी अभिमान लोभरूप तेकहेछे । त्रण प्रकारें गारव रिद्धिगारव रिद्धि पामी अहंकारकरे । मधुरादि रसारस पामी अहंकार करे तेरसगारव । सुख साता पामी

मादि । प्रति करणमनुष्ठान तच धार्मिकादिस्वामिभेदेन त्रिविधं तत्र धार्मिकस्य संयतस्येदं धार्मिकमेवमितर नवरं मधार्मिको मसंयत सूतो मारेमर्मरत पवा धर्मेमतं धर्मांशा प्रयोजनमस्येति धार्मिक विषयस्तमितरत् पर्वतोऽमपोति धार्मिककरणमनन्तरमुक्त तच धर्मएवेति तद्वेदानाह । तिविहेत्यादि । स्पष्टं करणं भगवता महावीरेणेत्येवं अगाद् सुधर्मस्वामी जम्बूस्वामिनं प्रतीति सुष्टुप्राधविनयाधाराधनेनाधीतं गुरुसकाशात् सूत्रत पठितं यथोक्तं तथा मर्थविधिना ततएव व्याख्यानेनार्थतः श्रुत्वा ध्यात मनुप्रेक्षितं श्रुतमिति गम्यं सुध्यात यतनिमषाभावे तत्वानवगमेनाध्ययनश्रवणयो मापा ऽततायत्ताद्दिति पनेन भेदत्रयेण गुरुपरतन्त्र श्रवा सुष्ठ इहलोकाद्याशसारहितत्वेन तपसितं तपसनुष्ठानं सुतपसितमिति चारित्रधर्मं उक्तरति यानामप्येषा मुत्तरोत्तरता ऽविनाभावं दर्शयति । जयाइत्यादि । स्पष्टं परं निर्दोषाध्ययनं विना श्रुतार्थो मतोते सध्यात मभवति तदभावे ज्ञानविकल

मातागारये । तिविहे करणे पन्नत्ते तजहा धम्मिएकरणे अधम्मिएकरणे धम्मियाधम्मिएकरणे । तिविहे जगवयाधम्मे पन्नत्ते तजहा सुअहिज्जिए सुज्झाइए सुतवस्सिए । जया सुअहिज्जियजवइ तदा सुज्झाइय

यकारकरे तेमातागारव ॥ पूर्वे चारित्र कह्यो तेकरण तेहना भेद कहेछे । त्रण प्रकारे करण । करण तेक्रिया अनुष्ठान करवुं तेकहेछे । धार्मिक करण संयतो साधुनी क्रिया । असंयती भारत्नी मिथ्यात्वीनी क्रिया करण ते अधार्मिक करण । संयता संयतनो श्रावकनी क्रिया ते धमाधर्मि करण ॥ सुधर्मास्वामी जम्बूप्रति कहेछे । भगवत महावीर स्वामीयें त्रणप्रकारे धर्मकह्यो ते कहेछे । स्वाध्याय जे काल विनयादि धारायवें गुरुपासे जन्मुं तेसुअधीत । असीविधियें अर्थथी सुत सांभल्यो तेसुध्यात । इहलोकादि सुखनी आशंसा वांछा रहित तपक्रिया की जे ते सुतपसित ॥ एह चारित्रधर्म ज्यारे निर्दोष अध्ययन त्यारे निर्दोष अध्ययन सुतना अर्थनुं सुध्यान होय तत्त्वज्ञान होय अध्ययन

तया सुतपसितं भभवतीतिभाव यदेतत् सधीतादिमयं भगवता वर्द्धमानस्वामिना धर्मं प्रज्ञप्तं । चेति । स स्वाख्यात सुष्ठूक्त सम्यग्ज्ञानक्रियारूप
स्यात् तयो चैकाग्रिमार्त्यतिसमुपायस्योपायत्वेन निरयचरितधर्मत्वात् सुगतिधारणाद्धि धर्म इति सर्वच भावपगासवंसोच भीतमोसंयमोमसुत्तिकारो
तिर्यग्यिमसमायोगो मोक्षोभियसासयेमविमोत्ति । १ । चमिति याख्यातद्दारे सुतपसितमिति चारित्रसुत तच प्राणातिपातादिविनिवृत्तिस्वरूप
मिति तस्या भेदमाह । तिविहेत्यादि । प्राणतन प्राणत्ति क्षुतोपि हिंसायपया विनिवृत्तिरिति साच साम्प्रम हिंसादे वैरविरूपकविसुधी प्राणपूर्वि
काप्याहत्ति मातदभदात् । आयत्ति । गहिता यात्रप्रमाप्रागात् सा । मनाए । इत्यभिहिता मातुषिपिविशाय संयमाव् सा निमित्तनिमित्तिमो
रभेदा विविधिस्मे अभिहिता प्याहत्ति रित्यनेनानन्तरं चारित्रसुत स्वविपचया प्रभाप्यवसायगुणाने इतितमो रहुनामेहानपि देयत भाव । एवमित्यादि

जवइ । जया सुज्झाइयं जवइ तया सुतवस्सिय जवइ । से सुभ्रहिज्जिए सुज्झाइए सुतवस्सिए सुयस्काएण
जगवया घम्मे पयत्ते । तियिहा यावत्ती पयत्ता तजहा जाणू श्रजाणू वितिगिच्छा । एवमज्कोयवजाणा

विना सुतनो सममो व्यानमहोय । जिवारें सुष्यान सुग्यानहोय तिवारें सुतपसित होय धर्मे नाव विम्नाव विम्सपदें सुतपसित प्रसुतपनहोय।
तेहज सुमधीत सुप्यान सुतपसित एह त्रय स्वाख्यात नलीरीतें कहिया सम्यग्नाव क्रियारूप माटे जगवान महावीर स्वामीयें एह धर्मकहि
यो । तपते चारित्ररूप तचारित्रादि प्राणातिपातादि विरतिरूप तेहनां भेद कहेछे । त्रय प्रकारें व्यावृत्ति कही हिंसादिकथी निवृत्ति कही
तेकहेछे । हिसानां फलने जाणी हिसाथी निवर्त्ते तेजाणू । विना जाणया प्रमादथी निवर्त्ते तेअजाणू । संशयथी निवर्त्ते हिंसादिकथी कोइ

सूत्रे एवमिति व्याख्यातिरिति विधा । पञ्चीवबअमपत्ति । पच्चुपपादन कविदिन्द्रियार्थं पच्चुपपत्ति रभिर्धमहत्वर्थः तत्र वामती विपयसम्मयमनर्थ या तथा प्पपवतिः मा । जाणू । पावअमाना । मामभाम् । यातुर्यसमत साविविविरसेति । परिशावम्मपत्ति । पर्यापादनं पर्यापत्तिरावेवेति यावत्साप्येव मेवेति । आपति । प्र मव भाषा क्षादित्युक्त भावे पावोमिन्द्रियार्थेषु प्राय याम्मादिति याम्मभेदेन वर्षेदागाह । तिविहेपतिदव्यादि । ममम मधिममन मनःपरिच्छेद पाव माको मोक्षयाम्र तरक्षतत्वात्तद्धेयत्वा पार्यंगाथादि तस्मात्तलोमित्यम स्वस्वा परमरहस्य पर्यन्तोवेति सोभान्त एवमितरावपि भव एं वेदा समादय ममया जिनादिमिद्धान्तादति पनम्मार् समयान्तउक्त समयस जिनबेवमर्यच्छन्दवाचे क्ता सम्ममवतोति जिनादिमन्दमाप्मेदाममि धात रिमूत्रोमाह । तर्पोजिनेत्यादि । मुममा मवर रागद्वेषमोहान् जयन्तोति जिना सर्वज्ञा उक्तम रामद्वेपस्तथामोहो जितोयेनजिनोह्यसो मसौ मणापभामता सर्वैवामुमोयतइति । १ । तथा जिना इव ये पतन्ते नियमप्रत्यक्षज्ञानतया तेपिजिना छमावधिप्रधानो जिनो वधिज्ञानजिन एव

परियायक्खणा । तिविहे सुते प० त० लोगते वेयते समयते । तउ जिणा पन्नत्ता तजहा उहिनाणजिणे मणपज्जवनाणजिणे केवलनाणजिणे । तउ केवली प० तजहा उहिनाणकेवली मणपज्जवनाणकेवली केव

ज्ञाते पापवे क्रिनयो पत्रिमकोत्रे एह वितिगिच्छा ॥ मम भाअभोवगजवा ते इंद्रियनां विपय बन्नवा तेमवजवे इमन विषय सेवानुं कअनुं ते परि भायायवा इमत्र नेन्माववा तवईवे ॥ अवमकारें पंत मोबांत तलोक बउदहरायनुं वेवहो । वेदांत ते न्याववेवनुं रहस्य तत्व तेहज पंत । समय ते जिनमतोत मूत्र तेहनुं रहस्य ॥ अवमकारें जिनकहिया । अवधिनाव जिन अवधिनाव कहित । मनःपर्यवनाव ज्ञान ज्ञानअधिन के

भितरावधि मवर माघाउपचरिता वितरो निरुपचार उपचार मारचन्तु मत्ययप्राप्तिलमिति केवलमेकमनंतं पूर्णंवा ज्ञानादिविपामस्ति तेवेवलिन छबाच कमिर्पकेवलरूपं सोगंजापतितद्वयपार्मंति केवलचरित्तनायी तमातेकेवलोर्वोति ॥ १ ॥ एतापि जिनवद्व्याख्या चर्वेति देवादिकृतां पूजा मित्यर्हंत च यथानास्ति रह मध्यम किंचिदपि येषां मत्ययप्राप्तिला ते भवन्त शेषं माम्वत् एते च सलेश्या अपि भवन्तीति लेश्यामवरचमाह । तयोरत्यादि ॥ सुगमं नवरं ॥ दुभिगंधापोत्ति। दुरभिमन्याउम्मन्या दुरभिगंधलच तासां पुद्गलामकत्वा त्पुद्गलादीनां च मन्धादीनामवश्यं भावादिति भाषच अहमोमडस्सगधो मुच्चगमडस्सवअदापचिमडस्स एत्तोविपत्यतगुणो लेसाणं अप्पसत्थाणंति ॥ १ ॥ नामानुसारो चासां वर्णं कपोतवर्णालेश्या कापोतलेश्या धूम्रवर्णेत्यर्थं ॥ सुभि गंधापोत्ति । सुरभिगंधय भाषच अहसुरभिकुसुमगंधो गंधावासाचपिस्समाणाणं एत्तोपत्यंतगुणो पसत्थलेसाणतिवहपिति ॥ १ ॥ तेजोवज्ञि सलयोषि

लनाणकेयली । तउ थ्यरहा पश्चत्ता तजहा उहिनाणथ्यरहा मणपज्जवनाणथ्यरहा केवलनाणथ्यरहा । तउ लेस्साउ दुब्भिगधाउ प० त० कराहलेस्सा नीललेस्सा काउलेस्सा । तउ लेस्साउ सुब्भिगधाउ पन्नत्ताउ त०

जिन । केयलनाण जिम पांच नाण सहित तेजिन ॥ त्रयप्रकारें केवली कहिया ते कहेंछे । अवधिनाण केवली । मनःपर्यवनाण केवली । केवलनाण केवली ॥ अथ अरिहंत कहिया तेकहेंछे । अवधिनाणी अरिहंत । मनपयवनाणी अरिहंत । केयलनाणी अरिहंत ॥ एह अरिहंता दि लेश्यासहित होय तेमाटे लेश्यास्यरूप कहेंछे । अथ लेश्या दुगंध माठा गंधनीकही लेश्या पुद्गलात्मकछे पुद्गल गंधगुणीय ते कहेंछे । कृष्ण लेश्या अहमोमडस्सगंधोइत्यादि । नीललेश्या सुवगमडस्स । कापोत लेश्या अहामहिमडस्स ॥ अथ लेश्या सुगंध रूडागंधनीकही ते कहेंछे ।

गा मालिनपँलब: तेजोलेश्येति पद्मगर्भवर्णलेश्या पीतवर्णस्वंः पद्मलेश्या यथा प्रतीता एवंकरणामममसूचवत् तमोरत्नायभिलावेन मिथसूत्राक्ख्येतस्था

मोति तव दुर्गति नरजातिरूपां गमयन्ति मालिनमिति दुर्गतिगामिन्य सुगति देवमनुष्यरूपा सक्लिष्टा संक्लेशहेतुत्वादिति विपर्यय सर्वत्र सुगान भम

मोत्रा पममोज्ञरसोपेतपुद्गलमयत्वात् भविशुद्धा यतो अप्रशस्ता भप्रशस्तोऽनादेया इत्यर्थं शीतरूक्षा अर्थात् पाया स्निग्धा स्निग्धोष्णा सर्वत्र एवेति

पनगतर तेश्रा तथा भधुनातदर्थमेषितमरणमिरूपणायाह ॥ तिविहेत्यादि ॥ सूत्रचतुष्टयं नाशोभ स्वाख्येयत्वात् विरतिसाधकविवेकविकलत्वाद्यथा स

पत श्रम मरणं बालमरणं पण्डितरे केवलमविद्यायोमंबलंलेनमामार्यता विरतिपदेन प्रत्यवधिज्ञानयुक्तत्वात् पण्डितो बुधतस्य संबत इत्यर्थं तथा

तेउ पम्हा सुक्कलेस्सा । एव तिदुग्गइगामिणीउ तिसुगइगामिणीउ । तउ संकिलिठाउ असंकिलिठाउ

अमणुन्नाउ सुमणुन्नाउ अविसुद्धाउ विसुद्धाउ अप्पसत्थाउ पसत्थाउ सीयलुक्खाउ सिणिद्धुण्हाउ । तिवि

तेजोलेश्या पद्मलेश्या शुक्ललेश्या ॥ जहसुरभिकुसुमगंधो गंधावासायपिस्समाबाद्धं एतोविअणंतगुणो पसत्थलेस्साणतिण्हंपि ॥ १ ॥ पहिली

त्रणलेश्या दुर्गतिभापें नरकतिर्यंचनी गतिभापें । भागली त्रणलेश्या सुगतिभापें मनुष्य देवतानी गतिभापें । पहली त्रणसंक्लेश दवें भागली

त्रणसंक्लेश सुखदेवे । पहिली त्रण अमनोज्ञरसभो मांठा रसनी । भागली त्रण मनोज्ञरसनी । पहिली त्रण अविशुद्ध वर्णनी मलिन । भागली

त्रणनिर्मल । पहिली त्रण अप्रशस्त अनादेय । भागलीत्रण भादेय । स्पर्शनी शीतनें रूक्ष । भागली त्रण स्निग्ध उष्णस्पर्शनी । लेश्या कहीनें

मरण कहेछे । अकामरें मरण कहियो तेकहेछे । बालमरण अज्ञानी अविरतीनुं मरण । पंडितमरण साधुना विरतीनुं मरण । बाल पंडितमरण

पविरतत्वेन बालत्वात् विरतत्वेनपण्डितत्वा बालपण्डित' संयतासंयत इति स्थिता भवस्थिता अविशुध्यमानत्वे संक्लिश्यमानाच लेश्या कृष्णादि संक्लिन् त न् स्थितलेश्यं संक्लिश संक्लिश्यमाना संक्लेशमानपद्गतोस्थ्यं: साकेश्या यस्मिन् त तथा पर्यवा' पारिमेषा विशुद्धिविशेषा' प्रतिसमयजाता यस्या सातथा विशुद्धा वर्धमानेत्वर्थं सा लेश्यावण्मि स्वातपीति भव प्रथमं कृष्णादिलेश्य सन् यदा कृष्णादिलेश्येष नारकादिपूत्पद्यते तदा प्रथमं भवति यदाद नीलादिलेश्य सन् कृष्णादि लेश्येपूत्पद्यते तदा द्वितीयं यदा पुन' कृष्णादिलेश्य सन् नीलकापोतलेश्येपूत्पद्यते तदातृतीयं उक्तं चाव्यदयसवादि भगव स्यां बहुत सेयूणं भंते कण्हलेसेनीललेसे जावसुक्कलेसेभवित्ता काउलेसेसु नेरइएसु उववज्जइ हंतागोयमा सेकेणट्ठेणं भंते एवं वुच्चइ गोयमालेसट्ठाणेसु स क्लिस्समाणेसु वा विसुज्झमाणेसु वा काउलेसं परिणमइ काउलेसेसु नेरइएसु उववज्जइत्ति एवस्तुत्तरेयोत्तरसूत्रयोरपि स्थितलेश्यादिविभागो नेयइति

हे मरणे प० त० बालमरणे पंडियमरणे बालपंडियमरणे । बालमरणे तिविहे प० त० ठियलेस्से संकि लिट्ठलेस्से पज्जवजातलेस्से । पंडियमरणे तिविहे प० त० ठियलेस्से असंकिलिट्ठलेस्से पज्जवजातलेस्से

विरता विरती देशविरति मावरूपं ॥ बालमरण त्रणप्रकारे तेकहेछे । स्थितलेश्यानुं जेकृष्णादिकमा मरी नरकगतिमा कृष्णलेश्यायेंज उपजे । संक्लिष्ट लेश्यानुं तेनील लेश्यायें मरी कृष्णलेश्यायें उपजे । पर्यवजात लेश्यानुं तेपर्याय करी शुद्धयाय तेकृष्णलेश्यामां मरी नीलकापोत लेश्यामां उपजे॥ पंडितमरण त्रणप्रकारे कह्यो ते कहेछे । शुक्लादि लेश्यामां मरी शुक्ल लेश्यामां उपजे देवगतिमां। असंक्लिष्ट लेश्यानुं पंडित मरण तेजो पदम लेश्यायें मरी शुक्ल लेश्यामां देवतादिकमां उपजे । पर्यवजात लेश्यानुं पंडितमरण वधती शुक्ललेश्यामा उपजे ॥ बालपंडित

पण्डितमरणे संक्लिश्यमानताऽलेश्याया नास्ति संयतत्वादेवेत्ययं बालमरणाद्विशेष बालपण्डितमरणे तु संक्लिश्यमानता विशुद्ध्यमानता च लेश्यायामस्ति मिश्रत्वादेवेत्ययविशेष इति एवं च पण्डितमरणवस्तुतो द्विविधमेव संक्लिश्यमानलेश्यानिषेधे अवस्थितवर्धमानलेश्यत्वा तच्च त्रिविधलंतु व्यपदेशमात्रत्वादेव बालपण्डितमरणं लेशविधमेव संक्लिश्यमानपर्यवजातलेश्यानिषेधे अवस्थितलेश्यत्वा तथेति चैविध्यमस्य तरव्यावृत्तितो व्यपदेशमत्रमहत्त्वे रिति मरणम नन्तरमुक्तं मरणानुभागतो यथाविधस्य मरणस्य यल्लेसम्पद्यते तस्य तत्त्वे दर्शयितुमाह । वणेठावेत्यादि । गोचिरागानि प्रभवनमवाप्तसोवनिका समयानि पथ्यशितासामिपवचवो परामवतो वा हितायापथ्याशुभायकुशल्या चमाया संगतत्वावा निःश्रेयसाया मोक्षाया नानुगामिकत्वाया शुभानुबन्धाय भवन्ति । सेवंति । समचीपिकागानि पवितादित्वाय भवन्ति समर्थितो देवत सयतो वा संयमवान् कांक्षितस्येव मनान्तरस्यापि साम

बालपंडियमरणे तिविहे पन्नत्ते तंजहा ठिअलेस्से असंकिलिट्ठलेस्से अपज्जवजातलेस्से । तओ ठाणा अव्व वसिअस्स अहियाए असुभाए अखमाए अणिस्सेसाए अणाणुगामियत्ताए भवंति तंजहा सेणमुंडेभवित्ता

मरण त्रणप्रकारे तेकहेछे । स्थिर लेश्यानु तेलेश्यानु जेलेश्याये मरे तेलेश्याये उपजे । असंकिलिष्ट लेश्यानु मरण ते जीवो शुभलेश्याये उपजे । अपर्यवजात लेश्यानु बालपंडितमरण तेसमय समये शुभलेश्या वधतीमपामे ॥ त्रियस्थानकें जेर्वे निग्रन्थने साधुने अनीवाला तेहने एहीज पाळव अहितना करनार होय । असुखना कारक होय । अक्षमा लोभना कारक होय । अनिश्रेयस मोक्षदायक नहोय । अनानुगामी संसारपारना आपनार नपाय नहोय ॥ मरणजीवापछी जे जेहवुं बालमरणे तेकहेछे । जेवानु हमणाज्जवनी शुंजव्हे बालपणे मनुष्यादि तिर्यंच नैमयकम

सेन मताजिधिकित्सित' पर्स प्रति महोपितो ऽत एवा भेदसमापन्नो द्वैधीभावमापन्न' एवमिदं नचैव मिति मतिक' कलुषसमापन्नो नैतदेव मिति प्रति पत्तिक' ततव निर्ग्रंथानामिदंमेपव्वियं प्रशस्तं प्रमतं प्रवम वा वचनमिति प्रवचन मागमो दौषल्यं माज्ञतत्वात् न श्रद्दत्ते सामान्यतो न प्रत्येति न प्रीति विषयीकरोति न रोचयति न चिकीर्षापविषयीकरोति तमिति च एवंभूत सन् मव्रजिताभासं परिसह्यते इतिपरीसहा' क्षुधादय' अभियुज्यर सम्बन्धमुपा गत्य प्रतिस्पर्धितया पभिभवन्ति व्याक्रमन्ति इति गेयं सुगमं ध्वनिविपर्ययसूत्र माम्यत् किन्तु जित महोपकार मिह परत वा मन' परीषह पञ्चाय भोग

श्रगाराउ श्रणगारिय पव्वइए णिग्गथे पावयणे संकिए कंखिए वितिगिच्छिए भेदसमावन्ने कलुससमावन्ने णिग्गथ पावयण णोसद्दहइ णोपत्तियइ णोरोएइ तपरीसहा श्रभिजुजिय श्रभिजुजिय श्रभिभवति नोसे परीसहे श्रभिजुजिय श्रभिजुजिय श्रभिभवइ । सेणमुक्केनायिव्वा श्रगाराउ श्रणगारिय पव्वइए पचहि

जिमश्यासन तेहमेंयियें शंकाभावें एसाधु कै छोडु एहवीकांछा परमतनीवाछा धर्मेमां भावें । विचिकित्सा फलनी सदेहभावें शंका तेहीज मद ए इमकहियें मही तेमसंपमिं द्विधाजावमापन्न । कलुषसमापन्न ते एजगवंतें कहनो पवि इममयी इमकरी निग्रंथमा प्रवचन सिद्धाता दिक मागनें सरदहेनयी साधुकरीने । प्रत्ययविश्वास उपजावेनयी । रुचावेनयी वांछेनयी । एहवा साधुमतें क्षुधादि बावीसपरीसहमा भावी भायीमें एतले ऊपजीनें पराजयकरें । पवि तेसाधुनयी नामसाधु ते परीसह उपनाभावी फरस्या तेमतिसरे धर्मेनयी तेमोरा पिछनपामें ॥ ते साधु मुक्यह गहस्थायासपकी भवगारपयी दीक्षालेई पचमहाव्रतमेंविषें शंकाभावें यावत् पूर्ववत् कलुषपर्क्षपामें । पंचमहाव्रतमतें भरदहें

महव्वएहिं संकिए जाव कलुससमावन्ने पंचमहव्वयाइं णोसद्दहइ जाव नोसेपरीसहे श्रभिजुंजिय श्रभिजुंजि य श्रभिभवइ । सेणं मुञ्जेनाविक्षा श्रगाराओ श्रणगारियं पव्वइए छहिं जीवनिकाएहिं जाव श्रभिभवइ । तउठाणा ववसियस्स हियाए जायाणुगामियत्ताए भवंति तंजहा सेण मुञ्जेनयित्ता श्रगाराओ श्रणगारियं पव्वइए णिग्गंथे पावयणे णिस्संकिए णिक्कंखिए जाव णोकलुससमावन्ने णिग्गंथ पावयणं सद्दहइ पत्तियइ रोएइ से परीसहे श्रभिजुंजिय श्रभिजुंजिय श्रभिभवइ । णोतंपरीसहा श्रभिजुंजिय श्रभिजुंजिय श्रभिभ वंति । सेण मुञ्जेनयित्ता श्रगाराओ श्रणगारियं पव्वइए समाणे पंचहिं महव्वएहिं णिस्संकिए जाव परिस्सहे श्रभिजुंजिय श्रभिजुंजिय श्रभिभवइ णोतं परिस्सहा श्रभिजुंजिय श्रभिजुंजिय श्रभिभवंति । सेण मुञ्जेन

मयो यावत् पूर्व कहिउ तिम तेपरीसह उपना तेमतें सहेमयो । तर्मुडथई अणगारपणें प्रवृज्या दीक्षालेइ छकायना जीवनी श्रद्धाभावें यावत् परीसह नमीसकें ॥ त्रिणस्थानक नियमकरी आत्माने तेहनें हितनां करणार यावत् संसारनो पारपामे । तेमुडथई थकी गृहस्थपणुं मूंकी श्रमणा रपणो प्रवृज्यालेई निग्रंथना प्रवचननेविषें जिनशिद्धांतनेविषे वेहनें संकानथी अन्यधर्मेनी कांक्षा वांछानथी । यावत् कलुषभावनथी पाम्यो ते मते परातमनथी करीनहे ॥ तेमुडथइ गृहस्थावासथी अणगारपणुंलेई प्रवृज्यालीयेंथके पंचमहाभूतनेविषे संकारहित यावत् परीसहथाकी कर वकबे करेकवें विचतेपरीसह तेआनुनेआवो करथी परात्मथीतजेनथी ॥ सनीतेमुडथई आगारपणुं मूंकी अणगारथयो प्रवृज्यालेई छकायना जीव

मवत् सुषमामन्द स्वचितस यौवलजसपामदव यम सुचितं तथाविधयाधिपातवीवपानमिव णि'येमसं णिविते त्रेय' प्रगमं भावत पवममपकारकार वमिव धनुमामिवमगुममनयोर्व भासएम्मजनितच्छायेवेति मर्मवेमविध' सामुरिवैव पविम्यां भवतोलवेमसम्मन्वेन पविपोसरूपमाव । एगमेमेत्यादि। एवेकापुविवी रवमभादिया सवत' विमुत्तंभवति समंता एववा दिसुविदिसुवेम्यव सम्पारिखिमावेडिता भाभ्यंतरंघणोदधिवलयं तत प्रमेपिवरे तव घन' स्त्यामो हिमसिलावत् उदधि ववमिवव' सयासो सवेति घणोदधि' सपवयवसमिव वलयं वाढत्रं घणोदधिवलयं तेन एवमितरेपि नवरं घनवासीवातव तथाविधपरिणामापेतो घनवात एवंतनुवातोपि तथाविधपरिणामएवेति भवंलघनाथा' नविमपुरुसतिभसोगं चउसुंपिदिसासुसम्पुठवीभो संगहिया मवएहिं विर्वभतेविपोच्छामि । १ । कवेव १ मइपंचम २ जोयणमदव १ बीतिरयगाए उवरी १ यव २ तवमाया १ भावासेवमिहिहा । २ ।

यित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइए ठहि जीवनिकाएहि णिस्संकिए जाव परिस्सहे अभिजुंजिय अभि जुंजिय अभिभवइ णोत परिस्सहा अभिजुंजिय अभिजुंजिय अभिभवंति । एगमेगाणं पुढवी तिहिंवल एहिं सव्वउसमता संपरिक्खित्ता तघणोदहिवलएणं घणवायवलएणं तणवायवलएणं । णेरइयाणं उक्कोसेणं

मेविपे संकारहि यावत् तेसाधु फरसीमे पराजवकरी मसके । एहवा साधुते हहां पृथवीमांहे । तेपृथवीनुं स्वरूप कहेछे ॥ एकेकी पृथवी त्रिण वलयेकरी सगले च्यारेंदिसे व्याप्तछे वींटीछे रत्नप्रभाविक तेकहेछे । घणोदधि जलनो समूह तेहनेवलयेकरी वींटीछे । बीजो घनवातनो वलय तेणेकरी वींटीछे । तीजो तनवात वलयेकरी वीटीछे । एह सातनरकें नारकी उपजे । तेनारकीनो उत्पत्ति कहेछे । नारकीमें उत्कृष्ट सप्तसमयनो

तिभागो [योजनस्स] १ गाउयचेव २ तिभागोगाउयस्स य १। भावुवेपक्खेवो पढोपवोआवससमिमत्ति ।१। एवासुच पुस्मीसु नारकाएव उत्पद्यन्ते इति तदुत्पत्तिविधि मभिधातुमाह । नेरइयाणमित्यादि । यत्' समयासिसमयं तचयादि स भिसमयिक स्येन विग्रहेण वक्रगमनेन । उक्कोसेणंति । यमार्गाहि वसनायमतरयाराद् वक्रय भवति तच्च चउपचसमया स्तथाहि भाग्नेयदिग्मो नैर्ऋतदिग्मे मेकेन समयेन गच्छति ततो वितीयेन समये स्या यथ स्तत स्ततीयेन वायव्यदिग्मि समश्रेणेति वसानामेव यसोत्पत्तावेवविध उक्कोसेण विग्गहइत्याह । एगिंदियत्यादि । एकेन्द्रिया स्वेकेंद्रियेषु पंचसामयिकेना घुत्पद्यंते यतस्ते यहिरया वसनाडीतो बहिरप्यत्यद्यंते तथाहि विदिसाउविसिपढमे वीयपयसरइसोयनाडीए तइएउड्ढुवयाबह चउत्थए गोइकोदितु ।१। पंचमएविदिसाए मतुउप्पज्जइएगिंदित्ति । सच्चसएवाय भवति यत् सामायिकएव मभवत्वातमोससादिति तथाहि सपज्जत्तम सुहुमपुढविकाइएपर्मते पढेसोमरो तनाडीए वाहिरखेत्ते समोहए समोहणित्ता जेभविए उड्ढलोगखेत्तनाडीए वाहिरले खेत्ते सपज्जत्तसुहुमपुढविका इयत्ताए उववज्जित्तए सेणंभंते कतिसमइएण विग्गहेणं उववज्जेज्जा मो तिसमइएणवा चउसमइएणवा विग्गहेण उववज्जेज्जा इत्यादि विशेषवत्ता सप्पु ं सुत्तेचउसमयाउ मधिगईभोपराविनिद्दिष्टा अन्नाइपचसमया ओयसइमामईलोए ।१। ओतमतमविदिसाए समोहओबंभलोगविदिसाए उववज्ज एगंइए सोमियमापचसमयाए ।२। उववायाभावाओ नपचसमयाइवासंतावि भपियाजहपचसमया नहवर्वीयसंतावित्ति ।२। भवत्यन्ते । एगि

तिसमइएण विग्गहेण उववज्जति । एगिंदियवज्जा जाव वेमाणियाण । खीणमोहस्सण अरहओ ततोकम्म

विपूहगति एकसमयनी वक्रगतिकरी नारकीमां उपजे कोईक सम्यमावधि एकसमयमां उपजे । एकेंद्री कोईीमें एकेंद्रीमें पांचसमयनी वक्रगतिकरी

दियवर्ज्जति । यावद्वैमानिकानामिति वैमानिकानां जीवानां विशामयिक उल्लंघन विषयो भवतीतिभाव मोहवर्तानिवानक मभिवाया मुना यो चमोहस्य तदाह । मोहेत्यादि । मोहमोहस्य मोहमोहनीयकमणो ऽयतो जिनस्य भय कर्मांशा कर्मप्रकृतय इति उक्तम परमेणाभावरयं पंचविंशं सर्वकर्मविगम पंचविंशमंतरायं पचदशानामेकदेशोऽहति । १ । शेषं कथ भगवत मयागतानां विज्ञानक मुत्र मधुना शाश्वतानां तदाह । अमोत्यादि । इत्यादि सप्त संख्यानीति पर स्मरसूत्रे मोहमोहस्य विज्ञानकमुत्र मधुना तद्विशेषायां तीर्थंकतां तदाह । अभेत्यादि । अवरयं । तिषउभागत्ति । त्रिभि चतुर्भागैः यावे पल्ये।पमस्य सत्के रूनानि त्रिचतुर्भागपल्योपमानि तेष्वतिक्रान्ते रिति उक्तं यथजिनाभोसंतो तिहिभोतिचउभागपलिवज्जेहिं

सा जुगव खिज्जति त णाणायरणिज्ज दसणायरणिज्ज अतराय । अभिईणक्खत्ते तितारे पन्नत्ते एव सवणे अस्सिणी भरणी मगसिरे पूसे जेठा । धम्माओण अरहाउ सतीअरहा तिहिं सागरोवमेहिं तिचउब्भाग

य । यावत् वैमानिकनें अबसमयनी होय ॥ मोहमोहनीय कर्मनं वेदने एकवा मरिहंतने अवकर्मनां भक्ष तेप्रकृति समकालें क्षयपामें तेकहेछे । ज्ञानावरणीय पाचप्रकारें । दर्शनावरणी च्यारप्रकारें । अंतरायकर्म पाचप्रकारें एमच्च ए समकालेंपामें क्षयपाम्यांथी केवलीथाय ॥ अभीजि नक्षत्रमा त्रणतारा कहिया एम श्रवण नक्षत्रमा त्रणतारा । अश्विनी नक्षत्रना त्रणतारा । भरणी नक्षत्रना त्रणतारा । मृगशिर नक्षत्रमा त्रणता रा । पुष्यमा त्रणतारा । ज्येष्ठा नक्षत्रना त्रणतारा ॥ धर्मनाथ धर्मरमां अरिहंतना मोक्षथी शांतिनाथ सोलमा अरिहंत पल्योपमनां त्रणभाग ऊनती त्रण सागरोपम गयाथी उपना एक पल्योपमनां च्यारभाग तेहमां त्रणभाग ऊणा एतले एकभाग पल्योपमनु लेवो एतले त्रण सागरोपम

पवरहिंसमुप्पचोत्ति ॥ १ ॥ समचरतेमादि ॥ युगानि पंचवर्षमानानि कालविशेषा लोकप्रसिद्धानिवा कृतयुगादीनि तानिच क्रमवर्तितानि ततश्च पुरु षा गुरुशिष्यक्रमिव पितापुत्रक्रमवर्तो वा युगानीव पुरुषयुगानि पुरुषसिंहवत्सास ततश्च पंचम्यादिवीवार्थता तृतीयपुरुषयुगयावत् जंबूस्वामिनंयाव दित्यर्थः ॥ युगांत ॥ पुरुषयुग लक्षणेयवांतकरायां भवांतकरावां निर्वाणगामिना मित्यर्थः भूमि कालो युगांतकरभूमि रित्युक्तभवति भगवतोवर्द्धमान स्वामिनस्तीर्थं तस्मादेवारभ्य तृतीयंपुरुषं जंबूस्वामिन यावन्निर्वाणमभू ततउत्तरं तदवच्छेदइति ॥ मद्दोत्यादि ॥ सूत्रस्य तत्र संबाद एकोमर्मवीरो पा मोमहीपतिर्दितिविसपर्दिति ॥ मतिजिन प्रो मतेरपि त्रिभि ॥ समचेत्यादि ॥ पविवार्षति ॥ भसर्वप्रलेन विमसंस्मामानां समवसंभवच्छेदकलेन सर्वं सवना भवरतमिपाता भवारारिसंयोगा विर्यते येषांते तथा सार्बिबेनमनमोषाषाणा तेषां सिरितसबलबामबाणा मित्यर्थः ॥ बाजरमाषाषंति ॥

परिनिर्वृतमकुणएहिं वीइक्कंतेहिं समुप्पन्ने । समणस्सणजगवडं महावीरस्स जाव तस्साढं पुरिसजुगाढं जुगतकरजूमी । मल्लीण श्ररहा तिहिंपुरिससएहिं सद्धिं मुंडेनवेत्ता जाव पव्वइए एव पासेवि । सम णस्सण जगवढं महावीरस्स तिन्निसया चोद्दसपुव्वीण श्रजिणाण जिणसकासाण सव्वक्खरसन्नियाईण जि

एकलाण एरूपोपमर्नु गमोधी उपमा ॥ श्रमण जगवान महावीरनें यावत् त्रणपुरुषनी परंपरालगि मोक्षमार्ग चाल्यो एतले महावीरस्वामी सुध र्मास्वामी जंबूस्वामी एह त्रणपुरुषलगें मोक्षमार्गेहतो तिवारपछी मोक्षमार्ग विच्छेदपामी ॥ मल्लिनाथ अरिहंत उगणीसमा तीर्थंकर त्रणसे पुरुष संघातें दीक्षालीधी यावत् प्रव्रज्या पंचमहाव्रत लीधा ॥ एम पार्श्वनाथ तेवीसमा जिन त्रणसे पुरुषसाथे दीक्षालीधी ॥ श्रमण जगवत महावीरनें त्रणसें

यामृवतां व्याकुवतामित्यर्थः ॥ तयोरत्यादि ॥ चयोर्जं सतीकुंथूमयरो यरइंतावेयचक्कवट्टीय चयवेसातिय्यरा मंडलियामासिराबाचोत्ति ॥ १ ॥ तीर्थंक राद्येते विमानेभ्योऽवतीर्णा इति विमानविस्तामभमाइ ॥ तयोइत्यादि ॥ लोकपुरुषस्य ग्रीवास्थाने भवानि ग्रैवेयकानि तानिच तानि विमानानिच

णोइय ख्रयितइ यागरमाणाण उक्कोसिया चोद्दसपुव्विसंपया होत्था । तत्थ तित्थयरा चक्कवट्टी होत्था तजहा सती कुंथू ख्ररो । तत्थ गेविज्जयिमाणपत्थडा पन्नत्ता तजहा हिठिमगेविज्जयिमाणपत्थडे मज्झि मगेविज्जयिमाणपत्थडे उवरिमगेविज्जविमाणपत्थडे । हेठिमगेविज्जविमाणपत्थडे तिविहे पन्नत्ते तजहा हिठिमहिठिमगेविज्जविमाणपत्थडे हिठिममज्झिमगेविज्जयिमाणपत्थडे हिठिमउवरिमगेविज्जयिमाणपत्थ डे । मज्झिमगेविज्जयिमाणपत्थडे तिविहे पन्नत्ते तजहा मज्झिमहिठिमगेविज्जयिमाणपत्थडे मज्झिम मज्झि मगेविज्जयिमाणपत्थडे मज्झिमउवरिमगेविज्जयिमाणपत्थडे । उवरिमगेविज्जयिमाणपत्थडे तिविहे पन्नत्ते

चउदह पूर्वी जिनमयी केवलीमयी पिण जिन सरिखा केवली सरिखा सर्वाक्षर सन्निपाती सर्वाक्षर योमनां जाण जिननीपरें अवितथ सत्य व्याकरण प्रश्नना कहणार एहवी उत्कृष्टी चउदह पूर्वधारीनी संपदायई ॥ अथ तीर्थंकर चक्रवर्त्तिपणा तेकहेंछे । शांतिनाथ सोलमां । कुंथु नाथ सतरमां । अरनाथ अठारमां ॥ अथ ग्रैवेयक विमान प्रस्तट कहिया तेकहेछे । हेठिम विमान प्रस्तट । मध्यम विमान प्रस्तट । उपरि म विमान प्रस्तट ॥ हेठिम विमान प्रस्तट त्रयप्रकारें तेकहेंछे । हेठिम हेठिम विमान प्रस्तट । हेठिम मध्यम विमान प्रस्तट । हेठिम उपरिम

तेषां प्रस्तटा एवमाविधेयवस्त समूहा एवम मैवेयकादिविमानवासिता कर्मेव सवामा प्रयवीति कर्मेव विमानक्रमाद । जीवाणमित्यादि । सूचाचि पट तत्र विभि स्थाने स्त्रीवेदादिभि निर्वर्तिताम् भविताम् पुद्गलान् पापकर्मतया पमभकर्मलेनो तरोत्तराशुभाध्यवसायत वितवंत मासद्धसगत एव मुपचितवंत परिपापचत एवंबवक्तो निर्मापचत उदीरितवंत मध्यवसायवशेनाउदीर्योदयप्रवेयमव वेदितवंत- मनुभवनत निर्जरितवंत प्रदेशपरिशा टनत संग्रहबोमावार्थमव एवं विचउवचिमबोदी रवेयतव्हनिज्जरावेवत्ति । एवमिति ॥ यदेवं कालत्रयाभिलापेनोक्त तथा सर्वोपचीति कर्मेव पुद्ग

तजहा उयरिमहिठिमगेविज्जयिमाणपत्थडे उवरिममज्झिमगेविज्जयिमाणपत्थडे उवरिमउयरिमगेविज्जयि माणपत्थडे । जीयाण तिठाणणिव्वत्तिए पोग्गले पायकम्मत्ताए चिणिसुवा चिणितिवा चिणिस्सतिवा तजहा इत्थीणिव्वत्तिए पुरिसणिव्वत्तिए णपुसगणिव्वत्तिए । एव चिणउवचिणयधउदी रवेयतहणिज्जराचेव ।

विमान प्रस्तट ॥ मध्यम विमान प्रस्तट प्रथमकारें तेकहेछे । मध्यम् विमान प्रस्तट । मध्यम मध्यम विमान प्रस्तट । मध्यम उपरिम विमान प्रस्तट ॥ उपरिम विमान प्रस्तट प्रथमकारें तेकहेछे । उपरिम हेठिम विमान प्रस्तट । उपरिम मध्यम विमान प्रस्तट । उपरिम उपरिम विमान प्रस्तट ॥ जीवमें प्रधानबे निवर्तित उपाय्यो उदगक पापकर्मपणें एकठाविस्या मेल्या मतीतकालें । चिणेछे वर्तमानकालें । चिणस्यें पनाग तकालें । तेकहेछे । स्त्रीवेदना उपाय्यो पुरुष वेदना उपाय्यो । नपुंसक वेदना उपाय्यो ॥ एम चिण्या उपचय बंध उदीरणा वेदना निज्जरा

नामकमिति पुद्गलोयांन् प्रति निखानकमात । तिपएसिएत्यादि । सदमिति सवसूत्रेषु आख्यातमेवेकार्थे । इतिनिखानकस्य चतुर्थोद्देशक समाप्त ।
समाप्तोच श्रीमदभयदेवसूरिविरचिते स्थानाङ्गविवरणेतीयं निखानकाध्ययनं समाप्तमिति ।

व्याख्यातंवतीयमध्ययन मधुना संख्याक्रमसम्बद्धमेव चतुःस्थानकाख्यं चतुर्थमारभ्यते । अस्य चायं पूर्वेणसह विशेषसम्बन्धः अनन्तराध्ययने विविधा जी वाजीवपर्यायाः उक्ता इहापि त एवोच्यन्त इत्यनेन सम्बन्धेनायातस्यास्य चतुरुद्देशकस्य चतुरनुयोगद्वारस्य सूत्रानुगमे प्रथमोद्देशकादिसूत्रमेतत् । चत्ता रि अंतकिरियेत्यादि । अस्य चायंसम्बन्धः अनन्तरोद्देशकोपान्त्यसूत्रे कर्मेव यथायुक्तमित्यतु कर्मप्रत्याख्याता भवत्यन्तक्रियोक्ता इत्यथवा सुतं म या सुयता भगवतेवमाख्यात मित्यभिधाय यत्तदाख्यातं तदभिहितं तथैवमपरं तेनैवाख्यातं यदाहुक्त इत्येवं सम्बन्धस्यास्य व्याख्या चतस्रिया भवत्यन्त करणं तत्र यस्य न तथाविधतया नापि परीषहादिजनिता तथाविधा वेदना स्तोकेनैव प्रव्रज्यापर्यायेण सिद्धिर्भवति तस्यैका यस्य तु तथाविधे तपोवेदने चरणे नैव प्रव्रज्यापर्यायेण सिद्धिरेषा तस्य द्वितीया अस्य च महति तपोवेदने स्तोकेनैव पर्यायेण सिद्धिस्तस्य तृतीया यस्य पुनरविद्यमानतथाविधतपो

तिपएसियाखंधा अणंता पण्णत्ता एवंजाव तिगुणलुक्खपोग्गला अणंता पण्णत्ता ॥ तिठाणस्सम्मत्तं ॥ ३

चत्तारि अंतकिरियाओ पन्नत्ता तंजहा तत्थखलु इमा पढमा अंतकिरिया अप्पकम्मपच्चायाए यावि भवइ

[illegible] एवमाख्याता ॥ त्रय प्रदेशिका पुद्गलाः अनंता कथिता । एवं यावत् त्रिगुण रूक्षा पुद्गल अनंता कथिता लोकमां ॥ इति श्रीठाणाङ्गे तृतीयो अध्ययन पूरोथयो ॥

इमम प्रथमबावेपक्षिरि मम्म चतर्मीति मम्लक्रियासा एवमरूपत्वेपि सामयीभेदा चातुर्विध्यमिति समुदायार्थं मवयवार्थस्त्वयं चतस्रोऽस्तक्रिया
मयमा ममवतेतिगम्यते तथेति बममीनिर्धारवे तासु चतसृ मध्यत्वमं बहुगाव्याख्यारे इयमनन्तर मणमायत्वेन मत्ममासवा मयमा इतरापेक्षया
पापापमतक्रिया इत्यवचित् पुरुष देवलोकादौ वात्पाततोऽस्मे खोके बसभि चरमभूते मस्मायात मत्मामतो मानुपत्वमिति मममकर्मप्रत्यायावो स
इति मम्यते पचमा एमच चमित्वा ततोऽन्यबमोसम् य मस्मायात स तथा बहुमतयोल्पमत्वम चमारीयममायमवाममोपेक्षया समुचयार्थं चपि
सभावने सभाव्यते ऽयमपिपमत्वमं भवतिस्यात् ॥ सइति ॥ चसो चमितिवाव्याख्यारे मुंडीमूत्वा द्रव्यत चिरालोचेन भावतो रागायपगमनेनागारात्
द्रव्यतो गेहात् भावत संसाराभिनंदिना देहिनामावासभूता इत्यविवमेवा निष्क्रम्येतिमम्यते ऽनगारिता चमारोऽस्यो मसंयत स्यमतिवेषादनगारो स
यत पञ्चमस्तस्य तां साधुतामित्यम मवजित मगत मासस्याद भवता विभक्तिपरिणामादनगारितया निर्ग्रन्थतया प्रव्रजित प्रव्रज्यांप्रतिपन्न किं
भूतस्यात ॥ संजमबहुलेति ॥ समनेन पविमाभ्यादिसत्यसत्त्ववेन बहुल प्रचुरो य स तथा मयमोवा बहुल प्रचुरो यस्स तथा एव संवरबहुलोपि नमर
मान्यवनिरोध संवर चमवा इन्द्रियकषायनिग्रहादिभेद एवच संयमबहुलपदर्थ माणातिपातविरते माणाम्बुआमगमाय वत एवंविमपत्वमद निरिह

सेणमुक्केनखित्ता आगाराठ अणगारिय पव्हइए सजमबऊले सवरबऊले समाहियबऊले लूहे सीरठी उव

दिवे चीयो ठाणू कोदे । च्यार मतक्रिया केहली मोक्ष वावामी कही तेकरेदे । तिहां मिवपनी पहली अंतक्रिया चल्प पीडा कर्मेंबुलनी न
दुष्मनी पवतारमां चावी मोक्षजाय चोदी वेदना मोमें । तेपरपतरमी मुंडनोंने आगारीपनुं मूकी चयमारपनुं साधुपनुं चंगीकार कीयो च्यो